

सतिसंमर्धमहापुर्वकीदृष्ट्या श्रीरामायनमेः श्री
कस्मायनमेः अथ नगतिमालटीकासहति ॥
स्यंते ॥ अल्को ॥ मंगलाचरणतथाग्रग्यानीरु
पणः श्रीचेतो नृगेर्जनांतां सततमनुगत
श्रीप्रियादासटीकागंधद्व्यातिलेपात्परि
मलमधिकं ब्येजयंती समंतात्सानंदस
बिसाखावलितरकुसुमोद्यानतः श्रीलन
नमालाकारणः क्लृप्ताचरितरुरिदृष्टि
श्रीमतिर्नक्तमालाः ॥ क्लृप्तः श्रीमहाप्रभु
कक्षचेतन्यमनसुरनजूकेचरननकोध्या
नमैरेनाममुषगाश्चै ॥ तासीसमैनात्ता
जूनैर्ज्जाइलिश्चिरिटीकाबिसतारनग
तिमालकंसुनाश्चै ॥ काजीयेकबितबंदध
दग्रतिप्यारो लगे जगेजगमाहिकलीबा
नीबिरमाश्चै ॥ जान्यो निजमतप्रपेसुने
नागवत्शुकदुमनिवप्रबेसकीपेरे प्रेसै
हीकराश्चै ॥ टीकाकोनामस्वरूपवरनन ॥
रचिकबिताइसुषदाइलिंगे निपटसुताइ प्रे
सबाइ पुनिरुक्कतिलेभितरिहै श्रीधरमधु

रताई ॥ जूनू प्रास जम काई प्रतिष्ठ बिष्णु
 ही मोद ऊरी सीलगाई है ॥ का बिका बिका
 ई निज मुख न नलाई सो तना जाजूक
 लाई ॥ ताते प्रोठि कै सुनाई है ॥ हिरदै सर
 साई ॥ जोपे सुनीये सदाई यन्न गतिरस
 बोध नि सुना मटी कागाई है ॥ २ ॥ नलि सर
 पवननी ॥ सर्धी हा फुले लगे उ बट नों स
 रवन कथा मैल प्रचमान जग अंगन
 सुधू टाईये ॥ मनन सुनीर अनरुवाये
 अगू दया नवनि बसन पनसो धोले
 लगाईये ॥ आनरनना मरु रिसा थूले वा
 कण फूल मानसी ॥ ३ ॥ अरु अरु अरु अरु
 नाईये ॥ १ ॥ नकि नाराणी को सिंगार चाह
 बीरी चाह ॥ २ ॥ नहै जो निहारि लहे लालप्या
 रीगाईये ॥ ३ ॥ नकि पचरु सरवननी सांति
 दास्य सष्य बालसत्य जौ सिंगार चारुपा
 चूरस सार बिसतारनी कै गाये है टीका
 कोहि ॥ अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
 केसरूपमें जूनूपले दिषा है ॥ जिनके

नम्रसुपात पुलकतनगातकनू
 तिनहंकोंनावसिंधुबोरिसोभुकायेह
 जेलौरहैदूरिरहैबिसुप्रतापहियेहो
 प्रचूरचूरनेकसरवणलगप्रेहभूपंच
 रससोईपंचरंगफूलथाकनीकेपीके
 पहरायेबेकौरचिकेलनाहै।बैजयं
 तीदामनाववतीप्रलिनानानांमल्या
 ईप्रचिरांमल्यांमम।तिललचारिहै।ध्या
 रीभरप्यारी।कहकरतनन्यारी।।प्रहोदे
 प्रोगतिन्यारी।हरिपायेनकौंप्राईहै।नग
 तिथीबनारतातैनमितसिंगारहोतहो
 तबसलधैजोईयातैजानिप्राईहै।।पल
 तसंगप्रचानमहैवां।बरननू।।नीकृतह
 पौचाताहैबिबनडरधेरीहूको।बारिहै
 बिचारिबारिसीचौ।सतसंगसौ।।लगे
 बहनगोदाचहूदिसकहनसोचहनप्र
 प्रकासजसफैल्योबैहौरंगसू।।संतनुरु
 लखाललोचिताबिसालधायीजीयेजीव

जालता प्रगयो यौ प्रसंगसौ देवो बद्ध
वारी जाहि अज्जाहकी संकाहुती तारी
पेढ बंधे मूलै सार्थी जीते जंगमं ॥ श्री
नात्ता जू को बदनतः जाको जौ स्मृ
पसो अन्न पले दिषाय दीयो कायो यो क
वित प्रट मधिलाल है गुनये प्रयार
साथू कहै अक चा रहि मंग्र यदिलता
रकी बिराजटक गाल है सुनिसे सर
ना सुमिनसी अली अणिमानो बनि
रही कहै प्रसकस धौदसा स्व है सुनै
है अग्र अग्र बजाने मे अग्र सही चो
वाचये ना ना सो सुगंध न गति माल
है अन्न कि माल सह पर रन न ॥
बडे न कमाने स दिन गुन गान करे
है अग्र पाप जा पही पो प्र पूर है जानै
सूषमाने हरि संत सन माने सचै ब
चे अग्र तरी ति प्रीति जानी क
रहो ॥ तउ हुना अको उ क सै के अनाथ स

के समझौ न जात मन के प्रनयो चरहे
 सो नित तिल कमाल चाल नुराजे ॥ प्र
 पेची नाना क्तमाल नगत रूप प्रति ह
 रिहै ॥ यामूल मंगला चरण को दोहा ॥
 नक्ति नगत नगवत गुर चनुनां सब प्रये
 का येन के पद रज बंधन की येना सत बि
 धन ग्रने का टीका बिसेष लक्षण बरणा
 न ॥ कि बत ॥ हरि गुरदास निसों सांचो स
 ही नक्त सही गही ये कटे क फिर नुरतै न
 टरी है नक्ति रस रूप को सरूप प्रये रुध
 बिसार ॥ चा स्वरु रिनां मलेत प्र स्व वन
 करी है ॥ वै ही नगवत सत प्रीति को बिचा
 र करे ॥ अरे इ रि ई सता ई पांड व न सों क
 री है ॥ गुरु गुरु ता ई की स चा ई ली दि धाई ॥
 जहां गा ई श्री पे सारी जू की रीति रंग नरी है ॥
 ५ ॥ मूल दोहा ॥ मंगल प्रादि बिचारि र
 लौ ॥ बस्तन और प्र नूप हरि जी को जस
 गावतै ॥ हरि जन मंगल रूप

निरनोंकीये॥मधिस्वतिपुराणप्रति
तास॥नजिबेकोंदेइसुधरकेहरिके
हरिदास॥श्रीगुरुप्रगदेवप्रग्याद
ईत्तकनकोजसगाये॥तबसागकेत
रनकोनाहिनप्रानुपाये॥प्रग्यादे
मेकीटीकाः॥मानसीसरूपमैलगेह
प्रगदासजूवेकरतबयारिनात्तामध
रसंनारसो॥चढेगहोजाहाजपैजसि
षयेकप्रापदानैकस्त्रीध्यानखीचो
मनधटोरूपसारसो॥कहतसंमूयग
बोहीतबहुतदूरि॥श्रीवेद्याबपूरिफ
रिढरेजाहिडारसुं॥लोचनउद्यारिके
निसारिकहाबोलेकोन॥उहाजोनपी
मीतदेंदेंसुकुवारसो॥१०॥प्रचरजदयोन
योयाहालोप्रबेसनयो॥मनसूषध
योजानेयेसंतनप्रनावको॥श्रीग्यातब
दईयेहनईतोपेसाधुक्रपा॥उनहीके
रूपगुनकहोहायेनावसुं॥बोल्योक

जे रिया को पावत न वोर छोर गावरा
 मरु हत नही पांउं न कि दाव को कहो
 सम ठापे बेही हिर दे प्रापे कहे सब ॥॥
 जिन ले दाषाय दई साग्र मै नाव कूं ॥
 ना नाजूकी आदि अत्र स्याब र एन
 ॥ हाण मान बसही मै जनम प्रसिधि
 जाको ॥ नयो दृग ही न सोन वीन बा
 त धारी है ॥ उं मरि बरष पांच मानिके
 अकाल आंचा मां तावन थो दिगई बि
 पति बिचारी है ॥ कील जौ अग्रताहि
 उग्र दरस दीयो ॥ लीयो थो अनाथ ज
 नि ॥ पूछि सो उचारी है ॥ बडे सिधज
 ललै कमंडल सौं सीचे नैन चैन नये
 पूले चष जोरी को निहारी है ॥ पाये परि
 आसू प्राये कृपा करि संगित्याये ॥ की
 ल अग्ना पाये मंत्र अग्रही सुनायो है ॥

यो है चरण प्रथम लिखंत सीत से म्र
 नंत प्रीति जा निरसरी तिताते हर
 देरंग ध्यायो है चरि बंद वारता को पा
 वै कौन पारावार जै सो नी किरूप
 सा जग नृ प्रयापना है मूल जै जै
 की न बराह क मठ नर हरि बोलि बं व
 ना पर सदा मरु वीर क लकीरति
 जय प्रां न बुद्ध के व व्यास प्र
 हरि सं सम न्वंतर जज कष न हे
 प्र गी व धु व बर दे न ध वं तर बड़ी
 प्रति दत के प्र ल दे व का किक कर
 एा करौ चो बीस रूप लीला दु चिं श्री
 जगुंस ज पद नुर धरो दी को ॥ जिते
 ७ वतार स प्र सागु न पार पार करे बि
 सतार लीला जिव नि उ धार कौ जा ही
 रूप मा फि स न लागे जा को प्रा गे ते ही
 जा गौ ही ग्या व द पा वै कौ न पार कौ
 सब ही है निति ध्यांत करत प्र का से

धितैसैरंकपावै बित जोपै जानै सारको ॥ नोक्त
केसनि कुटलताई जैसैमान सुप्रदाई ॥ प्र
गसुरीति नाई ॥ बसो नुरहारको ॥ मुला ॥
चरणचरुनरुधुबीरकेसतनसदासह
यैका ॥ प्रकुसुप्रवरकुलिसकलमलज
बधुजाधै निपदा ॥ सषचक्र स्वस्तिक
जबफलकलससुधाहृदा ॥ प्रहृचंद्रषट
कौनमीनबिंदु नुरधरेषा ॥ प्रष्टकौण
त्रेकौणईधनुपुरसबसेषा ॥ सीतांपति
पदनितिबसता ॥ धैतेमंगलदाप्रका ॥
चरणचरुनरुधुबीरकेसतनसदासह
यैका ॥ टीकासतनसहायैका ॥ जधारेनर
पराजरांमचरणसरोजनिमैचिन्ह
सुप्रदाईये ॥ मनहीमतंगमतवारील
धिप्रविनीहि ॥ ताकेलीये प्रकुसलेषा
सोउरध्याईये ॥ जैसैहीकुलसपापपर
बतनकेफेरिवेको ॥ त्रिकुनिधिजोरि
बेकोकजमानस्यारिये ॥ जोपैबुधिवंत
स्वसंपतिमैकरिले ॥ बचारसबनिस

दिनगाइये। मूल। विधि नारदसंकर
सन्कादिक। कपालिदेवतबुनूपन
रुरिदास जनकनाथमबालिसुकमु
निधरमसरूप। अंतरंगअनुचररु
रिजूके। जोईनकेजसगावे। आदिअं
तिलोमगलतिनके संश्रीतावकता
पावे। अज्ञानेलप्रसगयेरुनिरनेप
रमधरमकेजांन। इनकीकिरपाअ
रपुनिसमऊ। द्वादसचक्रप्रधान
टीका। द्वादसप्रसिधन्नरु राजकथा
नागवत अतिसुषदाई नानाविधि
करिगां है। चिन्हकांवातियेकाबो
ध्यानजांनैकोज। सुनिसरसांनेहीये
नावडुरायेहै। सीताकेबियोगराम
बिकलबिपानदेधि। संकरनिपुनि
सतीबचनसुनायेहै। कैसेये प्रवीन
इसकोतुकनवी नदेधौ। मनेहूकर
तअंगवैसैतोबदायेहै। सीताहीसो
अपबेसकेसहनफेरफार। रामजं

नहारिनेकमनमें नप्रतिष्ठितबफिरिप्रा
 येके लनायेदईसंकरको॥ प्रतिदुषपाय
 बहुबिधिस्मरुईसैईष्टकोसरूपध
 र्मो॥ तातैतनप्ररुस्यो॥ पस्योबडोसोच
 मातप्रतिनरसाईहै॥ ऐसेप्रननावपे
 पोधिनेमेंजगसंगे॥ लगेसोकोप्यारेये
 हवातरीकिगाईहै॥ चलेजातजेतेमवे
 मेरेसिद्धदीडिपरेमकरेप्रनाम्
 तिलागीप्यारी॥

बसोउचार

नीहोसु
 वबडो॥ रडोकेसेजातचडोरगप्रति
 नारीहै॥ च॥ प्रजानेनकीटीका॥
 पितृमात प्रजानेनसा

खिटा करि सावधान सेते निरीजय लीषो
नारायण ननावधस्यो गुनबालबालकी १५
सौजका नौलेके पोतकी कर प्रह
सकाह दुष्टने पठाये साधन प्राये ग्रह
देखि बुद्धि प्राये गइसातकी ॥१५॥ प्रा
गयो काल मोरुजाल नैल पटि र हो
अबिकराल जन्म हूतसु दिषायो दे
वोही सुत नारायण ननाम जो कपाके
दीयो लगेयो पुनरे २२ प्रारति सु
नाईसौ सनतही पारषद प्राये वाहा ठो
र दौरितो रिंघासिके ले चरम समका
ये सारे ले बिडरे जाये पति ये पुकारे
कही गुनो बजसारे मत्पजा वो रुदिगा
ईये ॥ मूल ॥ मोचित बूति नितित संर
हो ॥ जहानारायण पद पारषद बि सु
कसे न जये बिजये प्रबल मंगलकारी
चंड प्रचंड बि नति पुनीत कु मुद कु
मद हिकरुणाल दो सील सु सील सु
सेन ननावनग त प्रतिपालय लक्षि

सेवाया

नीपतिप्रीननप्रवीननजुनांनंदनक
निरुद्धमोचतवृत्तिनिर्नितताहारलौतहा
नारायणपदपारषदः। टीकाचारषद
मुद्राकहेसोररुस्यन्तावसिचसेवासी
करिधिस्त्रीयेराषीबहुजोरिके। आपति
नारायणकेप्रीननप्रवीननमहाध्यान
करेजनपालेत्तावदृगकोरके। सब
कादिकदीयोआपपेरकेदावायोआप
प्रगटकेकसोपीयोसुधाजिमिद्योरि
कोगहाप्रतिकूलतार्जोयेईसमन
रियातेंदीतिरुद्गाईधरीरंगबोलेरिक्के
मल॥ हरिबलनसचप्रारथो॥ जिनच
रणैरिप्रसाधरी॥ कमलागरडसु
दप्रदिषोडसप्रचूपदरति॥ लूनवत
सवंतसुग्रावबिन्नाषनसिवरीषग
पतिध्रुवउद्धवप्रंबराषबिदुरप्र
नसदाभा॥ चंद्रहासचत्रकेतग्राहाग
जपांडवनाम॥ कोषा॥ रवेकतीबध्र
टखैचतलज्जाहरी॥ हरिबलनसब

रथो॥ जिन् चरणैः शिः प्रासाधरिः ती
का॥ हरिकैवल्यनरुद्धे न न न न न न न
फि तिनहीकापदरे नू प्रासाजीयधरी
हे जोगीजतीतपीतासू मेरो क दू क
मनाहि प्रीतिप्रतीतिरीतिमेरीमति
हरीहे कमलागरुडजामवानस्पृशी
वज्रादिसबैरसस्वादकथापोधीनसे
धरीहे प्रनूसौसचाई जगकारतिच
लाई प्रतिमेरेमनचाईसु सुदाईरव
नरीहे २२॥ श्रीरुनननन कीटीका
रतनप्रपारसारसगुडधारकीयेति
येहितचायेके बनांमालाकरीहे सु
बेसखसाजर घुनांथमारा जजके
नरु बन्तीघनज नेप्रानिनेटधरीहे
सन्ताहीकाचाहिप्रवगाहिरुनंमान
गरिंडारिईसुधितईमतिप्रदबरीहे
रामीबिनकांमकौनफेरिमनडारिही
ने घोत्रिचुचानामहीदषायो बु
धिहरीहे २३॥ श्रीरु नीघनन कीटीका

नृजो बिना प्रनकी है प्रे सो को न ६।
 नन प्रपे क थू क सी जा त सु नों चा त ल
 ये को च ल त जा हा ज परी अ ट क बि
 चा र का यो को ई अ ग ली न र दी यो ले ब
 हा ये को जा ये ला ग्यो टा पू ता हि रा धि
 स न गो दि ला यो ॥ मो द न रि रा जा पा सि
 ग ये कि ल का ये के दि ष त सिं हा स न
 सौ कू दि परै ॥ नैन न र या हा के प्रा कार
 रा म दे षि ना ग जो षा ये के रु चि के सि
 धा स न के ये ले बै ठा ये ता धी न ते रा
 दो स नि री कि दे त मां नी सू न ब री है
 चा ह त म्भ षा री बिं द प्र ति हा अ न द न
 रि ड र क त नैन नी र टे कि ठा ठो छ री है
 तो उ न प्र ह्न हो ती छु न छि न छी न जो
 ति ह्नी ये क्क पाल क ही मे री म ति ड री
 हो क री सिं धू प्रा र मे रै ये हा स ष सार
 दी पर त न प्र पा र ल्या ये वा ई ठो र फे री है
 रा म नां न लि षि सा स न धि छ रि दी यो
 ता हि ठो र बे ठे मां नौ न यो त्त्रे र स्त प न यो

मही जे नाम न है म न म नो म म के ते

गये जो जिहाज सोई फेरि करि प्रायो ले
 लिप्रो प्ररुचां निपूओ ॥ सबसो बघान्त
 यो हीयो हलसायो ॥ सनिबि नैकेंच
 ढायो हो प्रस्यो नारकुदिनेक पायेन
 परसकीयो ॥ हस्यो मनदे धिरु घुना
 धर्ममनायो हे ॥ २६ ॥ श्री स्वामी जकार
 का ॥ बनमै रकृतनाम स्योरी करुल सब
 चरुतदह लसाधुतनूनताई है
 रजनीकेसे ॥ सरिषजा प्रमपुबेस
 करि लकरी निबोज धरि प्रावे मन
 नाई है ॥ न्नायेबेको मधगरि काक
 रीनबी निडारि ॥ बिग्य उह जाये नैक
 जातिन लघाई है ॥ उहित सवार कले
 कौन थूं बुरा रिगयो ॥ नयो हाये सो
 चको उबडो सुषदाई है ॥ २७ ॥ बके ही
 प्रसंग वैमातसि रंगनरे ॥ धस्यो देधि
 बोज कलो को नचौर प्रायो है ॥ करे नि
 ति चोरी प्रहेग हो वाहाये कदिना ॥ बि
 नापाये प्रातिवाकी मन नर

जैते निसचोकाहेलसिषसबसावधो
ना। प्रायेगसिहिलईकोपेतननायो
हादेषतसीरिषजलधाराचलीनेन
तते। बिननतेकसो जातकहाकधुपा
योहै। रघाहीठिरुनसोसाहितमहित
नगतछोतिपरजायेसोचछो। तके
सैकैनिकारीये। नृत्तिकोप्रतापरि
षजानतीनपटनीके। केरुकोटिबि
प्रताइयापेवारिडारीये। दापोबासप्रा
सरमने। सरवनमैनामदीये। कायो
सुनिरोससबैकोनीपातिन्यारीहै।
सिवरीसो। कसो। नुसरांमहरसनकरो
मैतो प्रलोकजातप्रग्याप्रनूपाईहै।
गुरुकेबियोगहीये। दारुनलेसोगदी
योनीयो। नहाजातप्रपैरांमप्रासला
गाहै। नरायेबैकोघाटनिसजातही
बूहारि। सबनइयोप्रवाररिषदेधि
थापागीहै। धूयोगयोनेककुंधि।

तत्रनेकताति करिके बिबेधगयो
 न्सायिनागीहै जलसौरुधर नयो
 नानाक्रमनरिगयो नयोपायोसो
 चतौसुजानैनअप्रतागीहै ३० ल्यावै
 बनबेरलागीरामकीअसैरि फल
 चाषेचरिराषेफिरिमावेडनजोग्य
 हैः आरुगमैरहैजायेलोचनबिध
 येकनूअवेरुवरायेदगपावेनिज
 नोगहैः असेहीबहोतहीनबीतेक
 गजोवतसीः अयेगयेअचकसूसी
 देसबसोगहैः अयेतननूनतईः
 अयेसूचिधिप्रिजायेः पूछेअपस्यो
 रीकसाः ठाः देसबलोगहैः पूछिपु
 छिअयेजाहास्योरीकोअसयातैव
 साः कसावैचैगवतीदेघोदगपासे
 हैः अयेगईअअनमैजानिकेयध
 रेअपइहीतेकरासाधं चषनासे
 हैः रबकिउठायेलई बिधातनइ

रि

रिखई तखिलतीररुरीपरपेनपासे
होइतेसुषपायेफलपायेकेसराये
वैशिकलेकिलकहमेरेदुषलेमंगना
लेलेकरतलेसोचसबबैठेरिषप्रस
ममै। डालकोबिगारसोसुधारकैसे
कीजीये। प्रावतसुनेहैबनपथरधुन
थकहै। आवैतबकहैयाकोनेदकहैदज
ये। येतनेहामारिसुनीस्योराकैबिरा
जेप्रानि। गयोअनमानचलोपगगहै
लीजीये। प्रायेधुनसायेकहीनारकोउ
पायेकहै। गहोपगनीलनीकेधुयेसु
चनीजीहै। ३३। श्रीषगपतिजराजकी
रीको। जानकीहरनकीये। वा। वृणमरन
काजसुनिसीताबानै। षगराजहोस्यो
अयोहै। बडीयेलराइलानी। दिहवारिफ
रिदीनी। राषप्रानकराममुखहैधिवोसु
हायोहै। प्रायेप्रापगोहिसीसधारिदग
धारसीच्योहैसुधिलइगितितनहजरा

योहै ॥ दसरथवतसालि ॥ कियोहोयो
 जलदान ॥ प्रेरुप्रतिसवसालि ॥ जोहैरु
 पधामपायोहै ॥ रम ॥ श्रीप्रमरीयकीटी
 प्रमरीषनरु ॥ कीजूरीतकोहुक
 रेओरुहोहोहोहो ॥ किहोजोतचहीजा
 प्रिये ॥ दुबासारीवी ॥ सिंघसुबीनरु
 काहसाधुमांनिप्रपराधसिरुहोषे
 चिन्नानाशिविये ॥ लईनुपजायेकाल
 कृत्पाबिकालरूपनूपसाधीररुहो
 हाहोप्रनितलाषीये ॥ चक्रदुद्धमांनि
 लेकसांनतेजरारबकरी ॥ परीत्तरिबु
 स्तन ॥ ता ॥ एतहा ॥ जोहै ॥ नन्यौ ॥ हसु
 दिस ॥ गेहोहोहोहोहो ॥ पाहए ॥ सिगयो
 नयोतेजकचूनकीयेंडारैहै ॥ हंसासि
 वकहीयेहगहीतुमरेकबुरी ॥ हासन
 कोनेदनहीजानेबिदधारैहै ॥ पहचैबे
 कुठजायेकसौ ॥ दुषप्रकुलाय ॥ हायेह
 येराषी ॥ प्रनूषरोतनजारैहै ॥ मेतोह

अधीनतीनगुनकोलमानंभैरातीः॥
सत्यगुनस्वहृफेदरेहंनाकेपुः॥
यादेसाधुनकोजगात्रुनलरुः॥
पराधनेतुमससहोफेदेनानवेः॥
घनव्यानसुतधालननप्रारुदेः॥
मेरीवैरनिससनेदनामोनानेः॥
मसंतीवनजौरुहनुनांयक्रुदेः॥
वाधेदेरडातेनिदेडनगानेः॥
स्याससद्यहीनडनगानेः॥
संक्रुदनाडिनगानेः॥
धितरालरुप्रुधोदिरुगः॥

सबै ते जडां किराष्यो है येक नरपसु
तासु निष्प्रमरीष न गति नाव नये
हीये चव जे सोबर करि लाजीये
पितासो नि संक केके कस। पतकी
यो मेही विनें मां नि मेरी चाठी लिधि
दाजीये । तोलेके च ल्या बि प्रथि प
उही पुरी गयो नये चव जान्यो जे
पैके से तीया ची जीसे कसौ तुम जाय
रानी बिठी सत ज्ञाप्ये मो कौ बो ल्यो न
सूहायि प्र नू सेवा मा ग नी जी से ३५
कस्यो नृपसुतासै जूकी जीये जत के न
पौ न जि म ग यो ज्ञायो का म न ही बी या
को फेरिके पठायो सुषयायो मै तो ज
न्यो है ब मो धर न्म ग्य वा कै लो न ही
तायाको बोली प्र कु लायै मन भक्ति
हीरी ऊय लीयो कीयो पति सुष न ही
देषो ज्ञे र पायाको जायेके नि संक य
है वात तुम कसौ मेरी चेरी जो न करे।

तोपेलेहोपापजायाको... कहीबिप्र
जयिसुनिचासिन... रायगयोदयोले
पडगयासोंफेरा... फरिलाजायो। नयो
जाबिवाहउतसाहकहमानना... सिज्जडि
पुरअंमराषदेषि... बिनाजापे। क
होनवेमंडमे... अरिकेबसेरादेवो। दे
वासबनेगबि... नानासुषकाजीये।
पुरबजंमकेउमे... र्त्तिकंगंधरुती। य
तैसनबंधप्रायो... र्त्तमानिघाजीये।
रजनेकेसेसपति... नवनपुबसका।
लोपोपेमसाधि... डिगमंडकेप्रारिहो।
हरिटहलुपात्र... चौकाकरिरीकिरु।
गहीको... जायजा... होलनलप... इ
ग्रा... राजादेषिली... न... निम... घ
किहंकौनचोर... प्रायोमेरोसेवालेच
देवीदिनतीनि... पिरीचि... निकेपुव।
... जेसोमनजापे... पुनमाथेपधर।
... लईबतमांनिमानोमंत्रलेसु...
... कान... होतहीबिहानसेवानाका।

राईसै कस्तसिंगारफिरिआयहीनि
हारिरसै लहैनहीपारदगजरीसाल
गाईसै नईबडवारराज नोगसोंप्र
पारनावनकिबिसतारहीतिपुरस्य
बध्नाईसै नपहू सु. पध्नावापी
चौपदेधिवेकी। आयततकालमंदेधि
प्रकूलईसै। हरेहरेपावधरेपोरीया
निमनैकरै। धरेप्रखरेकबदेधौना
गजरीको। गयेचलिमंडलौसुंडीनस
धिप्रगरंगनीजिरहादगलापररु
रीको। बीणलेबजावैगावैलालनेरि
जावै। लोकोप्रतिकलजावै। कसैचंनि
येधरीको। दारपैनवरसौ जायगये
ललचायेदिगनरुहिडाहादेधिराजा
गुहरीको। ७७। बैसेहाबजावोबीन
ताननिनबीनलेकेजीनेसुरकानप
देजातिमतिषोदरे। जैसेरंगनीजि
रहाकहीसो। तनोपैप्रपेमनने
नचैनकेसैकरिगोई। वारकेरला

चारिफेरिकै संस्कारौ तैतां कप्रयैगयोध्या
नरूपताहीमाजि नोईये। श्रीतिरसरु
पनईरातिसबबतीतिगई। न कंशु
रीतिप्रहोजाकेनहासोईये। बातसु
निरांनी। औरराजागयेनई। दौना। नई
सिरमौरप्रबकोनवाकासरहे। सुन।
लेसेवाकरैपतिमतिबसिकरै। धरे
नितिध्यांनबिषेबुधिराघीधरी। ले।
सुनिकेप्रसन्नये। प्रतिसुंमरीषई
सात्वागीचौंपफे। गइ। नीकधरधर
है। बडेदिनदियाव। प्रैसोहा। प्रनावके
जापलदि। सुनावहे। तप्रानंदको। नर
है। न। ध। श्री। पदु। जु। दी। न। न। कति। ही
बिदुरनारि। प्रंग। नपधोरिकरि। प्रायै
येक। ह। ह। र। बो। लिके। सुनायो। है। सु
तही। खरसुधि। डा। बिले। निहरि। माने।
धौ। मदनरि। ह। र। प्रानिके। चिताये
न। न। न। न। न। क। ट। ल। प। ट। यै। ल

बैठी डिग प्राय के रो छिरे ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
प्रायोपति छि ज्यो ॥ दुषको टि गुं नो या
यो है ॥ प्रेमको बिचा ॥ २ ॥ पलागे फ
ल सार ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
इषदा है ॥ बोले री फि स्यां न तु म क र
ब डो कां न ॥ अ पें स्वा द अ न्निरां म वें स
ब स म ॥ न पा ई है ॥ ज्ञा या ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
रे का टि ड रौं सा ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
ये छी ल छि ल का न ना य है ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
बा त दे उ के उ पार पा वें ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
कै ल ड वें से ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
श्री सु द म ज की टी का ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
म से र चूं न ह न धा म डि ग प्रा य नि ज
बां स प्रा ति ह रि सों ज ना ई है ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
च प स्त्रो हा यो ष रौं अ र ब स्यो ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
ढो ले के क रौं ॥ बो ल्यो हां जु सर सा ई है ॥
जा वी ये क बार वें ब द न नि ह रि अ व्रो
ज्ञा पें कु छु प वें ल्या वें मो क सु प द
ई है ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

है जानियाहालायेकीनीनिंत्रताई
हैः४५त्रायासुनिकहैः३६रूपको
नचहै जायेदहैदुषप्रपहासंबच
नसुनायेहैः प्रायेसुधिपारकीदि।
चारैस्मतिटारेसबधारेमगधगमूनि
द्वारवतीप्रायेहैः देधिकेबिन्नतिसु
षनुपज्योऽपून्तकोउचत्योसुष
माधुरीकेलोचनतिसायेहैः उदप
तहीयो उोहालाधिसनगाढोकायो
लीयोकरगरुचाहृतहापहैचायेहै
५० देष्योस्यामप्रायोकिंत्रचातवतर
हैनेकुहितकेचरित्रदौरिः रेयेगे
लागेहैः मानयेकतननयोः ३३ से
लायेआतीनयो येरुपेसधरेनाहि
अंगपागेहैः प्राईदुबराईसुधिनि
लनछुटाईः तांतेप्रातेडलराणीप
धोयेनागजागेहैः सेजपधराये
रुचरचाचलाये सुषसाधबुडा
प्रायेऽपून्रागेहैः ५१ चारवाधिपा

लसोकपोलमधिगोलयेकगंडकी
सुतकाहिसेवाबीकीनीहै। नयेतदा
कारयोनिहारिसुषचारनरिनैनन
कीकेरनहासुं प्राग्पोनीहै। गयेर
मरुगये दयाप्रायेकधूनापत्तरे।
दुरेप्रचं औरमति। नंदसौत्तोत्ता
है। हृतीछठीप्रागरीसुकाटिलईहु
घनहैतनुघनहीनयो। ज्ञापेकही
साचचीनीहै। ५६ वैहृदेसचूमिमें
जूरहृतलघूत्तपशोर औरसुषसहै
येकर तचाहृनारहै। निकस्यो। बि
पनिश्रानि। देधियाहिमोदमांनिकी
नाषगच्छाहृ। धरोमृगीपांतिसारीहै।
दौरिकै निसंकलीयो। पायेनिधिरंक
जुयो। कायोमननायोसेबचायो श्री
येवारीहै। कोउदिनबीतेबरपनये
चितचीते। दीयोराजकोतिलका। चा
वृत्तगतिबिसतारीहै। ५७ रहेनाके

देससे नरेस्कधुपावेनाहि बाहु बल
जेरि हीसं चिख पढायेको। प्राये बरना
निकायो प्रति सनमान सो पिछानि
लीयो। बैहै बलनारो छल छायेको। हई
लिषिची ठाजायेको र सुतरु पिदीजे।
काज्यो वरुवात जाको प्रायेले लिषायेको
गये पुरपा सिबाग सेवामा तपाग करी।
नरादगना हनेक सोयो सुषपायेको।
लतसुलीनसू प्राईबाई बागमा।
करि प्रनूराग नइपारी दे धिरी को। पा
गन पिपाती छु बिनाती। मुकिषे चिल
ईबां चिषो लिलिषो बिष देन पीताषीज
हो। बिषीया सुनाम प्रनिरो मद्ग प्रज
नसे। बिषीया बनाये मन नाईरि सतीज
हो। प्रायेमि लिप्रालीनमें लालनिको थ
नहाये। प्रायेम दमाने। गुरे प्रायेज बच
जीहै। पसे उठो चंद्रस जिरुपा सिलि
प्राये। प्रायेदे विजन भायो। गाढे गरेसे
लगायो वरु। प। हईरि पाती बात लीषान

ये जीयेतरपपाये जैसो नैक तनके
 राषीये कही जिते बात अदि प्रंत
 सहात हाये पदे नीति प्रत फल जैम
 निने साषी है ६५ सब दा र क को द्य
 को धार वना मजे खषान की पो न्न न्न
 जूने मै जै प्र निरा म रिष जां निली जे
 बात मै अग्या प्र नू द ई जा व च गत
 है बि इ र मेरो करौं उ प दे स रूप गात
 गात मै अत बि न्ने के न के न ना ग व
 तथा त जा ६५ दा प्र न्न न्न न्न ति कूल
 फूल छात मै अत कूरु श दि क व न पे
 सब न गत उ भवन से प्यारे को ध्यात
 पात पात मै ६५ श्री तु ती न्नी की वी का
 कुंत कर तू ति कै सी क करै को न नू त प्र
 ना ना प्र बि पति जा सो ना जै सब न्न
 है देष्यो न्नु व चा हल ल दे खे बि न ही
 प्र स ल ल ही जो ये कृ पाल न लो दी जे वा स
 व न से देखि बि क ला ई प्र न्न शं धि न्न

विश्रांतिपरिचरसाकल्याणीकस्मरप्रो
ततनवनसोसरवनवियोगसुनि
तनकनरहोगयोः प्रपत्तारोप्रसोपे
हासांपनहै ६६ श्रीश्रीपतीजुकीमीका
दोपतीसतीकीबालकहै प्रैसोकोनपु
पुषेचतहापरपरकोदिगुनोंनृया
दारकाकेनायखीसीजवसागिहते
हास्कसूफेरिउगयेनकधानीनईहो
गयेदुरबासागिघवनकेपहापेनीच
परमपुत्रवोसिधिनैग्राधपननयन
सेजननिचाविलीयेउगएकहासाच
सोचासितनग्रागोकहाकिक्रमकहा
वै ६३ सुनोन्नगधनकेरुचलन
भित्तनयनकेकहाचलनसाय
जेस्येयननकेअननईकहापुई
कहापुईकेकहाकहाकहापुई
मेषामाहकहाकहाकहाकहा
कहाकहाकहाकहाकहाकहा
कहाकहाकहाकहाकहाकहा
कहाकहाकहाकहाकहाकहा
कहाकहाकहाकहाकहाकहा

बि- गनेंकोनैनांमसै। मूलपा
दप्रकवाधोसदा। जिनकेउररुनि
तिबसैः जागे-रुदर-तिवध-प
कचकंदे प्रीप-तलता। प्रधूपरी
षदसेष सुतसांनक-चेता-स्वत
रुपात्रयसता- नितिसतीसबही
मंदोलस। जगपतनीवृजनारिकी
येकेसवप्रपनैवस। जेसनरनारा
जितेतिनहाकेगावजसे। पादपक
वाधोसदा। जिनकेरुनिउर नितिब
सै-१०टीका। जिनहाकेरुनिउरबसै
तिनहाकेप्रदरै निचैनदैनग्राचर
नकाजीये। योजेस्वरुप्रादस्वादने
प्रबानमहाबीनश्रुतदेवताकी
बातकहैहीजीये। प्रायेरुनिउरदेधि
गयोप्रेमनरिहायो। नुचोकरिकर
प्रदफेरिमतनीजीसै। जेतैसाधूस
गतिनैबिनेनप्रसंगकीयो नुप
समोसोबडियासलीजीये। हसि
ल। प्रच्छाप्रबु जपासुकोजनसज

नमहौ ज्ञाचिहौ। प्राचीन बरहसतवृत्त
रघुगनस गरत्तागदथ बालजाव
मथलेस। गयेजेते गोविंदपथ। रुव
मागदहुरिचंदरथदधाचनुदा
रासुरथसुधुंन्यासिवरसुभतिश्रुति
बलिकोदारा। नीलमेरुधजतामूध
जंपूलरककारतिराचिहौ। प्रधीप्र
बुजपांसु कौ। जनमजनमहौजा
चिहौ। शटीका धजनमपुनिजनमको
नमेरेकधुसेधुप्रहो। सतपदकंडे
निसीसपरिधारीये। प्राचीनबरह
आदिफथा प्रसिधजगनुनेवाल
मीकबातचिततेनटारीये। नयेनील
संगनीलरिषसंगरिष। नयो न
पोरामइसनलीलाबिसतानीस। जे
जनगाय। किहूसकेनप्रधाये। चाये
पनरिहायेनेन। नरिदारीये। ह
सरेबा वनीकजू काटीका। हतावाल

मीकयेकस्यप्रचसुनामताकोस्य
 मलेप्रगटकीयोत्तारथभगदिये
 डीनमधिप्रधिधरमः प्रराजाग्रा
 पकानौजगपनारीः रिषप्रधिचूनि
 ध्यइहिनः ॥ १०७७ ॥ नावसुचसंघ
 से ॥ १०७८ ॥ जैनाजाजैतोहपू
 रणात्प्रदुःखी सोहात्प्रदुःखी बा
 ज्यौनातिसौच्यः ॥ यद्येप्रनूपासि
 याकीनूनतावताइये बोलेकस्य
 देव याकोसुनासबभे ॥ ज्येनाकी
 मांनिः ॥ १०७९ ॥ रीसममरिहै ॥ १०
 गवतसंतरसवतकोजुजैपोनाहि
 रिषनसन्नूनिचहुदिसद्यइहै
 जोपेनगतनांनिनाहिकैसैकहुगहु
 गांसयेकज्येकरकुलजातिसाबिसाइये
 दासनकोदासप्रनमानकोनकेसब
 सः ॥ १०८० ॥ प्रासजोपेज्येसोलेजिनरि
 ये ॥ १०८१ ॥ रिदासपुरुप्रासियासिदीसन

निसदिनचोरसाग

आवेजायेयेकाहवातननजनाइये
सुनिसबचौकिपेरनावप्रचरजने
हरेकननेनप्रजुबग्यदेबताइयेक
हानावकहाठावजहाहमजायेदेवो
सिधेकरनागजायपायेलिपटाये
७३जेतेमेरेदासकचूचाहिनप्रकास
तयो॥कुरोडोप्रकासमानेकहादुषहा
रिहिनोकोयस्योसोचयेजबप्रनक
दोचहियेलायेवाकोनामजिनगाम
तजिजाइये॥जेसैतुनकहोजामेरह
न्यारेप्यारेसदा॥मैहीलिवायेत्याये
नाकैकैजमाइयेजावेबालमीकध
रबडोप्रबलाकसाधुकायोप्रघरा
धरुमैदायोजोबताइये७४॥प्ररज्ज
नप्रोनामसेनचलेइनिमंरुनकोप्र
त्रुडारिकहोचक्रनावदूरिहोपह

गनकौ ॥ सुनिनरपमालीयासि प्राये
सुषयावसी ॥ कहेकेजुपुपाये सुरग
लोककौपंठाय दृजि ॥ करैयेकादसीज
लकरधरैजावसी ॥ बृतकोतोनांसई
गानकौउजाने ॥ सि ॥ कानौहोप्रजा
निकाकिल्यावे ॥ नगावसी ॥ ७५के
रीनरपडौडी ॥ सुनीबनीयांकौलौडी
नूषीरहीहाकनौडी ॥ नीसजागीउत
मारीहै ॥ राजादिगप्रानिकहीदानो
ब्रह्मसा ॥ नईत्रियायोउडांन नीज
लेककौपधराहै ॥ मैसाप्रपारहै
धिदनुपनौ ॥ ८५के ॥ कोनुप्र
नमघायताकंबोधिमारिउाराये ॥
या ॥ ८५के ॥ वनावनीकिबिस्तारन
यो ॥ नयोचोजनयोसब ॥ रीलेउधा
रीहै ॥ ८० ॥ येकादसाब ॥ ८५के ॥ इतरे
दीघाईराजासुताकानिकाईसुनौनी
॥ चतला ॥ येपितानवनप्रायोप
ति ॥ धनैसताथा ॥ प्रतिमागेत्रीयापास

नृदिषोपेसनायः ॐ प्राजुरुविवासर
सेतासरनपूजेकोनुदुरकाहामीच
कोपेमान्नीसुषयायकोः तजेनुनपे
नपागेषेग्नगवानबधूहायेसर
साननईकसोपनगायकेः ॥ ८१ ॥ ॐ
दोपेदकीटीका ॥ सुनिरुचिचंद्रकथ
बिषाबिनइव्दीयोतधानहीरापी
बेचिसुततायातनहेः ॥ खरथसुच्छ
जसौदोषकेकरतमेरसंघञ्जेनिष
तबिप्रचयोमैलेमानहेः ॥ इड्प्रोग्
ग्निगयेः ॥ स्वपेपरस्थालेनकाटि
दायोमांसरीजसंघोजान्घोपनहेः
मरथदधीचग्नादिनागवतलीचि
गायेसबनसुहायेजिनदापोतन
धनहेः ॥ ८२ ॥ श्रींदावलीतीटीना
बिदावलीतायासीनदेषीकहूत्री
यानेनबाधौप्रनूपायादेधिकापो
मनचोगुनौः करिप्रचननालदोनदे
नबैठोतुनसाकौकापोप्रपमानमे

तौ मान्यौ सुखसोगुनौ च वनध
निलीपैवै रादेवता निपानमात्र
हरिप्रान्धौ नही प्रौ गुनौ प्रैसै नग
तिहोपजोपै जागोरहौ सेष प्रहार
हो नवमां ऊ प्र चपैलागै नही नौ
गुनौ ॥ ८३ ॥ दोर धजुकीटीका ॥ प्र
जुनकै ग्रननयो क्रक्ष प्रनूजानि
लयो दयोरस नारी याहि रोगलेसि
राये के मेरोयेक नगत प्राये तोके
ले ॥ ८४ ॥ उत्तलि ॥ व प्र वृद्ध संग ला
लचलिजाईये पसेचतनाषौजा
ये मोरधजर कहां बेग्यसुधिदेवे
कहि ॥ तजाजनाई है सेवा प्रनू
करो नैकरहोपायचरो जापे कहे
तुमबैहो कही प्राग्पस्वालगाई है ॥
८५ ॥ चदे ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
ये जाये नरपसोंज नाई ततकाल
दोरि प्राये है बडी कृपा करी प्राजु
फलीचाहबेलिमेरे ॥ निपटनबे

लिफलप्राये जातै पाये है ॥ राजे प्रग
नो हिसो हाक जे सुप्रलो जे बसाप जे
बानी रस मे रे नैन लै सि राये है सुनि
को धगयो मोहन यो सो पर ध्या ही ली
ये च्यत चाव प्रे से बचन सुनाये है
५॥ देवे का प्रे सिंग्या के रो करी जो प्रत
ग्या समजा हिना तिसु घें तुमै सो ही न
कौना है ॥ जिन्यो मध सिंघ ये ही बा
लक कौ घाये जात कही घावो मो हाये
नही ये हा सुप्रदा है ॥ कालो नाति छे
उ नर प्र प्रो जो सरीर प्रो वै ॥ तौ हाय
हीत जू कही घात मो जना है ॥ बोली व
पा प्र र धगी मो हि जाये दे लो ॥ पुत्र क
है मो कौ ले हे प्रौर सु धि प्र है ॥ सुनो
ये क धात सुत तीया लै करौ त गात च
रे धी रे नी रे ना हि पाये ॥ उन ना घी ये क
नो उ हा ना ति प्र हो ना सा लग प्रायो ॥
जब ह स्त्रो द्ग नार नीर वा करिन चा

विषे चत्प्रनपाय गले पा ॥ १ ॥
सनाये वैतने न जल बाये प्रंगका
नका रुनापीये सनिनरि प्रायोह
यो ॥ न. न. न. न. कायो दायो सु
षरुष विथाग इप्रनलापी है ॥ २७ ॥
भापे तो नदी योजा ॥ निपटरी ज
पेलीयो ॥ तो नरी रुदीये बिना मेरे
हाये साल है ॥ साजोबरको टिको टि
बदलो नचकत है ॥ सूषत है मष
सधि प्राये व ॥ लदा ॥ बील्यो न
की राजत प्रबडे ॥ राजको न ॥ योरो
ली करत काज मानो कत जाल है ॥ ये
कमो की दीने दो नदीयो ॥ वषान व
ज्या सा ॥ ये परध्रान करौ कलका
ल है ॥ २८ ॥ जू ल र ज ॥ टी ल ॥ ॥ ॥
लरका किकार ति नै रा चौ निति सा
चो साये काये नुपदे सत रुन धूटे बि
धे वासना ॥ सांता म ॥ ल सा का बडी

ह प्रसन्न्यास नौ प्रविशो गूजनां विदे
दिग्नप्रसन्नो पतिके निहारे त
तैरहो छोटो कोरो ताको लेगधे निहारे
सिकासानरपसासनां नमु ध्या उह
रिक्के निहारि दतात्रे जुपे नये नधपा
करा प्रनूकी उपासनां नमु ध्या उह
निति चरन धूरि मो न रि सि र उ जा म
मायातिरे रि नु र द्या प्र ग म उ प्र न
गा धि र छु रे नो सु च्या म त थं द पा हं प्र
रोति उ प्र र र त नु त ग न रि द्या नो नो न
त म न्वा न्ने प्र न्ना जा नि न्ना प्र प्र
ज इ गु ह्ना न ध्या नां प्र प्र प्र प्र प्र
नारहा जं इ प्रि म र नो नो नो नो नो न
प म नो नो नो नो नो नो नो नो नो न
ज न न्ने रि न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना
ये जे न्ने रि न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना
न न्ने रि न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना
न न्ने रि न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना

रतिलईसो नूधे नूधे धिसकेअ
 वैसेउहायदेतनेतेनसकरे नूधे
 रुध्याननईहै चालीसअप्रोअठदि
 नपाधै अत्र नजलअः । दीयोबि
 प्रसुद्र नीच स्वानयेहनईहै हरि
 हा मिसुरैउनिमाफितबअथपत्र
 नाजग धजितेनगति धूरुः
 ६० अउरा काटी काः चालनको
 राजागुरु रामअन्यरामप्रीति न
 येबनबासमित्यो नारगमैअप
 कै करोयसुराजजुधिराजप्रसुधदी
 जेमोकौः बोलेचैनसाजतजअगया
 पतूपापैः हासनबियोगअप्र ली
 यद्गअप्रक्रपात पाधैलो जातध
 हैसकेकौनगायके रसनैनमंदि
 रहनुनाथबिनद वेलाहा प्रसोप्रम
 रीतिमेरेहायेरहाधैरैके ५१ चै ॥
 चै सबरषपाधैअथैरहनुनाथना

पसाधिकेतेनालकहैः प्राये पुनूदेध
 येबोलेयो प्रव पाउंकलहोतिनप्रतित
 कोरु प्रातिकरिजिलेराजकहीसोकै
 पेधायो। प्रसिधियुबेलपदानेसुष
 साग्रसमाने। प्राणपायेमानौ नागन
 ललेषायो। प्रेमकाजूबात कहूबाने
 मैसमानत नासिप्रतिप्रकुलालक
 होकैसैकैबिसेषायो। प्रजुनिमी
 ग्ररुनवजोगेसुरापद। त्रिनकाहोस
 रनि। कबिरुकिरुनाजननगतिर
 तनाकरिजारी। अंतरीधिप्ररुचनस
 अनंनिता पद्यतिनुधारी। प्रवृ
 चप्रेमकीरासिन्नूरिदुप्रबिरहोत
 धिपलडुमिलप्रसिधन्नवाधिसार
 केपोता। जयंतीनंदनजगतके त्रिबि
 धिताप्रप्रमयेरुन। निधिप्ररुनव
 जोगेसुरापद। त्रिनकाहोसरनि
 निधंतान

व्याससाधन की रतन सुदिसुमिरण
प्रसूनादा पृथुपुजाकमलाचरननि
बेदनसु फलकसुवन सुदोपति
कपीश्वर सरयत्वे गुरुगुरुपि
न ३ सुदिसुमिरण सुपजीबासुति
नामके रेतेत्रताश्रुगतिके पदप
रागकरनाकरो नयतानवध्या
नगतिके १५ श्रीरचितन कीटी
का सरवनरसिककहसुनेनपरी
क्षितसे पाने क रतलागे कोटि
गुणीप्यासहे सुनीमनमोडि किहं
श्रावतन वहीगुनसदिदेधिप्रयो
रूपरासहे कहीपुस्तिन सुषदेव
जूसौ देवमेरीलाजेजांनि प्रानला
गेकथानहातद्विककोत्रासहे की
जायेपर द्याउरश्रांतीसतिसानी
श्रुतेबांनी बिरमानी सुदिसुमिरण
निरासहे १२ श्रीक देव नु कीटीका
ग्रन्ततेनिकसिचलेबनहासेकायो

जायगी ॥ तासु ॥ लवा रवासका
पा ॥ चहु प र सो

बास ॥ व्यासये धिता क न सो नुतर ह
यो है ॥ इ स को स लै स नि ग न्य स ति
सरि ग इ ति ई न ई र ति प हि ॥ आ ग व त
ला यो है ॥ इ प गु न च र स लो जाल के लै
करि उ प्रा ये स नान र प ड रि नी ज्यो प्रेम
र स ली यो है ॥ पूछै ॥ न क नू प दो र दो र
पै र नौ र जा इ गाय उ डे ज ब म नौ र ग म
र का यो है ॥ ५३ ॥ प्र ॥ ज ॥ डी ॥
स म र न सा चो की यो ॥ ली यो है ॥ सि स ल
सो ॥ ये क न ग वान क लै का टे च वारि
है ॥ इ छै तै ब ता पो षं न ल सा ही दि वा यो
रु प प्र ग ट उ प्र नू प न क बानी ली सू या
र है ॥ इ छै उ रै मारि ग रै ग्रा ॥ तै न ई उ
शि त उ को थ को न पार है ॥ क ली को यो यं
बे चार है ॥ ५४ ॥ उ रै सि व ग्रा हि ग्रा हि हे
पान ली को थ उ प्रै सो ॥ उ प्रा व ल न हि ग
उ ल धि नी ह त्रा स है ॥ त ब लौ प ठा यो
ग ला द ग्रा है ॥ ना द म ला ॥ उ प्रो न ग ति

ब्याससावककीरतन। सुदिसुमिरण
प्रह्लेनाद। पृथुपुजाकमलाचरननि
बेदनसुफलकसुवनदापति
कपीश्वर। सरयत्वेयारथसमरपि
न ज्ञातमखलिधर गुपजीबीसुनि
नामकेरेतेत्रताअगतिके। पदप
रागकरनाकरौजेनयंतानवध
नगतिके१४ श्रीरितनकीरी
का। सरवनरसिककहसुनेनपर
चितसे। पानर्ककरतलागे। कोटि
गुणीप्रासहे। मुनीमनमांकि कि
आवतन। वहीग्रनमदिदेधिप्रथे
रूपरासहे। कहीप्रुक्तिज सुषदे
जस्ये। देवनेरीलजिजांनि। पानल
जेकथानहातदिककोत्रासहे। का
जायेपर। द्याउर। प्राणीमतिसाने।
अहोबांनी। बिरमोनी। जहाजावनि
निरासहे। १२ श्रीकदेवकीरी
ग्रनतेनिकसिचलेबनहामेकाये

नाटबोधरग... जलवारवासकति
नाकी॥ ताहीकोनीलारे चहूवोरसोअ
पारह

वास व्याससेपिताकूनहोउतरहही
योहै हृदसकेसत्तैसु निगुन्यमति
हरिगईतिईनईरीतिपाहुआगवत
लीयोहैरूपगुननरसहो जगतकेसै
करिअशयेसनानरपठरिनीज्योप्रेम
रसहीयोहै॥ पूछैअननूपदोरदोर
परेनौरजाइगायेउठैजबमांनौरंगरु
रकायोहै॥ २३॥ प्रहलादजूकाटीका॥
समरनसांचोकीये॥ लीयोहैखिसब
सीमो॥ येकनगवानकसैकाटैचवारी
है॥ पूछैतेबतायोषंनतसाहीदिषायो
रूपप्रगटअनूपनक्रबानीहासूप
रहो॥ दुष्टडारेमारिगरेअशयतैजईउ
रि॥ तउकोधकेनपारहैकहाकायो
बिचारहै॥ २४॥ हरेसिवप्रादिप्रादिदे
षानहीकोधअसो॥ अचतनदिग
कोउलधिमीहनासहै॥ तबतोपठा
प्रहलादअहैलादमहाअहोचगति

प्रकासी मंड व्यं विस्वामित्रं दुरवा
सास्रुश्रुप्रवासी जगवलि य
मदनि^मयाइसकस्यप प्रबतपारास
रपदरजधरो आनचत्र न ज प्रभ
तकास्यौ तिनचनतहोप्रव सरौ
१६ मूल साधनसाधिसवैरपुरा
नफलरूपीश्रीजागवत बुस वि
द्वी वसिर्वि पारद्विज बिम
वतारावामनमीनधराह ३ ग्री
फरमुउदारा गरुड नारदीनबीषा
धृत्तध्व तसरवन च्य मारकं
डेवृत्ताडकथानानाउपजेरु
प्रमथरमश्रीमुषकाथतच
कीनीगमसत साधनसाधिसवै
पुरांन फलरूपीश्रीजागवत १७
मूल दसप्राठ संमूर्तिजिनंउचरी
तिनपदसरसिजनालमो मनुस्म
तिप्रा श्रवेयेवैद्वबीहा विद्या
जागवत कप्रंगीरीसनैश्वैसास

तन्मोहो विनाशो बन्धनो विनाशो
मोहो विनाशो बन्धनो विनाशो
पिंपरात्तु बन्धनो विनाशो
सिद्धिदत्तु बन्धनो विनाशो
दस्युत्तु बन्धनो विनाशो
रहस्युत्तु बन्धनो विनाशो
ग्रनपापेनो जेरोत्तु बन्धनो विनाशो
कौत्तु बन्धनो विनाशो
चिरविनाशो राष्ट्रवदत्तु बन्धनो विनाशो
इपरनपुत्तु बन्धनो विनाशो
अरनपुत्तु बन्धनो विनाशो
मितचत्रुपूरत्तु बन्धनो विनाशो
रक्षुपति प्रसन्नत्तु बन्धनो विनाशो
प्रविन्नगरत्तु बन्धनो विनाशो
चिवत्तु बन्धनो विनाशो
इधिष्टिभो प्रकरोत्तु बन्धनो विनाशो
वायके दिनकरितुत्तु बन्धनो विनाशो
बधके सररीप्रोरत्तु बन्धनो विनाशो

हमयं हरि सुप्रति समकोपोर - १३
 उलकासु नट सुसैनदरी मुखकुम
 हनीलनल सरनांगव्य वादिप
 नसगंधमादनप्रतिबिल पदमप्र
 ठारहे प्रथपालनामकाज नटभीर
 के सुनदष्टिबृषमोपरकरो जेस
 लचर रघुबीरके २० मूल बृजब
 डे गोप परजन्म के सुतनी के नवनंद
 धरानंद ध्रुवनंद व्रताये उ अनंद
 सुजागर चतुरथतहा प्रचिनंद सु
 प्रसिंध उजागर सुठिब सुनंद पर
 पाल निरमल निशु प्रचिनंदन
 करमा धरमानंद प्रनुजबि
 दितब हचनंगव्ये इन आसिपासि
 वृब गके जहाबि हरतप २१ ध
 द बृजबडे गोप परजन्म के सुतनी
 के नवनंद २१ मूल बालबृधतर
 नारि गोपिले प्रथी ननपादरजन

दशोपिनुपनंद॥ श्रुवधरानंदमहुरि
जसोधाकारतिहावरषनांनकुब
री॥ ससुचरि बिलरतिमनमोदा॥ नधु
मगलसुबलसुबाहुनो जप्ररजुनश्री
दामा॥ मंडलीगुवालप्रनेकस्योनीसं
गाबहुनामा॥ द्योषनिबासीनकीक
पासुरनरबांधितश्रादिप्रजबालवृ
धनरनारिगोपिहोप्रधीउनपाहरज
र॥ मूल॥ बृजराजसुवनसंगसदन
नवनप्रनूरागसदाततपररहेधर
ककपत्रकप्रवर॥ पत्रिसबहामन
नावै॥ मधुकंदोमधुवृतरसालसु
बिसालसुहवै॥ प्रेमकंदमकरंद॥
श्रीनंदसदाचंद्रहासा॥ पपेदबकुल
रसदानसारदाबुधिप्रकासा॥ सेवा
समैबिचारिकेंचा॥ सुचतुरचितक
लहै॥ बृजराजसुवनसंगसदनवन
प्रनूंगसदाततपररहे॥ २३॥ सपतर

दापमे सजेते मेरे सिर ताज धज
बज्रैरपलषिसल्यमली बहतरा
जरिष कुसप बिबपु निकौचिकौन
मलनाडा जेला वे साक बिपुल बि
सतार प्रस्यधना नी प्रतिपु सुनप
रत बलोकालोक शोक टापूकंचन
धर हरि नूत बसत जे जा सो तिन
सौ निति प्रतिकाज सपत दीप मेदा
सजेते मेरे सिर ताज रथ मूल म
धि दीप नव षंड मे न क जिते मम
नूप ईला बृत प्राथ्यास सं धन
अनूंग सदा सिव रमन क म छुम
नुदास सिर एय कूर म प्र रज म ई व
रुधरा स नू म त्प ब र ष हरि स्या ब
प्रहैलादा कि र ध र म के पि न र थ
न रा ये णा बी णा ना दा दा स ग्री व
र ये न द अ व के तु का म क म लो प्र न
प म धि दीप नौ ष क मे न ग त जे ते म्प

चूप ॥ २५ ॥ सेत दीप में दास जे अवन ॥
स नौ तिन का कथा ॥ आ नारायेण के
बदन निरंतर ताई देखे ॥ पलक परे
जो बचिको टिज मजा तन लेखे ॥
तिन के इस न का जग ये जहा बीना
धारी ॥ स्यां नई ई ई कर सेना उलटि
अवन हा अधि कारी ॥ नारायेणी
अखाना इहु तहा प्रसंग ना हिनत
था ॥ सेत दीप में दास जे सरवन सु
नौ तिन की कथा ॥ रक्षा दी का रं खेत
दीप बासी सदा रूप के चपासी ॥ ग
ये नारद बिलासी ॥ उप देस प्रासत
गोही ॥ दई अ नू से न जि नि प्रलोरे ॥
त अ न द ग दे घे स दा ये न म ति अ
ति अ न रा गी है ॥ फि रे दुष पा ये जो ए
क ही आवे कू ठ ना थ ॥ सा य ली ये च
ले ॥ लंघी ॥ न ति अ ग पा गी है दे घी ॥

दापमेदासजेतेमे सिरताजः धजं
ब्रौरपलधिसंल्यमली बरुतरा
जरिष कुसप बित्रपुनिकौचिकौन
मरुताजांनैलधिः साकबिपुलबि
सतार प्रस्यधनामीप्रतिपुष्करप
रतबलोकालोक शोकटापूकचन
धर हरिभूतबसतजे जासोतिन
सौनितिप्रतिकाजः सपतदापमेदा
सजेतेमेरे सिरदताजः २४ मूलधम
धिदीपनवषंडमें नरुजितेमम
नूप ईलाबृतप्राध्यास संक्रषन
अध्यासः सिर सिव रमनकमधुम
नुदास सिरएयकूरमप्ररजमईव
कुस्ववरासुनूतप्रबधरुसिष्यं
प्रहेनादा किंपुरधरामकेपिन्नरथ
नराथेणा बीणोनादा नडासुग्रीव
स्येनदश्रुवकेतुकांनकमलांश्रु
पमधि पनौधकमं नगतजेतेमू

चूपा ॥ २५ ॥ सेतदीपमैदासजेप्रवृत्त ॥
सुनौ तिनकाकथा ॥ श्रीनारायेणके
वृद्धन निरंतरताईदेषै ॥ पत्रकपरै
जोबीचिकोटिजमजातनलेषै ॥
तिनकेइसनकाजगयेजसाबीता
धारी ॥ स्यांनईईकरसैन ॥ उलटि
प्रवृत्तहीप्रथिकारी ॥ नारायेणी
प्रख्यानाइहुतताप्रसंगनाहितत
था ॥ सेतदीपमैदासजेसरवृत्तस
नौ तिनकाकथा ॥ २६ ॥ टीका ॥ सेत
दीपबासीसदाकूपकेउपासी ॥ ग
येनावदबिलासी ॥ उपदेशप्रसल
गोहो ॥ ईप्रचूसैनजिनिप्रवीरे ॥
सप्रवृत्तदगदेषैसदाचैनमतिप्र
तिप्रनरागीहै ॥ किरेदुषपायेजाए
कसप्रवेकूटनाथ ॥ सायलीयेच
लैलषो ॥ नक्षिभंगपागीहैदेषो
येकसरखगरहो ॥ ध्यानअरिदि

राषो ॥ अत्र जपनहा ॥ स्यान्मसु निम
 रतिदिष्टाई है ॥ करणानि ध्यान कही
 सब भगवान पा ॥ चदि इष्टा जे सो पु
 कास्यो धुनिष्टाई है ॥ सु नि साध
 लीयो यो बरुतरिहा सिद्ध नये नये
 न किचो जे हरी तिले कै गाई है ॥ १२
 गये नीला चल जगनां धजू के देख
 वेकौं ॥ दि ह्यौ ॥ अनाचार सब पंड ॥ इ
 रिकाये है ॥ संगिले हजार सिख ॥ रंग
 नरि सेवा करे ॥ धरे हीये नाव गुहइ
 साये दीये है ॥ बोलि प्रभु वै ही प्रवेक
 रे अंगु कार ॥ मैतौ प्यार ही कौ लेत क
 वृं शौ गुन नलीये है ॥ तोड दिठ कानी
 फिर कही नही कान ॥ कानी लानी बि
 दवांनी बिधि कै संजात थीये है ॥ १४
 जो रावर नगत सो बसाये नही कही
 किती रती नही ल्यावे मन चोजइ सा
 ये है ॥ गस्टुड कौ आंगाई ॥ सोही
 मानिलई ॥ नुन स्या धिन समे ति ॥

निजदेसछोडिआयेहैजाग्यकैनि
हारे। औरहोरहीमगननयेयोपुगट
करिगुहनावपायोहै। वैसासबसेवा
करैस्याममनहुरैसदा। धरैसांचोपे
महियेप्रचूजूदिषायोहै। १०५ मूल।
चतुरमहंतदिगंचतुरनक्तिनूमिद
बेरहै। सुरतिप्रजाकृतिवेदरिषन
पुष्करिजग्येसे। सुरतिआमाकृति
उदधिपराजितबामनजैसे। श्रीराम
गुजगुरुबध। बिदतजगमगतका
री। सिवसंज्ञिताप्रनातग्यानसनका
दिकसारी। ईदिरायधतिउदारधी
सजासाखिसारंगकहै। चतुरमहं
तदिग। जचतुरनगतिचूहोबेरहै।
३२ मूल। प्राचारजूजामातकीकथा
सुनतहरिहोपरति। कोउमात्साधारि
भरतकबहोसरतमेंप्रायो। हारकर
तज्योबधतनोतिस्वकुठमबुलायो
मासकोचैहिबिषतबहाहरिपूरतै

पनको बिदा होये पधारे
ननमगमे सिधारे बिप्र देषत
बिचारे द्वार बिधा नई मनको
गयो प्रनमान ज्ञानिमंदमम
ननये नये गलाजबानिबी
निलेतकनको ॥१॥ पायल्यटा
ये जंग अरिमें लुटाये कहें करो
मननाये और हीन बहना
षो है कही नगतराज तुम क
रपा भै समाज पाये ॥ गा ॥ ५

था

७. वकरो निजदास
मनप्रतिज्ञ
निदाषो है का ॥ ५ ॥ समाज ॥
कोउ प्रसे जल विजा
नांति छर रराषो है ॥ ११ ॥ मू
त ॥ श्री नारगुप संक ॥ श्री वन
अध्यान सूचि ॥ गस्तगवनकी

यो प्रदेश सिधसुरधुनीहडाशिये
 कमजाननितिपानयेकसदेबंद
 नकरई॥गुरुगंगानेनदन्तप्रबेस
 सिद्धकौबेगपबुलाये॥बिहूपदीन
 पेजानिकवलपत्रनिप्रथायेरपा
 दपदमतादिनप्रगटसबप्रसन
 सुनिप्रमसुचिआनारगनुप्रदेश
 कतसरवनसुनोआष्यानसूचि
 उभाटीका॥देवधुनीतीरसौकुटी
 बहुसाधरहो॥रहोगुरुनगतयेक
 न्यारोनुसीकैसकै॥चलेप्रनूगाव
 जिनतजाबलिजावकली॥करौदा
 ससेवागंगानेहकैसैध्वसकै
 क्रियासबकंपकरैबिहूपदीच्या
 नधरैरोसनरैसंतश्रीणीनवन
 ताचैवैसकै॥आयेईसजांनिदुष
 मांनिलेबघानकायो॥आनिजन
 जानिबातप्रगकैसैध्वसकै

चलेहीनहानसंगगंगमै प्रबेसकी
यो॥ रंगनरेबोलेसोअंगोछावेण
लाईये॥ करतबिन्नाएसाएः गुन
पावैपार गंगाजं प्रगटकलौकज
निपैअइये॥ चलेसोअधरपगध
रेसोअधरजाये॥ प्रनूहाधिदायो॥
लीयोतारनीरछाईसैनीकसत
ध्यायेचायेपायेरपटायेगये॥ ब
डोहाप्रतापये॥ निसदिनगाई
ये॥ ११२॥ मूल॥ श्रीरामान्दीजपदति
परताप॥ प्रबनिप्रकृतसेयेप्र
नूसस्यो॥ देवाचारजदुतीयेमहा
महासांहरि॥ नंदतसिराद्ववान
इनदेनगतनिकोमानंद॥ पत्राव
लंबपंधिवाकरिकासीस्थाई॥ च्या
रिखरण॥ अमसंबहानकूनकिई
हाई॥ तिनकेरामानंद॥ प्रगटबिस्र
मंगलजिरुबंधस्यो॥ श्रीरामान्दीज

पदसि प्रतापप्रवृत्तिप्रमत्तसौधेप्रवृत्त
 सस्यो ॥३५॥ कूलः श्रीरामानंदरुद्रना
 थज्यो ॥ इतीयेसतजगतंरनकास्यो ॥
 प्रनंतानंदकबीरसुधासुरसुरा ॥ पद
 मावतीनररुद्रि ॥ पापात्तावानंदरैह
 सधनासैनसुरसरकीधरिरुद्रि ॥ श्री
 रसिधप्रसिधयेकतैयेकउजागरा ॥
 बिसुमंगलप्रार्थारबिहजेसध्यानं
 देसधाकेप्रागराबसोतकालम्भप्र
 चारिकै ॥ प्रवृत्तजननं कौपारकास्यो
 श्रीरामानंदरुद्रनाथज्यो ॥ इतीयेसे
 तजगतंरनकास्ये ॥ ३६ ॥ कूलः प्रनंतान
 नंदपदपरसिकै ॥ लोकपालसेतनये
 योगानंदगईसकरमचंद्रा ॥ प्रवृत्तपै
 हारी ॥ सारीरामदासश्रीरंगप्रवृत्तिप्र
 मत्तमाधारी ॥ तिनकेनररुद्रिनुदति
 मेसामंगलननारुद्ररजदुवगाये
 विमलकारतिसंच्यो ॥ धनंरिन्नक्तिर

ध्रुवैलारचे ॥ प्राणिपदस्य सिद्धये
 जूनतानं पदपरसिकै लो ॥ पाजस
 तेनये ॥ ३७ ॥ श्रीरंगज्जीकीटीका ॥ ॥ दौ
 साये ॥ ध्यावत्तसो श्रीरंग नाभस्त
 बनकसरा ॥ ५ ॥ काकथालै ॥ धानोरि
 रंतोगुत्तामगयो धरमराजधाम ॥
 वस्तानयोबडो ॥ सप्तयेरेइ निबोनी
 ये ॥ प्रायेबनजारलेन ॥ देस्तिरुद्विषा
 वैनेन बैलश्रुगमधिबैठिमारिपदे
 चानीये ॥ ११३ ॥ स्युतकोद्विषाईदेतनूत
 ने तिसूक्येजात ॥ मूर्ध्वैकहाबातजा
 मवाहाठौरस्यो योहे ॥ ॥ जिनर ॥

ध्रुवैलारचे ॥ प्राणिपदस्य सिद्धये
 जूनतानं पदपरसिकै लो ॥ पाजस
 तेनये ॥ ३७ ॥ श्रीरंगज्जीकीटीका ॥ ॥ दौ
 साये ॥ ध्यावत्तसो श्रीरंग नाभस्त
 बनकसरा ॥ ५ ॥ काकथालै ॥ धानोरि
 रंतोगुत्तामगयो धरमराजधाम ॥
 वस्तानयोबडो ॥ सप्तयेरेइ निबोनी
 ये ॥ प्रायेबनजारलेन ॥ देस्तिरुद्विषा
 वैनेन बैलश्रुगमधिबैठिमारिपदे
 चानीये ॥ ११३ ॥ स्युतकोद्विषाईदेतनूत
 ने तिसूक्येजात ॥ मूर्ध्वैकहाबातजा
 मवाहाठौरस्यो योहे ॥ ॥ जिनर ॥

दायोचरनात्तलेकायोद्विविरूप
वाक्ये। इतिहासप्रनपसुनौनगतिना
वगायोहैः ११० मूलः निरबेदप्रव
धिकलिकसनदासप्रनपररुरि
पैपानवीयो जाकेसिरकरधस्यो
तासूकरतरनहाप्रडो। प्ररघोप
दनिरबाणासोक निरनेकरिचुडो
तेजपुजबलनन म्हासुनापुरधरे
तासेवतचरनसरोजरायैराना
त्रुबिजेता। दंदिवाबंसदिनकरउ
दौसंतकवलहायेसुषदायो। नि
रबेदिप्रवधिकलिकसदासप्र
नपररुरिपैपानकायो। ३७। टीका
क्रहादासजीकीः। जाकेसिरकरधस
तातरनप्रडो। साधदानोबडोबरराज
कुलकोजसाधोहै। प्रवतकाकहर
में। दरसनदायोप्रनिदायोनावस
धरुरिसेवाप्रनिताधोपै। निर

जलेबी प्यारमां किते उहा गेहा ।
नयोही ये साल बिन प्रर पित चा
षीये । ले करि पड ॥ ताको मारन
उपाये कायो जोगे ॥ ११६ ॥ फे
रि सोल करि राषीये ॥ ११६ ॥ नरप
सत न गत बडो ॥ प्रबलो बिरा
जमान साधु ॥ ११७ ॥ नर
षानीये ॥ सत बधु गर न देषि उने
पन वारे दीये ॥ कहा प्रर न देषु मे
रो अरे सी उर प्रानीये ॥ को उने पचा
री सो बोहारी पगदासनिको ॥
कहा कृपा करी कहा जो नै और प्रा
नीये ॥ प्रपे त जि देवो काया देषि न
ग ॥ ११७ ॥ ति बहा दई हा मराम
न तिसानीये ॥ ११७ ॥ नू लये हारी
प्रसादतै सि छबै सबे नये पारक
र काल प्रगर ॥ उल चरण बरत
सदी न राये ॥ सूरं जि पुरवा पृथ

तिपुररुचिन्नगतपराध्याणव्यदम
 नाञ्जिगोपालदेकटीलागदाध्या
 रीदेवसकल्याणगंगागंगा
 समनारीबिह्लाहासकनररंगा
 चादनसवरीगोबिंदुप्रापैहारी
 परसादतैसिषसबैचयेपारकर
 उगंगागेवमृतगुंजोनसी। त्र्योका
 लकरणनसीकालबसि। रामचर
 णचितवनिरस्तनिसदिनलोला
 गी। सरबचतसिरनमितसुरन
 जनानदबडजागी। सोधिजोगम
 तसुदिहकायो। प्रननौससतामल
 बूसररेइकीयोगवना। नयेरुचित
 नकरनीबल। सुमेरदेवसुतजग
 बिदत। नूबिसतारो बिंजलजस
 गागेवमतीगज्योनसी। त्र्योकालक
 रनसीकालबसि। ४० टीकासुमेर
 देवजुका। सुमेरदेवपितासूवगुज

न

हैं। राजा मगचाहे सारि प्रांनि
कैनी हारे नैन जांती। १५ जांती
नये दासन दयाल है ॥ २० मूल
कलजुगधर नपालक गद
आचार जसंकर सुतसं
धर प्रमान जप्रते प्रनई सुरवा
दी ॥ बिष्णु कतर को जैन और पाषंड
सांजादी ॥ बिष्णु धन कूदी यो हंउ ॥ अ
चिसन मग प्रांनि सादाचार की
सांवि ॥ बिष्णु की रति ही ब्रषाने ॥ ईश्व
रा प्रसं वतार मसुमि राजा दा मांड
अबट ॥ कलजुगधर नपालक प्रग
द ॥ १० आचार जसंकर सुतसं ॥ धरटी
का लका आचार जज की ॥ बिष्णु
धस मूल ले कै को ये सन मध स्या
म प्रति प्रति निरां मली लाजगु बिस
तारी है ॥ सिवरा प्र ॥ लबा संके प्र ॥
ज्यो कै लिर है ॥ गहन सा जाये बादी

शुचिबातधारीहै। तजिकैसरीरक
हनरूपनै प्रवेसकायो। दीयो कंयं य
मोहमदरसुनारीहै। सिषनसौक
लोकनंदेरुनै प्रवेसजातौ। बहीब
घानुं आयेसुनिकै जेनपारीहै। ॥२१॥
जानिकै प्रवेसतन सिषन प्रवेसक
यो। रावरनै देषिसो अलोकलें उचा
स्योहै। सुनतहातज्योतन। निजतन
आयेलीयो। कायोपो प्रनामहासप
नपूरोपास्योहै। सेवराहरायेबाही
आयेनंपपासिनुचै। छाति प्रवेदिये
कमायाफंदडास्योहै। इत्यचिहुं प्र
योनावनावलै दिषायो। करुचहोन
हीबुडै। आपकैतुकसो आस्योहै। ॥२२॥
आचारजकहीयो चढावोयेनसैरानि
राजानैचढाये गिरैतुकुं किगयेहै।
तबतौ प्रसननरपपायेपस्योना
पनस्यो। कस्यो जोईकस्यो। धरनन

गवतलयेहैं नकिहीप्रचारिपाँछे
नाथाबादडारिहीनो कानो प्रचक
लोकाते बिमूधहूनयेहैं प्रसेसो
गनीरसंतघारवहैरीतजानै प्री
तिहीमैसाँनैहरिरूपगुननयेहैं
१२३। मूल। नामदेव प्रतंग्यानिर
बही। सतगुवानरहरिदासकी बाल
दसाबीदलपा नजाकैपैपीयो। म
तकगजुजीवाद्यो प्रचौप्रसुरनकोही
यो। सेजसत्यलतैकाहिपहलैही
जैसाहोती देवलडुलदोदेधिसकु
चिरहै सबहीसोती। पंकरनाथकर
तप्रगज्यो शानिसुकरध्याईबासकी
नामदेव प्रतंग्यानिरबही। सतगुवा
नरहरिदासकी ७३ टीका। नामदे
वजूकी। पाषाणदेवहरिदेवजू
कोन ७३। ताकातौयेकबेटोपात
लाननईजानीये। हादसबरधनमा

किन्तु यो तब कही धिता से वा साब धा
 न मन के करि प्राणी के ते र जो मनोर
 प हें पुराण करन ये ही जो ये है कि
 त के के मेरी बात मानी प्रकर त टल
 प्र नू ब्र ग्प ही प्र स न न ये की नी का म ब
 सना सो पोषी उ न मानी ये वि ध व
 को गू न ता का बात चली दौर दौर दुष
 सिर मो र न की न ई मन ना ई है
 त बा न दे व ज के कान रिकरी निर
 प्र नू प्रा प प्र प न ई है

बालनाम देवनाम च स्यो क स्यो न
 न नायो ॥ सब संपति लुटाई है ॥ दिन
 दिन बहो कछु प्रौरै रंग चढौ
 नापे मडौ ॥ कडौ रूप सुषदाई है ॥
 १२५ ॥ घेतत धिलौ ना प्रीतिरी
 वाही की ॥ पट ही पहरा पु नि नोग ही
 लगावै ही
 मन ल्यावै ॥ त्यों त्यों प्र लि मन

गवतलसेहैं नकिहीप्रचारियाँ
नायाबादडारिहीनो कानो प्रक
लोकाते बिम्यप्रहृतयेहैं प्रसेसो
गनीरसंतघारवहैरीतजाँने प्री
तिहीमैसाँनेहरिरूपगुननयेहैं
१२३। मूल। नामदेव तंग्यानिर
बही सतगुवानरहरिदासकी बाल
दसाबीबलपा नजाकैपैपीयो। म
तकगजुजीवाया प्रचौप्रसुरनकोही
यो। सेजसल्यलतैकाहिदुलदे।
जैसासोती देवलडुलदेदेधिसकु
चिरहै सबहीसोती। पंकरनाथकर
तप्रगज्यो शानिसुकरथाईदासकी
नामदेव प्रतंग्यानिरबही सतगुवा
नरहरिदासकी ७३ टीका। नामदे
व जली ७। पाबामदेव हरिदेवज
कोलकबडोताकीतौयेकबेटापति
तंग्यानिरनाथीये हादसबरधनना

किन्तु यो तब कही पिता से वा साब ध्या
 त मन के करि प्रानीये तै र जो मनोर
 प है पुराण करन ये ही जो ये है हचि
 त के के मेरी बात माननीये करत टल
 प्र नू बे गप ही प्रसन नये कानी काम ब
 सना से पोषी उ न माननीये वि धवा
 को गू नता का बात चली दौर दौर दुष
 सिर मोरन की नई मन नाई है च ल
 त बा म दे व ज के काने रि करी निर धार
 प्र नू प्रा प पु प नाई है न ये जो प्र ग ट
 बाल ना म दे व नाम ध्र स्यो क स्यो न
 न नायो ॥ सब संप तिलु टाई है दिन
 दिन ब डौ क धु प्रै रै रंग च डौ न त्ति
 ना वें म डौ ॥ क डौ रूप सु ष दाई है ॥
 १२५ घेलत धिलौ ना प्रीति रा ति सब स

ननीरनरिग्रावली ॥ धवारवारकहे
नामदेवधामदेव ॥ १२० ॥ देहामो
हिसैवामो ॥ प्रतिहृत् सावली ॥ जा
उपेकगोवपि रिग्राउदिनतीनम
धिदूधकृपीवावामतिपीवामोहि
नावली ॥ १२१ ॥ कौनवसुबेरजिसुवे
रदिनफेरिसाय फेरिकेरिकहेवह
बेरनहाग्राइये ॥ चौपनिकाहेरिता
गीनिपटप्रोसेरिहाग्रायेनारंघरि ॥
जिनगिरेबुटिजाइये ॥ माताकैहटे
रकरीबडीतैप्रवे ॥ १२२ ॥ करैमति
ऊर ॥ प्रजुचित ॥ १२३ ॥ य
लेपुनूपासिलेकटोरा ॥ छबिराल
तामैदुखसोसुवासमधि ॥ निसरी
मिलाइहैसायेमैहलासनिजप्रुप
ताकोत्रास ॥ प्रपैकरैनिजदासमोहि
महासु ॥ १२४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ दासके
टिचांदनीकोनासकायो ॥ तावकेप्र

कासमतिप्रतिस्वरसाईसैः प्यायलेकी
 प्रालकरिप्रैरकधूनदेसोस्वाहनदे
 धिकेनिरासकसोः पालोजप्रघाङ्ग
 प्रैसैदिनबीतेहागेः राधीहीयेवात
 गीयः रसो निससोपप्रपैनीदनही
 प्रवहीः नयोजोसवारः फिरवेसैही
 सधारिकायोः कायोः हायोः गाहेजाए
 अस्थौपीधवाचावही बारबारपी
 वाकहंप्रबलनपीवोः सिनासि आवे
 नोरनां नांगरेछुरीतैदिषाः वं १२५
 प्रोपेबा नदे वपाथैः पूछेना नदेव
 जसोः इधको प्रसंगप्रतिरंगनरि
 भाषीये कोसोनपिछानदिनदोय
 नईहाणिः तबबां निउर प्रांनलज्यो
 चाहंप्रान्तसाधीयोः प्रोकोसुषलीपोलव
 नैतो जायोसुं निबाते कहीप्यायो
 कौनसाधीयैः अस्थौपैनपीपोप्रस्थो
 पीयोसुषपायो नांनयासैरै

कवे सोती मोती श्रावसी उतरिग
ई नई हाये प्रीति गसे पाव सुषद
ई है ज्योच कही धर मांजि सांज
ही श्रग निलगी बडे अनुरागी
रह गइ सो उडा री है क
नाथ सब की जाये श्रगी कार
हसे सुक वार हरि मोहा को नीहा
रीये तु सारो न न श्रौर सब के को
न श्राये या हा नये जो प्रसंन द्यो
निष्ठाई प्राप सारिये पछे प्रानि
दोग को नई धो वा इ ली जे
इ जे जो ई नावे तन मन प्रात वारी
ये सुनो श्रौर परचे जे प्राये न कवी
त मांजि बां ऊन ई माता क्यो न जो
नम ति पागी है हतो ये कसा ह तु
दान को उ गानयो दयो र सब
बा न र सो नां न हे व रागी है ल्या
वे जब लाये क दोये तो फिरा दीये

तीसरेसूत्रायेकहकहोबडनागीस
काजीयेजकधूषगीकारसेरोनले
सियोनयोचलोतेरोदजेजोपेआस
लागीहै॥३धनाकेतुलसाहैजुसेतु
लसीकेपत्रमांठिलिष्योआधोरान
नांमयासौलोनिदीजीएकहप्रहा
सिकरोठरोहोयेदयालदेधिहोतकसे
आलयाकोकेसपूरेकरिरीमापे
त्यायोयेककादोलेचहायोपातसौन
संग्यनयोबडोरंगहिसमहोतनाही
छाजीयेहलहिसोतराजलुलेमनपांच
सातजातिपातिरुकोधनधस्योपे
नधीजाये॥१३७पस्योसोचनारीह
षपावेनरनादीनांमदेवजुबिचारी
येकजोरकानकीजीयेजेतेबृत्तदान

करे उ उ पाय पात पत्ना निगारे
पाये रहे वै धिसाये रहे वै धिसाये
कहाये तनौ लीजीये खे कै कहां
धरे सरबरहन करे ली क्तिना वस्त्रो
ले नरे हीये मति प्रति नीजीये १३
का धारूप जुजको धरो निपट
अंग नयो हीये र बूत प्रचा कौ लीजीये
नईये का दसी अ नमो गत बहीत
नूषो अ जि तौ न दे हो तो र चा हो जे
तो लीजीये कस्यो रुठ नारी मित्य
होउ ताके सो रप स्यो समरु वें तान
देव या कौ कहां धि जि अई हो बी ते जा
न च्या र म रिर लो ए ग ए र रि पा व ॥
ना व पे न जानै ई ह त्पान ली छी नीये
र धि कै च ता कौ नि ए ए ए ले कै वै दे
जाये दीयो नु सकाये मे पर छ्या ली नी
तेरी दे धा सो ल चा ई सु ध दा ई मन चा

ह

शुक्ररत्नमन्त्रो र होयाही ३३ ३३ ३३

चारअधिकारबिसतारजाकैताहि
कैनिहारसुखदाये होजाये जग
नाथदेवजूकी आग्याप्रतपालकरौ
दरौ ~~सुख~~ मतिधरौसाये नातेहो
सत्ताजाये उनकोसजायसोहै न
कौपसारयेक नातेतुमजावौफिरि
कहाकहैप्राजाये

बोली

करजोरिमैरौजोरनचलतकछु या
सौसोहीसोउयेसवारिकेरिउारीये
॥ ३ ॥ जानीजबनईतीयाकीयेपुन
जोरमोपै होयेदरुंगेदरादराया
करित्ताजाये नईजबध्यायास्यानसे
वापधरायेनई नईयेकपोथीसेब
नबुंसनकाजाये नयोजूप्रगटगी
तसरसगोबिंदजूको सोनसौप्रसंग
सासमंडनसोहाजाये येहायेकपद
॥ ४ ॥ निकसतसोचपस्यो धस्योकै

जबतकजहि कलाकीनेसोचनारहिते ७५

सेनातलाललित्थो नतिराजासैलीम
नालाबलघांतताकैपंक तिनपति
येका करीयेहानांनभरियोधीड
द्विजनबुलायेकहीयेहोले
थिकरौलिचिलिषिपढेदेस
सकायेबि
थिप्रसोदिघोईईनिईसुमतिप्रति
धरादोनुमंदिमैजगना
धदेवजूकैदीनीयेहडारिवरुसिर
देलापटाईसैभीधकापस्योसोचनार
नरपनिपटधिसांनोचयो।गयोनु
ठिसागुमैबूडोयेहीबातहै।प्रतिप्र
मानकीयोकीयोमैबधानसोई।
गोईकैदेजातकैसैआसचलागागा
तगातहै।आग्याप्रचदइतुनबुडेम
तिसकडइमांजिदुसरोनगुंथजेसो
चघातनपातहै।दादसकुकलिष
दाजेसरगदादसमैताहीसंगचले

कासिमानौचंद्रमाप्रकाशराशि
 पूर्येस्तस्यसकलौडैस्तत्तत्प्रप्य
 सौभ्रमसंबडेहाप्रचावधानसकल
 नबघानग्रहोभरैकौडः रिना
 गइसनकीजीयेपालकीबैदाये
 लीयेकायेसबहुजकेकरेकरे
 कथ्येग्राग्यामोहिदीजीयेकरेरुरि
 साध्यसेवा नानापकव जेवोउ
 केव्येग्रावेजोपेतिनेदेविदे
 धिनीजीयेः ग्रायेवेहाठगमालत्थ
 लकचिलककायेकिलकिकेक
 हीबडेबंधूलधिनीजीये १५० न
 रपतिबुलायेकहीसीयेरुरिना
 वनरेःहरेतरेनागग्रबसेवाफल
 लीजीयेःगयेःतत्तुलमांठिटरु
 ललगायेलेगालागेहोननोग
 जीयेसंकातनछीजीयेःसागेबा
 रवारविदारानानहीजानदेत

प्रतिप्रकृत्यायेकस्त्रीस्वामीधनदी
जायेदेकेबहुनातिसोपठायिसंग
मानसहृष्टावोपहेचायेतबहु
मपराश्रयिपूछेनरपनरकोउ
तुम्हारीनसरबैजिते। प्रायेसाधू
जैसासेवानहीनहै। स्वांमानीसौ
नतोकहाकहाहमसायेनिमाराध
योदुरायेयेहबातप्रतिनहैहैहते
बस्वयेकठोरनरपचाकरीनैतोह
इनकायेबिगारमारिडारोप्रग्याह
है। शोभलूमसातुंजानिलेनिह
नहाथपाववाहाकेइसानरुमप्र
बनरिलहै। फटिगईनौसिसब
हगवेसभापेगये। नयेयेचीक
हौरिस्वामीजूपेप्रायेहै। कहीजित
बातसुनिगातगातकापिउठेपुला
थपावनीडे। नयेज्योकेत्योसुहाए
है। प्रचरजदेउन्परपया

इयो सुनत लाने परिये नियं प्रचं नो
नयो येन केन नयो फिर कहै सम
जाइ है ॥ प्रातिकानरी तिये सुबडी
बिपरीति ॥ प्रहो छुटत न जब पी
या प्राण छूटि जाइ है ॥ १५५ ॥ प्रेस
येक प्राण कही राजा सो ॥ ये ही बात
कहे लेके जावे बागस्थानी ॥ निक
रेषों प्रातिकों ॥ निघट बिचारी बु
री ॥ हेत मेरे गरे चुरी ॥ त्राया सुठमा
निकरी वे सै सा प्रलित कों ॥ प्रांनि
कहे प्राण पायेक ही या सा नो ति ॥
प्राये बंठी जाये ॥ डिग जाये ॥ रे धिले
टिगई रतिकों ॥ बोली न कब थ्य
प्रजू वै तो ब लोत ली कों ॥ लुका क सा प्र
चक ही पावत लोनी तिकों ॥ १५६ ॥ न
रिजा ज नारी पु निके रिके स नारी
दिन बीति गये ॥ को उ ज ब ल ब ल सा प्र
नासै ॥ जानि गई न कब

परं दृष्टात्सीयो ॥ कसो अजु पायेसु
नित जिदे हनी नीहें ॥ नये मध
सेत रानी राजा प्राये जानीयहें ॥
रचा चिता जरी मति नई मीराही
नाहें ॥ नई सुधि आपकौ सु प्राये
बेग्य दौरि इहां देखि मृत्यु प्राये नर
पकसी मरीदा नीहें ॥ १५ ॥ चबो ल्यो
नरप प्राजि हो मोहि जरे हा बरत ॥
० ॥ वस व उ परे सले कैं धरि मी नि
लाहें ॥ उरै वसो नाति प्रये प्रा
वत न स्वाति किहें ॥ गाई प्रष्ट पदी
सरदी पोत न प्रायोहें ॥ लजन के
माखो राजा रुचा हत प्रपद्यातकी
यो ॥ जाये न हां जात न किले सह
न प्रायोहें ॥ करि सनाथान निज
गान प्राये किं हू बिब्वजे सो कछु
सून्यो घेरु पर चो लै गायोहें ॥ १५ ॥
देव धुनी सोत हो प्रठारै हें कोस

आसरमतेसदाईप्रसन्नानकरै॥
रैजोगताईकै॥ नयोतनबृधतनु
घाडेनहीनितिनैनाप्रेमदेखिना
रीनिसकहासुघदाईकै॥ आनैजि
नध्यानकरैकरैसतिरुठप्रेसोमो
नाकैनीहीआउमैहोजानोकैसैआई
कै॥ फलेदेखोकजजबकाजीयेप्रत
तिनेरुठैरीनईवालीनातिसेवैप्र
वलोसुहाईकै॥ १६० मूल॥ श्रीधरश्री
नागवतमै॥ प्रमथरमनिरनौकी
यो॥ तीनकांडयेकचसानिकैउग्र
बधानता॥ करमदग्यानीप्रेचिप्र
रुताबिदलदाकाबिसतास्यो॥ प्र
सासतरप्रबिरुध्यबेदसंभूतही
बिचास्यो॥ प्रमानंदप्रसादतै॥ म
धोसुकरसुधारिदायो॥ श्रीधर
नागवतमै॥ प्रमथरमनिरनौक

दीका ज्ञाधरजीकी ॥ पंडु तिसमाज
बडेबडेनकराज जेतें नागवतटी
काकरी प्रापसमेरी माये नयेज
बिचारिकासीपुरी प्रबनासीमांजि
सनाप्रनूसार जोई सोई लिखि दीजी
ये ताकोतौ प्रमान नागवत न बिंदू
माथेज हें साधु यहाबात धरि मंद
मैली जाये धरि सब जाये प्रनूसक
रबनाये दीये काये सबो परलेके
चल्यो मति थी जाये ॥ ६० ॥ कृष्ण कृष्ण
कृपाको पर प्रगट बिल संगल मंगल
सरूप क रूपां मृतक बित नुक्ति प्र
नुचिष्ट उचारी ॥ रसिक जननिजी
वनि हदै लारा बलि चारी ॥ हरियक
राये लाय बहोरित लाती घो छुडाई
करानये कर छुटे बहै जो हाये तेजा
ई च्यांतामनि संग पायेके ॥ बजब
धुके लिबरनी प्रनूप कृष्णकृपा

बिलमंगलमंगलससु

॥१॥ टीका बिलमंगलकोः ॥ कृष्णा
धाररहोहो

गयोऽग्र्यां रसंगचिंतामनिपायेकैः
तजालोकलाजहायेवाहीकौजौराज
नयो ॥ निसदिनकाजवहै ररुधरजस्य
कैः ॥ १६ ॥ कृतविचारवारधारमैरसै
शान्ततेनलीधारसमंत्रसनसुषज
स्येः परेकीरकृदिकथ्यसुधिजसरी
पिताकोसराधनैकुरहोमनसाधि
दिनसेसमैऽग्रवेसकीयो ॥ चत्येऽग्र
तिऽग्रकृतायेकैः नदीचिदिरही नारी ॥
पैयेनऽग्रवारीनावन्नावनस्योहायो
जीयोजातनिधिजायेकैः ॥ १६ ॥ करतविचा
रवारधारमैरसै प्राना ॥ तातेनली
धारमंत्रसनसुषजाइये ॥ परेकृदिनी
रकथुसुधिजसरीरकी ॥ वहायेकयी
रकषदरसनपाइये ॥ पयेलनपारतत
हारिनयोबूडिबेकै ॥ निरतकनिरारि

मान्नीनात्रमननाई है लगे, कौना
 रैजाये चलेपगथाये चाये प्रायेप
 दलाई प्राचीनिससोबिहाई है १६१
 अजगरमूमिडूमित्तुमिकोंपरसकी
 यो॥ लीयोहासहारोचदोष्टातिपर
 जायेकौं नुपरि जनादला १६२
 कूदिप्रागनमै ग्यस्योयोगरतरागी
 जागसो पायेतै दीपगबरायेजो
 पैदेधै बिलमंगलहो बडो प्रमं
 गलतैकोयोकहाप्रायेकै जलप्रनु
 वाये केपटलपररायेकैसैकरि
 प्रायो जल पा रखायेहासवायेकै
 १६३ नवकापडाई दलावलटकाई
 देखिमेरेमननाई मैतोतबहालई
 जानिकै चलो देखै दलावलटका
 यो बूलापकरै दिखो बिषधरमहा
 चीजाप्रायमानिकै सोमनभरेरु
 उचानसोलगायो तैसोस्थानसोल
 गाबवै तोपैजानीयेसधानकै मैतौ

विक्रम गइव रूपाये रहे द्वारतन
व्याजीस १६६ प्रायो वाकोपति द्वा
रदे विना गवत के बडो नागव
तपू श्रीबभूकौ जनासि कही जूय
धारी पाव धारी ग्रह पावेनको पा
येना गवापु जहासु को १६७ चली है
चले नवनमाहि मन प्रारति मिटा
येबेकं गावेनकी जोई शिसोईके
बतासि नारिसो कही होत सी गार
करि सेवाकी जे ये ली जेयो सुहाग
१६८ चली है पाईये १६९ चली है
सिंगार करि १६९ सा हलेके
जेची चित्र सारी जासु बडे प्रनूरा
गीसि नक मनक जाये जोरि क
रिडाडी नई गही मति दे विदे वि
नून बरति नागीसि कही जूसईत्या
वो लाय दई लर लथ फेरि डारी घांघी
अहे बडोये प्र नागीसि गइय लिया

सिखासन्नरीतनबोत्यप्रावेबे
लादुषपायेप्रायेपायेपरिरागीले
१६५ कायेप्रपराधरुमसाधको
सताये॥ प्रहोबडेतुमसाधरुमन
मनसाधधस्योहो॥ रहोप्रजसे
वाकरैकरातुमसेवाप्रसीधजैसी
नहीकाहमाहिमेरोडुरतस्योहो॥
चलेसुषपायेद्रगत्तुतसेछुडायाही
येहायेनकाप्रोचिनसो॥ प्रावेका
मपस्योहो॥ बेठेवनमधिजाये
धेदेधिप्रापप्राये॥ जोजनकरोये
चलोप्रायादिनहस्योहो॥ १६६ चले
लेगसायेकरप्रायाधनतस्तरा
चासतछुडायाहाथयोकोकेसैनीके
हो॥ जोजोबलकरैतो॥ लो॥ नजतन
येजुप्ररेलीयोहाछुडाया॥ गहो॥ ग
हासुपसायेकोहो॥

बिकछु गई बिरुप्राधे रहे द्वारतन
धारी हैं १६६ प्रायो वाके पति द्व
रहे धिना गवत ठाके बडो नागव
त पूछी बधु कौ जनाई है कही जूष
धारी पाव धारी ग्रह पावेन को पा
ये न पषा रु जल हारी सी सब हाई है
चले नवन माहि मन प्रार ति निदा
ये बेकं गावेन की जो ईरी ति सोई के
बताई है नारि सो कही हो तसी गार
करि सेवा की जे ये ली जेयो सुहाग
जानै बे ग्य प्रनू पाईये १६७ चली है
सिंगार करि धार में प्रसा हले के
उंची धि वसारी जासु बेंठे प्रनू रा
गाई : ऊन क मन क जाये जो रि क
रिडा डी नई गही म ति दे धि दे धि
नून बर ति ना गाई कही जू सुई त्या
वो लाये दई लई साथ फेरि डारी धांधें
प्रहो बडोये प्र ना गाई गई पति या

सिखासन्नदीतनबोत्यप्रावेवे
 लादुषपायेप्रायेपायेपरिरागीलि
 १६० कायेप्रपराधरुनसाधको
 सताये॥ प्रहोबडेतुमसाधरुनन
 मन्तजसाधधस्योहै॥ रहोप्रजसे
 वाकरकरातुमसेवाप्रेसी॥ जैसे
 नहीकाहनामिमेरोडुरनसोहै॥
 चलेसुषपायेद्रगनुतसेधुडायाहै
 येहायेनकोप्रांछिनसो॥ प्रावेका
 मपस्योहै॥ बडेवनमधिजाये
 घेदेधिप्रापप्राये॥ नोजनकरीये
 चलोछायादिनहस्योहै॥ १६१॥ चले
 लेगहायेकरछायाघनतस्तरा
 चास्तधुडायाहायथोकोकैसेनीके
 है॥ ज्यो ज्योबलकरेत्योत्योंहजतन
 डोरुपसायेकोहै॥

सिखनांमदेवश्रीतिलोचनजसू
रसरसिनारीकियोअंगै ६६६६६
नामाकीतोबातकही ॥ ३ ॥ येसुनो
हसरेकी ॥ सुनतहीबनततक्तकथा
रसरसिरहै ॥ उपजेबनिककुलसे
वेकुलप्रचुतको ॥ अपेनहीबनेये
कतीघासीपासिरहै ॥ टलवानकोउ
साधूमनकीजांनिलेतपेहाअन
लाप्रसदादासनकोदासहै ॥ १७६ ॥ अ
ये प्रनरुल्लवारूपधरि ॥ दास्यरि
फटीयेककामरीपन्हायांटीपाइरि
॥ निकसतपूछेअहोकहातेपधारे
आप ॥ बापनहंतारीअौददेघायेन
गायहै ॥ बापनहंतारीभैरेकोउनांति
॥ सोचीकहंगहंनैरुलजोपेसिल
तसुनाय ॥ अणमिलाबातकोनदी
जीयेजनाये ॥ उबहुवांउपांचसात
सेरउठतरासायहै ॥ १७७ ॥ आस्त्रो

सो

बरनकाजूरी तिसबनेरैरुयि साधि
 हुनचाहुकस्मनलायेकैः नगतन
 कासेवातौकरतहाजननगयोः नये
 कधुनाहिगयोबरसबितायेकैः जू
 त्रजांमीनां वनेरी।
 तौः बोल्यो नगत नाव धावो
 कैः कामरीपन्हायां सबनईकरिद
 ईः जौरमी
 धुडायोहैः १७ बोल्यो घरदासीसो
 जुरहैपाकादासाहोए।
 हेतजैसो नहापावनोः घायेसोष
 वासुधपावोः निति नितिहाये
 नगनाहिजो लमिल्यगुनगाः वै
 प्रावतप्रनेकसाधुः
 तीयेः लीयेचावदाबेपावना सबन
 डावनोः
 हीतनये गये उहिप्रापने
 चलावनो १७

सिखनामदेवश्रीतिलोचनजसू
रससिनाईकियोअंगः प्रकासह
नाभाकीतौबातकहीः ३३ पैसुनो
हूसरेकीः सुनतह बबतबतह ५
रसरासिहैः उपजेबनिककुलसे
वेकुलप्रचुतकोंः अपपैनहाबनैये
कतीघाहीपासिहैः टलवानकोउ
साधूमनकीजांनिलेतापेहाअन
लाप्रसदादासनकोदासहैः १७५ अ
ये प्रनरुल्लवास्वरिः दास्वरि
फटायेः ३३ रोपनहाघांटदीपाहै
निकसतपूछेअहोकहातैपथारे
आर्षः ॥ बापनहंतारीअौरदेघापेन
गायहैः ॥ बापनहंतारीअरेकोउनांहि
सांघीकहंगहंनैः ॥ ३३ जोपेसिल
तसुनायैः ॥ अणनिलीबातकोनदी
जीयेजनायैः ॥ ॥ बरुषानुपांचसात
सेरउठतरासायहैः १७७ आस्त्रो

पुनः काञ्चरी तिसवने रैरायि स
हनुचाहक स्वमनवाधकैः नर
कासेवा तोकराही जननगयोः
कधुना सिगयाबरस बिताधकै
त्रजांनो नावनेदोः नयोचेरोतर
तौः बोल्यो नगत नाव धावा प्र
कैः कालदीपनीयां सबलई करि
ईः श्रौरभी डकै नवायातनमैल
धुडायोतैः १७८ बोल्यो धरदासीसो
जुरहेपाकी दासाताः देधीयाडुदास
हेतजै सांनकी पान्तोः वाधेसोष
वोसुधपात्रीः नितिनितिलीये जिये
जुगनातिज्ञो लमिन्य इ गा वः नो
१७९ श्रावतज्ञेके साधाः नालनटनर
लीयेः लीये चावदाले रात्रिः सबल
लडावनोः जैसै ही कदलकी सुतेरैत
बदीतनयेः गयेडु लीयेकेकलात
नोचलावनो १७८ नवलनीनगईही

बरनकी जरी तिसबने रैहा थि स
हनु चाहुक स्मन लाये कै नग
की सेवा तो कर लही जनम गयो
कधुना सिगधा बरस बिताये कै
त्रजांनी नावने री नयो चेरौ ते र
तौ बोल्यो नगत जान धावा अह
कौ काल रापनाया सब नई करि
ई ज्यौरमी डके नत वायो तन संल
धुडायो लै १७८ बोल्यो बरदासी मी
जुरसै पाकी दासा लो देधीया उदा
देत ज्ये साज ली पावलो वाये सोध
वो सुध पावो निति निति लोये जिये
जुगना सिजो ललित्य गुन गा वः नो
१७९ प्रावत ज्ये नेक साधु लावत टल
लीये लीये चावदा बिपावः सबन
लडाव नो ज्ये सै ली करत नासते रैही
बहीत नये गये उठि प्रापने के वात
कौ चलाव नो १७९ येक हीन गई ही

परोसनिर्कै नक्षिबधुपुच्छिलईवा
त अरुकाफेकौमलीनहै बोलैक
सकायेवैरुदरुद बालिवायेत्याबये
किंहुनप्रधाये टिपीसितनघान
है कफुलूनकहैयेरुगहैमनमंरि
येरीतेरासोसुबौजाये तातद
न्यानिर्कै सुदिहस्येत्त नैकगये
देकहती नयोदुषप्रनेकजैसैजल
बिनमौनहै १८ छीतेदीनतीनप्र
नजल्पकरिहाननये १९ छीतेदी
नअरुफेरिकासाप्राइये बडीतुप्र
नागीबावकतनजातै लागी २०
रागीसाअसेवाभैतैरुद रित्याइ
ये नघीननबानीतुनघावोपीवो
पांती येमेरामतिठानी मोकोप्र
तिरीतिनाइये मेतोहुप्रघानतेरे
वरुहामैरुहलनि २१ येदरुहलनि
वाकरुबेकोप्राइये १८ कानेरुरि

वसिदेवा ॥ तीनों नवनकरै निति
सेवा ॥ सकल बलि नतै ॥ मनब
लिवंत ॥ मारिकै ॥ सबही कौं प्र
त ॥ ७ ॥ मन कौं कोइ जी ॥ तिन सके
बहुत दुः पायन करिक रिचकै
जैसै मन कौं जी तै कोइ ॥ सब ही न
नां हि प्रबल है सोइ ॥ ७ ॥ सोइ जै
परिपुत्र सिन ही करै ॥ बाहरि दु
आदि क बि सतरे ॥ बैरी सिंत्र ब
हूत बिधि ठानै ॥ अनिहित प्रस
हित तिन तै जां नै ॥ ८ ॥ तै प्रस
दुषी न ही होवै ॥ मन जातै विनु
जुग जुग रोवै ॥ दुःख रूप डड नि
प्यातन कौं ॥ अपुजा निक रिवां
प्यो मन कौं ॥ ८ ॥ तब बहु काये
ल संबंधी ॥ तिन सों मरिष ममत
बंधी ॥ ये हनै ये स्मर हनै ॥ नि
त्र स बुढानै बहु तेरे ॥ ८ ॥ तातै म
महा दुष पां वै ॥ उपजि उपजि

कर्मनां नुषं असुरप्रसिद्धकौंजी
चैत्राधिः ११ कर्मनां नुषं नुषं तपस्य
लोका नुषं नुषं नुषं सिद्धिनां कौंजी
क जेव गुणकरकनकौंजीः ते
तीनमौ लोका निमौ फिरे १२ तपस्य
रुजो गलथासं न्यासः यनितं तं
चपासं नुषं वासः नुषं नुषं तं
वैवैकुंठ जो सबहानि करिसद्व
कुंठ १३ इवैवैकालस्य लोका
नकलस्य नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं
नतिलोका नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं
तां तां उता कंधावैः १४ कंधावैः
यकस्य कंधावैः नुषं कंधावैः काल
तामैती चैः जेसी विधि सब नुषं
नतिलोका नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं
नुषं १५ नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं
नतिलोका नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं
नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं नुषं

पुनिमरिमरिजावै तातै दुषकौ म
 नरुकारण ॥ ८३ ॥ प्रातमरुको तवजल
 मैदाराण ॥ ८३ ॥ प्ररुजौ सुष दुषरा
 तायेते ॥ मोकौ दुःष देत है जे तो ते
 सब सुष दुःष मोकौ नां हो ॥ देरुये
 कसुषे प्रापन मां हो ॥ ८४ ॥ ते दुष
 सुष देरुई पावै ॥ प्रातमरुके कुरुनि
 कटिन आवै ॥ प्ररुज ह्य पितनके
 संजोगा करै जावै रुसा सुष दुष नोग
 ८५ ॥ तौ नै दुष देनुं काकौ ॥ रुपस
 कलमम देषौ जाकौ ॥ प्रापु प्रापुके
 कौ दुष दोजे ॥ प्रपनौ प्रसित प्रा
 पकौ काजे ॥ ८६ ॥ प्रातन मां रुसा
 दुष पां नै ॥ प्ररुति नरुमै कौ नै प
 जां नै ॥ देत नै ॥ ८७ ॥ जां नै काटी जौ लौ
 फिर कुरुति नै दुष दोजे ॥ ८७ ॥ देत
 नि प्ररुजां नरुसा दुष देरु ॥ सो लौ
 सकल प्राप करि लेई ॥ इंदीय प्रधि

कृति पुरष विस्तार ११ ॥ प्रकृति पुर
ष विन श्रौर न के ई इ डाय मन ग
घर है जो ई प्रथम ही निराकार से
येक ताते ये प्राकार प्रनेक १७ ॥
अरु पुनि मे ही र ह्यु त ताते प्र
वरु मे वरत त जा का प्रा दि प्रं ति
है जो ई ता के म धि हू ने पु नि सो ई
१ य डौ माटी के वरु घट न ये प्रंत ही
फू टि माटी मिलि गये मां टी प्रा दि
मां टी ये प्रंत तो मां टी म धि हू
वरत त १२ ज्यौ कंचन के वरु प्र
न राणा ॥ प्रा दि र प्रं ति ये क ही स्वर्णा ॥
तो म धि हू क धु नां ही नां न रूप
नि ध्या के जा ई ने ल्यौ न ब दे ये त
जि ब्यो हार त व मे हा लो सब वि
स्तार प्रा दि रूप प्रं ति न धि मे ये क
नि ध्या नां न रूप प्रनेक ११ मा

पं देवता जेतो जो दुषदा नि सौहि
बते ते ॥ ५ ॥ चौहाप ॥ १ ॥ कौ
जे ॥ परिनु पाधि कौ ॥ सिर परि
जे ॥ करिदा जे सुषकां सि प्र सन
सौ ॥ सो सुषका टै करला सन
दक्षता पाव क प्र सुषा सव ज्ञाने
रा ॥ दोष ना वै ॥ नै ॥ यो सब
इंद्रा नूके सब दे ॥ करै प्रापके
परु सेवा ॥ १ ॥ ते ते सब जानै तौ
करै ॥ याना प्रपनं नान ॥ १ ॥ ये
प्र सुषा सुष ॥ धदाता प्राप ॥ दुजे
क धना हायाप ॥ १ ॥ तो ये सकल
प्रापनौ सुजाव ॥ कोरि कौ न आनी
ये प्रजाव ॥ प्र सुषा त समै सुषद
षनां ही ॥ १ ॥ प्र सुषा ॥ १ ॥ सकल नि
जाई ॥ १ ॥ प्राप नू लि सुषदुषका
ली नै ॥ सब मिटि जाये प्रापके
नै ॥ ताते दोष कौ न कौ परीये ॥ १ ॥

प्रसक्तव्यवस्थितान् बौहोस्त्रौंत्तौ
 संकलनकोईः सरुदादिककु रहै
 नकोईः २२ अस्मिन्कालप्ररुपुत्रय
 प्र २३ दानः प्र रुजोकात्यसक
 लकवत्तार संरीसक्तितीनयेजं
 नौं मो तेंहेलकदेमतिमानौं २४
 यात्रिचिचल्यौंजाय विस्वता
 र नदीप्रवापितुल्यसंसारः प्र
 कालस काग्रुप्राज्ञौंत्तुतेस
 कालनिरंतरतौंत्तौः २५ बौहोस्त्रौं
 प्रत्येसकलकोहोईः सुहसर
 तेंबला २६ ताकोईः मतव
 लिखसक्तिनककालः ताकोस
 कालजगतबौधालः २५ कालबी
 कालसैसकलप्रस्मंडः कतरुंक
 प्रनरायैषंड प्रनोबुष्टिसौवै
 तनरुप्रः ताकोईः कनकोप्राक
 प्र २५ प्रोदे बौहो स्यवततै

प्रपनो मनव सिनही करायो ॥ १ ॥
रुजोगुले सुष दुष के दाता लोक
वेदक हात बिरवाता तौ प्रापन
को को धसा काजे परको दुष प्रा
पको लाजे ॥ २ ॥ गुले प्राका सना
सि है जे ते ॥ दाद सरा सिब से स
बते ते राग दोष प्रापन मै करै
तिनको सुष दुष निति सी परै ॥ ३ ॥
तातारा सिजन मजे पावै तिनकी
संगति दुष सुष प्रावै तातै प्रा
तम सद प्रजन मो ॥ बार बार देस
निको जन मो ॥ ४ ॥ तातै सुष दुष त
सा पावै ॥ निकटि प्रातमा कै न सी
प्रावै ॥ प्रसजदा पि संगति दुष प
रै ॥ प्रापको धसौ कासौ करै ॥ ५ ॥
करि निहारतें गुलु सी जानौ राग
दोष चावै तौ दांनौ ॥ प्रस दुष दा
नी होये जो करमा ॥ ते तौ सकल प्रा
पसी नरम ॥ ६ ॥ य सु दे स जे डक

लीनप्रसनमैहोवैजेतेप्रसन
स्त्रिमिमैहोवैलीन। त्रिमिजंघ्य
नित्यहोवैपीनारगगंधलीन
होवैजलमांसी जलसुहमरस
मांसिसमांसी रसजबतेजमा
हिनिलिजावैतेजरूपमैजाय
समाधैरथरूपमैजाय
तिरहैपवनसीतबसपरसगु
एगहोसपरसलीनसैयतब
गगनिगगनिहिसबदनादि
सोयमगनररथरूपमैजाय
तामसप्रसकारहैतसुहमरस
हसप्रकारहैसबनिहिरस
प्रसकारहैमिनिहिरस
सोयसहरहाहैउहैरस
तिकप्रसकारहैतसुहमरस
कलसोयसकारहैतसुहमरस
तसुहमरस

रमता मां हीं ॥ आतमनिकटि दे
हई नो हीं ॥ आतमचेतनि ग्यान
स रूप ॥ परैसकलतै ॥ परमप्र
नुप ॥ १०१ ततै कौचकौनसौक
रौ ॥ काकोदोषाहरदाने ॥ परौ ॥ प्र
रुजोदुषकालतै कहाये ॥ तोआ
पुन नैक देन लहाये ॥ १०० तनह
कालहते दुषपावे ॥ तै आतमके
निकटिन आवे ॥ कालप्रतमाष्ट
॥ १०२ ॥ देहबिलधिणासक
प्रनुप ॥ १०१ ततै कालहते दुषना
ही ॥ कालनयानक देहनिमां हीं
ज्योले प्रगनि प्रगनि मै उरै ॥ से
वह प्रगनि प्रगनि सिजारे ॥ १०२
प्ररुज्यो पाला कौ कएली जे ले
वहते पालामै दजे ॥ ताकौ पाल
कौ नयनां हीं ॥ १०३ ॥ जदप्ररहसय
तामां हीं ॥ १०३ ॥ यो हीयेक आतमा
काल ॥ सुषदुःखादिकै देह नक

हा जपलै ॥ ३१ ॥ प्रकृत कालमै सोवै
 लीन ॥ काल पुरष मिलि सोवैषी
 ना ॥ पुरष मिलि पद ल्यात मना ॥ ३१ ॥
 पुरषो नमक हुं जावै नांसी ॥ ३२ ॥
 नेदा ॥ नेदर हित तब येक ॥
 नित्पानंद द्वैत बितरेक ॥ चेतन
 निरमल गपानस ॥ ३३ ॥ पुरष
 प्रिये प्रका प्रनूप ॥ ३३ ॥ ताते नुद
 वनिध्या ॥ ३४ ॥ अदि प्रंति
 मधि ह प्रद्वैत ॥ जल बुद ॥ ३५ ॥
 मसक ॥ ३६ ॥ कार ॥ ३७ ॥ मना ॥ ३८ ॥
 विविध प्रकार ॥ ३९ ॥ प्रै सै सदा
 जिने ॥ ताकै कौन जाति
 नम होई ॥ रवि नदी तफ होत
 के सै ॥ नदी ना ॥ अदावान ल
 तै सै ॥ ३५ ॥ ये मै ना ॥ यो सांघि प्र
 कार ॥ सकल हत ॥ तपति सं

ध्याल आत्मसम्बतैसदाप्रतीतम्
अस्मिन्नस्मृतप्रनिरुप्रचीतम् ॥ १०६ ॥
अस्मिन्नस्मृतप्रनिरुप्रचीतम् ॥ १०६ ॥
तेसबउरैकोईआत्मकोनहोजा
नै। सुखदुःखकोनकोनकोठानै। ॥ १०७ ॥
सुखअसुखदुःखजहालजेते। एकप्र
कृतिकेसबतेते। सोप्रकृति ॥ १०८ ॥
उडरूप। चेतनिआत्मवृत्तसस्व
प ॥ १०९ ॥ केवलमानिनीयोसंसार। सु
खदुःखतनमनसकलप्रसार। जोरु
निसातेजागेजेते। निरुचेयनयेत
तक। एतेते ॥ ११० ॥ प्रतीतैशुभकैच
यनहा। प्राणो। प्राणहीयेरेसकल
तेजाणो। हरिचरणनिकासेवाक
रो। प्रैसीबिधिचतसागरतिसुह
१११ ॥ जेईजे। प्रायेरुदिसुदराणा। तिन
नातिनप्राये। हरिचरणो। तैसै
हरिचरणनिजो। रुज

सारयाकेपांननसंसेरहेप्र
 सकारदिदग्रंयसादहे॥३३॥
 सोडे रूपप्ररूपसमावेजा
 तेवसरिसदुषकोपावेताते
 याकोसदाविचारै। जोकोजा
 निप्रापकोतारै ॥ हो हा॥ नुध
 वयेदतोसोकलौ। साधिस्वर्गा
 नविचार। प्रबगुणवृत्तिनुको
 कहुं। निनिनिनिप्रकार॥३५॥
 ३५॥३७॥ येताथी नागवतेसहा
 पुराणे येकादससकंदे श्रीनगर
 दउद्वसंसादेः नावायांसाधि
 निन्तधनामः चत्रुबीसोप्रथ्या
 थो॥ श्रीनगराननुवाचै॥ चौपदे ॥
 नद्वप्रबनावोगुणवृत्तीतिनु
 कोजांनेस्वहेनिर्बली॥ जागुणत
 जालधिएसोईः निनिनिनिना
 योसोसोली॥ स्मदमा

और सब तजो ॥ १०८ ॥ नुच्यव यो दुजे
 नयो बिरक्त नरु सौ नरसो ग्रन
 रक्तो ब... तग्रसाध्य नवरु तरिगा
 यो ॥ परि सोमन मेक धी नत्या धम
 ११० ॥ येनाषिदसप्रुषसलोक करि
 विचारमेद ॥ नपसाक ताते नरु
 वसुधदुषदायक ॥ प्रातनको को
 येते लायक ॥ १११ ॥ सुषदुषदायक
 हीको ईजाते कहु है तक छुले ॥
 सुष धनरमत जा नै सकल ॥ प्रा
 न जये कहु जब मास कल ॥ ११२ ॥
 नमै छूटे दूजो को ईनांसी ॥ मेरो रूप
 मिलै मोमांसी ॥ जब सुषदुषनि
 घ्या करि जांनै ॥ नं नं ॥ वमानि
 रदैन सांजानै ॥ ११३ ॥ धारज चरि
 मचरण निजै देल दिक्क की प्रात
 तजै तब नवसाग को तरि प्रावे ॥
 मेरो निजानंद प्रद प्रावे ॥ ११४ ॥

वेकसधरम लज्जामांतिन
करैबिकरम सतिदयानस
नूलैसूधि रनुतिमकारगने
धिरबुद्धि रजसप्रसूकोना
धीरजवत पुन्यकारसदा
वृत्तंत बुद्धिप्राप्तिके निलैसं
गसंतोषी प्रसूदा नप्रनंग
इ कौमल बिनयदीनचतुरा
इ सातलतिरदयसकलसुष
दाइ प्रैसी नांतिबसेतसंपती
सांतिक गुणकी जाणौ वृती
प्रातमईनसबहानतै ज्यारा
चेतनिकरिबृतां व नहारा
नोगासक्तिरुदेवहकांमि
धनप्रनिर्लाषजिसप्रनिरो
म ५ त्रसनां सिसुबबल
वंत रिपूनित्रा दिकनेदप्रनत
करिकांमनां नजैबहदेव पर

उद्धवमनवचिक्रमः। सकलद्वैत
कौं जानौं नरमाः। सबलेमनकौं नि
गुलेकरो। निश्रुतकरि मम चरण
निधरो। ११५। यासकौं कलाये
तुलेजोग। याकरिलेवै ममसंज
ग प्रसुतोयागायाकौं धारौ। सुने
सुनावै सदा विचारै। ११६। तिनके
निकटि दुंदनसौं आवै। प्रंतकाल
ममचरणनिपावै। तातें याकौं स
दा विचारौ। कोरौ बलप्रचगति
धारौ। ११७। दोहा ॥ येनुद्धवतोसौं
कसौं - मनसंजमनिजगणान् प्र
वनापतसौं सांघिकौं सुनतमिरे
ज्यौं प्रान्तः। ३५। ३३। ६२। ऐतीश्रीना
गवतेन्तापुराणयेकादसस्कंदे ॥
जगवदनुद्धवसंसादेः नाभाप्रान्ति
दकगीता कथनं नाम त्रीदोषीतौ
प्रख्याये रघु श्री नगवानुनाये ॥
चौपडी ॥ उद्धवतोसौं सांघिकसौं

मारथकोलसैननेक्रुद्विहृश्रा
 रेचमिमेनुं त्साहः सदाकठो
 रसदाप्रतिचासः बहूतवृत्ति
 राजसकाश्रैसीः धेतुमसौ ना
 श्रीमैतैसीः नस्यालोचनकोध
 अश्रिकाईः जसातहां दानरुदन्
 कुटाईः अमप्ररुक्कलसैसोक
 अरुकोसाः निद्राप्रालसनेप
 दोसाः धनिसदिनचिंतानुदि
 मसीनः सिरदेप्रासासाहसध
 नः असाबसौतामसकावृती
 दिनतेकदेनलसैनिर्वृतीः सी
 गुपजेभमताअरुप्ररुकारः
 तातैकरेबिबधिबिबहारः
 तैसबमिलितमगुणकावृती
 तिनतेबाहैबसौतप्रवृतीः १०
 धरमरुक्कलसैप्ररथकामप्र
 नूरकतीः अथालोचनथाअ

द्वैतनरमहिअमबिनदहौजाहि
सुनतहाधुटे ॥ द्वैतदधुटे
क वृत्तप्रद्वैत ॥ प्रथमहासा
रधजेतये ॥ यरुसाधिपुगट
करिगये ॥ मुक्तिसाधिजानतस
होई ॥ साधिबिनांनरुधुटेकोई
२ ॥ सोहासाधिक्होमैतोसौ ॥ नि
श्रुलमनकेसुनीयोमोसौ ॥ उद
वप्रथमहातोसैयेक ॥ मोबिनस
कलहतेअनेक ॥ इतबमैप्रकृति
आपैतकरे ॥ उडचेतनिद्वैविधि
बिस्तरी ॥ तिनदेन्योतैदुपज्योप
त्र ॥ मसैततजोकहितसुत्र ॥ अयेक
प्रकृतिकेत्रपेगुणाकोहे ॥ अधि
एनिनितिहकोदने ॥ सुत्रहते
त्रविधिप्रसंकार ॥ नरमावत
कोबडोबिकार ॥ पपंचनूतजेष
पबीआदि ॥ अरुपंचैसुबिनसध

श्री अरुणप्रवृत्तिपरायणजे
तेष्वसौतन्नातिरुससादिते
११ बरतैप्रपणेः पनेधरस्य
प्रायः सुखसुखगुरुस्य
तेसुबमिलतः एतत्काले
जिनतैष त्रिधिस्तोत्रे
१२ समदमग्रादः गतिनर
जोईः सांतिकलप्य गकसाये
सोईः राजसकांसादिकप्रधि
कारः तांमसज साकौध्यादि
द्विधाः १३ बसुधरससौ
मोकोत्तः दुजासकलका
मनातजैः प्रायाः २४ नाव
साहो सांतिकप्रकृतिक
हाजेसोईः १४ का मना
हिरदैधरिलेतेः २५ पनकर
मि मोकोसे २६ जावरा

दितांमसप्रस्कारतेयेता राजस
तेजइंद्रियसबतेते द्विसांतिकतेम
नप्रसूदेवा ॥ जिनको पापे नयेब
हतेवा ॥ तब सब सीनमें प्रेमि
लाये ॥ तिन सब सीन मिलि इंद्र
नुपाये ॥ इंद्रुस लिलमां सिधि
रकस्यो ॥ तामेंमें निज इंद्रसहीध
र्यो ॥ प्रादि पुरषसे मेरो रूपान्त्र
गुण नियंता गुणनसरूपतत्ता सु
नाचिते नुपज्यो पदम ॥ तामें सक
ल नवनको सदम ॥ पदम हतं ज
ब ब्रह्मा नये ॥ ब्रह्मेमा सौं जगति
निरमये ॥ श्री राजसिद्धिपति
नये ॥ विरेच्यतातै प्रगदौ सक
ल परपंच ॥ लोकपाल लोकनसे
तारे ॥ तीनों लोक त्रिबिधि बिस्तरे
१५ ॥ सुरग लोक देवनको दीयो ॥ प्रंत
रिह नूतन गुरुकायो ॥ नूतिलो

जसकोकसायेः मुक्तिसेतक
बहुनसांगसायेः ॥५॥ जबरस्य
हिरदामैः प्राणैः ॥ जिनं जिनक
रुमनिममसेवाठाने ॥ सोव
रुतामसब्रतिकसावे ॥ ताते
ममसुषकदेनयावे ॥ १६ ॥ सत
रतुतमतीन्योगुणजेसैः जी
वसाकौबिधनसबतेस ॥ तगु
णमेराऽप्रग्याकरैः ॥ तातेकोसि
नजेतेतिरैः ॥ १७ ॥ चितरुते ॥ न
पजेयेसकल ॥ नकौतजेऽप्रा
तमाऽप्रकल ॥ यनकौश्रोडि
रहेमोमांसी ॥ बसौस्योऽपजे
बिनसैनांसी ॥ १८ ॥ करिसाधनर
जतमपुंरैः ॥ सांतिकगुणकावृति
हिकरैः ॥ सांतिकसूरजिज्योपस्क
सैः ॥ प्रतिसीतलज्योचंद्रबिगासैः

दासमैतौनेकरुनदासजयो बडो
उपहासमुषजगमैनदिघाईये
करुजुननगतरुमनक्तिकराकरी
अकरुप्ररुप्रग्यताईरी तिमनमैन
आईये। नुनकातौबातबनिप्रोबेस
बउनहासौ। गुनहा। कौलेतमैरुप्र
गुनधिपाईये। प्रायेधरमांरितौनु
मदमैनजा निसक्यौ। प्रायेप्रबक्यौ
हृथायेपायेनपटाईये। १८२। श्रीन
ललाचादजकीटीका। हायेमैसरूप
सेवाकरिअनुरागनरे। हरेप्रोरजीव
नकीजीवनकौदाये। सोहालेप्रका
सधरद्वैबिलासक्यौ। अतिसी
हलासफलनैननिकोलीजाये। अ
तुरीप्रवधिनेकआतुरानहातिकेह
चहौदिसनांनाराजानोगसुधकीजा
ये। बलननूनानलाये। प्रफुप्रनिरा
मरीति। गोकलकैजधोमजांनिसुति

परोस निकै नरुिबधूपुछिलईवा
त अरुकाफेकौमलीनरुे बोलरु
सकायेवेरुलुवालिवायेत्याबये
किंहुनप्रघायेषोदिपीसितनघान
रुे कहुसूनकहोयेरुगहैमनमो
येरुतिरासोसुनोो जोयेजातरु
न्यानिकै सुनिलइयेही नैकगये उ
टेकहती नयोदुषअनेकजैसैजल
बिनकीनरुे १८ छीतेदानतीनप्र
नअल्पकरिहीनअये अेसोसोप्रवी
नअरुफेरिकाहापाइये बडीतअ
नागीबातकरुनकरुकोलागी
रागीसाअसेवाभैनकैसैकरिल्याइ
ये नयीननबानीतुनघावोपीबो
पांती येनेरामतिरुंणी मैकोप्र
तिरुतिनाइये मैतोहप्रध्यानतेरु
वरुहामैरुहलान जोयेकहोसदास
वाकरुबेकोअइये १८१ कानेरु

१५॥ सब कल्याण न लसुषकारा
 निश्चलकरासकलदुष २८ ॥
 तातेधरमग्यान - धल्लै चिंता
 सोकमोह न बरहै २० जबसांति
 कतामसन २६ है ॥ रा . सप्राथ
 बसेरागहै ॥ असरूपसंग
 लनेदः तातेमानकरमनये
 दः २१ जबसतप्ररुजः ॥ ६६ ॥
 केवलयेकतमोगुणहोइतबबि
 कनासकप्रविराणः नुदिमजै
 ताहिरताकराणः २२ तातेसोकमो
 हकेबासाः निद्राप्रालसनि
 दिनप्रासाः जबधटेइंद्रियन
 ब्रतीः हिरदेनहीरहानु ॥ तष
 २३ ॥ तप्रसनसकलनिलस
 गः सोसांतिकममगुलहैमृ
 वलनगुहइंद्रियमनबूदी ॥

केंद्रों पर करवा करि जो बौ जै
कौं जिसारे काहे जावोः कृपा
करौं सरे ग्रह जावो १२ नि
विजु रवसी लंग सुषयायो
सासो लक लदुषा लोप जापो
त सन नयो नोगा वल नोगः
जा प्रचु रवसी कौ लंजोगः १३
ता प्रचु रवसी ग्यां नग्रा करव्यो
ताते न लोनां नि करि हरव्यो
तन न प्रसि रहे कथुं न जा न्योः
जसहि न न्या ल वर प वली
जा न्योः १४ त वल न र प के
पुण्या नागः जाते पुगद नयो
बे रागः त वल न प व च न व व
क जे ३ः तो लो से न राषत तीत
ग्रही
लीः १५
यक दे वी न न को लः ग्रापती

धिरनसासौ हिलसेनसासुद्धि ॥
 रक्षंते विधि विस्तारः सो जा
 नौ राजसप्रधिकारः जब विका
 रबहु विधि मन गले प्रासाव
 ने निरंतर रहै ॥ २५ ॥ लोक विषाद
 चेतनां सान्ना सोता मसनु दिम
 लंबु बल ध्यानः जब नुपजे साति
 कको नावा तब सब होवै देव सु
 नावार ॥ २६ ॥ राजसते प्रसुर नि
 का हृती नूत गानिका तमनु
 तपती सातिके ते जागरणो हो
 ईरा जस प्रावे सुपना सोई ॥
 २७ ॥ ता मस हते सु
 षपतिल है बृहन्नतुरीया निरं
 तर रहै सातिके उद्ध लोक नि
 जावै राजसनर प्रादिकतनपा
 वैशर चता मसना चै यावर प्रा
 दिया विधि नरसे जीव प्रनादि ॥

कायो आपनो डौह। गलायौ क
ठ देवको माया। जिनमेरो सब
पुगवाया। १ शिपे नमो कौंडरु
क्यो बलैतेरो। सब सुप्रायुली
यो हरि मेरो। मै दिन राति न जाने
जात। प्रकृत। करिमा न्यो बिष
घाता। १७ वर्षे समूल गये म मबी
ती। सकल विकार नली नो जीती।
देवो मै के सो कल कायो। प्रस्त्रिके
करु प्राप बिकायो। १ च जो मेरा
डा राज चक्र बरती। जीति समस्त
करी बल धरती। सकल चर प्रस
चरणति सेवो। तन टन चन सब
मो कौं देवो। १९ श्री नो मै बिक
नो स्त्रा ल। पि। ज्यो बान र बाजी ग
र साधि। ज्यो ज्यो र्शो लो हिन चा
यो। त्यो त्यो मूर ध मे सुध पायो।
२०। ५ ता पर राज सरु तिल जे कोहि

सात्त्विक ब्रह्मिणोऽन्ये ज्ञोऽसौ हिता
नैव नराणां रसे ज्ञो को ई २१ सो देव
तव को लोकात्ता जावे राजसमें
जरी नरन पावे ताका समै मारि
करक निवले नान्यो गुणत नि
को नै रसे ३० मे रसे तिकर मजो
को ता मे दे जो फल न ही धरै
सो दे लः तिक कर म क लावे ता
ले नी प्त नाल प्य पावे ३१ फल नि
कति म न क र नि नि नै ता
को न न स क न न व धा नैः ल स्या
की ल क रै न स क मीः सो तान
सके ब्र डो ग्न न र स ३२ नै दे र है
ति सो सा ति क ग्या नः दे ल नै दे सा
न न स जो निः ३३ ए क क मु क तु
ति नो सो रः ता स स ग्या न क ली
जे सो रः ३४ जाल न दे ल र त जाल
कः सो लै म री न न व व क क
२ ३ क व सी यै केलः सात्त्विक

तथा समांनिकरि च लो। व। व। व।
नगल च यो मे पाये ध्यायो ज्यो
नृवकांत ग्राय वित्तरायो रीको
नृत्तं तित्तं केवलमेतैः तेजपर
नापरै न लकोईः ज्ञोले वैस्वीश
धीनः ज्ञेसै परी संग धरदीन २१
विद्यामौ नित पस्यात्प्रागः व
नमै वलित्ठो दिडवै रागः येस
सका ज्ञेक धनांतेः ज्ञो गत्राया
वले मनासांतेः २२ येनुरवसीन
वना नैपाईः कांन प्रग निब्रह्म
नांति जगतां परिचे प्रग नित
लीन वचनैः प्रथिक प्रथिक व
कनी गरी २३ ज्ञेसै प्रग निपुत्र
मिन्न वरीः ता नै ई धन डारे कोई
सांते प्रथिक प्रथिक पर ज्ञेः
प्रायको नलीता नवता करैः २४
ज्ञेसै प्रथो नलीता नवता करैः २५

बासकसैजोसंत ३३ कग्रहमैक
लायेराजसबास ३३ ताजस ३३
सुराश्राबास ३३ पावरचलमम
कूरतिजसा ३३ निरगुणबासकही
जेतसा ३३ ३३ सांतिककतीसौनि
हसंगी ३३ सोराजसफलकरम
प्रसंगी ३३ विधिकरिरातितोम
सीकती ३३ आसेलाग्यकरमनि
बिसतरता ३३ ३३ प्रापहासेटिरसै
ममसरणा ३३ ताकौसबनिरगु
एप्रचराणा ३३ सोडननिरगुणाक
रताकहीये ३३ ताकेसंग्यप्रमपद
लहीये ३३ ३३ ३३ ३३ निरुकरमप्रात
माजानै ३३ सकलतजानकीसरह
ठानै ३३ सकलत्याग्यनिश्रुलजोह
ईसांतिकश्रुहाकहीयेसोई ३३ ३३
राजसश्रुहाठानैकरमताम
सश्रुधाकरै ३३ ३३ ३३ ३३ निरगु
एश्रुहाकेरीतकी ३३ जालैमिदे

पुञ्जापुकोकायोञ्जनरथमूरध
प्रापसापंडितिनानैपिस्त्रोक्तपु
नृधञ्जसतजानैरिज्ञोमैरैस्त्र
सकलचूकेरतसोकरतौत्रैरो
मैसूरधकैताकोट्टिकारः। निन
नकायोकचूग्यानविचारः॥२७॥
सत्राकरिजाकेचित्तास्योः ग्या
नविचारसकलसोदस्योः स्त्रोक्त
स्त्रिबिनकोनधुडविदुजोः ग्राय
नधुटनपावैरपत्तातैमैस्त्रेच
राणनगसोः सकलत्यागपस्त्रिके
कैरहिजदापिदेवलोत्तिष्ठना
योत्रायापतिदुष्कलिस्युना
योः॥२८॥ तौमैसूरधनसोः ज्ञान्यो
कान्प्रधसुप्यकरिनान्योः ज्ञा
तैताकोनविष्पराधः येलेरो
ननबडोः प्रधः॥२९॥ जोनैः स्त्रग

सः ॥ ५ ॥ प्रासक्तो ॥ इत्यप्यपि पवि
त्रविनाशमश्रावै ॥ तामैश्वर्य
नौध संनडा ॥ ५ ॥ जालैनुपजेन
लीबिकार ॥ सोकहिसांतिकप्र
हारः ॥ ४० ॥ घाटमीठातीघाघारा
दुषदायेकरा ॥ ५ ॥ अहारा ॥ जोश्र
सुः ॥ स्यातैश्रावै ॥ सोतामिस
असा ॥ कलावे ॥ ४१ ॥ कसजनश्रस
मेरोनुशिष्य ॥ सोनिरगुणानो ज
नप्रतिइष ॥ ४२ ॥ इंदीयसुषतस्मा
दिकदहै ॥ तजिअरं नीनिधिर
कैरहै ॥ ४३ ॥ श्रातमतेनुपजेसुष
जोई ॥ सां ॥ ४४ ॥ यकलायतुल
सोई ॥ इंदीय ॥ धरा ॥ ४५ ॥ सनसाग
हाये ॥ निंदाप्रालसतामिसक
हाये ॥ ४६ ॥ मेरे प्रेमनक्ति सुष
जोई ॥ निरगुणसुषकहायेतुल
सोही ॥ ४७ ॥ दसफलरुग्धान

काल

नरकमें देया दुषनासाहि
सूपकरिलेयो गुनमेंसांपजा
निदुषयावे पुगनिपतंगपर
सरिजावे तौतिनको प्रपरा
वनकाई प्रापदुषकरिसेवे
साई तांतिनकोपरसुत्राव
नौनननेको चरस्यो कुत्राव ३३
जाको प्राप पुगनिसेपरी तौन
रक्षिकवनको चरो हेतसली
ककसादुरगं च सोकरिजां न
विमलसुगं च ३३ सोप्र पनी
प्रापसाकस्यो निजानं दुप्रात
न विस्तस्यो येतनतौ वलौत
कैकलाये तानेवनतागसिसे
रसाये ३४ सांतापिता प्र पनी
करिकले त्रिपिकनेकनित्य
३५ तैवतलकसाये राजाको

करता करम प्रवस्था दोन पंम
सरधानिषा प्ररु आकार भित्त
गुणानिरमति सब बिसतार
जो कछु कहै सुनै प्ररु देवै ॥
मन प्ररु बधिज हात गुलेष
के भासो सब प्रकृति पुरषा बिसत
रा ॥ तिर गुणानिरमित सकल प्रसा
र ॥ येन ते जीवित है संसार प्ररु गुण
करम मये वा सुवार ॥ ४ ॥ जो नि
तीनो गुणानि निवारै ॥ चित प्र
पनो सो नै धारै ॥ सो नै रौ निरगु
ण प्रद पावै ॥ बहौ सौ धा न व नै
नही आवै ॥ ४ ॥ ताते ये प्रै सानर
देहा जा करि निटै सकल स देहा
होवै प्रगट गुणानि विग्याना प्रस
मोहि निटै सब आन ॥ ४ ॥ ताते
पंड तिसकल निवारै ॥ मो कौ से
ये प्रप कौ तारै ॥ यौ बिन सकल

कै न पावक न धि ए सै जा कौ ॥ ३५ ॥
कै न कौ कै सौ न अंगाला कै अ
र नौ नित्र कै काल ये तन धक
ह सो ये किन किन कौ ॥ प्रगट
हा सत सै तिन तिन कौ ॥ ३६ ॥
तहा अ सु ह दे स सै प्रै सी ॥ प्रगट
ए क पा नि सै जै सी ॥ त हा कौ न
बा जै म ति सं द ॥ अ त्नी ना म
हा ल को फं द ॥ तु चा रु ही र मां स
अ र अ त म ज नि द रौ म न
दं त नि षा मु त रै ट क म हा ड
त्री प्र ग ट न र क का षा ड ॥ ३७ ॥
तै त्नी अ रु ता स र गी ॥ तिन के
सा ह जे प्र स र गी ॥ तिन के इ स
त नि त म न सो ई ॥ दि षे बि ना
रु क्ता र न को ई ॥ रू त्ता तै तिन
तै द र स नै करी ये

अपंडुलिजांनो जेतेश्चातमधाती
अंत्यो ५५ सफुल्लरुतंसेवेनते
संग सावध्यानपरपरैरनसंग
इतिप्रप्रागहेरुमनजीते मम
कालादिनरेनिचितते: ५०स
कालसातिककालंगतिकरै:
राजसुप्ररुतानसपुत्रै: देता
दिकतेनिसपुत्रुहोई: उप्रागेप्रं
शुभाकरैरनकोई: ५१ मोमैंधारै
तस्यजलबुद्धी: तद्यथावेअंतरा
तिसुद्धी: यात्रिधिसांतिकुधि
वकधै: तातेद्विगसरारनिरा
वै: पर द्विगसरारनिदेनवत
वै: निरुचलरुपप्रधानीनजे:
वै: मोक्रकोलाकोजांनै: वासरि
जावरिदेतिगसांनै: ५५ इमो
नोसत्यमोलाकोरु वतैरुयो

नरकमैदेषो दुषरान्नासि
सूषकरिदेषो गुनमैसांपजा
निदुषयावै ३ गनिपतंगपरै
मरिजावै ३ तौतिनकौअपरा
६ नको ३ अपदुःषकरिसेवै
सोई तात नकोयलसुनाव
३ ननमैक्योअस्योकुनाव ३
३ नैप्रापअगनिमैपदौ तौन
रदोषकवनकौअरौ देलमली
नमहादुरगंअ सोकरिजां नि
३ नलसुगंध ३ ३ सोअपनी
अबिद एकस्यो निजानंदअत
मं ३ सस्यो येतनतौबलैतन
कौकहाये तानैममतागलिके
रहाये ३ ३ मांताधिताअपनी
करिकलै स्त्रीयेकनेकनित्यर
लै कौयलतनकहायेराजाकौ

कालप्रगतिनसाहसैरैरै निरंतर
मेरेसंगातातैकदेनसेवे नंगप
दोला। उद्धवयेतौसौकरी। तौन्यो
गुणकाब्रिता। प्रबैऔरुंजानसाक
जातैसायनिरवरति। पदी। रती। प्र
नगवलेनतापुराणो येकादसस्क
दे नगवलेन उद्धवसंसादेः नरावाप
गुणकृतिनिरूपणानोनपंचबीस
प्रथमये २५ श्रीनगवलेन उवाच
चौपदी। उद्धवयेनरतनसैसौ।
सकलसिद्धिमेंनाहीतैसौ। यातन
करिमनग्यानसापावे। जामेनव
तजिमोमै। प्रावे। तातै। प्रैसतनके
पारी। मो। निरिनेके। करे। नुपारी। अ
तरनाही। मो। सि। बि। चारै। प्रैरै। सक
लवासनाटा। रै। न। म। न। न। क। न।
के। ल। धि। ए। जा। णो। तै। तै। प्रै। प्रा। फ। प्रा।
प्रमैठानै। प्रनाप्रासतबमोको।
प्रावे। कालव्यालबलो। बसाषावे।

कै न पाव क न धि ए सै जा कौ ॥ ३५ ॥
 कै न कौ कै स्वान अंगाल कै अ
 पनौ नित्र कै काल ये तन धरु
 क सो ये किन किन कौ ॥ अगट
 दा सत सै तिन तिन कौ ॥ ३६ ॥
 महा अरु सु ह दे ल सै प्रै सी ॥ अगट
 नरक धानि लै जै सी ॥ त हा कौ न
 न बा धै मति मंदा ॥ अरु त्री नाम ॥ ३७ ॥
 काल को फंदा ॥ तु चारु ही रमांस
 अरु अरु त ॥ मजाने दरौ मन
 अदंत निषा मुत्रे टक महाड ॥
 ॥ स्त्री अगट नरक का घाट ॥ ३८ ॥
 ता तै त्रि अरु ता संगी ॥ तिन के
 न हा ह जे प्रसंगी ॥ तिन के इस
 क नित मन सोई ॥ देषे बिना
 धि कारन कोई ॥ ३९ ॥ ता तै तिन
 कौ दरसन कराय ॥ आपु हा आपु
 नरक मष ॥ राये जोये इंडी पग

नाथा गुणान्न निष्प्राज्ञानं मो
नाथपायं कश्चि नानैः यो कुरुते
सहं नाना तौ ह्येकं शिल्पं कुरुते
ली ४ यं जहाय स वै प्रेसायुः कवे
प्रसायुः संग नली तौ ह्यः सितरु
गुदरथया यथा जेतं मनः कते
मचनत्यागीयं तेते पकरे प्रसा
अथैककोस्य ग तौ ह्युपांत व्या
नको नंगः प्रसृतस्य ग नरजव
लाकतेः तौ कस्य ग नरकमे पारेः
ते सै ज्ञं यज्ञं यके संगः कूप
यने लो वै सुय संगः याका गाथा
चायं प्रकः जाते नुपते परभव
प्रेकः १ जव नु रव स वि सत न ह
लो लोक नो न सागर मे व लो
तल व पुरुवी न्या प्री ज्ञा ईः तौ स
या नाथूं खोनीः ८ राजा पुरु
वायं कर विरलीः साका ज्ञान
लो पुरलीः श्राप तं नु त री ज

रघुनिवारैः मनबच्चिकमदुह
संगतिदारेः वतवपुस मनस
सजिसाधिरहोई कदेविकारन
पसरेकोई तातेजो खानकोन
जे जसुखीतिनकोबुधितजे
४१ इसपरसगुरु सरवणनि
वासः सबसावनितेमानैत्रा
सः इइयनुकोविस्वासनकरै
ग्यानवतनसापरहरेः ४२ मस
पुरषजेजीवनमुक्ति तिनह
कोसबसंगअपुक्ति तेजेजग
तेछूटेचरैः तेहमसेक्योसंग
तिगह ४३ तातेनैसबसंग
निवारो प्रापतिचरनकवल
उरधारु दानबदकरणाकप
साकीः कृपाकरी बह ४४ जज
की ४५ न बाजनेवाचै
याविधिबचनकेहेनरराज

सी सोमिलकरिनिर्पकैउरबसी
येउरनासुरिलेवैजबसी। नगब
देषूसमै बिनतबसी। तबसाउर
बसानरपवै नसुनावै। मेरेहोय
उरनाकौलेननपावै। १०। जैसे
वैनउरबसीजाधै। राजासुनि
हिरदाभैराधै। करैप्रसप्रसो
निरंतर। बिधैलाननासीपरै
प्रवः। ११। बसौस्थौ। आपमुकति
जबभई। तबतजिउबसीनर
पसागई। नपरपीबिस्वापकरै
सौरोवै। परिसोबबपकीवा
नजोवै। १२। राजानगनदेह
धिनासी। बाणै। बिकलदीन
मासा। लजुारैलनतमदन
चल्यो। उरबसीधाधैतै।
प्रसोप्रापानुमडाकारहो।

तत्रिजुखसीलोकसुखसाज्जा ॥
ज्ञानत्रहौसबसस्यदास्यो ॥
जननिश्चलकरिमोमैध्यास्यो ॥
४ पातातैठद्वयेपुरधारयनर
तनपाद्योतबसीस्वारथाजबस्य
सकासंगतितजैसतसंगति
गहिसोकोनजै ॥ ४ ॥ सतबतां
वैलितनुपदेस ॥ ४ ॥ जिनतैसस्य
रहेनलैल ॥ मनकीसबप्रास
किनिधारे ॥ सतमहाजबसाग
रतारे ॥ ४ ॥ निस्पुरुनिरारनस
मदसेसंग ॥ हेरहितद्वन्द्वनलीप
रसे ॥ प्रसकारममतानलप्राने
मोहितजै ॥ जौनहीजांनै ॥ ४ ॥
तेजदापिनपदेसनदेवै ॥ तेहसो
लियैरतेसेवै ॥ तलकथामेरी
नितिसौवै ॥ तेसाप्रधसदेहन
प्रोवै ॥ ४ ॥ मेराकथाध्वणजके ॥

दासमैतौनेकहिनदासनयोः बडा
 उपहासमनुषजगमेनदिषाईयेः
 कलैजननगतलमनस्तिकताकरीः
 अकसौप्रहोजरयताईरी तिसनमेत
 आईये। दुनकातौबातबनिआबैस
 बउनतासौः अगुनहा कौलेतमेरुप्रो
 गुनधिपाईयेः प्रायेबरसांफितौनु
 मूढमेनजा निसक्योः आवेप्रवक्या
 ह्यायेपायेलपटाईयेः १८३ श्रीः
 ललाचाः जः राः हायेमैसरूप
 सेवाकरिअनरागनर इनेअौरजीव
 नकीजावनकौदायेः सोहालेप्रका
 सधरद्व रं बिल्लासकायोः अतिसी
 हुलासफलनैबनिकोलीजायेः च
 तुरीअवधिनेकआतुरानहोतिकेह
 चहौदिसनांनारागनोगसुषकीडा
 येः बलननूनामलायोः प्रकूपनिरा
 मरीतिः गोकलमेजधामजांनिकुनी

मनराजाहै ॥ १ ॥ चण्डगोकुलकेदेखिबे
 कौ गयोयेकसाधु ॥ सुधौगोकुल
 मननयो ॥ शतिकधुनपाराहै ॥ धौ
 करकेबुधप्रबटवाहुनायेदीयो ॥
 प्रकीयोजायेइसुनसुधनयो ॥ नयो
 नाराहै ॥ देखेप्रायेनाहो ॥ प्रनूपेदि
 प्रापपासिप्रायो ॥ चिंतासोमदि
 नदेखिकहीजाबिहारीये ॥ वैसैही
 सरूपकेईगईसुखिबोलेप्रांनि ॥
 लीजायेप्राच्छान्तिकसौसेवानिति
 चारीये ॥ २ ॥ ॥ बुलैगईप्रायेअनि
 लाधेपरुचोनिकीजे ॥ दाजेजबता
 येमोहिप्रांनिअरुपहै ॥ कहुजा
 येवाहाहोरदेधौ ॥ प्रेमलेधौहाये ॥
 लायेनावसेवाकरौ ॥ मारगअनूप
 है ॥ देखिकेसगननयो ॥ लायेधुरिध
 रिसरिनैननरि ॥ शयेजानौ ॥ नोकरके
 सरुपहै ॥ निसदिनलगेपगोज

ते सब पाप नितै निस तरे सु
करै अंतर गति ध्यावै अति प्र
इसौ पाति ब ध्यावै पर ते सब ज
लाल है मम न की स्व तरे सो
सकल बिर की मेरा न किल
न जब ही पूरा का म न घो सो
तब ही पाता को कथन करणो
है ग्या नानंद रूप म न ल है
सीत निसा कह लो वै को इति लो
अ गनि प्रजा है सो ही पर त म
पार न य स ल ज ही जा वै त्यो सा
धु सब दोष निटा वै ये प्र पार
सा ग संसार जा मै बू डे जी क प्र प
र ॥ ५३ ॥ तिन कौ ना न्ये क लो ये
सत रूप प्र ग र म म दे ल ज्यो प्र
ए नि रा धे प्र लार मेरा सर गि दि
प्र लार पर ज्यो पर लोक प्र ह
र म ध न जा नौ त्यो म तार क

प्रतिदूर्गाग्रसुखसुदेवः ३३
जोरेरुत्तरिसुनसुषुतादेः सुखित
बदनप्रेमः प्रतिबादेः सबसी
नकं सुताः ३३ ॥ विनयेन
मताबदनः प्रादीः ३७ अंदनः प्र
रुक - रुतेसारः कुं कुं मः प्र
रुसुगंधतनीरः प्रथमसिं
धूमकः एकचदावेः निरु
लजलः प्राचमनकरावेः ३ य
पुनिसुगंधजलदेयेसनाने
मंत्रबदनमनकरमसीः प्रांने
पुंजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥ ३३ ॥
प्रादेः पुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥
३३ ॥ जैः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥
द्वारः नमोनमसेवः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥
३३ ॥ यजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥
सिरषाः श्रुतिबिसारैः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥
जनेः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥ यजुः ३३ ॥

धूम्रानौ जिन कै हिरदै प्रग

तिन बिन प्रानव

पप ज्यो बाहरि

जिये कस्यो नुरन बन नुवा

पिता हितक

धू दुष सारी ॥ ५ ॥

सातै सत संग नित करौ ॥ ५ ॥
हिरदै धरौ ॥ ५ ॥

प्रनाथ

५७ तब पुरुर

सो नुरब सी लोक

तब तजिन यो प्रात

नारां मा बिचरौ नूनै काने क

या तातै प्रसत संग पररुरीये

धरु संग निर

सा

सुष

६५ ॥

सा ॥ ५ ॥ प्रै सो साध्य प्रसाध्य कोः

गतिलकादिककराणां नुतमस
 ला बरुतसुगं हः प्रेमसरुति
 सोमनबधः ॥ ४ ॥ बालजोग
 अचमनकरावो कुसमुसुग
 द्ररुधुपवनावे बरुतनाति
 रतीतितारे नाना विधिनेवेद
 वारो ॥ ४ ॥ धारधोड दधि घृतदध
 लापसी ॥ लाडू पूवासुहारसुर
 बिजनकरे ॥ अंबुसोतेरे ॥ बिनी
 लगोवे बरुतानेरे ॥ ४ ॥ निति
 दासो नुवदनीतेल ॥ अरुवावे
 पंचोमृतमेला ॥ अलंकारइसं
 आइस्य ॥ गीतनृतबादितसुप
 रसः ॥ ४ ॥ बरुतनातिने वेदस
 वारे ॥ नितनासातोपुवनटारे ॥
 बरुतिकरे पावकनैपजा ॥ सोवि
 नुताहिनजानेइजा ॥ ४ ॥ ५ ॥ अगनि
 रुडमे ॥ अगनिहाधरे ॥ सम्यक्
 हृतादिकहासहाकरे ॥

सुनिहरीजीसंसंगा तब उद्वज

नपूश्रायो करनये ॥ १ ॥

३३ ३५ ३५ ॥ ऐती श्री नगवलेम

नमुयायो येकापससकदे शान

गवदउद्वसंजादे ॥ नाथापये

हैगीतोपाप्याने ॥ श्रीबीसोत्र

पू ॥ २ ॥ उद्ववउवात्रै ॥ सुप्रनूक

याकरै ॥ प्र ॥ श्रीसी ॥ नाथोक्रांजो

गबिधिजेसी ॥ जाकेकरतसोप

सत ॥ संगा ॥ पावेग्यानसोप

निरसंगा ॥ यरुजो ॥ वप्रतमा

कीपूजा ॥ तारें ॥ येकरतनही

॥ याकौ ॥ ॥ संप्ररुना

॥ गुरुब्रह्मसपतिप्रमबिस

॥ न ॥ ॥ लमुनार ॥ रजे

॥ परसश्रीययु ॥ ॥ वैतल ॥ ॥
दिबिधिसै ॥ ॥ ॥
दिठकरिबिधिहिरदेगसौ

पदिपदिमममंत्र जिनेकलैवे
४६ करिसोमहाश्रा
ताकैतैरुगही

तपतरं वरणतुष्यष्टवि

गं चारुचतुरनुजश्रायु

संगः ४७ पा बसुक्कुडलमि

मालाः सीससुकटकटिसुत्र

बिसालाः नृगुलताप्रसूत

हमीश्रादिः बहूबिधिष्यावैस

पप्रनादिः ४८ पुनिनंदादिपा

रुद्ररुद्रतैः बिधिबिधानसू

जेजेतेः जपैमूलमंत्रबहूवार

जाबिधिबधैः प्रेमप्रधिकार

४९ पाधैतापरसाः लैवैः ले

रिसबनक्रनकौदेवैः श्राग्याप
यश्रापतः पावैः प्रीतिसरुति
जेतोजापेनावैः ५० पुनिप्ररपै
सुगंधतमूलः तममालनुत
मफूलः मेरुगुणुंथैः ५१ गावै

कृतिन नृगवादि कस्युत निसुम
 यो सो नव वसुते नवानी पाया
 जे ते सकल वृणा श्रमनी प्रस्त्री
 अंत प्रज सब को धरम अया वि
 नु श्रौर धरम से जे ते साहाका
 जक से से ते या विन श्रौर धर
 म जे करे तो तिन ते फिरि बंध
 न परे ॥ पय से सब धरम नि
 को धरम ॥ या हा हते कटे सब
 करम तते पूजा विधि विस्तार
 रो कर पा करे जा विनि निस्तार
 रो ॥ सु म दया ल सब के हित
 कारी ॥ सु म रत सकल दुष प्र
 वृत्तारी ॥ सु ना भे परनुपकारी
 बैन बोले हरिषिक मल दल
 जैन ॥ श्री नृगवानुर्वाचो ॥ न
 द्वय पा को अंत न पार मम पू
 जा विधि बहु विस्तार ॥ पर

नोमनचावे प्रमददावे मेरेगु
 एप्ररुकरमस शदे पुरण
 प्रेमासिद्धिप्रवगादे कथानि
 तिममसुणैसुणावे मोबिन
 कथहनपलठरुवावे परचर
 एप्रलोटे सैनकराई सुप्रते
 नामनूलिनरुजाई प्राकत
 प्ररुसससकत्र वेदे जेजेप्र
 प्रस्ततिकेनेद ५ इतिनतिन
 सौमनप्रस्तिकर बारबारच ति
 नएनमेपर प्राचिप्यारिजो म
 रिकरदोई करदलकैबिनती
 सोई ५० हे प्रचूनवसागरतै
 तारो नकालमृत्यु तैसोकनिच
 रो तुमबिनमेरे प्रेरनकोई
 याउचरणनिकानेसाई ५५
 हिरदेजोतिजोतिमेथादे नूर
 तिकौसजाबिसारे

तो लौ संघे परं प्रांते नामै
त्व सकल कौल्याने च पूजा
धिले तीन प्रकार वैदिक त
त्रिनिमित्त सार वेद सं जूर
वैदिक अंग सो कही यवौ
परसंग यौ सात त्रिकमि
श्रित जानै न्या ना न पूजा
नै वि प्ररु धिना वै स्यत्रे वरा
यन कौजा विधि पूजा कर
ए १० सो स्म स वि धितु मही सं
जाते जीव निकौ कल्याण नुप
उ प्रत मां नू निं अंग नि डल
वाइ दिज अरु प्रा पु अरु क अरु
गाइ ११ अरु सब लो व मे ताके
जाते जथा जाप्य सब जादा
नै अरु अरु का के नै नरा
ये मो बूष बुधि दुरिकार नाथ
१२ अरु हलाय जल मा संगप

हालों देवै तेस्मस्तमममूरति
लेषै पद्मकैजघा विधि सबमे
पूजाः मोकोषो दिनजानै दुज
या विधि काया जोग मन ल्या
वै तामै मम प्रतमा पधर वै
मोको करे बागु फूल वाईजा
निमहो ध्रुव का प्रथम पूधि
काई ५५ मम हित सदा बर
तादिक देवै बरुत नाति मम
नगत निसेवै मम पूजा प्रव
लके से ति दे दुंगा व पु सु सार
प्रसु घे दत ५५ सो मम समि
सुरता पावै तिहु लोक को ईस
कहावै जो मम प्रतमा थाप
करै सो सब नृपति साय प्रो
शै ६० जो मेरो मंदिर सवरा
तिहु लोक का धनूता पावै
पूजा दिन वृत्त को लोकः ज

स्नातादिकस्य कल्पसंग्रहः

शिशुसंघो

ब्रह्मणिके धरमः

नितिकोको नजैहले

वेदसकलयेतजैतीभ

रिममसुमराणां

करननिकोस्वार्

येममधरमः कमसुमराणां

विनोबधनकरमः ॥ ५ ॥ अत्र

नाथौ प्रतसाकेनेद

त्पनला निदेनवपेदनेक

सिल्याकान्तरति। येककावक

तौममस्वरति। येकले

स्त्रिचदनकराय। येकचित्त

रपुस्तकल्पविधराये

क
क
की

नानानानां नैसो कथं ॥ १ ॥ तीनूकी
 ये तसै वै कदा काला इ क सब
 हते प्रकं ठ ज्यो यौ से वै काले व
 मा सो म म ज कि ल स सुष या
 ह न सै का पी च्यो वे तो से वै स
 त न मन सब मे को दे सो या वे
 मे रो नि ज ग या न स सै सो हि छ
 टे सब या नो ॥ १ ॥ इति सुर नि प्र स
 धि पर नि के रो ॥ १ ॥ प्र सु जो क किं
 ई क थ से रो ॥ १ ॥ इ प्रो र की किं व
 प्रा प त्ता कि स रे क सो सब पा
 ह्ये सो सो ई क र लो नि द्य मां हं
 क र ता धि र क ल था स हा ई ॥ १ ॥ न
 नो स क ति नि रु चि नु प ज ई ॥
 सब सो न को फ ल सो ये स ला व
 न नै उ त न न चो नु त म चो वे

येक सुधराण संवारी येक म
नोमये मनमै धारी १७ येक
मृतका कीले कीनी येकर
तनम गिां करिलीन्ती येक म
प्रतमां प्रुष कार ता मं म
ममं दिां न १८ १९ तिनमं
सोवै निश्चल जेती सैनादि
क निकरावैतेती साल्यरां म
ज्जा दिहै जेती मेरोतनजो
नै नितितेती १५ और सबन
कौं पूजा काल किबा जानै
निजायाल लेपिलिषा मार
जनकरै और निसना नस
बिसरै २० उतम सामग्री
सौं सेवै तनमन धन सब
नोको देवै जोसै काम नसैक
पटा सोई करै नाव लसै मो

६५॥ दोहा ॥ या विधि पूजा कौक
 रै ता कुं प्रजे जान ॥ ततै मेरो
 प्रदल है ता कौ करे बषानै ॥ ३८
 प ॥ ६६६ ॥ ये ती श्री नाग व्रते मलापु
 राणी ये का हरि संके श्री नवगवद
 उद्दो वस बादि ॥ नाथा या नरा पुन
 पूजा विधि निरूपण नाम ॥ स्युत
 ये प्रथमो ॥ २७ ॥ श्री नवानरुवा
 यो ॥ ये प्रथी ॥ ७ ॥ वते कौ नापू ज
 वा ततै ल है ने हित जि श्रान ॥
 उत म न थ म क र्म सु ना व जे स
 ब ज ग मै ना ना ना व ॥ तिन तिन
 का निदान हा करे ॥ प्ररु कैं नैं कि
 र्म प्र सु ति वि स तै ॥ प्रकृति पु
 र निरमत सब जानै ॥ ये क जा ति
 सब ने द ही ना नै ॥ २ ॥ ब्रह्मा श्रि
 का ट प र्थै त ॥ ये प्र रू प दे प म म
 संत जे जे ब्रह्म विधि कर न स्व न
 व ॥ तिन कौ श्रानै ना क प्र ना व

को सोरी २१ उतमवस्तु निमनक
 रितावे ॥ प्रेमसकृति सबमोहिच
 डावे ॥ उतमविधि सनातकरावे
 वस्तुप्रान्नराणादिकपररावे ॥
 २२ प्रगनिघ्नतादिकसेनाका
 रे ॥ धर्णीरविप्रसूतिविस्तरे
 जलकूपनेजलफलफलजा
 नेमोहिसकलकोकल २३ ॥ न
 क्रिसकृतिजो प्रेतो ३ ताहतेमो
 को सुषतो ॥ तो जो धूपदीनप
 नईवेद ३ मोकोवस्तुविधिकरे
 निवेद ३ ॥ ताका मरुताकसा
 वधानो ॥ ज्योहंत्योमैसापेजांनो
 तातैमै नितिप्रातिप्रार्थानत
 धनमानोप्रातिविहीन ३ २५ ॥
 वनाधोपजाविधितोसो ॥
 चानक सुनीयोमोसो ॥
 विवकरेप्रसना ॥

३ तौ सौ सोये प्ररयतै नृषाम्या
मोह च्यत प्राक्कृष्मिथ्यामोति
चित्तकौ धरै तातै मूरिषजांमै
मरै गलान होये जब ई दायें देह
सुपनल है तब प्रात मये ह ज
हामन लग्यो तहात हाजा वै ब
हृत नांतिके सुष दुष पावै पापु
नि सुष प्रतिमै होवै लान करण
क सोये प्ररु मम हांन यौ सुष प
ति प्ररु देषत सुपना जन मम
रण बह सुष दुष सुपना धी जो
ज लग सोवै तो लग पावै जागत
ह किधु वै नर हावै सोय ह सुष
दुष पाप रूप नि जन मम रण
सब जाणै सनि ७ जौ पे ये सब
द्वैत प्रस त्प मो बिन प्रोर क धुन
ही स त्प देष न सुन न क स न न

मेरी क्या नर ० धरुजासात्रसंघ
प्रधानसर्वलेरी फिरि नदिबके
रसजनदेरी बैरुत्रके पुरवम
प्र निश्रुवप्रतनाके एनसुय
रु इतनित्यो निदुग्रासनकरे
पुंगलिकेन्यां सहा विसतरेः
क्यासकरे नजनर लिपुंगलिके
दोले इतसनां न प्रसंगार चादि
तजकानसतायसों नरेः इजे
नके घातरहि चुरेः जल्पनैव
समुगंधमिष्यविके तासुनोति
नवानकरविके जरधुपाद्युज
विप्रकरेः तिनघातरताते
नरेः गंधपुसय तिनसैव
नेः गायत्रीप्रचिनत्रेनके
तनप्रपनोकेतनसुद्धः
वावतानेयप्रसुद्ध निरद
नके

८ ते स्मृत्सजोकधुबेनाही। तैस
 नम्रसुनकसैकासां नीजदाप
 है निध्यासंसार। तैहृदुषकौब
 रनपा। ११ तौलगदेहबुधिन
 हाधुटे। जैसेप्रपनीधुनिकी
 जाई। प्ररु प्रतिबिंबसिरुकांन
 ई। १० सापरुप जिवरीमैसाप
 ज्यै प्ररुगतिदुमासांसांप्राप
 सैनाही परसैसोजाणै। तिन
 तसुष भवहृविधिठानै। ११
 जौलगनिध्याजांनैनाही। तौल
 गसकलप्रनर्धन नीजाई। वृ
 लरुपयेसत संसार। जहाल
 गधै कधुहै प्राकार। १२ वृस्नस
 पवृस्नउपजावै। वृस्नवृस्नप्र
 धाररहावै। वृस्नकरैवृस्नप्रत
 पाल। वृस्नरुपवृस्नकोकाल
 १३ जैसेजलबूदबुदजलमांही।

जहांतंहांते आदौ ३३ जैसै ग्रहसै
 दीप प्रकाशे ३३ आवै तनमो
 सिनुजासौ ॥ पूजा प्रेमसौ तनम
 येतेई ॥ ३३ ॥ निबरे तिमै यापैसोई
 ३३ ॥ सांगोपांग ३३ तनपुजाको
 ईजावनर्तुयजे दूजा ॥ देवै श्री
 पादा ॥ आचमन ॥ यचै प्रष्टदल
 पंकज नवजा ॥ रत्न ॥ परिग्रस्था
 पै ॥ रसादि ॥ सकल सकल ॥ रवि
 ससिग्रह ॥ त्यादि
 परमप्रसि ॥ प्रसि ॥ जिनपरुवा
 नसललललल ॥ ३३ ॥
 आदिस् ॥ ३३ ॥ सांगोपांग ॥
 ताउरजांनै ॥
 चंद्र
 चंद्र ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 मग ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ जोरि कर ॥ ३३ ॥
 जि ॥ प्रकसै न ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

जसकौं प्योडि है तक्छुनां लोः ॥
 तौ लोः द्वै त्स्वरूपस्यैकमेवै
 नरमेजाकप्रनेक ॥ १० ॥ विद्वान् तै
 सबतां नो निरमूल ॥ ज्योत्स्नरगला
 रिधगणनिमै फूल ॥ जिगुगार
 चितयेरुसबजगजो नो ॥ तै तिर
 गुणस्यैकमेवायै क्रिजानो ॥ १५ ॥
 ज्योतिषि सव सिध्या जौ नै
 ब्रह्मना वनां हिरदै प्राणै परै
 जदयिते जग नै रसो तौर विज्ञो
 गुणदा वनां लो ॥ १६ ॥ यजुग नै म
 नमसु नत देवैः सिध्या जौ ति
 छैलक रिलेयै ज्योत्स्ना च्यध
 टादिक देवैः नुप जत वितसन
 सिध्या तै ॥ १७ ॥ धरणी जं क्त
 ॥ १८ ॥
 तित्तै कानं सति नरै

ज्यो ज्ञानागपूरनदोपूरचम जतका
रकृपाअनरूपस्ये ॥ २५ ॥ मूलसंत
साधिजांनैस्यबै ॥ प्रगटप्रेमकलजु
गप्रधान ॥ नगतदास ॥ एकचुप
सरबसुताहरिकानो ॥ नारिमास्कि
रिखडजवाजिसागरनेदीतो ॥ निर
सिंघकोअनकरतलोयेहिरताकुंजा
स्यो ॥ वैचयोदसरथरामबिधुरतत
नडास्यो ॥ क्रुद्धदामबाथेसुने ॥ २६ ॥
तिहाधिददीयेपानासंतसाधि
जांनैस्यबै ॥ प्रगटप्रेमकलिजुगप्रधा
न ॥ २७ ॥ टीका ॥ श्री न कि हा सजाम
का ललेधरजुजी ॥ संतसाधिजेजांनैक
लिकालमै प्रगटप्रेम ॥ प्रबडोहाप्र
संतजाकेनकिकोअनावैहै ॥ हतोये
कनूपरामरूपततपरमहा ॥ रामह
कालीलागुनसुनैकरतावैहै ॥ बिप

सोसुनावै सीताचोराकौनगावै ही
घोषरेत्तपिप्रोवै वै चानतसुनावै
पस्योइजइषी नजसुव एतापेदीयो
जानेनसुनायो नरमायोकायोद्या
वहौ १८६ मारिमारिकरिषउगति
कासप्रलायो दीयो धोरासागरसे
सेप्रवेसुग्रायोहै मारोयाहाकाल
दूष रावनबिहालकरौ पायेनके
देखौसीतानावदगधयोहै जान
कारवनदोनदरसनदीनो अनिबो
लेबिनप्राणकोयो नाचफलपायो
है सुनिसुषनयोगयोसोकहिर
दैदारन जोरूपकौनिसारनयोफे
रेकैजा नायो १८७ लाला नू र
न था ति ती ई टी ली
लाचलधामताहालीलाप्रबुकरन
नयो निरसिंधरूपधारि साचे
मारिडास्योहै कोउजादेरगदोउक

१८ प्रसूतो ही करि देखै ननु नमा
न जाई ऐ उत ननु ननु ननु ननु
सि कै ननु ननु ननु ननु प्रपने
पने प्ररथन ननु ननु निरका
रतै चेतन होई सब प्राकार
हालुं कोई ताते सब मिथ्या प्रा
कार चेतन ब्रह्म सकल प्राद
र २० प्रसुरति को प्रणा म वि
चारै नेति नेति करिस १५
रे प्रसूतो देखै प्र ननु ननु ननु
नाम प्रक प्रप्रा ननु ननु २१ प्र
तन रहै तेना प्रादी प्रातम
निश्रल ब्रह्म प्रणा १ प्रै सब
विधि को बी सार मिथ्या जा
निश्रण प्राकार २२ मन क्रम
बचन होय ननु संग ब्रह्म वि
चार हा करै प्र ननु प्रै सब
नक है ननु गवान तब ननु वप

द्वे द्वे नदन नूले जौ लौ मसज
नसंग करे नहातौ लौ जै सै रोग
लौ यत नमांही दिड करि मुर
उघा स्यो नांही ॥ ६ ॥ सोत जिअ
गद प्रप गत ॥ ७ ॥ तौ सोरो
गब हरि छिस्तरे तौ ॥ ८ ॥ लंकार
रोग नव नूल सो ॥ ९ ॥ यन
घो निर नूल ॥ १० ॥ लो लंग संग लू
पथि ला करे तौ बह ॥ ११ ॥ जव
अवतरे बंधु कुटंब सिध बह
तेरे ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

न ७५ तबता कौतन करमनिक
 रे। लेन देन नो जन बिसतरे।
 पूरव संसकार करवावे। विधि
 कौलिष्यो न निथ्या जावो।
 ७१ सो मुनी न गनवत्त सुष
 मासी। ताते करत ज्ञाने नासी।
 जो बडे प्रदाओ सोई। प्रावे जाये
 करतो सोई। ७२ प्रनघाये नल
 प्रावे सोवे। ज्यो बोखार देरुको
 लेवे। सो सो कथे न जाने जागी।
 जिश्चर हरे खर स जागी। ७३
 जो कबरु दे घे संसार। डीपगे
 चर विविधि प्रकार। ते ले कश्च
 सति नही जाने। सुयन वस्त ज्यो
 जागे माने। ७४ प्रथम प्रातमी
 हुते प्रबधे प्रापती नयो प्र
 कृति सो कथे। बलेश्या सो सो
 विद्या यावे तब दुष जानि पक

नरकसदेह मिवावो ज्ञेयानुः
वृष्टौ ज्ञान तवववोलेनव
प्रतिनगवानः २८

आत्मकौनानासस

२. अरतिनकौनानाज्ञेयाकार
तिनइन्प्रातेनो अविवेकः तात
कौनवदृष्यजेकः २९ इंडीय
देह प्राणमनवधः येनलोज्ञे
आत्मसवधः ताते प्राचासै
संसारः कसदुपनाना प्रकारः
३० जो लगलौईनसो संबंद्धः तो
लगप आत्मजाबैबुध सोम
शाकक रौसवजांबौः नांसी
कधूसकसकरितांतौः ३१ ज
दुपिनिधालेनकारः परितफ
कसंवाजज ३२ अहाजीवदृष्य
केरने वादवायलनधौईगले ३३

। तच्छ्रुत्वा च ५७ ॥ तदा तदा ॥
ताकौनसागसै मो सिजां निमो
सामैरसै ॥ प्रथमसा जवमेको
नसा जान्ना तवना या सुप्रजत
मसात्पौ ७६ ॥ तैस्थां जवमम
सरणि सा प्रावे म न प्रसा ६५
ज्यां न मिटावे त न पाका ६६
प्रसायेत्त नै परमान रूपम
सिमाने ७७ ॥ तातै प्रापसा गली
उपाधि ॥ ताकौ तजै जां नि करि
व्याधि ॥ सदा हि रतर सा मरस
वसौ ॥ जौ न वसा गर न सा वस
७८ ॥ जौ र ॥ ६६ ॥ सकल वसा ५
ह्य परि रिब वि नु न ल धे पत
ह्य र बि सं ॥ ५७ ॥ रिज वस
इ ॥ तव स्व स दे प्र सा जे ॥ ७५
र बि वि नु प्र थ कार त मह वै
तातै को ॥ न न जौ वै र बि सं

जै ज्यौ सुपना लै ये हक थूनां ही
परि सब सांघौ निंदा मां ही ॥ ३० ॥
जो सुष दुष मन में आवै ॥ सो
सो सकल सुपन में ध्यावै ॥ ३१ ॥
हेनां ही परि हे सो जानौ ॥ नाना
विधि के सुष दुष जानौ ॥ जाग
त हा कथै येनां ही ॥ सब व्योस
र बुधा कि जां बंही ॥ ३२ ॥ ॥ सुष सो
कत य मो सु सु लो न ॥ सुष
कौ सु सु सो जा सो न ॥ जन न स
मरा ॥ बिकार ज हां लौ ॥ सु सु का
र के सकल त हां लौ ॥ ३५ ॥ ॥ प्रात न
सदा ये कर सर लै ॥ सु सु कर सं
गति दुष स लै ॥ इंद्री ये दे ल बुधि
मन प्रा न ॥ सु सु रु न हा त ल ॥ सु
नि मां न ॥ इंद्री ये त सौ मि करि ॥ सु
त न ये का ॥ मा या के सुष ग लै ॥ सु
ने का ॥

जोग प्रकासही पावे । तब सब
 देखे तमही सिटावे । ८०पीतेने
 नविकाल प्रलेप । अथकारसो
 नये नयेप । तेमो केतो तमही
 माही । परिर बिबिन कथ देखे
 नाही । टी रीबितें तम उपाधिप
 ररने । पाय प्रकास प्रकासही
 करे तो ये स ग्रात ममरो रूप
 खये । प्रकासिक प्रम प्रनुप
 ८१ राजन मकरणा मरजादारु
 ति । काह करिक बह ल ग रित ॥
 ८२ रसित प्राप ही ये क ता ल क
 रि । ये दे स प्रने क ८३ म हा नु न
 व सकल प्रनु ना व । जा से क
 देन कर म सु ना व । तित्माने द
 सदा प्रति सदा । सदा निरास
 हा प्रनु थः ८४ जा करि उ दी य
 तत म न पा ना । ये ती न के व

१०

६

॥

॥

करै करमनिके बसिजनमेम
रै ३१ लिंगबन्धो देहनिमेत
वै तिनके संगमहादूषपावै
बुधि बचनमन प्राणसंभार
मैतत्वइंद्रियकरमसरीर
सुषुप्सुदुषममताप्रसंकार
तिनकोनांनोबिचिसंसार
जो निरमूल सकलहीजानै
जो जेवरासापतौसांनौ ३२
ग्यानघडगनजिमोहिनुपावै
गुरसेवासोसांनधरवै तास
कटिहोयैनेसंग बिचरैसब
देषतममसंग ३३ गुरुकेबच
नहिरदासैधारे आदिप्रतिप्र
तिबिचारे जनममरणदेष
प्रतपितजिप्रज्ञानहीहोवै
देष ३४ साधनधरममाहि
धिरहोई प्रातमदेहबिचारे

दोषी ज्योया जगका प्रादिरूपं त
 सोही मधि विचारै सता ॥ २ ॥
 दिरूपं तिमधि मयैक नो म
 रूपं नरम रूपं नो कते म
 येक त्पौ प्रादिरूपं तिमधि
 काये म नरणं नता तौ कथे
 ते म यो दि न ल प्रा न जो वि च
 रे दे ये ज्ञान मि ध्या स क ल ना
 म ग्रा का य ते म काल त्रा ये क रे
 वि चार ॥ ४ ॥ त्पौ जग प्रा
 दि रूपं तिम
 रे स त प्रा दि रूपं तिमै ये क प्र
 रूप ॥ सोई मधि वि धा स व रूप
 ५ ॥ जाय त सु प न सु घो प ति प्र
 व स्था ॥ प्रा दि रूपं तिमधि
 ता स व स्था ॥ न के ना स न ये तो
 र ह ॥ स क ल यो दि ता कौ व ॥
 ग ल ॥ ६ ॥ इ दी ये प्र रू र दी ये न

मोमैरुतेनसायासावे ॥ अरुस्ये
 सायासैबसायावे ॥ तातेनित
 लीमोमैरुहै ॥ मोमैरुप्रमान
 देहालहै ॥ ५० ॥ उद्वइतनो ॥ अ
 ज्ञाना ॥ जोकेवत्तमेजानेना
 ना ॥ अस्त्रबिनाकधुदजानाही ॥
 जैसेसापजेवरीसाही ॥ ५१ ॥ हेत
 देरुजडमिथ्याज्ञानो ॥ चेतनो
 कवृत्तकरिमानो ॥ अरुयहपं
 चबराणविस्तार ॥ उपजेबिन
 सेबारबार ॥ ५२ ॥ जाकोमिथ्या
 वेदवषाते ॥ अरुतपोहागुरसा
 धकासने ॥ अरुप्रबुनवतेतौ
 हीदेवो ॥ जगोसुपनजगततौ
 लेषो ॥ ५३ ॥ असेजगतसतिजो
 जाने ॥ पुष्पितबालीवेदेवषा
 ने ॥ अतिनसुतिकेवचनीवचा
 रे ॥ ५४ ॥ रेकहतेईजुअरे ॥ ५५ ॥

के देव इन्द्राद्य विषय न केवल
वृत्ते सत्त्वात् एक विन
नांसी सति सत्त्वात् प्रोक्तो
सी ४७ ज्ञाति प्रकास तस्य कल
प्रकासे ज्ञाती सति सति से
नासे मुखको मुख कृणानिके
करणः करके कर चरन न के च
रणः ४८ नांसा नांसा न के न
न जिहाजा न के न के न
सोया विधि सकल प्रकासे
क ता विनु मिथ्या सकल प्र
नेक ४९ ये जे नो म रूप वि स
तार जिन सौं पूरण सब संसार
ते सब प्रादि हुत क थू नांसी
प्ररुन हीर स प्रंत रु मांसी
प्र ताते प्र ब हं मिथ्या माने
कारण ब्रह्म निरंतर जांने न
मध्यस्थो सो सकल विकार

रघया नवमै बलै करम बिह
पात तिनका बृद्धि तातै कहेन
पावै सुद्धि ॥ ५ ॥ तातै तिनकै ल
गेन ज्योति ॥ मूरघ आपही जाते
जाते तातै बिषई जीव सम
सा ॥ तनही नरमा ॥ ६ ॥ तै
स्त ॥ ६ ॥ तातै न ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
बल जा निकरि सो ॥ ज्ञान मे
रो न जन निरंतर करै ॥ जा प्र
कास ॥ तहा प्रि हरे ॥ ९ ॥ प्ररु
ठ ॥ प्रजो जोग कसा ॥ १० ॥
गको बेद बतवै ॥ सब धरम
जिहो ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ नव मोघ
कये ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥
य ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥
रिनही सकै नहि अधिकार
तातै ये बल बिधि बिस्तरे ॥ १४ ॥

तिहकारे नैमाटासारः ॥ ५ ॥ ये
 लोकस्य सोऽहं स्तस्वस्तः प्रादिम
 यः प्रसूयते प्रसूयते प्रसूयते
 वधिबेदवधानैः ॥ ५ ॥ स्तस्वताये
 इतस्वत्तानैः ॥ ५ ॥ प्रादिस्वस्त
 लोकस्यनाही ॥ प्रवप्रानास
 नैमोतिमाही ॥ याते परैर्द्वम्
 मनरूपः सकलप्रकासक
 प्राप्प्रनूपः ॥ ५ ॥ ये विचत्रत
 प्रात्तस्यै ॥ ताकासक्तिप्र
 क्तस्यै ॥ ताते सकलद्वन्द्वसंले
 ये ॥ तजिकरिरूपप्रसूयताते
 प्रैः ॥ ५ ॥ इतते परैरूप ॥ मिजा
 नैः ॥ प्रसूयते सबमनरूपतामा
 नैः ॥ इतयोदिनिश्रुलकरतौ ॥
 ज्ञानिद्वन्द्वतोद्वन्द्वसंल्लो ॥ ५ ॥
 प्रैसैज्ञानितिकरैविचारः ॥ मि
 य्याज्ञानैसबप्रकारः

सातुत्तरोगनिपसुरैः जैसैः
 करितप्रपापनिवारैः संवृनि
 ग्रहवाधादिकरायैः ॥१००॥ नोज
 नद्युध्या अगदसौरागः योः प्र
 ज्ञानं निःसकं हे जोगको
 मादिकमानसिकविकारः
 जीतैः सुमराण्योगप्रधारः ॥१०१॥
 मम नरुनफासेवाकरैः वा
 करिदनादिकप्रसुरैः या वि
 धिबिप्रयत्नसुनिवारैः मेरो
 नजनसिरदैः बिसतारैः ॥१०२॥
 अरुरेकनमहनकरजासा
 धैकरमदेरुकेकाजा जोपदे
 रुमिदाईचसाये देरुमिदेने
 रोसुषलसाये ॥१०३॥ मेरो अरु
 अतमायेसु यत्के दुषदाता
 सादेरु तादेरुसाजेराध्याच
 तैः

प्राकरिज्ञानबध्यावै चेतनमे
स्वप्नप्रउतिव्यावैः ५६ ये जो
तनसोप्रातमनांसी तनघट
रूपविचारैमांसी ५७ प्ररुईदी
यतेदाप्रसमान इन्होपका
सकप्रातमप्रानः ५९ प्ररुपे
देवपवनमनबध्यावै प्रातम
कीनहाजांनैसुदो ६० चित्तज
लतेजपवनप्रकासः ५९ प्ररु
कारगुणचित्त प्रकासः ५६ सा
मिप्रकृतनमात्रापंच इन्हो
कोसब ६१ दैतप्रपंच ६२ ततेज
उप्रातमकोनहाजांनै ५९ प्रात
मसक्तिहासबठानै ५९
सकलप्रकासकप्रातमयक
येजउजांनिनसकै प्रनेक
विधिजोसक रूपविचारै
कलनपाचिठरेकाठारे ६३

१०३ सनके रोग जरा दिक्कदारै
स्वास्त्रि तिकै मृत्यु निवारै
फेरि नर लुआही कल्पयंत छ
हरि नया विदं ह म संत १०५ म
लुजी तिवृत्तरत होइ पूजि
स्थान मृत्यु न ला कोई योगी
सदाष्ट स्वरत रहै ताको काल
मृत्यु न ला दिसे १०६ हेरु जत
अश्वरु आसा लजे जोगजुहि
आसन नजे जे योगी देहा प्र
न ला नी : तिनको दुष उद्वार
जा नी : १०७ जो विन विधा करै
अम सुदः सेरो योग च जनत
गुदः ताते ह संत निमां ही ते
लोको तं न्या र नां ही : १०८ अथ
न योगी जोग सा करै : विघन
निवारि योग सिद्धै : ताको

सो ब्रह्मरहै इन्द्रियनयनै ॥ किंवा
 पुरबिषयनश्रारनै तौ हताकै
 नसो गुणदोष जावत सो जिन
 प्रायो मोषि दी जैसे ब्रह्मरहै प्र
 उ प्राये तौ तिनसो कथुरबिन
 ही थाये ॥ प्ररुजो मे ब्रह्मरहै ग
 यो कौ तौ कथुरि प्रकासित नये
 हररहै प्रब्रह्म ब्रह्म जानै लि
 पतिलो गत्त नंद ॥ जैसे प्रगट
 पत्र ब्रह्म नतौ ई ॥ चूक धूलि प्ररु
 दामनी सो ई ॥ ई ॥ रितुके गुण सी
 तनु सनादी ॥ नुप्रजत बिन स
 तरहै प्रनादी ॥ परि नही लिपति
 सोय प्रकासा ॥ तौ प्रातना प्रम
 प्रकास ॥ नपरितो हसंगति न
 ला करे ॥ माया गुणानि दुरिपरि
 रै ॥ जो लौकिके मेरी दिडन ही ॥

करेनसोऽपि ११० ॥ सधैः जोगसं
नाधिसरु तः ॥ गहिनमसर
णिब्रदाव हितः ॥ योगमाहि
छाडे प्रहकार ॥ तातेनहाले
वैससारा ॥ ११० ॥ ताते येनामोके
नजे मम प्राचीनके सापा
तजे मम प्रसादते मेकोया
वै ॥ ब्रह्मस्वो नवदुषमेनही
आवे ॥ १११ ॥ प्रहनावत जिजे
गहाकरे सोजननवसागु
नहापरे ॥ जोगहापरे ब्रह्मस
उर्यो ॥ सनिक जगन्जानीए
तेसो ॥ ११२ ॥ जोगीयो गिमन
जोरेजासो ॥ प्रातमब्रह्मप
कासितासु ॥ येसाधनहमन
जेतीको ॥ आगेजीवब्रह्मके
दीको ॥ ११३ ॥ जोगोवेमेरे प्रादी
न ॥ आपहानानसबुबलसन

सुतग्रवेसतौपौकरोदसरथकायौ
 नावपूरोपास्योहैहतीयेकबाई
 क्रसनरूपसौलगाईमति कथाके
 नश्रीई। सुतसुनिकसीध्यास्योहैः
 बांधेजसुनति। सुनिग्रैरैन्नइगति
 करिदईसांचारति। तनतज्योमानौ
 वास्योहै। ॥ ८ ॥ चक्रलः प्रसादप्रवृग्पा
 जानिकैः पानतज्योयेकैन्नरयति। क
 हुंकहाबनायेबातसबहुजगजाने
 करतैदौनानयौ। स्यान्नसोरन्नमन
 माने। अथननौतैपहुलषीचकर
 नाकोत्तावै। स्यलधिल्याकेहैतिक
 विरिपैहरिचलिग्रावै। संतनहित
 बिषदीयोन्नपनारिपुनूराधियति
 प्रसादप्रवृग्पाजानिकैः पानतज्यो
 येकैन्नरयति। ॥ ५ ॥ श्रीप्रसेतकबलीम
 ताराजिकादीका। प्रसादकाप्रवृग्पातैत

गौतमः परं एकः करिकेव
बेधः नौ जै संबात नई है : घेले
न चौपरिकों ग्रायो प्र न भुक्तः
से सदा सने नै पासे बा गति गि
इ है : ले गये फिराय रासाये म्हा दुष
पाये : उ दौ नर देव गू है गयो सुनि
इ है : लीयो अनसन राय ह्यो
ये साध्या नत बसांचे मेरो पन र बो
लि बि प्र पू थिल यो है : काटे साधकै
न मेरो : रहै गही मौं नियातै : पुच्छ
त सचि व क सा बि या सो बि चारी है :
आवे ये कषेत : सो दि घाई नि हेत :
नि स डारिके ऊ रोषा कर : सो र करे
नारी है : सो उं टि ग्राये दंत ॥ आप
कौ थि पाये जब डारै पा नि प्रानित
बसा कटि डारीये : क है नर य न ले
चौ क दित मै भु मायो ॥ नू प्र प्राये डु टि

मैश्रादानसे उताजनकैः ज्यो
श्राधाने इत्यथामन
११४ कवलजागमस्य
साश्रावेः ताहाकासवंप्र
जावेः तातैः वधननः विवो
ईः ११५ मकाश्रातदरसः
दतः सवदवनकहावः दत
तातैः उद्वयसु करणौ मे
रोनजनानिरदासैः धरणौः
११६ उगाश्रुश्रापः स्तमो
जानैः द्वैतनावकवरुनही
श्राणैः स्वस्तनावतेवस्तसापा
वैः जनमजनमः दुषविस
रावैः ११७ ॥ दोहा ॥ श्रैस्तोदनि
श्राकृद्मसुः प्रतिहादुसक
रग्यानः पूष्णोः ११८ पा
ः ततः ॥ १ ॥ वः प्रमसुजानिः ॥
इत्युक्तं ११३ ॥

ये विचारा लघ्वे वेदत जे न
२॥ ४॥ परि विचारा को नै कर
तो हति न नो जल पुरु नो ज
ज्यों द्वेष का पो सि स जाल जल
जीवनि ग्रास्यो काल ॥ ४॥ प पि से
उ को नै करि दोष न व जल त
करि पहें चो नो घ ॥ यों विष रु
प वि कार हें जे ते को नै प्राय ई
त ते ते ॥ ४ ॥ ताते प्र सु वि वे क च
या ई प्र सु बु धि दु जी न हा का ई जे
जू ठ सों सा च हा ली चै जे पूरा
का न प्रा प नों की जे ॥ ४ ॥ अ ये जू ठी
हि ए नं गु र दे ह ॥ सक ल वि क
र न हा को गे ह ॥ ता करि पई
ये ह रि प्र व ना सी ॥ नि र वि कार
पू र ण ॥ ४ ॥ ४ ॥ सु ध रा सी ॥
४ ॥ ये स च हू ए न ग्या न को सार ॥

पेली श्री जगद्विजयपुराणे ये ॥
 कादस्कंदे श्री जगद्वदुद्धवस
 ज्ञाने ॥ न्नाद्यायां प्रमारथ निराणे
 नीमप्रवावीसोप्रथ्याये उद्धव
 उवाचै ॥ चौपरी ॥ हे प्रभु यस्तु
 ज्ञानवषां नै ॥ सोतौ मे प्रतिदु
 ० ॥ कुरु ज्ञानै ॥ विसनासां इदि
 यमनजनको ॥ कैसै काजसो
 प्रभूतिनको ॥ १ ॥ जोसै प्रभुस
 दिठ्यत ॥ तिनको वस्तुदिधि
 ले नित ॥ प्रौरै जे ज्ञानविचा
 रै ॥ वैच्यै चिया मनको धारै
 च ॥ तिनको मन वसि सोय न ज्यो
 ज्यो ॥ मस्तकले सत्त सै तै तौ तौ
 तिनको मन वसि सोय न को
 लो ॥ अमकरि जन जगमावै
 यो सो ॥ ३ ॥ तुवपद ॥ प्रभानद
 समुद्र ॥ ताको तेदन ज्ञानै च्य

वेधसा

नकसिखरसौ ॥ ५५ ॥ यतेसार

नप्ररुयममग्याल ॥ ५६ ॥ नरत

कोदुरलनजा निजदापजीव

लसिनरहेस ॥ ५७ ॥ ग्याननपाव

यस ॥ ५८ ॥ तातेमनाषो निज

ग्यान ॥ ५९ ॥ तातेमोसिलसत जिश्रो

न ॥ ६० ॥ वप्रहमकरा तुमजे

ती ॥ ६१ ॥ नरसहि ॥ तकही जतेती ॥

५१ ॥ तेसबतबवदकोजानो ॥ मे

रोप्रमरुपकरिमानो ॥ यस्तु

जरोमेरोसंबाद ॥ ५२ ॥ प्रथ्यात्म

प्रमातमबाद ॥ ५३ ॥ लाकोसुनि

तिरदमेधारे ॥ पावकोसिशाप

तोतारे ॥ जोयसमेरोपुराज

रमेरे नरुनदेवदान ॥ ५३ ॥

सोकलायतुरुमेरोदाता ॥ जस

तलाहोवे विष्णता ॥ जोजाद

लसोसाई ॥

करे

दुःखो गज्ञानेन जगदिककरस
 तिनतै कदेन घटे नरसः ४
 तातै- गृबब धैते करे याते
 जुगजुगजनमेसरे केवल
 नरुतुकरेजेते प्रमानद
 लसैसोतेते ॥ जबहातेतुम
 चरणनिश्रावै तबहातेपुर
 एसुषपावै मायानिकदि
 नश्रावै तिनके तुमरेचरण
 हिरदामैजानके ॥ तातैसस
 जहाजगतमिटावै तुवैचर
 एनिमैसस जिस्मावै तुम
 ब्रह्मादि सफलकेनायक
 सबहानको प्रचूताकेदाए
 क ॥ तिनकेचरणगहेक
 दानतुमताकेसेवोश्रादि
 नः प्रसुषकसाप्रचंचा

है दो प्रकृतता तैदान देय जो मेरी
में प्राप्ति न हो हं तिसि के रो को
हि य सो भावे प्राप्ति तिन
कौ लो म नो हिस र मावे ५५
जो प्र पा कौ निति साप दे ता
न कौ को सौ हिस त व सो ज
न मे रो प्रति प्राप होई त कि
स म दू जो न सो को ई ५६ जो प
सु नौ निति करि प्राप्ति और सक
ल कौ करे ५७ सो कर म
न सो लि पा तिन होई मेरी न हि
ल हं ६ सो ५७ कौ ये प्र म
त न उच्चा स्त्री उद्भव तु म क
बु हिर दे ध्या स्त्री सो क सो
ल न न धा नि हित नि श्रु त
न यो हिर दे प्राप्ति ५८
उद्भव य मे रो ज्ञान सो म
ति ज्ञानो को तै प्राप्ति ता तै द न
स हित हं जो ई प्र रु ना सती

स्वामी। तुम सब प्रभु सब प्रव्रज
मी। पतिन कौ सब तजि सेवे तु
करे अपराध सितुम कौ सोई ॥

धारी से जेतु वप

भरामर

तिन कान्त

बानरसक

सब दिन के सब

रित आचरे। ताते जा तु वकत

विचारै। सो क्यो पल तु ब न जन

निवारै। तुम सो न पति बदे रुस

वारी। चेत निसक्ति तुमै पुनि

धारी न। सदारै तुमै र आ धार

निति प्रतिपालन हार

परिजाव तुम सो न जा नै कती

नरता और न जा नै। रतौ ह तुम

जोगुण न सो नै। बह बिधि जहा

कडसैक्यासोईधईप्रतिनजो
 नैनसानमननकादुबानीबिष
 येनिप्रासक्तानिकोजानन
 देबोयसाज्मोकापरनबाजस
 मेरुधैयेनदोधनकरिसोवैत
 न।मेरोनक्यातिदिहदान
 प्रस्वासुदेप्रसोसोईप्रताहयो
 प्रतरनसाकईधैप्रयेनसो
 याज्ञानसाकसीयेतौतिनस
 लतिप्रमपदलसाघजोयेने
 राजनेज्ञानतासिजा निबरे
 नईनेज्योकोईप्रावेपीयु
 धरताकेरनदजा नृयाज्ञानस
 गःसबत्वाधि
 धिप्ररुकोमियेनसब
 मोसेधानतातेको
 प्रावेजोईयेनसबसान

तस्य रक्षां नो ॥ पुनिजबस्तु
 वसरीणहाश्रावे तबतुमसौचा
 रूफलपावे ॥ १३ ॥ परितथापिसे
 अतिप्रज्ञानः तुमकौसेय
 नदेजोप्राने चारिपदारथसेव
 कजाके तुमराचक्षि बिराजैता
 के ॥ १४ ॥ येकज संतांसांतुवज
 जनो नरकजांनिसोहासोत्तज
 नो ॥ १५ ॥ तैजोसोवेसर ॥ १६ ॥ तुम
 रे प्रकारनकोतज्ञ ॥ १७ ॥ प्ररुवि
 धिसनिज्रायुरबलपावे बहु
 बिधिप्रत्युपकारबनावे तोस
 तुमसोअनृ एनसासोई बृत्ता
 आदिजसालो जोई ॥ १८ ॥ जेतुमब
 हरिसतगुरु रूपः नातरिचेत
 निसाक्षिप्रनुप योजाव निकेपा
 पनिवारोः आपसिरदेनवसक
 ट्टारो ॥ १९ ॥ तातैनाथो जजबान

कौं पावै सोही ॥ ६४ ॥ परिसे रोज
नक प्रपद ॥ सक रत ॥ गपक
रिमाकासे ॥ तते साधि सुसा
धन जेते ॥ नननननननननन
जेते ॥ ६५ ॥ सबतजि ॥ वमममम
एनिसेवे ॥ प्रापनिवेदेकधन
लेवे ॥ ताकेसमिदजो प्रापना
ही ॥ सोनि ॥ नननननननननन
ईतवर ॥ नन ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥
बेन ॥ नुद्वव ॥ प्रा ॥ कलाकुलन
न ॥ प्रागैठा ॥ अजलीबांधे ॥
प्रेममगनतनमनदिठसांधे ॥
६९ ॥ बेन ॥ तैवो ॥ नानसाजाव
कठसतैगदगदसुर ॥ प्रावे
ताते नुद्वव चुपकरिसे ॥ कध
बेरकधूबेननकसे ॥ ६८ ॥ ब
सौस्यौनि ॥ तथा ॥ नकरिधार
ज पूरणप्रेमनयो ॥ प्रबकीरज

वहीत

सतजिमिलोतुमद्युटे फदयेस
 निप्रायर्जुद्वकवेनबोलकह
 कृपाकेप्रेननीचप्रीमगवान्
 वाचै॥ धनिधनिर्जुद्वकममन
 कृधसबजावनकेतितप्रनूरक्त
 तोसोकलैप्रापनेधरमजाते
 मिटेसतजिसबकम॥१॥करतेसु
 धप्रागेसुधपावे॥ छोडेनवजय
 मोमैप्रावे॥ जेद्वकरमकरेन
 जेतेमेरेसतकरेसबतेतेकर
 जानिमेनापेसमनासमेरेक
 रिराधेधनधाम्पामोमेप्रेरपेस
 नकावृतिमेनाकेसबप्राचरणनि
 छतिरीमेराप्रातिकरेसोकरेमे
 शप्रातिहितिपरितरे॥ जिनदेसनि
 मेमेरेनक्त॥ तिनकरिवासते
 येप्रनूरक्त॥ २२
 नरनिमेजेतेमेरे
 ते॥ तिनतिनकेप्राचरण

निश्रैः प्रापकृतारथः सांन्योः ॥ स
बसदेरुहिरदैतैः सांन्योः ॥ ६ ॥ हरि
केचरणानसाधोधास्योः ॥ उद्व
नक्तबचनजुचास्योः ॥ जिनतैः स
रिसौबाढेपेन ॥ जिनकौकसिस्य
निपयेपेन ७ ॥ उद्वतुंवाचैः ॥
नाथः प्रजनसोः प्ररुः प्रविनासी
परमानंदः प्रमप्रकासी ॥ तिनकै
सनिहानजकप्रायोः ॥ तबसासवप्रजो
नानिदायो ॥ ७ ॥ सनिधानयावककेजा
त्रैः ॥ ससुजसातमेयसातजसावैः ॥ प्ररु
तापरितुमप्रमदयात् ॥ मोनिजजनप
रिनप्रेकपाल ॥ ७ ॥ राशेबिज्ञानदापको
सिदानौः ॥ जातैः सकलसुनासुचचीनैः ॥
तुमरचरणसरिणानवसांसी ॥ इजेदेर
केदेसुधनासी ॥ ७ ॥ जोकैरितुवकतकौ
जांनैः ॥ प्ररुतापरितुवकौदुषमानैः स
नुवचरणसरिणानसां प्रविः ॥ तौइजोक
सातैः सुधयावैः ७ ॥ प्ररुनीतुमप्रतिक
रणकरिः ॥ ससमायाफासाप्ररुः ॥ स

न

तौं हां तौं प्राप न हू टां नैः २३ मेरे
 जजम हौं छत्र करैः प्रबनिमै नि
 व्याप बिस्तरैः मेरी जसं जातरा
 होइ तसं तसं च ॥ २४ ॥ ३२
 गीत नृति बादत्र करवैः बुव
 च वर प्रादिक प्रथि करवैः ज प्रति
 उदायताका ॥ २५ ॥ नैः समसि
 तल गै न लो साकां ॥ २५ ॥ सब
 न तनिकै नो कां ये प्रतर बां
 सां ये वे दे ॥ प्राप प्रादि जगै
 जां नैः ज्यौं प्राकास प्रा न्ना बृति न
 नैः २६ ॥ यौं सब मं जां कस न्ना व
 त्मां गल क ल प्र ॥ २७ ॥ १० ॥ स
 बरुं न क स कार हा करै जा न
 दि ॥ २८ ॥ न द हा प नैः २९ ॥ ये कै बि
 प्र वे द प्र थि कारी ॥ ये कै प्रं ति ज
 म सा बि कारी ॥ ये कै बि पु न के ध
 न ह र ता ॥ प्र रू ये कै ध न के बि स
 र ता ॥ ये कै ते ज सं न व ह ॥ ३० ॥ १०

को पावे सोही ॥ ६ ॥ परि मेरे ज
न क धुन लेवे ॥ सकल त्याग
रे सो को स ॥ ताते ॥ धिरुस
धन जेते ॥ सम जन दे पे मो मे
जेते ॥ ६ ॥ सब त जि जु ब म म च
ए निल ॥ ॥ आर्षा न ॥ ६ ॥ क ध
लेवे ॥ ता के स मि द जो प्राय ना
ही ॥ सो निलि मो नै मे ता मा ही
इति त व ॥ नि गै दे न रि ॥ के
बे न ॥ गे द व ॥ आ ॥ क ला कु ल न
न ॥ आ गै ठा ॥ अ ज ली बा थो ॥
पु म म ॥ न त ॥ म न दि ठ सो थो ॥
६ ॥ बे न ॥ नै बी ॥ आ व न ॥ ना व
क ठ स त ॥ ग द स उ र ॥ आ व
ता ते नु द व ॥ प क रि र हे ॥ क ध
बे र क ॥ अ ॥ त ॥ त ॥ ६ ॥ व
सौ स्यौ ॥ त ॥ ॥ च क रि धा र

वंत ब्रह्म ॥ ये ये ॥ ये के कूर सक
ल दुषदाई ॥ ये के सकल सांति
का संसार ॥ इत्यादिकना
नां बिधि देष ॥ परिजाने दक
नली लेष ॥ मेरी दिष्टि सब न मे
जो मम जन प्रउ तिता सिव धाने
३० या बिधि सब मे जो कौ जानै ॥
दसने दक धूवे नली प्राने ॥ योरे क
ल सांति ता तुन के ॥ सब बिकारी नि
दिता विसन के ॥ स पट्टी तिंकार
प्रकार ॥ सकल मिटे क धूल गे
ज वार ॥ ताते देसु दिष्टि न ही हरे ॥
लोक कुट बला ज परे लरे ॥ ३३ ॥
सी करे सकल लोका ॥ परि सां
ने र धन लोक ॥ तिन का क धूल
न मे नली प्राने ॥ सब जीवन मे जो
कौ जानै ॥ ३३ ॥
प्रत ज लो मेरी सिष्टि प्रनंत ॥

निश्रुत्वापकृतारथः सांन्योः ॥ स
संदेहहिरदैतं नान्योः ॥ ६ ॥ स्फुरि
कचरणानसाधोधास्योः ॥ उद्धव
नक्तवचनगुचास्योः ॥ जिनतेह
रिसोबादेपना ॥ जिनकोकहितु
निपयेपेन ७ ॥ उद्धवगुनाचै ॥
नाथप्रजननाप्ररुप्रविनासी
परमानंदप्रकाशकासी ॥ तिनके
संनिधानजबप्रायोः ॥ तबसासबप्रज्ञो
ननिदायो ॥ ७ ॥ संनिधानयावककेजा
वैसससजसातसेयसातगसावि ॥ प्ररु
तापरितुमपमदयात् ॥ सोनिजजनप
रिनयेकयात् ७ ॥ रासेबिसानदापसो
हिदानो ॥ जातेसकलसुनासुनचीने ॥
नुमेरचरणस्वरीणनवसांती ॥ इजेठोर
कदेसुधनासा ७ ॥ जोकेइतुवकतको
गाने ॥ प्ररुतापरिनवकोदुषमाने ॥ ये
नुवचरणस्वरीणनसाप्रावे ॥ लोइजोके
सातेसुधयावे ७ ॥ प्ररुतापुमप्रति
रणाकरी ॥

नमस्कारनितितिनकौकरैः
इसकां अरनिमैपरैः २४ जो
लगयावर रणः कांसी मेरो
आदिनाय धिरनांसी तौ लगन
नवधकाय सः तः यौसबम
ठानैमनसित ३५ याबिधि कर
तर नैरहा ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
मयेलोई मिटेप्रबिदाबिदा
आवेः तातैः अः सकलमिया
वैः ३६ नः ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
वेदमधिमें नाषेतेते तिनमैए
समतोममसा ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
सांसी जेते समरूपसी जांनैते
उद्धवइलोअमीहैमेरो कलाप्र
नावकह तिलिकेरो ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
रूपकी ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
हरिभट्टैवसांसी ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०

तज्जाद्वनिमैः प्रसनेहः प्रदुजोव
तीसतवितग्रहदेहः ७५ येसबके
रेमनेतेंदारेः प्रपनेचरणकवल
जुरधारेः तुमबिः सतरीप्रपनी
सायाः जिनयेसकलजगतनर
याः ७३ सोतुमज्ञानधुसोस्येदी
कैकपालनिजप्रातिनवेदीन
नमस्तेज्ञानप्रकासीः जोगेसर
प्रप्रबिनासीः ७७ राजेमोहिये
वरदेवाः निश्रुलहिरदैनिरंत
वाः तुमहाद्योडिहूननहाजांन
पसेवककेसेवाठानौः ७८
प्रसाददाजीयेधेरुः तुमसो
सचलबडेसनेहः करीबी
उद्धवः नक्तः बालेहः रिजिहै
रक्तः ७९ श्रीनगवानुवाच
तथाप्रस्तुर्द्धवममनक्तः
चरणनिनिश्रुलप्रासः कि
वैभवोः लोव

निरमलवस्तु जहालगे सब होवे
अस्तु ३५ मे निरगुण सब गुण
प्रकासी ताते मन धरने मुख
नांसी मेरोना सक देन हाकी
सिा नम धर्म धरो नु तौ हा ३५
अस्तु इव एक हा क हा जे मेरो
धरम क देन हा छा जौ उ इ व जे
लौकिक ब्राह्मण रा न सता म स
बि बि बि प्रकार ३५ ॥ जिन ते के
वल हाये प्रन रथ प्रवृत्तिको स
ब मे टे प्र र थ न र क न मा हि डार
निहार काम को थि दे वा दि बि
कार के र जौ ते उ ते मो मे करे ३
तेरु मो लिल सब रुत रे जे से क
र म रा न ये क स्यो मेरो धरम
आ चर्यो ३५ वरिसो न य उ
हि
मौ नो सि

॥ १ ॥ अविस्तरौ ॥ ८ ॥ अविस्तरौ ॥ ८ ॥ अविस्तरौ ॥ ८ ॥
 अमलमेरो ॥ प्रतिपुनीतिइसन
 जोलिकेरो ॥ तसुतीरथचरणानि
 कोजलाइसपरसप्रज्ञानसरेर
 ल ॥ ८ ॥ नामप्रलघनिदासोगगा ॥
 निरसलकरैइससबप्रगातस
 जायतुमबासाकरो ॥ फलनधिप
 तनबलकलधरो ॥ ८ ॥ रहुइसातने
 त्रादिकससौ ॥ विनयादिकसु
 लधिगागसौ ॥ इदायनुकेप्ररथने
 परिसरो ॥ येविज्ञानज्ञानरुधरो ॥ ८ ॥
 जोसासाधो ॥ ज्ञानसबजोइवेदि
 इकतविचारो ॥ सोइलचन
 धितसबमेधरो ॥ मेरोधुमे
 सदाविस्तारो ॥ ८ ॥ तबतान्योगु
 णकोप्रसरिसौ ॥ समनिरगुणाय
 दकोप्रनुसरिसौ ॥ येसुइवप्र
 तगपामेरो ॥ फिरिउतपतिनसो
 कसैते रो ॥ ८ ॥ याविधिदिकसब

मम
 मम

उास्त्रौउठिआय... छेदिन्यारोक
योवारास... विकैलजानौ कल
कायोमैप्रयानौ नपकसीपेतमा
नौयेसाप्रचूसौबिगारीहेकसी
जगनाथदेव... प्रसादजावोवह
ल्यावोहाथबोवोबाग... सौहारिया
रीये... चलेतहाध्यायेनूपा... अंगैसी
तिल्योआये... हाथनिकस्योलगारे
हापेनगतिलागीप्यारीये... ल्यायक
रफलताकेनयेफूलदौनाकेनू... नि
तिसाचढतअंगगधरुरिप्यारिये
कदसावईकीटी... हलीयेकबाई
ताकेकरनासुनांस... नि... बिनार
तिनातिनोगघाचदीलगावसी... जग
नाथदेव... आपनोजनकरतनीके
जेतेलगे... नोगतामैये... तिचावसी
गयोतहासा... निबडे... थके
नरैबहूस्वाससदाचारलेसिधावली...

गौतमः परमं एकः करिकेव
बेधस्य ज्ञेयं तन्न ईहैः चले
न चोपरिको ज्ञायो प्र न भुक्तः
सैसदाहने नै पासे वा निति जि
ईहैः तै गये फिराय रासायै क्ता दुष
पायः उद्यौ नर देव ग्रहै गयो सुनि
ईहैः लीयो प्रन स्न साय तजौ
ये साय्या नत बसांचे मेरोपन बो
लि बि प्र पू क्लियो हैः काटे साय के
त मेरोः रहै गही मौं नियातेः पुच्छ
त सचि प्र क्लु बिधा सो बिचारी हैः
प्रावे ये क्थेतः सो दिषा ई निहेतः
नि सडारिके ऊरोषा करः सो रक्ते
नारी हैः सो उं हि ग्राये है ॥ प्राप
को क्लि पाये जब डारे पा निश्रानित
बला कटि डारीयेः क्ले नर थ न ले
चौ क्क दित नै भु मायो ॥ नू प्र प्राये उदि

चनजस्रै तेजुद्वेदोऽस्यस्य
रे चरणानपरिपरदोषणादी
न्ती तबचलिबेकस्रष्पाकीनी
८६ जदुपिद्वंद्वैरदैनस्रावे
तोहुरुरिजीतजेनजावे श्रासुकं
ठप्रतिश्रादरबुधि तनमयन
े। नतनकोसुद्धि ७७ कृष्णवि
योगनको संसहे बारबारय
लिफिरिफिरिरहे अंतरजांसी
परमगोपाल जनकोजा निषे
नबिसाल ८८ चनिकटिबुलाये
मिलेदेअंग ज्ञानरूपकोनी
सरबंग तबश्रुपनीपावरादी
न्ती तेर्नद्वेद नभाथैलानी
८९ तोहुरुप्रथमसंक्रुष्मपथा
रे जाद्वलेप्रचाससंसारै त
बसातसंनुध्वचलिश्रायेः
कृष्णयेकसाबैठेपाये ९०

अथैवमिदं कथं च ॥ १ ॥
इति चोक्तं हरिनाथाय विष्णु कुरुते
ए ॥ १ ॥ इति चोक्तं तदा ॥ २ ॥ पानुतप
ने ॥ २ ॥ इति चोक्तं रक्तसारे पंचमं त
बतिनकातासभा ॥ ३ ॥ ॥ साति
कबीरजिरान्चारी ॥ ४ ॥ कृतवृत्ता
कौकरिप्रपन्नां ॥ सातिष्टोडश
णीबाण ॥ नाइजो कृत्रायतनदा
री ॥ ५ ॥ इति चोक्तं कसोयेप्रथिक्
री ॥ ६ ॥ इति चोक्तं सौप्रैसाकोकरे
ने ॥ ७ ॥ इति चोक्तं सिरसरे ॥ येप
युक्तं ॥ ८ ॥ इति चोक्तं सतकास्था ॥ कृत
वृत्ताकोप्रतिधिर्कास्यो ॥ ९ ॥ इति च
तवकृतवृत्ताकीनौकु ॥ १० ॥ इति च
णीबाण प्रकास्यो जुद्ध ॥ ११ ॥ इति च
पित्रीकोप्रैसी ॥ व्याजकुरज्योक्
न्साजैसी ॥ १२ ॥ इति चोक्तं श्रवतिरायु
यन्मयो ॥ १३ ॥ इति चोक्तं बाह्यजुगलकति

पुनिनेत्रे ये पधारतसोः कृत्स्न
 देवबैठेसैजसोः देउकायोसरि
 कौप्रनासः इसनपायोः प्रचिरा
 मः ११ ठाडे नये जोरि कर दोरी प्रेम
 मजनकधकसेनकोरी तबति
 नकौरि नाष्यो ज्ञान जैसै प्रद
 कारकौ ज्ञान १२ प्रसंत योगसौ
 नाष्यो १३ प्रपनौ गरीषि सतौ सोद
 ष्यो १४ प्रमसि द्वात सारको सार
 यातै प्रारनबुस्त्र बिचार १५ दे
 नित्रे ये कौ दानौ प्रादेश १६ बिहु
 ली करी यो यानुपदेश १७ प्रजादी
 न्तार्तु द्ववजनकौ १८ प्रपनासि
 कायो पिरसनकौ १९ मतबर्तु
 वरिचरण निपरे २० हरिहरदे
 २१ निशुलकरि धरे २२ पुनिर्तु द्व
 जनप्रसौ चेतसः नर

१५
 प्रचरणः जेजे हरि

गयो॥ ता कौं बधनु मकी नौं असे ॥
 व्याधक साई करे न जैसै ॥ तब
 सा॥ कतिकारुं ठे बोलै बानी ॥ सुनै
 सुनौ सौ सारै गपानी ॥ येन कौं ज
 सप्ररुग्राप्रसरासौ ॥ तातै रसो
 नते ह्ये प्रायो ॥ नये कही बचनष
 उगजिनका डो ॥ कृतवृत्ताको ल
 स्तकवा डो ॥ जदपिसब सि ॥ लि
 वरुतनिवा स्यो ॥ तौरुसा तिकी
 नो धनरास्यो ॥ रेशतै सकल
 नये जब कु ॥ धसा तिकहा सुन
 न्यो जुध ॥ तबते सकल नये
 दे ॥ और ॥ जुधर च्यो सायेर तद्वो
 र ॥ न ॥ केई धन क नालि सो लरे
 केई धरु ॥ गलै सहरै ॥ केई फरसा ॥ ग
 गदा कुठार ॥ केई लै सौ सधी प्र
 सार ॥ २५ ॥ केई गुरुत गोफणा केई
 ध्यादि क नितरै ततै ॥ हरि

वसन्तकालप्रवृत्तफलप्र
प्रेममग्ननिर्दिष्टविचार
इतिवचिगुणविसतारमिता
उद्धवृत्तनिरंजनपायो य
सारग वसमाद हरिजीकोहै
प्रमप्रसाद ॥ १७ ॥ जाकौं कृपाक
रे सोपावै तजि नवसिधुबृ
लमै जावै जबतै याकौं नापै
सने प्रेमसरतिहिदीमै गुनै
॥ १८ ॥ तबतपावै प मोनंद प्र
सिबिनामिटे दुषदूद प्रस
प्रमप्रप्रापस ॥ १९ ॥ जाकैक
थसंदेहनरस्यौ ॥ २० ॥ यानै प्रेस
कहम प्रजाव मिटे जगत प
जै हरिनाव जिन हरि प्रगत
प्रकृत है करे न कन पाय सक
ल दुषरै ॥ २१ ॥ ये कल धितै प्र
मतनु माझ निजाप्यान देवन

सबै करै संग्राम बैठे देखै कृत
प्रसूरा नाम सुप्रसौल्य - ल्यासे
हाथी रथसौरथसाथीसौसाथ
घरसौघरउठनठनसै सहा
महाघबैलबैलनिसौ १२७
धरसूषधरमिलिलरै नरसे
नरमिल्यजुद्धकरै महामतक
धूलधैनादे जुधुए रबनमे
गजजैसै रथसावप्रथुननठ
न्यौ जुधु तौप्रकूरधनोजप्र
तिकुद्धतसासंग मह्योद २२९
इकरैजुधुबीरनको नद २३
गदसेनामकदभको च्चाताना
मसुच्यारु २ त्रिष्याता तौसा
तिकासौमिलिप्रनरुधु सुय
सुमिचकरैमिलिजुधु ३० न
ल्लुकं नसठसलसुज्यतसत
निच नानआदिदेजोथप्र

कौंयायो रंजो जरा रोगं शीदक
 दुषस्त्रे ॥ बल उपाजायः विगतन
 यकने ॥ १० ॥ अरुदुजोयसु प्रकृत
 येक ॥ वेदसिंघते सुविबेधः सौ
 अपने जननी कौंयायो ॥ जनकरन म
 नव नयसामिदाये ॥ १० ॥ २ ॥ प्रैस्के प्रा
 दिपूरय प्रबिनासी ॥ सुकरत जि
 नौ ॥ सिंटे च त्रयासी ॥ कृस्मताम
 लीनो प्रवतार ॥ तिनकुं वंदनव
 रंवार ॥ १३ ॥ दोला ॥ प्रैसोसु नि सुध
 देवसो प्रकृतत्वर्णपदेस ॥ कृस्म
 कयाके प्रकृतौ ॥ कोन्हा प्रहमनरे
 लः ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० ॥ १० ॥ इती श्री तातव
 तेकापुराणो येकादससकदेः श्री
 नगवदनद्वसंसादेः नायायां न
 द्वप्रमुकतिनिरूपणानाम येका
 नत्राया प्रध्यायः २५ ॥ श्री नगवा
 नर्णव ॥ द्ववर्सादे समाप्रता
 सकलस्यैक चोपदेकासंख्याः ॥

रिमित आपुप्रापुमै जुधहावांनै
 सरिकरिमोहितकधूनजानो॥३॥
 वृद्धमवसदासारसवसर॥साव
 तत्रप्रधकनोजवतंसप्ररबुद्ध
 सरसेनमधकांयुरदेसबिसर
 जनकुलितरुकुंरु॥३॥आपुप्रा
 पुमिलिजुधहावांनै॥सवनिध
 रसपरसोदृत्तान्यै॥पुत्रधिता
 नाईप्ररुत्ताई॥मांमाप्ररुत्तांनै
 जलदाई॥३॥काकात्ततीजेनाती
 वांनो॥मिन्नमिन्नमिलिजुधहावां
 नो॥सुहृदेसुहृदेजातिनसौजाती॥
 सखमिलिनयेधरसपरवाती॥
 ३४॥तवसरहाणनयेसवनेके
 दृटेतथाधनकतिनतिनके
 प्रायुधनसकलक्षीणतव
 नयेतवतिनकरनिद्वन्द्विये
 रकालये॥३५॥नयेनूस्तचूरण
 जेत॥वजूसमानिसि

३४

दी

जेते सकल कर नि कर लाने सा
संजुष्य ह्यो प्यसी कान्ते ३६ रां न
कृष्ण बहूनां ति निवारैः परि
कूरपकः न बिचारैः रां म क्र
कौरिपु कारे जं नैः जुद्ध बुधि
तर गति ठां नैः ३७ तब प्राप सा
कीयोति नका ३८ तब गौ न है
सब सीन कौ लो ३९ तब पै की कर
नित्य न लीये ४० ये रि मा सि प लै ये
सब काये ४१ बिपु प्राप प्राध्या
दित करे ४२ रि मा या बिचार सब
हरे ४३ पाठ क क्रोध प्र गट जब न प
बां स बिप नि कुल जरि बरि गयो
४४ तब कुल सकल निषट्ट रि दि
ष्यो ४५ तब प्राप प्राध्या ४६ तब
जाकारण ली नै तं ४७ तब ४८ सोप
रि रु स्यो धर नि कौ नार ४९ तब स
मुद्ध तट नै बल न द ५० की न्यो वृत्त
ध्यां न प्रति न द ५१ प्राप सा वृत्त

मासि तैराधौ मानव देह दूरिक
 रिनाधौ ॥ ४ ॥ रंनप्रयाणलधौ ह
 रिजबसी ॥ ल ॥ छिप्रिलतले
 वैठे तबसी ॥ निरमलरूप चत्रनु
 जथास्यो ॥ दसौ दिसाकोति मरनी
 वास्यो ॥ २ ॥ ज्यो निधमपावकप्र
 कासा ॥ प्रैसो प्रगतनयो नुजास ॥
 प्रातबसन दैतन ठन स्यामातर
 खोवणीसो नाप्र निराम ॥ ३ ॥ पु
 रसासससु ॥ त्स्मपपद ॥ कवल
 नैनसो नाके सदा ॥ करनि कुड
 लमकराकार ॥ रूपचतर नज
 श्रीगोपाल ॥ ४ ॥ स्तचिरनीलसिर
 केसविसाला ॥ नुर नगुलताम
 णिवनमाला ॥ कठसूतकटि
 ॥ ५ ॥ निराजे ॥ हनुद्वं टिकानुपुर
 राजे ॥ ५ ॥ बरुआ नषण नूधित
 अंगा देषतमासि ॥ प्रमित अनग
 प्रायुधमूर ॥ ६ ॥

+ सीसयुकटसो जात्र

जैसे जिनकी मायाके बिसतारः
 ब्रह्मासि तस्मिन्कादि कुमारः ५७
 औरै श्रुतिदृष्टासै जैते क्यौंसी जा
 नि सकै न तेते मोहितसकलतु
 म्हारी माया जातै किन्तु तेगाएद पा
 याः ५८ जिनको पाप निरुम
 जैते कौन जातिकी हानैतेते
 तातै प्रबद्धजीन बिचारै बेगै मो
 पापीको मारै ५९ प्रसी जराब
 ककी बाणी सुनिनिः कपटसार
 गपाणी तब प्रज्ञा प्रबचन न
 चारे ताके सकलसोक नैटारे ६०
 श्री नगवानज उवाचे ॥ नुंदिनुंदि जरा
 ये भति मानै अपनौं कस्यो पापम
 ति जानै ये सत्वा जलासै मेरी
 या जरा मै कलासक्ति है तेरी ६१
 मेरी कृपा जा दुतु सरग जल
 म्हासु घनहिनु पसरग ज्यै सब
 नकहे हरिजबली ६२ स्थ विमान
 सुरगलै तबली ६३ न परि कस

यासुनायो करणापूटनी येसु प्रन
 प्यायो मरुतिनुपदेसुर्दहादीनो
 प्याये प्रापकसतसाकोनो राजा
 र दकुलको प्रयो प्राप्य मरुतिजी
 कसकस्योतवप्राप्य मरुतिकोव
 कसकस्योतवप्राप्य मरुतिकोव
 धानसकोई प्ररुदिजप्राप्यमि
 प्यायसौरिसवकेतनमनसोस
 नदेसु प्रमानंदसुहाकेगसुजे
 नारीरुदिसनप्राये तिनसोने
 ननयेचेजाये प्ररुजेरुतिकेस
 यहागोवे बाणीसरुतिमानते
 प्राये प्ररुतेसुनिकरिहिरदेया
 येतेप्रलकोनहा छंद प्राये ॥५॥
 मारुथमे प्ररुजुनरथमासी चंद
 दरुपनलसजासाई तिनतिनसुदि
 द्दीसमातापाई सवसंसुतितका
 लगमाई प्ररुतनरुतिप्राप्यकेस
 कोईहनागमाणिजेसं

स्प्रणांमा करिकैबधिकगयोउ
 धोमः चिह्नविवांनसुरगलोकस
 तयो जेजेसबदतहातहा नयो। ६१।
 बरयलीयेस्वारयोदेये। परिसरि
 कौकहनपेयो। तुलसीगंधपत्र
 जचपये। ताकेधोजकहमपेस
 पे। ६२। सापलकलकायोहे। प्रासन।
 रनमिन। ससिस्तरहतासिन। प्रा
 मुह। प्रागेमरीतवत। योनिजप
 तदेयेनगवत। ६३। बदासकधी
 जनसाकस्यो। नथतजिबिसव
 नचरननपस्यो। नमग्यो। हिरदे
 वीनजलयायो। जेमनगनम
 रवीननआयो। ६४। तबकरिथी
 जग्रासुनिवारै। करुणासहति
 चिनजुवारै। हे प्रत्तकेतुवचर
 ननदेये। तेपलकस्यकस्यकरि
 नेये। ६५। तबतैनिष्टदिष्टिमेंनयो।

रदेव तबर्जतरदीनौ श्रासुकदे
वृश्रीसुकुठेवारी द्वारावतीउठे
उतपातः तिनकौदेधिकसीहरि
बातः उग्रसेनश्री कसबसाग
सन्नासुद्धरसां दुषनसोकः उति
नसौदुःखद्वाराउठेवारी हरि
कौन्तौनलधैबि चारे नि
उत्पायापोमोहितकरेः शोन्वि
उत्पायापोमोहितकरेः शोन्वि
उठेवारी सेयादवृहसुनौकस
बातः द्वारावतीबहुतउतपातः
येउतपातकरे नोसांनः तसि
तजीयेयसुप्रदानो सुजुवती
बालबृहसबदे सधैतारप
ठईयेतेते औरसकलशेषना
ससोडईयेतसंपश्चिमसरस्व
तीनसरेः करिसनोनतन
निरमलकरारे सुधैरिदेती

सब दुषयेकवारुप्र नयो नूलि
दिसानकसुः यपायो ज्यौनुडप
तिनिससाहिधिपायोः द्युतुमधि
नमैज्यौतनबिन प्रानः जैसैनेन
अधबिननांवन ज्यैसेबचनक
हेजबसूतः देष्योयेकचिरवृ
दन्तः ६५ गगनिसुतैनु नरम
ज्यायोः सुनु नससुदि ५२ ५३
सुहायोः मूरतिम
जेते रथमैजायेच
०० परुचरेत्रदास
बिसिनियनयोः
तबसुरिसुतसाबैव
रिसुनमानदुषबि
श्रीनगवानुबाचै
कौतुमजावोः सक
येसूनावोः सबके
नर ३५ अरुके

धरुतधराये जेजेबसैतधितरु
रुदेवाभितनकाकरीयेपूजासेवा
११ अरुबिषनकापूजाको प्रेक
रिसुनमानदानबहुदेजागाय
नमिसोनैबसुदि ॥ सुसहायी
रथअनगुसादि ॥ २ ॥ श्रीवादी
जनेकेलीजे जाते बिबनसकल
ईयाजे देवसुबिप्रगायकापूजा ॥
पंहरणा बिधिअधिनदूजा ॥ ३ ॥
असौसुनिरुजिजाकाबानी ॥ सब
जादवनिचलाकरिमाने ॥ नाव
निबैठिसिधुकरिनुतरोये ॥ चदि
करिरथपयानौकरोये ॥ ४ ॥ ज्योस
रितिनको ॥ आग्यादीन्सी ॥ त्पोत्पो
सबनिसबैबिधिकान्ती ॥ करि
सनानधरमसबदाने ॥ अधिप्र
नासुप्रापबहुमाने ॥ १५ ॥ तबति
जकायो जुम ॥ दायान ॥ तातेचलि

प्रयोना ७२ द्वारावती रसोमतिको
 इति नको धरे जसालो जोई सैरु
 नरलोकतजो मोजबसी सिंधूद
 रिकाबोरोतबसी ७३ रुमरेमात
 पितादिजुजेई लेप्रपनेलोगनि
 तेतेई दिस्वाजुईयो प्ररजूनसंग
 रलैद्वारकोकेसुनंग ७४ तिनको
 येरुसंदेससुनावो ७५ रुरुतुमन
 मधर्मसासनलावो ७६ ममाधार
 चनायेरुजांनो नामरूपसब
 मिथ्यासांनो ७७ पद्मिणानगुरस
 बनानारूप ७८ श्रुलजांनोको
 हिप्ररूपजसांतसा व्यापकसो
 कोसांनो ७९ नामरूपसबेमायाजा
 नो ८० हेमेरेचरणनिरतरनजो
 दूजीसकलबासनांतजो ८१ से
 काप्रवेसांसांसी जाते फिरिदु
 षपावोनांसी ८२ येसासुनिसर

उस्यो उद्विष्टाय च ॥ ३ ॥ च्छेदिन्पारोकी
यो वारासं ॥ ४ ॥ विकैलजानो कस
कायो नैः प्रयानो नये कसी प्रेतसा
नो ॥ ये सा प्रचूसौ बिगारी से कसी
जगनाथ देव ॥ ५ ॥ प्रसादा जावो वस
ल्यावो सायबो बो बाग ॥ सो सा रथ्या
रीये ॥ चलेत सा ध्यायेत् ॥ ६ ॥ ३ ॥ गीसी
सिल्यो आये ॥ सायनिक स्यो लगार
सापे न गतिलागी प्यारी ॥ ७ ॥ ल्याय क
र फलता के नये फल दौना के न ॥ नि
तिसा चढत अंगग धरु रि प्यारी ॥ ८ ॥
क ॥ सा ॥ ९ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
ताके करमा सुनास ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
तिना तिने गघाचरी लंगा वसी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
नाथ देव आपनो जन करतनी के ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

इयोऽप्रवारदेषिषोऽत्यकैकावारः
जोपैजुठनिलगीसे कुरुष्योयेबी
नप्रवृत्ती ॥ १२ ॥ राप्र ॥ ॥ ॥ नपा
कहाः कसाधे प्रगटघोऽत्यः बोलि
हनुः प्रवैरुमदेधानईरीतिसेः
करमा- नामयेधघाचरीष
वावेमोति मेहंनितिपाउजायेः
जांनसांचाप्रतिसेः गयेनेरो
संतरा तिन्नातिसोसिषायप्रयोः
मतमोऽप्रनंतं नजानेपोऽप्रन
ति है कसावाहासाधसोज साधे
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ जायेकैसिषाईये
सप्रैबडात्तीतिसे ॥ १५३ ॥ सत्
पिलेप्र- न- के बाकी कीका
खिलपिछेउनेबाईसोकथा सुने
येकनरपसुता येकसुताजमाहार
कीः ज्ञायेगुरुरदेषिः सेवादिग्ग
बै हैजायेः कसालचायेपूजाकीजसु

कल्पसौंज्ञानः चोडौसोकमो
 सत्तयज्ज्ञानं निमसकारकरिवा
 रंवारः प्रदधिणां देवा विधिप्र
 कारः ७ चरिबियोगतेऽप्रतिद
 प्रपाये ॥ ज्ञानविचारचित्त
 सराये ॥ सरिकेचरणकक्लनुर
 द्वारे ॥ तबदास्कदरिकांपदारे
 ७४ दोता ॥ येह नृपमैनुमसौक
 लो यद्दकुलकौसंसारः प्रबन
 प्रौहरिकौगवनः प्रूरुसुखिन
 बुध्दारः ॥ ४१ ॥ ५८ ॥ ८ ॥ ऐताश्री
 न्यागवर्ते महापुत्रसोयेकादसक
 दे ॥ श्रीसुकपरीप्रातकसदि ॥ न
 आयां वलदे निधीणोनां जा विंशो
 आये ३ श्रीसुकज्वाचौ ॥ चौपरी
 तबबस्तासनकादिं कलाये नम
 वादिकतथासंग्यकाये सततव
 नासंकरदेव ईडादिकसुरप्र ७

बीसापनतेसिकरमः पारलो
कवेदमे प्रयकतेपातैः दुः
एँ बिचारैतेते सबतलसैः प्रम
श्री नंदः ७७ मि कृदम धरे दुष
दूदः ७७ सता यरुहरिको वत
रमे तुमसांकसा स ध्याये याके
कसै सुनिनारि नर नारायेणपै
जाये ७७ जोपरी बृसनिह निरं
जनस्वामी सकललोकके प्रवज
मी नकनसे तिधरे प्रवतार
नांनोत्तिकरे ७७ रि ७७ तिनमे
कृदम स्वयं जग न ज्ञानक्रिया
सबसक्ति प्रधानः दिनके गुण
निकसो सुप्रदेवः नततस्था
परीधन नरदेवः रि नकोनास
लीये नवनांसी ले करिराये नि
जपदसांसी येसे कृ भसंतनक
वित निमसकार तिन प्रचकौ
नित्रे ते प्रवसंतदाससेनामरे

नृपदेव ॥ प्रविद्याधर किंनर
 ध्वजः पितरमसौरगचारणसरव
 गण्डलोकपंचप्रसूसिध्याः
 केदुस्क्रामनोविद्यः २॥ सबनि
 लिलरिदसनकोप्रायेः सबसो
 हरिकेदुसनपायेः हरिकेजनम
 करमगुणगर्वैः ॥ सबनिलिजे
 जयसबदपुनावेः ३॥ सकलवि
 एनिष्ठायोगगनेः बरधैपुष्य
 नप्रेमक रिसगन ॥ बारबार
 करैपुनामः सुधतेनाथैहरिको
 नामः ४॥ बुक्तादिकसबकदम
 विचरतीः ५॥ कृष्णसातंतिनकोउद
 च्छतीः ६॥ तेषुप्रसदधेनगवानः
 नैनकरदितबठान्यौध्याः ५॥
 लस्त्रापयेककरिध्यायो इत
 नावसबदरिबहायोः निजत्म
 लोकनिकोः प्रचिरानः ध्यानेडा

सुधरजाव। नकफा। नन। न। न। न।
 नन। न। न। न। न। न। न। न। न। न। न।
 रदेमै। न। न। न। न। न। न। न। न। न। न।
 भिरावै। न। न। न। न। न। न। न। न। न। न।
 वै। न। न। न। न। न। न। न। न। न। न।
 न। न। न। न। न। न। न। न। न। न। न।
 लेकसो। स। स। स। स। स। स। स। स। स। स।
 येन। अ। र। थ। प्र। का। स। न। जो। यं। ड। त। जा। ने।
 सो। सो। ई। इ। जो। क। दे। न। जा। नै। कोई। ता।
 तै। तिन। अ। ब। के। र। ण। की। न। ती। सो। से। व।
 क। को। अ। ज्ञ। दी। ती। सब। लोक। न। की।
 हित। मन। श्र। री। अ। म। न। उ। र। क। ना। प्रा। वि।
 सारी। ७। जो। को। वा। चै। सु। नै। सु। नां। वै।
 ध्यान। करै। न। चै। सु। र। गां। वै। ते। ते। ल। सै। ता।
 न। बै। रा। गा। प्र। म। न। कि। र। के। प्र। न। रा।
 ग। ८। प्रे। म। प्र। वा। स। म। ग। न। नि। ति। र। सै।
 न। व। दा। वा। जि। नि। क। दे। न। द। सै। प्रे। से।
 के। क। रि। बू। त। स। मा। वै। ता। जे। प्र। नं। द।
 ज। ग। त। न। स। आ। वै। क। ब। ह। करै। को।
 मना। कोई। या। तै। के। लै। स। क। ल। सो। सो।
 ई। ता। तै। जे। जे। सो। ये। स। रु। का। म। अ। रु। जे।

रणामंगलधाम ॥ ६ ॥ ताकौ जगति
धारणाधरी ॥ जगति नुप्राय न
स्मसोकरी ॥ तब हरि जीवै कुंठसि
धारे ॥ या विधि सब के कारज सा
३ ॥ तब दुंदुभी बाजे सुरलोक ॥
नुपजाय हरि मिते नये लोक ॥ स
तिरुकारति धारि ज ॥ ४ ॥ धर
म ॥ सो न प्ररुडे नु नम करम ॥
८ ॥ ते सब गये संग जगदीश ॥ जा
ते हरि सब सोन के ईस ॥ तो ते जस
कथा हरि जीकी ॥ पूजा ध्यान या
रणानीकी ॥ १ ॥ जस स्मरते
ते हरि सत्पादिक सब विधि जे
बुला जा ॥ २ ॥ दि सकल सुरजे ते
हरिकी न किहित जां नै ते ॥ ३ ॥
हरि वैकुंठ प्रयाणै कस्यो ॥ सो कि
नसकौ जां निन पस्यो ॥ कहन स
तिन हरिकौ देष्यो ॥ बडो प्रचन

ध. नागाबलकामः १० तिनसबति
नकौनाषायेरुः नूक्तिरुमुक्तिर्न
कोग्रह तातैयासूकाजेप्राति येत
सकलसंत ७ एत ७ ति ११ संमत
लेहसैबॉर्न ॥ जेठ - कलषषी
कुंजिदिवा ॥ संतदासगुरुप्राज्ञादी
न्ही ॥ च. रदासप्रनाषाकान्ही
१२ दौता ॥ प्रमग्यानप्रगटकहो ॥
ममंघट ॥ निजदेवातेमेरेनुरति
तिवसै संतदासगुरदेव ॥ १३ ॥
धरीप्रेती श्री नागावलेकतारपुरा ॥
येकादससूकदेनाषायी श्री सुकप
यतसमादि ॥ श्री प्रहमदेकुठ यया ॥
नाम येकत्रीसौप्रथ्याये ३१ येका
दससूकदसनापती ॥ सुसक्त ॥ सं
त १०८ ५७ लीपतंसस रसवाडापुम
ती दुगरी दसकलगुसाई पुदण्णदस
डीको सिष प्राजाज्ञादगुदामं यया
कारज के सोदासका डोकोईवचैत
येसूणै त्सां नैदंडोतव य सो ॥ १४ ॥

सबहीनलध्या...
 आकास प्रसृष्टामनि प्रगट हूँ
 पासा कौ करि परगट गुपत के
 जावे ताकोषो जनकोई पावे ॥१॥
 त्यों हरिकायो प्रयाणों जबही ॥
 काहूति नही न देषो तबही ॥
 मैं प्रगट हूते तब देषो गुपत मे
 किन हू नही ये ॥१॥ स्निपेयो
 अचं नानां ही सक्ति प्रनंत स
 हरि मां ही ॥ जद कुल में हरिके
 वतार ॥ अरु के खिना ना बो
 र ॥ सो समस्त माया करि ना ना ॥
 हरिको सक्ति होत सब जानै ॥ स
 रिजी सदा ये कर सर ह ॥ कर मन
 करै जन मन हाग ह ॥ १५ ॥ अरु क
 र म करत सब जानै ॥ जन मलीयो
 हरिजी को मानै ॥ ये सब दे ही न के
 ओहार ॥ हरिजी स ॥ इन सब ही न

के पार ११ जैसे नट बाजी बिस
तारे बहो खो प्राप हास कलनि
वारे बाजी गर सब हान सो न्या
रा यौ हरिके कर मरु प्रवतार
११ जिन हरि र चोत्रि गुण संसार
नां नां चांति प्र गट प्राकार ॥ ११ ॥
पु प्रवे कीयो तिन तिन में सब
बुता प्र बिना से धिन में १८ प्रंत
आपू के प्रापू ही रहे ॥ तौ ही प्रेन
प्रवतार न गहे ॥ गुरु को मत क
पूव जिन प्रां न्यो ॥ कोल न त के
ग्र चला नां न्यो ॥ १५ ॥ बुल स ख त
तु सु लो ब चा यो ॥ ब धि क हा सर
ज स दे ल प ठा यो ॥ ते जो प्र प नी
र प्रा कर ते ॥ नौ त न को का हे प्र
हर ते ॥ २० ॥ सब ज ग की उ त प
ति पाल ॥ ना स करै जिन को ब
ल काल ॥ जैसे सकल स कि म प

दौकोउ बोलि जै प्रीति गात है नई
 आंधिराती लगी फाट बेंको छाती
 सोपुकारी सुरप्रारतिसों ॥ मानौत
 नपात है ॥ हीरे प्राये लागे सब दुष
 हरिनागे को बडे नागा जा ॥ धरु
 इन समात है ॥ १५ ॥ दूसरी की ॥ सुनौ
 नरपसुताबात ॥ नकि गात गात प
 गी ॥ नगा सब बिषे ब्या ॥ सेवा
 रागी है ॥ ब्याही बें सुष धरु प्राये ल
 नवै सुबर ॥ धरी प्ररबी को डी चिंत
 चित्त दगा ॥ लि क करि ई संग्य नर
 प्रापने ही रंग ॥ चली प्राली हन को
 उयेक ॥ वाही तासू रागी है ॥ प्राये
 डिगपनि बोलि ॥ याचा है रति या
 को जौ नई मति ॥ मति प्रावै बिधा
 पागी है ॥ १५ ॥ ७ ॥ नन जौ बथाता ॥
 की जीये जतन बें ग्य ॥ नैक बोलि सुष
 दी जीये ॥ बोलि जो चा है तो ये ना हो

चरे ॥ ३१ ॥ अथ सुप्रवाह्य चलेनैतं
 प्रतिष्ठा कुलप्रतिष्ठा नैतं
 सब्रह्मकुलकोनासं सुप्रवाह्य
 स्वब्रह्मकोनिर्जनिजनाये ॥ ३२ ॥
 योसुनिशोकतपतिस्वब्रह्मनायक
 रतबिलापप्रनासहीगये ॥ ३३ ॥
 जायेरुरिजानसीदेष्टेत्तबवेकुठ
 गयेकरिलेये ॥ ३४ ॥ तबदेवका
 रोसुणीबसुदेवर्नगुसैनराजान
 रदेवः सुरिबिद्योगतैर्नुपज्योसो
 कः जातेचरुतज्योतरलोक ॥ ३५ ॥
 रामप्रदम्कोईबिद्योगः जाते
 मिद्यो देससंजोगः बलिजुवती
 सबलेबलिदेसः प्रगनिप्रबस
 कायोः प्रतिनेसः प्रबसदेवही
 लेष्टोडसनारिः कायोससुगमन
 चिन्नासंवारिः प्रदम्गुर्दिजसं
 लोडतेतः तिनकात्रिः निलीयेस्व
 जेते ॥ ३६ ॥ सब्रह्मकोः प्रतिष्ठादम्

सो जू संग सो पिटारी है। दिधि यति
 सासू प्रादि जगत बिबाद निदो बा
 धिसी जत न गयो। नैक न संकार है
 काये स... ह्यपत हरिसाधू सेवासा
 के प्रणे। ज... ज... ग... र... ब... थू... यो... प
 धारी है। २००॥ नयत न हित बिबदी
 यो उ नै बाई की दी का। नगती त
 मृत बिबदीयो। ये न नै न सा बाई बा
 तनी कै धी लिकै बताई है। नयो एक
 नूपता कै न... तौ प्रनेक आवैं। प्रायो
 नक नूपता सूलग निलगाई है। नि
 तिसा चलत प्रये चलन न हे तरा जा।
 जीतौ योंबर समां लकसौ... ये
 गई प्रासट्टित न धूदि बेकी रीति न
 ई। लई बात पूछिरांनी सबै ले जनाई
 ११॥ दीयो सुत बिधरांनी। जानि नरप
 जावै नोहि। सत है सुतंत्र सोई नै कै से
 राधीये। नये बिन मोर बधू सोरक

वियोगा ॥ २॥ दैवैः स्वौज्यग निस्यंजे
ग ॥ हरिको बंधुसंलौंजेती ॥ रु
कनीनी आदि सकल लौंतेती ॥ ३०
हरिको रूप हिरदै नैधर्यौ ॥ जग
नि प्रवेस सखन मिलिकस्यौ ॥
अरजुन प्रस सपा हरिजीको क
दम वियोग प्रसारको जीको ॥ ३१
ताते अरजुन प्रति प्रपायको
दम ज्ञान तब हिरदै प्रायो ॥ गीता
मा हिरदै तब ज्ञान मिथ्यादे
रसति नगवान ॥ ३२ ॥ जे सो ब
हो बिधि ज्ञान बिचास्यो ॥ कुरु
वियो सो कसबटास्यो ॥ आ पु
पुनै मारे जेते ॥ अ पने बंधु ज्ञा
निधि यतेते ॥ ३३ ॥ जे नको जो पि
डा दिका नां कृतिक कथा
जेती बिधि नां नां सोहा सो अर
जुन सब करी ॥ कुरु प्रीतितेन
॥ ३४ ॥ तबे द्वारका कुरु

ब्रह्मोक्तिजन नाननहीतीजीयेनपले
साधूसीततैसरीरदगरूपपलेजीन
चरनामतेकेखाइहासौचैसैरह्यो
कैसेजायेप्रवाजायेजबजायेव
आवेपुरपारेजबविषसुतदीजाये
रहेआयेपुरसंतआये। सोलैजना
ई। सहाकेसेजाइतबिषले
कैदीयोहै। गयेवाके। नरोयेउठाके
लकांनि। सबनूनिगपरेआंनिदूक
नयोजातहीयोहै। बोलीनुकलाये
कजीवेकोउपायजोये। काये
जायपितामेरेकेइबार। तयोहै। क
हैसोहाकरेदगनरे। ल्यावोसंतन
कों। कैसेहोतसंतपूछीचेरीनोन
लायेहै। २५। चलीले। बलिवायेचेरी
बोलीबोस्यप्रायदीयो। देविकैधर
निगपरिया। २६। हलाजाये। करीकही
रतिदुगधारामानों। प्रीतिसंत। क

बिन नश साधेर बोरि पलक मै ल
केवल सरिजी के गुरु जे तो त्यों ही
है सकल ईतेने ॥ ३४ ॥ निति बिह
रत हा सरिजी को सु नीरत सु नत
उधार एजी को ॥ मंगल सकल व
गल निके रो ॥ विन वन सु ध सो वै
निते चै रो ॥ ३५ ॥ सत्री बाल बृद्ध सब
जेते ॥ मरत मरत नु बरे ते केते ॥ प्र
जुनता सिदिले प्राये समाचार
पेडै नि सु नाये ॥ ३६ ॥ मनु मरे पिता सक
ल पिता मरु जेते ॥ कुरु म प्र या ए ही
सु निकरिते ते ॥ तु मरु हा ब स ध र रा
जा कायो ॥ सु परा तिल क ब ड ज कै
दायो ॥ ३७ ॥ पाते सब त जिन तर दि स ग
ये ॥ कुरु सि से य कुरु म म य न ये ॥
जाय सरु रिजी को प्रवतार ॥ जा मे क
मरु गुण बिस्तार ॥ ३८ ॥ तिन को क
है सु नै नर जोई ॥ सब पाप निते ध
रे सो ही त्या बिधि रिके जे प्रवतार

इबहित देह बिसारी हसप करन
केकाजिबधिकबानोचरिप्राये
तिलकदंभाका कचजानिकरि
पबंथाये सुतबधरिजनदेधि
कौदेकाजिबइदीयो आसैप्रगा
धुदेउत्तगतको रितोपन तिसै
कीयोःपाटीकादेउ मामा नानजे
कोः आसैप्रोप्रगाधुदेउमामा नान
नजेकोः दीयो प्रनूपोषताकाबात
चितधारीयेः ब्रसैौनिकसिचले
वनकोबबेकरूपः मूरतिप्रनूपब
निमंडनिहारीयेः देधि नैरंगतां
नामप्रनिरोमजाकोः ताकोलेब
नावेधं जलधरोन सबटारीयेः धनके
जतनफिरनूनिधैनपापौकहः च
हृदिसहृरिदेधो सुषनयो नारीये
रुट मंदिर सरावगीको प्रतमा
जापारसका प्रारसनकीयोबेदनु

कुवारकी प्रहायेसिनादुका... इतरे
नामकरुदायेनुही ॥ नकायेलगाये
मनमतिनोपारकी प्रकरतकरतप्र
नरागबदिगयो नारी ॥ बडीये वि
चनरीतियेहासोनासारकी ॥ १५४ ॥
पाथलेकबितमोदिदोनकीयेक
रीति ॥ अबसूनोपारीनारी निकै
मनदीजीये ॥ निमादारसुतायेका
ताकेउनेनाईरहे ॥ प्रापसमेवैरगा
वमास्योसबथाजीये ॥ तामेगईसे
वाइनबडोईकलेसकीयो ॥ जीयेन
तोजातषानपातकेसेकीजीयेभरे
समगायेयाहिकधूलसुहाये ॥ तब
कहाजायजाल्यावोतैरेदोउसक्ति
थीजीये ॥ १५५ ॥ गईवाहागावजहाइ
सरोजनाईरहे ॥ बेटोहोप्रथाईमा
गिकहावहाबातहैलेवोजू
तहाबैठयेकदौरप्रनू ॥ चोल्पन

जै सो नै घछोडी ये न राधै न तिन
जीपै २१ भा मल जब सदा बरती
जीटीका ॥ नहाजन सदा बरतीत
नहायत नहात नै बिचार सेवाक
जेचि नहायेवै ॥ आवत ग्रनेक साध
नापट प्रगाध मता साधलेत जैसी
वे सुबधि मिलायेकै ॥ संत सुषमा
तिरहायेवै ॥ निसदा ॥ सुतसो
सनेरु नि ति विहै ॥ नहायेवै ॥ ग्र
ध्यात गवां न मधु गौण लोचनानि
मास्त्रो ॥ धरिगा कि प्रायो ग्रह पधुत
येकै ॥ २१ ॥ धै कहेतारा मग बेटाक
हारसो पागप ॥ बिते च्या रिजां मते उ
धाम मै न प्रायो है ॥ फेरी पुर डोडी
जागै के संग संत प्राप ॥ लोडी कहौ
धौं पुकारि ॥ सुत कौन बि रमायो है ॥
बंग देव ताये दजि ॥ नहायेवै ॥
जा कही सो संभासी ॥ ईही मास्त्रो मन

हरिचक्रिहोये ॥ बिनाहरिचक्रिमेरे
 अंगनहायाजीये ॥ प्रायोरोसजारी
 प्रबमनमौबिचारी ॥ वापितारमैजूक
 यूः सोहालेकेन्यारैकीजीये ॥ करीजुह
 धातजलमाहिजुडा ॥ रिदईचिचईनईज्वा
 लाजीयेजातनहापीजीहो ॥ १५ ॥ अतज्यो
 जलप्रंन्प्रबचास्तपसनकीयो ॥ हो
 तकेयोप्रसनताकोसरबसलीयोहै ॥
 पस्त्येनवनप्राये ॥ इसोजनायेवा
 ता ॥ गातप्रतिष्ठा नदे धिकरुहठकीयो
 है ॥ सासुसनगवैकधूहायसौपवावे ॥
 याकूबो ल्योहननावै ॥ तबधरकतह
 योहै ॥ कहेसोहाकरै प्रबपरैपायेतै
 रुम ॥ बोलीज्बवैहोवैताहाजातनी
 योहै ॥ १५ ॥ प्रायेवाहीठौरनौरप्रायत
 ननौमिगस्यो ॥ हस्यो जलनेनसूरप्रा
 रतिपुकारीहो ॥ नचक्रवसिस्यामजैसै
 कोन्वसिकोनीनरु ॥ प्रायेलगेछाती

दईबेटीब्याहकसामेरे। ७ स्यातीज
मिदो काजीयेनीबाहजुगमांति
जोलौजीजीये ॥ २१ ॥ च प्रायेगुरधुर
सुबिदी जे कौन सैर। बडे
सिध्यसुखदाइसाथूसेवालेबता
ईहो कसोसुनकसो अजुपायोकर
कैसीनांतिनांतिकौबषांनैबीच
जगलपटा है। प्रचूनैपबेध्यालई
सेहीहमै। आग्यादईचिचीयेदीष
वोजांहा। देरुकों अरुकोंजरइहै।
गये वासीदौरसिरमोररु रिध्यांनि
कायो। जीयोचल्यो। आयोदासकीर
तिबडाइहै। २१ ॥ मूलयाथासुगु
चचन असदानाक्तिगपरासांचीकर
नहारमईतरवारिसारमईचिचीनै
नकी। देवाहिंसि। अरुअरुनग्यारा
षीजनकी। कमथुजकेकपिच्यारि
चितापरिकाषल्याये। जेअरुअरु

रियेयेनुदी। होयेगईरावलमैसुनीस
 थूनाधीये। बो लिडा रिक् टिप टन व
 न प्रवेस काथो। लाघोदे विबालकवे
 ना। लतनसाधीहै। पूष्ठा नूपत्रायासे
 जूसांचीकहेकाथोकासा। कहालुम
 ल्योचाहैनेनअनिलधिथे। २०२५
 ताघोल्परोधेकप्रहंबोलिहूनअवे
 घा। सुधनयो नारी चक्तिरीतिकधुन
 रोहै। जाना नूनजातिजातिपातिके
 विचारकहा। अहोरससाग्रसौसदान
 रधाराये। रुरिगुलगायेसाधिसंतलि
 बतारदीयो। बालिकजिजायेनागीठो
 रप्रतिप्यारीहै। संगकेपदायेदीयेरो
 जेनाडेजाजेहाये। बोलेअपजावेजे
 पैमारिके बिडानाये। २०३ सुनौचात
 सायेवात दूसरासहायेहीये। जायेनु
 गमां

नरपेसूताव्याहा
 येक

इबेटी व्याह कलामे रौ उर हासि
मि दे काजीये नी बास जुग मां हि
जो लो जी जीये ॥ २१ ॥ प्राये गुंरु
सु निदी जे कौन सरा बडे
सिध्द सुख दाई सा धू से वा ले बंता
इहै कलौ सुत कलौ प्रजु पायो कलौ
कैसी नांति नांति कौ बंधा जै बीच
जगल पराड है प्रत्त नै परे ध्या लई
संसा रुमै आ ग्या दई चलीये दीघा
बो जांसा ॥ देस कौ जनाई हि
पये वासी दौर सिर मोर रु रि ध्या लई
नायो ॥ जीयो च ल्यो प्रायो दास कीर
तब दाई है ॥ २१ ॥ मूलनाथ्या सु सु
चत्त जस दान्ति गुपरा सांची कर
हार म ईतर वारिसार म ईची जव
की ॥ देवा सिं सत के स प्रत ग्या रा
जन की ॥ कम धुंज के कपि च्यारि
तापरिका ष्ट ल्या यो जे जे

कसीरिखात अरेजानापितमात मती
पुंगनसमात पावजरेजतिनीजीसि॥

रापोपुतातिग्ररुपाबनकौकाजीयेत
चलेसुसपायदासीअगैसाजनाय
जायेअपदाकापोरिपावगहेम
तिनाजावेअजिप्रांतवारिदीजीए
राकिगयेसंतप्रातिदेधिकैअनंत
कस्योहोयेगाजुवतीसोप्रसंगपाक
रीसैबालकनीसारिजानीबिषनि
रधारहायेअदीयेजुचरनांमतेके
पानसंग्याधरीहैदेषाबिसषजाए
पायेतत्काललीयेकायेतबसिषसा
धसेवाभितिराहै

असैत्तूपनारिपतिराषीसबसा
हीजनरहैप्रबलाषीजोपैदेषाय
हाधरीहै॥२०॥कूल॥असैअगाध
हेनुनक्तकोरुरितोषनप्रतिसैकी
योअरगनाथकोसदनकरनबहेबू
दिबिचारीकपटधरनरचिजेन

नृदेधितेजवाननचलाइहिएसे
सीबरसयेककस्तहाव तंतनयो
कसौमोहिमारिडारो जोपेनेब
नाईहै करगोठिकुंडजाये पाप
कै प्रसादबैठे प्रथमनिकासीज्ज
पसबनिदिघाईहै ॥ २२ ॥ करनस
निसारिकहा नवनबिचारकहा
कसौचाहै हारमृषनिकस्तस
रहै काहिकै दिघाईमानोबीजरी
यमचमाई प्रायीमनमाधिबो
यो याकौमारो नारहै रुकरजो
रिक्केबचाये प्रजुमारीयेक्यौक
रीवात रुठीनहाकराकरतारहै
प्रदाइनाइनिपावो आवोमतिमु
राकौ नैसाधरुप्राउहाये रो ॥
सतारहै ॥ २२ ॥ श्रीरूपचतरु
काय काकीकटीका ॥ ॥ हरस
प्रायोरानां रूपचतरनृजजकै

बहवतायोहै पावै प्र नू सुषरु मनर
 क हा गये तो का हा धर क न भ्राई जा ऐ
 कान ले फू कार्ये है करि ज्यै सा क दी से
 ब्राजा सो हरी मात के वरा ज्यो से वरा
 समाज सब नी के करि री जायो है दीये
 सो पि नारत बले बँ बिचार करै हरै
 कौन रा सुने दर जन पे पायो है २०५॥
 मा नार ह्यो नो तरि ज्यो नु य रि सो नान
 जो है कल स न व र क ली हा थ सो फि न
 यो है जे वरा सो फा सि द्यो नूर ति सो
 घे चिल शी ज्यै र वार ब ह्यु प्राप नी के चरि
 ज्यो है का यो हो हा र ता नै फूलित न
 फ सि बँ द्यो ॥ अति सुष पावे त ब बो लि
 के सु ना यो है का टिले हा सा स ई स ने ध
 कान निंदा के नै नै र ज्युं क वारि मन की
 ही ये स वा यो है का टिले हा सा स ई स ने ध
 ले प्र का न निंदा के नै नै र ज्युं क वारि मन
 व का ज्यो स वा यो है का

रसात्तकरे परे जोहा हाथलेकैसं न
खवा पायोप वानवनमधिगये
षपञ्जके श्रायवेकाडालचोरनैसि
सोचुराईसौ जानिके छिपाईबातमा
तसौबनाई कहाईविषनूषोचि
रतसंग्यफिर श्रावही दिनहोई
वाराकोसुउनपररा सासप्रायी
सोछरजानिलीये रैनिकेसुनाव
हीररभी कटाकाश्री शरकीः॥ ना
गवतटाकाकरीश्राधरसुजान्यलेह
ग्रहमंरुतकरेजगत ॥ १॥ ॥ ॥ ॥
चलेजातमगहगालगेकले ॥ ॥ ॥ ॥
संगसंगरहनाथे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अधारेहै जानीपनकोजुनाहिमारि
बोडपायेकरे धरेचापिबानवेग्रा
वेवहीसकुवारहै श्रापघरग्राय
मूछेस्यात जोहरह कहाजानि
वैतोपारकाये श्रापडास्यो नारहै ॥ ३॥
कृत ॥ नगसनसेग्यनगवानेज्यो ॥ ग
निति

लायो है । इदं लिखता यद्देवो ह्येत्याद्या
कृगहलवो । अथाहिके नारो पुत्रस्य
नीके पायो है । इति बो ल्यो प्रकुलाय मे
तोदायो है बतया । मोहिदे हो छुडा य
नहां कुठक धू नाषा है । लेवो म तिन
मः । साधु जो न पाधि मे दो जा है
जावो बुटि प्रो स्कह मो नी छोर नाषी
ये । अथै के बी चार कायो । जाना सुक
चायो संत बो ल्य उटी ताया । सुता दे
के बी के रा धी ये । पस्वो ब धू पाये
सेरी ली जाये बलाया । पुत्र से के को नि
दाये प्रो ब धरी प्रबला धी ये । बो ल्य ली
यो संत सु । तकी प्रगी कार । दुष सो
प्रपार का ह बि म्प को दा जी ये । बो ल्यो
प्ररु का ये व मे तो मा स्यो सुत लाये । मो
पै जी यो न ली जाये मे रौ नां न ल हा ली जा
रे । दे घो सा धू ता ई धि रा सी स पै बुरा ई
मालां रा ई न हो सका यो मे रू स्म रा जी ध

साधुसेवासाहस्यकीयोहै ॥ पूछ्य
लिकहांकसीनगतहैरुमारोयेका
रुआबुआबो ॥ येजाहापूछिलीयोहै
अजसगचल्योजातबडोनतपाता
जदिकेनपहोचावोदेवोलेरूपइया
देहयोहैकरोसमाधानसत ॥ नैत्य
वाथजाजांउं ॥ येनैजायेवनमाहि
देधिबहोअनजीयोहै ॥ २३२ ॥ येजान
हारिनालातिलकनसदाचार ॥ होये
जानंदारधनजोपैइतोल्यायोहै ॥ ली
जायेछिनायेयेहाबारकहाकारिदेव
दीयोसबडारिछलाछिगुननैछायो
है ॥ अंगुरीमरोरिकहातूबडोहाकदे
अहो ॥ तेकूकैसेछोडुसंतजाविमोव
ना ॥ है ॥ प्रगट ॥ दिषायोरूपसुंदर
नूपयेरु ॥ मेरोनगतरूपलेकेछा
सोलगायोहै ॥ २३३ ॥ टीका साधीजो
लकी ॥ गौडदेसबासीउनैविप्रता

मलकेजुअमाहिप्रसवेचदिश्रापसी
आये। अरतसरतिनैसिचवगुनी
आधरसंगसायकधरना। अथा
रुजुगचत्रत्तजसदात्तकिग्यरा
साचीकरना। परा। नवनचौहानकी
टीकाः। सुनौकलिकालबाता। और
हेपुरानरखाति। नवनचौहानजा
हारा। नाकादुहाईहै। पटाजुगलाघ
घासेव। अत्रिल्लाषसाधुचल्योजसि
कारनर्पसंगनीरनारीहै। मरगीपा
धैपरैकराहकरुतीग्यां। ननि। यौ
आधगईदियाकसाकासिकूलगाईहै
कहैमोकोकनक्तकरायाकरुते
अनक्तनकी। दारनरवारिधरुते
हैमनआईहै। २१७। औनयेकनाइति।
नैदेघात्रवारिदारस्यकौनसंस्कारि
जायेरानाकोजनाईहै। नर्पनपरती

माधुसेवासाहस्यकीयोहैः पूछ्य
प्रकृतकलीनगतहैरुमारोयेका
प्राबुप्राबोप्रायेजाहंपूछिलीयोहै
जसगचल्योजातबडेनुतपात
नधिकेनुपहोचावोदेवोलेस्यपइया
दीयोहैकरोसमाधानसंतमैल्य
थायजाहैनांजाहैजायेबनसाहि
शिवहैधनजीयोहै॥२३२॥ हे धेजान
कारिमाताहैकनसदाचारहैये
जानंदारधनजोपैइतोल्यायोहैली
जायेछिनायेयेहाबारकलीकारिदेवो
हीयोसबडारिछलाछिगुनमैछायो
है॥ अंगुरीमरोरिकहातबडेहाकदार
अहो॥ तेकूकैसेछोडुसंतजीविमोकै
जाहै॥ प्रगटहैप्रायोस्यसुंद्रप्र
नूपयेसु॥ मेरोनगतस्यलेकैछात
सौलगायोहै॥२३३॥ टीका साबीजोपा
लकी॥ गौडदेसबासीउनेविप्रताकी

मलकेजुधनासिप्रसैचदिश्रापसी
 ध्यायेत्त्रयससुतिनैसिचवगुनी
 श्रीचरसंगसायुकचरनच्य
 रुजुगचत्रत्तजसदान्तिकुणरा
 साचीकरनापरात्तवनचौहानकी
 टीकाः॥सुनौकलिकालवाताश्रैर
 हेपुरानख्यति॥त्तवनचौहानजा
 हारानाकीदुहाईहेपदानुगलाव

त

यचल्योजसि

कारनर्पसंगनीरनारीहेमरगीप
 छैपरेकराहकहतीग्यात्तनि॥यै
 प्रायगईद्याकहाकासिकूलगाई
 कहेमोकौकत्तककरायाकस्य
 प्रत्तक्तनकीद्वारतरवारिधस्त

॥२१७॥श्रीवयेकनाई

रिहारस्यकौनसस्त

जायेरानाकौजनईहैत्तनर्पनपर
 तिकनेकैरेयेहैसौरुनांना॥बाना

देवोर्लईरुच्यप्रायेकै। बीतेकेहजांस
तबबोलेस्यामसुइजु। प्रतमानचले
तोपैबोलेकोजुनायेकै। लागेजुसंग
उ गसेरनोग। अरौरग। प्रायेप्राये
पावेचलो नौ पुरखजायेकै। अुनिते
कानपरैपाये। जिनदीठकरकरैरहै।
वाहीठोरकहीमैसुनायेकै। २३६ गये
हिगगांवकहीनैकतौचित्त। बुरह
चितयेतेवाहे। दीयोमसकायेकै। ल्य
वोजाबुलायेकहै। प्रायेदेवौ। प्रायेप्रा
पसुनतहाचौकिपरैसबगांवप्राये
आयेकै। बोलिकैसुनाईसाधि। पूजी
हीये। प्रनिलाषलाषलाषनांति। रां
नरुचोडुरनायेकै। प्रायो नसरूपफ
रिबि। नैकरिराष्योद्वेरि। नूपसधेदर
दीयो। प्रबलोबजायेकै। २३७ टीका रां
दसकी :। द्वारिककेहिगहाकाकोर
कगांवरहै। रहेरांमदासनकनहि

रह प्रनूपोदिसारसीसलप्रदायेहै
बेगुलैउतारिकरलेकैउरैउरिदीध
देविधौदोबारकसौधौरुप्रायेप्रा
हैकहतलोकहइसहानहाजाति
प्रबन्हापतिडोरैकारिःहरिघदया
येहैःप्रहोरिषाकेसमेरेलायेक
रेकेससेताःलेसहननक्तिकही
कायेदेधोध्रायेहैःररअमानिराज
वासदधरासिसिंधुबुक्योहूतोह
निकेनोदासबंजीःमोनोफेरिजी
योहैःदेधेसेतबारजांतीकरपा
प्रपास्करःनरानारप्राधैसेवाले
समैनकायोहैःबडेहादयालसद
नक्तिप्रतपालकरेःमैतोहोप्रन
ताप्रयेसकूचायोहायोहैःगूठस
बध्रहतेनावलजाःमेरोहाजताते
सधसाजैयेहहनसायेदायोहैःरर

फिरै नरै कंचन ये कस
रिजन प्राये बिदत बटोर
रिप्राप लटाये साधै नि
नधुरद हा प्रनूप थारे रस
स्थारे

बलव

प्राये

धन प्रपब पथरे नगतन संग्य नग
गनुव्य गोरुन फिरै ॥ ५३ ॥
नकी टीका ॥ नगं तनिके संग
नग्रे से फि स्यो करै जैसे बधु स
फिरै ने सुवता गाये है सु रिपालना
बि प्रव्याममै जनम लीयो काये प्रन
नराग साधुई आ लटाये के के के ते क

सरे कीयो

बिनुषके

रिदास के नदुष देता प्राये संत ब
हो बडे कृ सु रु क
कनी मे लत लसो चप स्यो सु सने मित

चके सैलेतः देहैरुमसाथतौकौरह
य सकाजीयेः कायोहावना ॥ ५५ ॥
धरकोहसायेधन बनिठनिचली
धारनधिधरिलीजीयेः संतग्रग्या
पाय्यो निसंक ॥ इमं इमैः फिरीये
ससंकधु गत्रीयाधरमनीजीहैः
बोलेप्रापयाकौल्यायेप्रायेः पररा
येजाये ॥ इयापयायेतयेसीसम
तिरीजाहैः २४८ क ॥ औरजुगन
तैकवलननः ॥ ५५ ॥ गवहातकीर
पाकरी बीच्यदीयेरुधनाथनग
तः ॥ ५५ ॥ योयालागेः निजनवन
मैजायेदुषकायेकरनगं नागेः बी
च्यदीयेसोः सारंभकहैनारिपुका
रीः प्रगटेसारगप्रानसेकसाग्र
तैरारी दुषनकीयेनीकंद दासप्र
णसंग्याधरी औरः गनतकवल
नन कल ॥ गवहात ॥ कपाकरी ५५

कथासुनौ बघेक वैसुबुधजातिबुध
छोटोसंग्यहै ॥ और और और फिर प्राये
दिदि ॥ बलतननयोदुषीटसुलप्र
नगहै ॥ रागोबडोइजनिजसुताको
दशीअहोरहानसीचासुमेरै ॥ सीबिन
रंगहै ॥ साधीहैगोपालअबबातप्रत
पालकरौ ॥ दरौ कुलगुंननामपूष
सोप्रसंगहै ॥ बोल्योछोटोबिप्रसिप्र
दाजीयेकहाजाबात ॥ तायासुतकहै
अहोसुतायाकेजोग्यहै ॥ दिजकहैना
कैसेकहैमेतोहैनकसी ॥ कहाकहो न
ले नयोबिधाकोप्रयोगहै ॥ नईसना
नारी ॥ पूछोसाधीनरनारी ॥ श्रीगोपाल
बनवारी ॥ औरकौनतछलोगहै ॥ ले ॥ वे
बलिघायेजोपैसाधीनरै ॥ प्रायेजोपै ॥ तो
पैब्याहिवेटाहैजेलीजीकरौसुधनोग
है ॥ २३५ ॥ प्रायेबु ॥ इत्येदाबनबनबा
सी ॥ श्रीगोपालनसो ॥ बोल्योचलोसाध

तद्वरिहोयैरति तिलकदंशधारेको
इति हिगुरगोबिदकरिमानैः षट्स्य
नीप्रजावसर्बधाष्टिकरिमानैः
नाकनक्तिकोनेषसुसहितचंद्रु
कुटिल्याये नरप्रतिकैदिछनेमता
सिपैपायेचप्राये नाडनेषगाः ।
गणौ इत्यस्यसु मज्जेन क्तियेकन
पत्तागोतिकाकथासूनतबैरुरिहो
यैरति ॥ ५६टीका ॥ राजानक्तिराजडौ
मनाडकोनकाजहोये नोयेगईयाकै
धनरुरिकैनहीजाये प्रायेनेषधारी
लैपुजायेनाचे देकैतारन प्रतिनिरु
रिक्लोयौनिरुलकाजाये नोऊकरा
येनरिभोरनिधारल्याये प्रागैध
रिबानेकरिपुजयेसुलीजाये नई
नक्तिरासिबोलेप्रावेबासनावेना
सिधासुगसुदंशैः प्रलेमतितीहैः
रपीमूलप्रनिष्ठपालयेकप्रम
अरमन नाहिनथुजी

कथासुनौ धेकवैस्वच्छजातिवृष्ट
छेदोसंग्यहै ॥ और और और फिर प्राये
दिदि ॥ बबतननयोदृषाँदरुलप्र
नगहै ॥ श्रीगोबडोइजनिजसुताको
दृशीप्रहारहानहीचाहमेरै ॥ सीबिन
रगहै ॥ साषाँदगोपालप्रबबातप्रत
पालकरौ ॥ दरौ कुलग्रामनामपूछ्य
सोप्रसंगहै ॥ बोल्योछोटेबिप्रधिप्र
दाजीयेकहाजाबात ॥ तायासुतकहै
प्रहासुतायाकेजोग्यहै ॥ दिजकहैना
कैसैकहैमेतौहेनकहा ॥ कहाकहो न
ले नयोबिधाकोप्रयोगहै ॥ नईसना
नारी ॥ पूछ्योसाषानरनारी ॥ श्रीगोपाल
बनवारी ॥ औरकौनतछलोगहै ॥ ले ॥ वे
बलिघायेजोपैसाषीनरै ॥ प्रायेजोपै ॥ तौ
पैब्याहिवेदाइजेलाजीकरौसुधनोग
है ॥ ३५ ॥ प्रायेबुं ॥ दत्त ॥ दोबनबनवा
सी ॥ श्रीगोपालनसो ॥ बोल्योचलोसाषी

प्रबलतजैप्राणन किरसधानिरूप
कापैजातगायोहै जाकेयहहयेसो
हीजाबैरसतोये सबडारैमातयोपे
यामैप्रगटदाषायोहै ॥ २५ ॥ नून
गुरगैदिहाइजासिधसतिप्रतिदिह
प्रतीतिगाहोगहौ ॥ पुनू द्रष्टव्य
ग्यकहौ ॥ कौजैहौ ॥ प्राचारजये
कवाततेहिप्रायेतैकहजो स्वामीरह
समापदासइसनकंप्रायो ॥ गुरुकीग
राबिश्वासफेरिसबधरमैत्यायोसि
प्रपन्नसाधे लानके ॥ बिनुसबसुनु
तसोइकायो ॥ गुरुगैदितबनताइ
वैसति ॥ प्रतिदिहप्रतीतिगाहोगहौ
प्रच ॥ गुरुनिष्कटादीका ॥ बडोगुरु
निष्कधुव दिसाधुईधजानै स्वाम
संतपूजिमाने ॥ सैसमकईयो ॥ निति
हाबिचारेपुनिरारैयेनुचारे ॥ नाहा
चलोजबरामतिकौ ॥ कहीफिरिप्राई
ये ॥ सपतदिवायेन ॥ जरायेबेकौदीयो

जाके प्याशे जागरन येका दसा करै
रन धोर बुके नया तन बंध प्रजा है न
ही धाईये होले नरि नाये तेरो प्राये हो
सहो न जाये चलो धर धाये तेरे लावे
गाकी नारिये ३३ करवा हा नोति प्रा
जाग्रन गाकी चिदि हो जानी सब बंध न
मोथकी पाव गति है दसा का प्राध
रातिले के चलो मोद गात नूषन उ
ता रिधरे जाका सांचे राति है न दे घा
रि दे घे परी है नु जा रि जा सां दोरे पाये
जानि दे धि क हा के नम ति है धापी प
धराय है सो कि हा जाये सुध पा
येर हो ग हा चलो जात प्रां निमास्ये
म्राव प्रति है २३ दे घे चरु दिस गा
डी क हं पे न पाये हरि पछतावे करि
क हा न क केल गा है बो लि उ दौ पे क
ई ही प्रौर ये है गयो हुतो दि धि जाये वा
घ वरी को लो हल पदायो है दास के जो
डारो चोर प्रो दित ई नै हा प्र ग न्हा नै

नारीवातसुर्न नरुजार। इटकुलवै
उतारी देरुसोहीयाकौजान वौ मात
इध्रपावैयाकंधुयोहन नावै सुधि
उ। व। व। व। घुली सुसेवाके प्रताप
है। नईन नबांनी रांमातं दमनजा
बडो देक दीयोमांनी बे। प्रये चत्ये
आपहै। इषीपितमात देषि ध्याये
पैथलपदापे। न। न। जीयेनुपायेकोये
दिधपये। पा। पा। प्रस्तन पांनकीध
जीयोलीयोनुनुसमांन निपटप्र। ज
। प्तेरि। ल। ल। योत। प। है। २५। उबडेह
नेदासहरिदासनसौं प्रीतिकरीपिता
नर। प्राये। इ। र। पिछुवारही। हु। तो। ध
न। मालक। ल। न। हीयोहनहालतीयापति
सुघजाल। प्र। हो। कीयेजबन्यारही। गो

गन्तव्योत्तस्यो बरधनप्रथे हो ग्ण
कौनकां नको चले न गजात जन
रस्ये ग्ण्डे न न क्वा इ नो नि ग्ण स न
लो न न नी ह न को निल स्या क कि
रसं स से नि सारि सब कौ न ना ग ज
गे न्ने द न सी ने रै ना न को कौ र न प
च न्ने रि ले न सं त ग्णो ग्ण स्यो उ स्यो
इ ग नी र क ही नो ग क रौ स्या न को
रक्ष फू ली त न कौ न का के न व न नै न
न म ली यो को यो स नि मो नि सारि चि
ता चि त ध्या वी है नो नो के नि स क क
सौ न स क जि न त न न क ही वार न
श्री ग्ण ये पा ये ग्ण रं त न न स्यो नै न
नार धन करे ग्ण न क री
बी चार जो ये न न प री नै ये
नै न पा य सा थि ग न्ना रा त न्ना ग्ण
जा ये नु क ट जा लो जा ति न नि स री
२४७१

नारीवातसुनीनहजारी ॥ घटकुल
उतारी ॥ देहसोहीयाकोजानवोमात
इध्रपावैयाकंधुयोहननावैसुधि
आवैजबपाद्यलीससेवाकेप्रताप
है ॥ नईननबांनीरामानं ॥ जजहात
बडादेकहीयोमांनीबे ॥ अथेच्यो
आपहो ॥ इषीप ॥ देषिध्याये
पेटलपटाये ॥ कभीजीयेनुपायेकाये
सिधगयोपापहो ॥ अस्तनपांनकाये
जीयोलीयोनुहसमाननिपटअज
नफेरिनलेनयोतापहो ॥ २५ ॥ अबदेही
देदासहरिदासनसौप्रतिकरीपिता
नसुहायेइहीरपिध्रवारही ॥ हुतो
समालक ॥ नहीयोहनहालसीयापति
उषडालअहीकायेजबन्यारही ॥ गोंदे
प्रगदासीकहातनप्रगासी ॥ ल्यावै
पालकरैजती ॥ साधसंतकोसकारही
नारीयेकश्रीकीयोसेवाकेअस्था
ररह्योड ॥ आपजांनबांटीपायेयेह

राकाबि प्रकृतं व नै की विप
हरि नक्त करिगे नो त्यापो शीया ज
के दू नो रगता का वा त लै न ना इ सै म
ठग मिले इ ज पूछे प्र हो क सं जा त त त
तुं म जा त धा लै म न ब प त्या इ प्रे प थ क
धु रा ये चो ल व न मै त्या वा ये जा ये क सै ज
ति स्रु ध धो टो डो न र मैन प्र इ ये नो ले
वि च्य रा ता त नु हा ये नै क थ क थ की
क ही व स न क त्या क र ना म क हा पा ई प
र व च नै ल ग य म न प्र व र ग के करं ग
क रौ तो या प्र री नी च क स ची ये न
जा नी सै ग ये ब न वि ड लो न न ग
जा र वो वि प्र वि यु व क ल ले ब ध प्र
ते वि ल धा नी सै दे नै क र स रि पा
शे क सै क ग हे सै त लो न नो नु चा
यो हे यो वा नी लि च प्राली ज्ञ ये
म प्यारे सब दू दू त नि शो न च प्रो
हे उ वारै हित र वि ग ल धा क २५०
ये क नू प ना गी त का क था सु

सि संतनव साई हरि मंडू नायो है
बिबिधि बिंतां नतां नगना जो प्रमा
साये नोये गई नक्ति पुरी जगज सद्य
यो है इ सन प्रावे लो गना ना बिधि
राग नो ग शो ग न यो बि प्र निकै त
सब ध्यायो है बडे ही खिलरी वैंर है
है ध्यान डारिकरा पन्नर पै टारी
फेरि द्विजन सिषायो है २ ६० प्रातिर
स्रासि सौरै दास हरि रे वता बर स
दुराये लोक रे जना दि टारी है प्र र द
ये धातिर दे जाये दु जन पु कार करी
नरी सना व प प्रा गै कहै ॥ ५४ गार
है जन कौ बलाये सम जाये न प्राये
न सौ पिका नौ जगज स सा धू ली ला
मनू हारी है ते ते प्रत कु न तौ लो नौ
अनू कु ल याते संत नि प्र ना व स नि
कोठरी कोता ना है २ ६१ बसत ची तौर
मां किरा नी ये क रु ली ना म ना म बि
नका न घाली आनि पस्प च न ई है

हरिसुन्दरनहरिध्यानग्रानकारान
लज्जनावे ॥ अत्रगनइती विधिरहे प्र
गनामनननपावे निंदावसितो न
पबद नितेनामनुचास्त्रो रानीपतिप्र
रीशिवसोतबसुताप्रवास्त्रो रिवराज
सोचिकहोनारिसो ग्राजिनरत्नमेरी
कजी ॥ अत्ररिनिष्टपातयंक प्रमथर
मनासिनधुजी ॥ ५७ ॥ टी ॥ तीयाप
रिन्तकिकहे प्रतिपेनरत्नियायोरं
अत्रगयोमनसोचवढोत्तारीहे नर
मनजान्यो निससोचवढोत्तारीहे नर
विरहे प्रनावनाम निकस्यो बिसारी
देखिनुशाफनूपपुष्टोसो निवास
थो ॥ अत्रोतनदौरनावजीवयो निचा
रप ३ देखितनत्प्राग्यपतिनरइग्रो
नयाकी जैसैरतवानमैननेदक
थोसै ॥ नयोदुषनादीसुधिबुधि
शरीतबनेकनविचारी नावरासि
थोसै ॥ निसदिनध्यानविरहे

हिसंतनवसाईहरिमंड्युनायोहै
बिबिधिविंतांनतांनगनाजोप्रमान
ताफेतेयेगइनेक्तिपुरीजगजसद्य
योहैइसनआवेलेगनांबिधि
रागनागशोगनयोबिप्रनिकेतन
सबध्यायोहै।बडेहीखिलरीवेरहै
हैछानिउडारिकरापन्नरयेप्रदारी
फेरिद्विजनसिषायोहै।२६७।प्रतिर
सरासिसौरदासहरिसेवतहै।बस्म
दूरायेलोकनेजनादिदारीहै।पेरदी
येथाहरदेजाये।दुजनपुकारकरी।
नरीसन्नानुपप्रागेकहै।सुधगारी
है।जनकोबुलायेसमजाये।न्याये
नूसौपिकानौजगजससाधूलाला
जनहारीहै।तेप्रतफुलनेतौमानौ
अनूकुलयाते।संतनिप्रतावमनि
कोठरीकोतानीहै।२६८।बसतचीतोर
मांकिरांनयेकरुलीनांमनांनबि
नकोनघालीआनि।स्पधनईहै।

जोगजगत्तदंननजनबिननुधि
 बतार्यो॥ हिंदुतुरकप्रवानरैः नोस
 बदीसाषी॥ यधिपातनहोवचनर
 वकेहितकीचाषी॥ अस्तुइ इत्याले
 जगंतं प्रमृषदेषीनाहोतनी॥ कवी
 रकारिणराषीनही॥ ६॥ १॥ १॥ १॥ १॥
 उडुसणी॥ ६॥ १॥ १॥ १॥ १॥
 की॥ अतिगंनोरमतसरसकबीर
 हीयो॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
 सबदारीषी॥ नईननबानीदेहोति
 नक॥ रवान्नी॥ करौकरौगुररांसां
 नंद॥ गरैमालधारीये॥ देषैतहीमृ
 रमेरो॥ मानिकैमलेधुमोको॥ जात
 कानगंगाकहावगतनड॥ १॥ १॥ १॥
 नत॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
 प्रापपरेपगरानकहै॥ संवसे॥ बि
 वारीषी॥ रक्षकनावहीवातमाला
 तलबनायेगातमानिडुतपाताः॥

चारी है ॥ २५ ॥ अथै प्रति कर्ष ॥
तिने ॥ अगहीये सुषसीलरंगशा
हरिप्यारलीयो न कृनेष धारिकेकी
यो बसै मान घान पांनसो प्रसन होके
दानो कहो पारस है राषीयो संकृति
को मेरे धन रंभक धुपाधर सोनको
मदो मनेन चा हो चा हो डारो तन धर
के ॥ राषीये क सो नो की यो दा यो करि
पाराषी राषीये यो निजां जले हे जुनी
कारिके ॥ २५ ॥ अथै फिर स्यां न मांस
तेरे रुबिता तनये ॥ प्रतिकरि बोले क
सो पारस कारि तिको ॥ अथै वा हा ठो रली
जे मेरो मन पत जे ॥ अथै चा हो सोही
को जे मे तो पावत है अति को ॥ लेके
उठि गये नये को तु क सो सु नो पावे से
अत नु स ह र पांच नितिहा प्रतितिको ॥
ने वा हु करत डरला ग्यो निस कहो हरि
शे डो अरु प्रापनी ॥ अथै राषी मे राजा तिके
मां निले बनी वात नई हो र ले बनाई चा

दिनमें ल्यावे कस ध्यामके सांचे
जगति नावे जो नि निपट सुजांन
वेतौ कियके नि ध्यान गुरु सोच्य
स्यो स्यामके बाल दिलै ध्याये दी
नतीन यो जंब प्राये घर डारि दई
दई प्रा रांनको माता करै सोर
कोउ हा किम मरो रिबाये डारो बिन
जाने तले तन रुदांनको ॥२६७॥
गये जून दोये ध्या रिडुडिके ल्यवाये
ल्याये प्राये घर नो बात जांन
प्रनू पीरको रहे सुष पाये करप
करार घर पाये दई छिन मै लयाये
सब लो न किनीरको दीये छो कि
जांनो नो सुष सरसानो हाये
काये रोस ध्याये सुनी बि प्रत जे ध
रको कोरे जुलाये धन पाये नबु
लाये रुने सुइ निके दीये जावो क
होयो कबीरके कपो जूडो ठजांउक

चारी है ॥ २५ ॥ अथ है प्रतिकर्षण है
ति है प्रगहीये सुषु साल रंग श्रा
हरि पार ली यो न कृनेष धारिके ली
यो ब लो ज्ञान धान पां न सौ प्रसन हो क
दानो कहो पार स है राषीयो संकरी
कौ मेरे धन राम क धु पाय र सो न को
मदा न मे न चा हो चा हो डारो त न वार
कौ ॥ राषीये क सो नो की यो हा यो करि क
पारा धो राषीये यो नि नो जू लै हो जु नो
कारिके ॥ २५ ॥ अथ प्राये फिर स्यां न मास
ते रै रु बि ता त न ये ॥ प्रातिकरि बो ले क
हो पार स कारि तिके ॥ अथ वा हा ठो र ली
जे मे रौ मन पत जौ ॥ अथ चा हो सो ही
का जे मे तौ पावत हो ॥ प्रातिके ॥ अथ के
उठि गये न ये कौ त क सो सु नो पावै से
पत नु र ह र पां च नि ति हा प्र ति ति कौ ॥
से वा ह क र त ड र ला ग्यो नि स क हो हरि
छो डो अरु प्रापनी ॥ अथ राषी मे री जौ ति क

बैठानपिसना तालाबैठेपैनमानकी
यो कायेयेकचोअनुठिअलदरकाये
है राजाजायेसोचपस्यो कस्यो क
हाकस्योतबजगंघानपेडापावजर
तबचायेह है सुनिअचर
जन्तरेनरपनेपदायेनर ल्यायेसुधि
कहीअजूसोचहीसुनायेहै २७१क
हाराजारानीसोअबातयेहसाचनर
अचलागीह अअबकहैकहाकीज
येचलेहै नतचलेसोसत्रनबा
नारी गलेसोकुलूरीबांधितीयास
नाजीहै निकसेबजार हैकैडा
दईलोकैकलाजकायेमैअकाजधि
धि नतनछाजीहै हरितैकबीरदे
होगयेअधरनहा अपिउठिअगैव
सोडादिमतिरागये २७१देधिकै
वृत्तबनुपज्योअनावदुजि आयोपा
स्याहसोसिकंदसोनामहै विकष

संगल्लै बिप्रसु निधिपुतनप्रंचल
गी। नागीनिरपमंति प्रागेत्तरसब
गईसै वैसैहा सिंगासनपेप्रायेके
बिरजे प्रचू। पढे बेदबांनी धेनप्रा
वैयसै नईसै। पतितपावननामक
जाये प्रगट प्रनूगायोपद गोदुप्राये
बैठेन किल ईसै। तदुगाई बरगली
मुनिबाल्यके पठाये प्रहाजे सै प्रति
रपाली तै सै प्रतिपारीये। प्रापरूपध
रेनुनबसो धनपणवारे बिप्रसु निप
प्रधारे सीधे हैना वाराये। करिकेन
सोई दुज जोडन करन बैठे है है सधि
येकरे दासकौ निहारीये। देधि नई प्र
धै। हीननाधे सिषलाधे नये स्वर्न
कोडनेउकाडो। तचाकाना न्यारी
तै। २६३ मूल। कबारको एिराधीनहै

धसो धरन सब प्रधरम करिगाये

होगा वृद्धे सना ना भोग है चा है एक
रास जा कृपे प्रादे जा न शोर दाम सो
न कांम जा नै न र के टि रोग है प्राये व
रजी तिसा थक मिले प्रती ति जि नै स
रि की प्रती ति बे हा गाये बे के जो गप है
२७५ होये के धिसाने दिज निज च्या
रि बि प्र न के क डि न ड ये न थ स ड
बनाये है दूरि दूरि गा व न प्र मे ना व नि
कौ पृ थि पृ थि ना व लै क बी र जू को गू ठ
न्यौ ति प्राये है प्राये स नि सा थक सु नि
प्रे तो दूरि गये क ह च हं हि स सं त न्प के
के र रु रि थाये है इन ही को रूप धरि
प्रारा न्यारी हो र बे ये नु नित्य गये नी
है प्रो थि के रा जाये है २७६ प्राये प्र
प्र थ्य रा थ्य रि के लीये बे स काये हाये
इ थि गा दे फि रार्थ न ही लागी ति च प्र उ
रूप प्र च्च आ नि के प्र ग ट काये ॥
ध्याये फल नै न को ब डो ब ड नागी है ॥

संगल्लै बिप्रसु निचिप्रतनप्रोचल
गी। नागानिरयमं ति प्रागे तीरसब
गईसै वैसैसा सिंगासनपे प्रायेके
बिरजे प्रनू। पढे बेदबांनीपेनप्रा
वैयसै नईसै। प्रतितपावननामक
जाये प्रगट प्रनूगायोपद गोद प्राये
बैठेन किलईसै। तद्गईबरगली
मुनिबोल्पके पठाये प्रहोजेसै प्रति
रपालीतैसै प्रतिपारीये। प्रापरूपध
रेउन्बसो धनपदवारे बिप्रसु निपा
प्रपारे सीधोदेनी वाराये। करिकेर
सोई दुज जोडन करन बैरे। देहे मधि
येकरे दासकौ निहारीये। देधि नई प्र
धै। दाननापै सिधलाधे नये स्वर्न
कोडनेउकाहो। लुचाकानानपारी
तै। रईशमूल। कबीरको गिराधीनह
बरण प्रासरनष इसनी। नकिबे
षसो धरन सब प्रधरम करिगायो

नो बिसाल प्रतिप्रेत विकराल देस
 रिकै प्रथारीये अबन सुहाये कद
 वसै पाये परी ग ई न ई री ति न सी य
 सा न ग तिला गा प्यारी है २७८ प
 यो हरि पाये बे कौ म ग ज ब दे बी व
 सी स सी रां मां नं द गुरु क रि पु न्प
 ईये लोग जा नै बौ रे न यो ग यो य
 का सी पुरी फुरी ये रु म ति श्रा ये ज सा
 हरि गा ईये ६१ र ग न जा न द त ३ ग
 ई स ले त क सी रा ज सी न रु त सुं नि स
 व सी लू टा ईये क सी कू वा ग प रो च
 ले गि र न प्र स न सी ये जी ये सु ध पा
 यो ल्या ये इ स दि धा यो है २७९ की ऐ
 सि ध कृ पा क रि अ रा हरि न कि सी ऐ
 क सी अ व ज वा ग है सेवा सा धू की
 जी ये बी ते यो व र स ज स र स ६ ल
 जां नि सं त सु ध मो नि श्रा व ३६ म धि
 ली जी ये श्रा ये प्र ग्पा पा ये धो न की नी
 अ न्नि रं म री ति प्री ति को न पा रा वार

लडारी नलजावही येरु इरिडारो
रालन उन्नारो कायो इधेरो
मोनंदहायो पीपान सुहावही ॥ २ ॥
जोये याये कपा करी दीजे काहू संग
करि जेरे नहारंगया नै क ॥ १ ॥
बारहो सोह कौद वायुई लईत
बकरि धरि चले हरि बि प्रयेक
फोडे न बिचार हो घायो बिषया
योपू फेरिके पठायो सब प्रायोये ॥
सजाज द्वारती सुष सार हो रहेको
उदिन आग्या नागी येन रबकी ॥
कूदि सिधुना जिचाहनु मजा प्रपा
रहो प्राये प्रागे लेन प्राप हीये हो
पठाये जन देषी द्वारा वती कहु
मिलेब हो जायेके महल महल च
हल प्रहल लघिर हो दिन सात सु
घसके कोन गायेके आग्या हीजे
येबकी जाये वोन चाहा हाये
पाये वे रूप देषी मोहा को जोजा

धूचोरी धनलयाजनि तिरु रिगुनगोवु
कोउ रासमैनमारी है उ नकोलेमान
कायोयाहानै प्रपमान नयो दयो जो
पैजायेरुचै तोसितो जीवारी है धरमै तो
नाहि मंडी जानुं तुमरसो बडे कौ धुटा
येपै डौ व्याधिं टारी है प्राये प्र नू प्रा
पव दरबाल्याये समा धानकायो लाये
सुषपाये नक्तकीरति नुजारी है ॥२६॥
धेस्तनको रूप धरि प्राये धि पिबै ज सं
काहिकौ सरत खे नौ न जावो जूक वीरके
कोउ जायद्वारताहि देत है प्रुडई सेरा
बेर जिन ल्यावो चले जयी हयो बहार
कौ प्राये धरमा हि दे धी निपट मगन न
ये नये कौ तुक ये के सैर है धीरके वा
रम धालई संग्या नानौ वाही रंगरे गे
जानौ ये सुवात करी डरे प्रति नीरके ॥२७॥
संत दे धिदुरे सुष नयो प्रसत निकै
तबतौ बिचार मनमा हि प्रौर प्राये है

मानकों ॥ २५ ॥ जो ईश्रावै द्वारत
है आहार और बो लिकै प्रनंत
जनकरायो है। बीते दिन तीन थ
ये पाये धीनको यो। लायो सुनि
नरपदे धिबेको आयो है। दे धिके
ननयो नयो। देवो दध्या मोहि दिष्य
प्रतीत करै आपसो सुहायो है। चाहि
ली करो होये कृपाल मोको हरो। प्रज
रो आनि संपति प्रारं नी जाये ल्याये
२५ ॥ करिके परघ्याई दध्या संगरान्त
दई नईये रुजारी करो परदान संतसे
दीयो धन छोरा कधूरा घोदे निहोरा। न
पमानत न छोरा। बडो मानेती विजंतसे
सूनि जरि बरि गये। नईसैन सूरजिके
उजप्रताप कहा कहेसी तां कंधसां। प्र
ये ब्रजजारो मोलिला घोचा है बेल निके
दीयो ब्रह्मकाय कलापी पाजू प्रनंतसो ॥ २५ ॥
ब्रोल्यो ब्रजजारो हंम छो लिषै लादी जाये
जुली जीये जु प्राय गां वच ॥ २५ ॥ २५ ॥

मूहसंगजाताहमिलायेलईजायेकैपु
कारेजुदुघापोसबगावसै। न्यावैरिप
करिवाकं देषीमैनकर। कैसोप्रकर
मिटानुगाहेजकरतनामसै। प्रायेठ
केकीयेकाजीकरुतसलामकरौ। जा
नैनसलामकरौ। रामगाहेपावसै।।
२७३बाधिकैजंजीरगंगानारसा। रुबे
रिदीयो। जायेतीरदकेकसै। जंत्रमंत्र
प्रावसी। मलकरानसा। डिडारिप्रगनि
प्रजारिदई। नईमानौ। नईदेसकंचन
लजावसी।। बिफलउपायेनयेतौ। उन
सी। प्रायेनये। तबमतवारौ। साध्याग्रान
कैगुकावसी।। शवत्तरदिगवो। चिंघारि
हारि। जाजिजाये। प्रायेप्रागे। सिंघरूप
बैठेसौ। नगावसी।। २७४। हेध्यापातस्य
रुत्तावकूदिपरै। गसुपावदेषीकरानां
तिमांतिनयोसबलोगसै।। प्रनूपैबच
येलीजे।। रुमैनगजबकीजेदीजे। जोसीचा

स्वाजील्यवायेलाये कहा है निहारी
 जाय प्राय परस्यो डस्यो राषी सुप्र
 दाईसो मोनी निजसकवातानकी
 ये निसकधनदीयो। वनध्रं जा
 पैलरैमरै नाईहै मस्वोलाजुनार
 चाहेधसौचूं मिजारइग नयेनीर
 आर देधिदई दृष्टायायेहो ॥ २५ ॥
 चलतधर दृष्टानिजस्य तिसरवन
 परी नदीसना बिषकसेबडी बिप
 रीतिहै नपाननश्रायेये निपरध
 टाईसो तिनकिसरसाई नहाज्ञाने
 छटिप्रातिहै चलेपापाबोधदेन
 द्वारहातेसुधिदईलईसुनिकही
 आवौकरोसेवारीतिहै बडोमदुरा
 जा मोजागांठेबैदो मोचीधरसुनी
 होरिआयोरेलठाकेकौन्नीतिहै ॥ २६ ॥
 रुतीधरमांनिबोकरानीयेकस्ववती
 मांगावहील्यावोबेगपचल्योसोच
 नारीहै इगमगयावधरे पापासि

सासधरहायतनसाधिमेरैध्रान्त
गावोगुणरहेजोलौतेरामतिपाग
मगहैजेजायेनक्तिनावकौदिषाये
बहोफूलनिमगायेःक्यौदिकित्यो
रिरागोहैः३७७॥मूल॥ पापाप्रताप
जगबासना॥ नाहरकौउपदेसदी
प्रथमनवानीनगतिभृत्तिभागा
ध्याये॥ सतिक्लेशोतिहासक्तिसुदि
हरिसरणबलाये॥ श्रीरामानंदगु
येनयेप्रतिनक्तिकासावा॥ गुण
संधिनिरमोलिसंतधरिराघतग
प्रसप्रनालासरसनईसकलबि
मंगलकाये॥ पापाप्रतापजगबास
नाहरकौउपदेसदीयो॥ टीकायोपाडी
॥ गोगरौनिगदंपापानांनराजान्
लक्ष्मीपबदेवीसेवारंगचदौनार
प्रायेपुरसाधुसाधोदीयोजेईसो
लायो॥ कापोमनमाहिप्रचूबुधि
रिडारालै॥ सोयोनिस्सरोयोदे

आती लाये जीयो से वै जै सी ने रुनी
रोटी आगे आधि नूदिली पो परद
ध्याये नही इक दे धि नई बडी न
है बार बार पाव परे औरै नू प्रप्या
तजी धरि लाये सांचो नाव प
प्रनूप्यारी सै एक निति आवै नि
के नाग को लगावे जोई सै के सोही
पावे प्रातिरतिक धून्यारी सै जावे
को उघाये ताको टल बनाये करे ल
वत चराये गाये हरि उर धारीये प्राये
फिर बिपुने सषो जह न पाये कइ स
रसाये वाते ले दिषायो स्यां न जाईये
दिजल धिगाये नने चाये न समात
नाहि नाये नका चोट इगलागी नीर
गरी सै जाये नवन साता रवन प्रवेस
नकीयो बके नागना निप्राति देषी
सी करी सै दधना को दयाल सै के
ग्या प्रनु लोई हरी करी गुस्

चादलिषिदाजाघेरुजीयेकपाल
वहाबातप्रतपालकरै। चलेजु
गवीसजनसंगमतिराजीहै। र
कबीरैरेहासप्रदिहाससबसंगपल
योप्रयेपुरपासिपायापालकीलेप्र
योहै। कबीसासबांगनारीनारी।।
सबसाधनिको। धनकुलुटयेसो
समाजधरयोहै। जैसाकानीसे
वाबसैवेवानांनारागनोगाबांन
केनघेगकपेजातगायोहै। ज्ञानी
नगतिरीतिघररहैकेप्रतीतहै।
करिकेपरतीतिगुरुपगलपुप्या
योहै। र १। लागीसंगरांनदिसंहा
ये। कहीमानांनही। कसदकोबल
वेडरपावेमनलयावही। कामरीन
फारिबधिमेधलायसुखिलेहो। हे
वाडारिआनरनजेयेनहीनोवही।
काहपैनहोये। दोयेदोये। नोयेन
क्ति। प्रायेछोटादानीनो। हसीताग

पथपूर्वैरुहायेरंगद्यु ० नयोप्रचरज
राजावत् नसुनायोहै ॥ फेरिकैसैः प्रा
ये सुनिश्चितीहोतजायेकही ॥ सदन
पथारेसंतनईयोप्रवारहै ॥ प्रावेन
नपायोवाहीसेवाप्ररुजायो ॥ राजा
दौरिसिरनायो ॥ दिषीकुरुमाप्रपारहै
नीजिगयोहोयोदासनावदिहलीयो
पीयोचक्रिससिष ॥ द्वैकैजान्यो
जोईसारहै ॥ प्रबलौहंप्रीतिसुतना
तीउहीरीति ॥ चलेहोये ॥ अधीतिप्र
नूपावेनिरधारहै ॥ ३० ॥ मूलानक्ति
दोननैहनभुजसुधानं पारसप
रस ॥ सुषसाग्रकीछापरागगो ॥ रु
चिन्पारी ॥ पदरचनागुदमंत्र ॥ मनो
प्रागामुडनहारी ॥ निसदिनपेमप्र
घासुद्रवतनूधरज्योनीरकररुगुन
कथाप्रगाय ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
संतकेजयोधनबिमल ॥ प्रतिपीयो
षसरसीसरस ॥ नक्तिदोननैहनभु
जसुधानं पारसपरस ॥ ६० ॥ मूलः ॥

येकै चत्तबूकिगयोयहबडोहाक
कनयोमेटोतुमप्रकसंकगहाग्र
लायेकै चलेपहाचायेबकाश्रति
केप्रथानजाप्रापबिबजलमीलज
सेंज्रैसेफिरिप्रायेहैदेधिनइवाल
गातसुकेपटनीजेहायेलायेयसुच
निकैःआनिपावलापदायेहैहैहै
ध्यापपापजगकेदुरिकनोदुरोकह
औरसीताकहासमकाहिसोछठये
निलेनबनमेपठाननेटनईमिलई
धिनीजायाकायोचैन प्रचरुष्पा
हैरुचपाप्रचरुलंगजायोच विचै
सेप्रवेदरबीलीहरिजा नियेनन्ता
वपेनप्रायोहै।लितलोचरेध्यामैतो
जानौतेबीस्यध्याप्रधैसुनिदिहबा
तकानप्रलेसुधप्रायोहैचलेनग
इसरेजुतामैयेकसिंभरहै।प्रायोवा
सलेतसिधकायोसमकायोहै।प्रा

पथपूर्वैराधिरंगधु ० नयोप्रचरज
राजा। वन नसुनायोसै। फेरिकैसैप्र
ये सुनिग्रतिहीलजायेकही। सदन
पथारेसंतनईयोप्रवारसै। प्रावन
नपायोवाहीसेवाप्ररुजायो। राजा
दौरिसिरनायो। दिधीमरुनाप्रपारहै।
नीजिगयोसायोदासनावदिहलीयो।
पीयोचक्रिससिष। कैकैजान्यो
जोईसारसै। प्रबलौहंप्रीतिसुतना
तीउहीरीति। चलेहोयेजोप्रतीतिप्र
नूपावैनिरधारसै। ३०६ मूल। नक्ति
दाननैहननुजसुषानंदपारसप
रस। सुषसाग्रकीछापरागंगो। रु
चिन्मारी। पदरचनागुरमंत्रमनो
प्रागमउनसारी। निसदिनपेमप्र
प्रासुद्रवतनूधरज्योनीरकररुगुन
कथाप्रगाथ। नालसससु। नोलांबर
संतकंजपोषनबिमल। प्रतिपीयो
षसरसीसरस। नक्तिदाननैहननु
जसुषानंदपा। सपस। ६०॥ मूल॥

गये न डि पा खे बो लि सं त नि न सं सा खे क
 ये ॥ आये वा सा स जे क सो ले हे म न न
 ये ॥ दर स न क रि सा ये न क्ति न र न ये ॥
 ज्ञानि ज्ञानि कै ब स न स ब सा थू प ह
 रा ये हे ॥ और दिन ना स न ग ये चो रा
 च डि छो डि दा ये ॥ ला ये वा थो दु स
 नि ने आ ये मानो ल्या ये हो र ॥ उ ग ये
 से बू ला ये आ प पा ये ॥ ३ ॥ ब र सं त प्र
 ये ॥ ज्ञ न क थू ना सि क ह जा ये क रि ल
 ई हे ॥ बि थ ई ब नि क ये क दे धि कै बु स
 प ल ई ॥ ई स ब सौं ज क ही स सा नि स
 आ ई ये ॥ नो ज न कर त मो कू पी पा जू
 प थो रे ॥ पू ५ ॥ चो न न यो न त ब क
 स लि कै ज न ई सै ॥ क रि कै सी गार सी
 च ली कू की मे स आ ये कं थै ये च ड
 व पु ब ना यो रा जा ये हो ॥ १ ॥ ५ ॥ सा दि
 व ता रि द ई ॥ द्वा र आ प बै डि ग ये च हे
 स के प ग मां ता कै सै क प थो रा हे ॥

कोसदनबिदारे। सक्तिनक्रिसोबो
लिदिनहापुतिबरहाडारे। लगीप
रोसनिहोसन्नवांनीचैस्सुमारै। ब
दलेकीबेगारिनुदुवाकेसिरडारे। न
थप्रसंगज्यौकात्रिका। लडुदेधि
ननमेतरी॥ निपटनरसुरीयानंदके
करदातादुरगानरी॥ ६९॥ कबीरक
पातैप्रदमनानिप्रमततपरचोलह
नामकानिधिमतनामहीसेवापूजा
जपतपतीरथनामनावबिनप्रैर
नडूजा। नावधी। तिजा। नरेराग।
नावकहेनांजा। बोले। नावप्रजामे
लनावसाधिसबबंधनबोले। प्रधि
ताएरह। जाएते॥ निकटिनांसहनव
तकस्यौ॥ प्रबकबीरकपातैप्रदम
नानिपरमतत। चोलस्यौ॥ ६८टी
काप्रदमनानिजीकी॥ कासाबसी
साहनयो। कोडासो। निबासकैसै
परिगयो। कृमचल्यो। बूडबेको। नीर

धरूपकैः। ठाडो दे धिडै ई त ग्रावै प्र
प ह्यदी है। जाये तो बिलाये गायो
तीयां हि ग सुतं नयो नूनि पर कला
जाना न लिखारी है। प्रगटो सरूप नि
धिजिके प्रसंग कसौ। कसो वै तरंग
सिध नयो लाज हारी है। रस ७ कायो
उपदे स नर प सिर दाने प्रवे स कायो
लायो वरु पाप न। प्राप प्राये निज बो
म है। बो ल्यो ये क ना म सा धू। ये क
नि स दे वो ता या। ले लोक ही ना गो स
ग ना गो सीता। बो म है। प्रो न न पे च
ले नां सिं रे नि हा का प्राणा प्र नू च
धो हा रि प्रागे। छर छर दे घी ग्रां म है।
प्राये वा सी हो न च लो मां ता प हो चा
ये प्रां चं प्राय ग ले पा वृ ना वृ न यो
गयो का म है। बिध ई कु ट ल चारि
सा धू ने ठ ला यो चारि। काना मन
हा रि क सी ति प्रा नि ज दी जाये। करिके स्यो
गार सीता को दे मां नि वै ठि जाये। चा ह म

अलोहरांडारसंतधरनं सूतकौ
रिनयेहै। जबलोहरिवतदेधै।
गुरुकरिलेधै।

जिआसपावलयेहै। नाठिनी
नामदायो। दायोपरचाये
मकेउहाये। जोपे। आकहैग। येहै
॥३०॥ कानाकानी नई द्विज जौनी जा
तिगईप्रांति नपारी करिदई। कौन
त्योयेककासी
जायेकसी

ना। एतये। आग। एतये। एतये। एतये।
किसरसाइन छटाई अतयेतिले।
आयेन। सरीति करी जा

अरीकधूम

॥३०॥ करे। येहाबातसमें और
घात।

क। एतये। एतये। एतये। एतये।
करे। व्यास जौपेनये। दंड करिनांन।

ईयेहैं औरलेदिघाईकरतारहै: ता
तेतजिदीयोअसावैसीसबपालदेह
करैअचनमानसोईजानीयेगवारहै
आयेनीलागपरआंम।रहैगपरिसि
धूतीर।अतिनतथीर।अनूषप्या
सनबिचार है॥११॥नयेदिनतीन
येतौनूषकेअथाननांति।रहैहरि
लीन।अनूषोअएइयोचारीहै।दी
योसेननोगअपलदाजीजूलेप
धारी।हादकंधारीऊनऊनपाव
धारीहै।बैठेसैकुटीकै।पाहिदाये
रहायेरूपरंग।बाजरीसीकौधिग
ईनीकैननीसारीहै।देषासोअसा
दमनबडोअहलादनयो।लयोना
गनांनिपात्रअस्योईबीचारीये
र।घोलेजोकिवारधारदेपिन्तासे
अपस्यो।अस्योअइतनहुदिवा
साठौरपायोहै।लयायेबांधिमा
रिबैत।आराजगनांअदेवनेइज

मैनाम्हाप्रसादकासुरसरानंद
साचीकरी। येकसमै जू द्या चलत
बराबाकधलपायेदेघादेघासिषति
नौतेपायेघाये। तिनप्रस्वानीषिजे
बवनकरिबिसेवासी॥ तिनतैसीप्र
तधिचूमि। परिकानीरासी। सुरसरी
सुबरपुनिनुदकलेपरुपेरंतुलसीस
री। मैनाम्हाप्रसादकासुरसरानंदसु
चीकरी। ६०५। मासतीसतनुपमात्प
सतसुरसरीकोरहो। प्रतिउदारंपति
त्पाग्यग्रहबनकोगवने। प्रचरजन
तसायेकसंतसुनिजिनिहोबिबनने
बेठेहतेइकातश्रायेप्रसुरनिदुषद
यो। सनरेसारंगयोनिरूपनररु
कोकायो। सुरसरानंदकाधरनिको
सतराष्योनरसिंघजये। मासतीस
तनुपमात्पौसतसुरसरीकोरहो।
निपदनररुयानंदकेकरहोता
दुरगानदी। करबलकरानाहिसक्ति

चयाकागांसयेकत्रौरसुनौ
 कौनससैकोईयेसमेंबिचारी
 सो देषतहादेषतमेंघाडौबिलाये
 ईनईनईकिथाकहीनक्तिबि
 तारीसैकोरतिप्रचंगदेषिनि
 कौप्रारनकायोदायोकाहबाई
 ताधिजतचलायेकैदेवोगुणलेवे
 नाकैजलसोपुष्कालिकरि करीदि
 ब्रवातादईहायेनैबरायेकैमडु
 जारोनयोसायेकोप्रथारोगयो
 किरिदेषनकौंपरापायेप्रायेकै
 प्रैसहैदयालदुषदेषतमेंनिताल
 सरेकरैलेजोसेवाकौंसकेकौन
 यायेकैः॥६॥पंकतिप्रबलदिगबि
 करिप्रायोप्रायबचनसुनायो
 जबिचारनोसोकाजीयेदईत्य
 सारिकासीजायेकैनितारिप
 मयोप्रतिप्रारलिषाजाति
 साषाजीवैफेरिमिलेमाथो

मैनाम्हाप्रसादकासुरसरानंद
सांचीकरी। येकसमै जू द्याचलत
बुराबाकधलपाये। देषादेषासिधति
नौतेपायेषाये। तिनप्रस्वानीधिजे।
ब्रवनकरिबि। सेवासी॥ तिनतेसीप्र
तधिचूमि। परिकानीरासी। सुरसरी
सुब्रपुनिनुदकलेपरुपरेतुलसीस
री। मैनाम्हाप्रसादकासुरसरानंदसु
चीकरी। ६०५। क्हासतीसतनुपमात्मा
सतसुरसराकोरहो। प्रतिउदारपति
त्मापग्रसुबनकोगवने। प्रचरजन
तसायेकसंतसुनिजिनिसोबिकने।
बेठेसुतेइकातप्रायेप्रसुरनिदुषद
यो। सुनरेसारंगपोनिसुपनरुरि
कोकायो। सुरसरानंदकाधरनिके
सतराषोानरसिंघजये। क्हासतीस
तनुपमा। त्योसतसुरसराकोरहो।
६॥ नियदनरुरीयानंदकेकरहोता
दुरगाजरी। करेबरलकरानाहिसति

गयेनुशिपाये ॥ नकप्रयोसोसु
नायोलासु निग्रनिरांसरोरिसंग
मंरुनीयेनायेपायेलपरायसुप्र
पायभिलेकलेखरनां कृतीयाधंनि
तोसूकथते सतपीतबोलेमैप्रनं
तग्रपराधकीये जायेप्रबकतीसे
वैसीतना निजंतसे प्रावतमिनाप
तोत येहारायोवातगीये प्रायेबु
बन जहालदासबिसंतसे २० हीष
देधिबुंदाबनननननैमगननये ग
येजनाबिलारीजूकेचवातसापायेसै
कसनगौदोरपालनेकमें प्रसाइलान
जहुंनरसावतद नैगकोलगायेसै
नानाबिधिपाकधरे स्वानांप्रायग्या
करे बोलेहरिचवैनां सिवैहालेष
वायेसै पूशिसोजनायेहुटित्यापो
प्रायेगाये सबतुजमैवेहासहास
दससजमायेसै गयेसुजदेधिबक
चाडीदनेषेसरहे बिसकोहुयाय
घाय कभिलेदिघायेसै लीलासुनि

माधोदाससुधरा

सिद्धैः ॥२३॥

॥श्रायैबुंदाबनरा

निकरु

निकरुनिसकोथको

दिषिबैदकसेदीयोहैकसालो

जिलेह देरुजसारी

कि ॥जासोश्रागैप्रायेजीयोहै॥२४॥

ल ॥श्रीनित्यानंदचैतकीन

दिसबिसतरी

कीयोचरुपराये ॥कराणोसिंधि

तिनगतिदायेन

धारसुधर

पासेनामलेततेरुपापदूरि

रकेनसे ॥ग्रबतारबिदतपुरबनसी

नांतिनाहि दिहकाजीये। तबइइलुत
लइयांतिनप्रसंनसोकैपातिरुरि
नगतिनसोसदामतिनाजीसो बि
मधसमेहुदेबिसुनमधबडाइकरे
धरेसायेनांकिकहैपनपरिरीगीहै
३१०॥ मूल॥ बिनैब्यासमनौप्रगटहै
येजगकोहिमाथोकाये। पसैलेबेद
बिनागकथितपूराणप्रदारेइसा॥
नारतादिनागोतिमयतनुध्यास्वैस
रिजसः॥ ब्रबसोअसबगंधप्ररधन
षाबिसतास्वो। लाजाजैयेतागाये
भवपारउतास्वो। जगनाथप्रधबै
रागपसाबंकस्वनांरसन्ताज्योहायो
बिनयेब्यासमनौपरगटहोये जग
कोहितमाथोकाये॥ ७० टीकाभाधे
दासजीकीः॥ माथोदासहिजिनिज
तीयातनत्प्राग्यकीये॥ लायेस्निजा
निजगज्जेसोहाब्योहारहैः सुतकी
बडनिजोगलीयेः। तिनचाहितहोम

गौरनयेनयेनयेनेस चोजनाचै
निजगननेः ३२६ आर्वेजब प्रेम है
कपिंडवततनसैत कचूसंध्याधु
दिउपंगबिदिजात है औनयेकन्या
रीरति आसूप्य चकाराजांनौः
नुचैलाएवप्यारीनाएवसाग्रसमात
सै ईसताबधांनकहाकरौ सो प्रमं
नयाकोजगंताय धेनुनेत्रनिरधि
साधत है चत्रनुज बदननुजरूप
लै। धदिघायेदीयोदीयो जो ग्रनूप
तवालपालयात है २७ कसचैतनि
जांनजगत प्रगरनये। अतिग्रनि
रांनलेकसंतदेहीधरी है जेतो गै
इदेस नसिलेसह न जांनकोउ
सोउ पुनसाग्र नैबो न्यौ कहा करी
है। नयेसिरनौदयेकयेकजगता
बेकं। आरेबेकौकौनसा धियोधि
नमैधराहै। कोटिकोदिउजामे
वारिडारेदुष्टतापै। अरेसह मगना

बजाव्यों प्रा विची नें इसायो है कही
 पुनि ज्ञापने ला दियो जब लीयो वाने
 मां निज परा ध्य पाव गहे के धि मायो
 है नई यों प्रसिं वात कार तिन मां त
 कह सुनि कै लजात सा
 गायो है शिखे के स्वरूप सुखित
 न की बिनि जात हरि जात मंड मंडा

=

१५

करिके

प्री निस्तारिक ही जाने मैतै है त

१४

नैक नेटो बिद्या लें गंता मोको
 पाये है नारा है र है नोग सेष प्री
 रतन ने प्रबे सकने
 सता लै टारी है

मकेलः नः कौसोनरनरमुक
रमनिः जनकीकृताविसतरीः
कोसनीरकीचापतापनजगमंड
नोदहकरिधरलकुहारग्रानधर
मबिदयविपंडनः मुधरामधि
नदेध्रवाद्करीधुरधरजीतिका
जीअजितअनेकदेध्रप्रचेनेनी
तेः बिदतघातसंसारसबसंतसा
धिवांसिबदुरीः श्रीकौसोनरनरमु
किमनिः जिबकीअनताविसत
री २५ दी के ल की करि
दिगाबिजेस्वयपकतिसराधेदीधे
नीपेबडेवडेजीतिनीतिनुपजाई
हैः किरलछंडोएचडेगजध्राज
लोगसंगवाप्रलध्याकेरंगग्राधेन
दावाप्रजाइहैः इरेदिजनीनीका
प्रज्जुबिधानीः तबलीलाविस
तारीगगातीरसुधइहैः बेंडेहि
गग्राधेबोलेः नमूलजनाईः रंगी

कहा यह है जब घांजी सिंह बोले जिनको
बोका नगयो सु निजान नम्रानि जगन
घांजी तिले चढाये वाक्यै रानी यो ३३
जसा काली लसबगावे नीला चलसा
मिसल नई चांसे जाये नैन निनी करी ल
चले बूदा बन नगल गप्ये कगा वजसा
बाई नक्रने जनको त्याई चाव नारी ये
बैठे ये प्रसाद लेत लेत दग न रिभ्र सो
कसा बात दुषा हिये को उ बारी ये साव
रो कुवये को नको बाराये त्याये साये
को से जलै सु निमं तिलै बिसारी ये सा
चले शौरगा वजसा नसा जन न कर सै ग
सै मनसा मिश्र गै बिबती यो करी स
गये वाक्यै रिवोगये जाह शौर बरिधन
नच गिनाया प्रा निपावा

ग्रायेततकालवान् बालपैसराय
सबजगजितवा ये बोलासर
तीमेरेइसिनगवानवैरौ सोनरे
रोकितौ सनसुधवलरइरे न
योइसननुके मनप्रसनहोत
निर प्रसोतबानीग्राये प्रनूया
ये विनेबसोकरौ पक्षपाग्राप
बोले प्रजूनक्तिफललाजेकाह
नूतिनसरा ये सायेधरिलई
डिइई पुनिनईयेहन
सुनिदुष्टजरवाइये प्रापकास
मीरसुनी बसतबिसरातितती
सम्पूहदारजंत्रयेकधारीये
जसुनायेकेनुनिकसतग्रा
करतजायेताके नतनी
सारीये संग्यलेसजारसिषनरे
नक्तिरंगका प्ररेवाहीठौर बोले
कोथनरिजा

बेकान्तियां निगावर्गें नायें गान्त
पिपूचिनीला चक्रध्यायें २३
आथे सुतसुधीम्पु निआता आनी
गनेपुपलदे कैच लिक्क निआयें
ही विद्यनां नां नांति चक्रध्याय
नौः नितकधुता नितेनां गाथे
यें २३ मन्त्र सुगिधुना चक्र
गरुड लोसिधुपां गिदक गें ३
गतिमकना नां विदनापु गें न
सौचगाने न रिमगधु निमेव ग
नीः नुगलथपद पुां नी नरन ग
वार्थः चक्रध्याय चक्रध्याय
लीला चक्रध्यायः चक्रध्याय
नगरं चक्रध्याय चक्रध्याय
चक्रध्याय चक्रध्याय चक्रध्याय
ॐ न चक्रध्याय चक्रध्याय
न चक्रध्याय चक्रध्याय चक्रध्याय
न चक्रध्याय चक्रध्याय चक्रध्याय
न चक्रध्याय चक्रध्याय चक्रध्याय
न चक्रध्याय चक्रध्याय चक्रध्याय

रमचिजनौसोन्नितहेतीः। आनन्द
चरणरजपरसतेसकलसिद्धिजा
कूनईः श्रीहरिव्यासतेजहरिन्नज
नकेदेवीकोदृष्ट्याई०७ श्रीहरि
सनाकीका। चरथावलि
गात्रबागदेविश्रुन्वरागन्तयेत्वये
नितिनैकरिचिह्नेपाककाजीये
देवीकोअस्यधानकाहवकरालेमा
स्योग्रानिः देवतग्यलानियांसापा
नीनसीपीजीये। नूवेनिसनईन
हितेजसीडिगईनईहेस्यरिलई
आपलपिनतिनाजाहिः करोजुर
स्यैकोनकेकेकधूअरेनोई। सोही
नोकूहीजेदानसिखकरिलीजाए।
अ करीदेवीसिष्य सुनीनगरके
सरकीयोपटकीलेधारजाकाबडे
सिरदारहेः चंदीमपबोलेहंतोच
ईहरिव्यासदास। जोबहोहंतोग्रवी

ननेकतदेसीधरी=श्रीनित्या
तनिहान्तनिदसौदिसन निम
श्रीनि.मानद प्रचू.टा. ३३
नदेवस्पदाबास्वनीसोअतर
मनजांनौप्रेममलध्यानचा
सोहीनित्यानंद प्रचू.अंतलका
धरी=नदीसबप्रोअंतनुपु
नित्याधीयेतनयोअनारीकि
तनसककारीतबधैरपरपार
किधनीराधीयेकतिलकहत
नतएजतजाकेनयेनतवा
ग्रंथतकीसाधिसैपुपश्री
तांनकाप्रचू.टी. ३३। गी. ३३
नूरागप्रागैप्रापकैरसगम
येसलानरंगकैसेप्रागै
सबगीरतनीनरबनिधनी
धुल्योदसुरंगप्रग
स्यानरिमाफिसोअनारी
सितामेरे।जातिकिरीप्रायेय
नमेसोमतिस्तसोहीन

रमचिभनौसो नित देही ॥ अन्नर
चरणरज परसते सकल सिद्धि जा
कूनी ॥ श्रीरिव्यास तेज हरि नन
नको देवीको दृष्टाई ७७ श्रीरि
व्यास ज्ञा कीर्त्तिका ॥ चरथा बलि
गात्र बाग देषि अन्नुराग नये लये
नितनेम करि चाहे पाक कानीये
देवीको अस्थान का हव करालेमा
स्यो अन्न देषत गपला निघां हा पा
नी नसी पी जाये ॥ चूषे निस नई न
किते जसी डिगई नई हे रुघरिलई
आपल विन तिन जाई ॥ करे नुर
स्ये ईको न करे कधू अरे नोई ॥ सोही
मो कूं ही जे दान सिद्ध करि ला जाई ॥
३४ करी देवी सिद्ध सुनी नगरको
हरकी घोपटकी लेघाट जाका बडे
सिरदार है ॥ चंडी मप बोले हु तो न
ईरिव्यासदासा ॥ जो न हो हु तो अर्ब

पनेकर वसै गोकुल वसै नंद सह
दिषको सोसै प्रगट बिचो जा
देखि सुरपति मन मोसै

बल न सत बल न जकै कल जुग

मैदा प्रकीयो श्रीबीर ताथा न

राज ज्यो लाल लडाये कै सुषली

यो ७२ टी ति ^{ननकी चेली} रा स प

की काये प्रति पुरादा स न हिस

धरा सिन स्यो कस्थो अ सोप न

नंद गला पदा ई ति पर स नाल

पट साये सित जटि आवै ततै प्रति

नावै नाथ अंग प राई ये आये

ते उवादा ह न स्य ति नै बिसाल कीयो

नयो इस घाल नै क र मैन पाई ये

सैर ति प्राई सु धि प्राई प्रां धि पांनी

रि प्राई ये कदा ति दि ति प्राई बेच्य

पाई ये उ इ बेचि के बजार यो रूप ई

ताको ल्या यो मोरो यान

उरंग कं न लाल गाई ये न ज्यो

नगजसव्याय नैकसुनेमननाशुह
लरिक्कानसंगपदो ॥ ब्रातेबडीबडी
गदो ॥ प्रपेरदो कधुसोई कसोस्वी
लतापैराशुपे ॥ कगंगाकोसरुप
कसोचसोइगंग्रागे सोनिपेसोश्र
शोककापेसुनिमतिनाजापेता
मेयेककंठिकरिक्केसुनायो ॥ प्रसो
बडोअनलाषयाकी बध्याकरिद
जीयो ॥ अचरजनारीनयेकेसैके
तमसीधिलयो ॥ दयोलेपुनावतुने
तानेदीयोजाजीयो ॥ ३० ॥ इधनअन
धनरुकीजीयेबध्यानयाकेसुनि
इधनानिकसादोषकसापाईये ॥
कबिताप्रबधनधिरहेयोदिगंध
असोअग्यामेकोदेसोकसोकसके
सुनाइसो ॥ ब्याध्याकरिदयीनईप्रो
नसुगुनमईप्राये पुनूप्यामनानम
लेसंगयेसो ॥ सरसुतीध्यानकीये ॥

प्रापस्ववापैपुकारेवेतोरेषिसवै
नरेमारेजलबोरिडानोयेमूल॥ श्री
नदसुत्तटप्रगद्योप्रघटरसरसि
कनिमनमोदघनमथुरनाव
सुमिलितललितसुखल्यतकृबिनि
रघतहनघतहदोप्रेमबरघतसुक
लितकबिस्तवनिस्तारनसेतदेत
इहचक्रिसबनिनित॥ जासुसुज
ससिसुदेहुरतप्रतितमज्जर्मप्र
मचित्तान्प्रानदकदश्रीनदसुतश्री
घत्तानसुतानजन्मश्रीनदसुत्त
प्रगद्योप्रघटरसरसिकनिमन
दघन॥७६॥ मूलाःश्रीरुख्यास
जसुरिज्जनेकेदेवाकौदध्याद
वेचरनरकसिषनिपटप्रच
येरुप्रवेः॥ बिदतवातसंसार
मकीरतिगावेःबेरागनिर्के
तिसंगस्यामसनेहीनोजे

टीकापाठमंथानाकी गांवघरीमें प्रकाशगए है पुरां

सदीजै श्रेरक जुनादिकीजै जातै जलौ है जसोई मन
निसिभोरसां चएही श्रतिसुषयई है करे संतसे वचर
है २०० पाठमकोसु लोहे तभक्ति भावसंसुचे त ताकें
धरोषोसिलेहीसाधनकेंसे वैसहीयोहीना जनीयो
एकादूनदीदीयोहै तब लोकीयो विचारता जषना
प्रभुमोलानजनजाये याहीपणकें निवालेसाधसेवन
रिजईगांती तीयाहाषडा लोनाती कभरकंटादीहै श्र
नुंजिकेंसुकींजादीहै जालोगे डं चरिजियो मनमें विवा
षोनिदीयोकारपतिकें लीयो संकारसारो लेकं ह्यो वि
सुतडारताकें द्विये सोचधारयाहिवगतभादीहै कं
सिहएककरजादीहै करी हैर सोईसादी पंगतिवै वा
टमको श्रेसोपाटसाधनको चोरगत फेरचोरी चल्

मं ५ बोलना गै हें दे विन इमित वारी ।
की नीले प्रलाप चारी । कस्तूरी लाल दे
धै बोली दे धे मही नाये हें । नर्ति गा
नतान नाचन रि म्मु सका न डग रु
पल पटा न नाप नि पटरी गाये हें ।
है कै नूदा कार त बधु छो छपां । र
करी धरानु र प्रीति मन सब के न्यजा
पे हें ४१ । प्राये सुरसा गुरु लो कस्तूरी के
ना गरी कस्तूरी के नु पद गा बो मेरी
प्रापान मिलाये । गाये प्राच सात
उनि जो न म्मु सका । लकही । नले न
प्रनात प्रां नि करि कै सुनाये हें । प
स्यो सोच नारी । धर धारी नु र धारी
प्रातः । दुबनाइ से ज धर स्यो यो लषा
प्रेः । प्राये कै सुनायो सष पाये । प
ध्र प्रात ले बतयो मन नायो रंग
प्राये प्र नू गाये । ४२ कुवाने धि
प्रलि दे लछु टि ग ई न ई न ई धि प्र सं
का क छु प्रौ रें नु र प्राई हें । रसिक नि

दीकाघाटमंश्रीणाकी गांवघरीमेंप्रकासगाएहैगु

सदीजै-श्रेरक जुनाहिकीजै जातैजलौहैय

निसिनोरसंनएहीअतिसुषदाईहै करेसंत

है १०० घाटमकोसुनोहैतजकिजावसंसुबैतता

धरोषोसिलेहीसाधनकौसेवैसहीयोहीनाजलीयो

एकाकूनहीदीयोहै तबतौकीयोबिचाराजाषलना

प्रसुसोलाजनजायोयाहीपणकौंनिवावोसाधसेवन

रिजईयांतीतीयाहापडातोनातीकमरकतारीहै अर

नुंलेकैचुकीजारीहै जालोगेऊंजरिनियोमनमेंबिवा

योनिदीयोहारपतिकौंनियोसंकारसागेलेकह्योदि

सुतडारताकौंहियेसोचधारयाहिवारजारीहै कं

सिहाककरजारीहै करीहैरसोईसारीपंगतिवैवा

टसकौंअसोघाटसाधनकौंकारगावफेरकैरीचवत्

तारोमञ्जोरकधुनुरनहाः नैः ध
बुकबांनस्योप्रातिस्त्रोमिकेप्राप
व्याप्यारेनीकटनीरत्ररहाः सोतके
बहुनहांप्रायेः सरबारहनवतास
हसप्रमनुयासिकप्रेमनर राम
रामप्रतापतेप्रेमगुसादेगलकर
८३ मूतः बीठलदासमाधुरमक
ठनयेप्रमांनीमानदहाः तिलकदा
मस्योप्रातिगुनहाः गुनः तरधेस
नगतनकौउतकरषजनमनरि
देसननुचास्योः सरलहिरदेसतो
प्रेजहातहापरनुपकारीः नुसवमे
तदानकायोकरमदुधूरनारीः
हरिगोबिंदजैजैगोबिंदगपरा
सदाशानंदहाः बीठलदासमाधुर
मकटः नयेप्रमांनीमानदहाः
टीकाबीठलदासमाधुरकीः नारी
नुनैमाधुरसोरानाकेपरोहितहे
लरिमेरेप्रापसमैजायोथेकजातस

ति निसनिकसे विचारिके प्राये
याँ छुटी कराने गरुड गो बिंदसे व
करतम गनहाये रहत निसारिके
रानाके जो लोग सोनाहुडिक रिबै
ठित प्रामात प्राई करे रुदन पुक
रिके काये लै उ पाये रही कितो
हाहा पाये तो रले मन म हाये तब
सी मन सारिके ४६ दे व्यो जब क
घतन प्रन जो सुपन दीयो जावो
मध्यपुरी जै सै तीन बार ना धिये
प्राये जाहा जाति पांति छाये कछु प्रौ
रे रंग दे व्यो एक घाती साधु संग
प्रन लार्घा प्रता पार गरन वंती
पती मति सो चरती घो दत नु मि
राई प्रतिना धन राघाये तषां
रीकौ बुलाय कहल लहाये हले ह
मनु नि पाय परिक लौ रूप सुध
प्राघीये ४७ फेर सेवा राजा प्रौरका

श्रीबिह्वनगुरुदत्तनजनसाशुगुन
ग्राहकबितनोषनिरदोषनाथसे
वानेनाग्रबोनीबदितबिदुषसुन
सगोपालप्रलंकृतबजरजगृति
प्रार्थ्यवसुधारीस्वरबसुधतसा
निधि^{समीप}सदाहरिदास॥ वृथागोरस्या
नदिडवरतलीयो॥ ग्परधरनिरात्रि
कृष्णदासकौतमात्रिसाडेहायोः॥ ७
दीकाकृष्णदासपंकतिकी॥ प्रेन्नरसरा
पदकृष्णदासजुप्रकासकायोः॥ श्री
गनाथमोनिसोप्रमानजगगाइये॥
हलीकेबजारमेजलेबासोनिहारीने
नोगलेलगाइलगाबिहामानपाई
धरागसुनिचस्त्रिकौनयेधनुवाग
सिससिकुषमालजूकोजायेकैसु
इयैः॥ देधिरात्रिबारराकेनिकटबु
पुलईलईसंगप्राप्तेजगल्लाजको
गईयेः॥ ४०॥ नाकेप्रनुवापेपटप्रा
नपररायासोथोहलगायेरुदि

टकाये द्वारगाइये ॥ ५० ॥ लनने सु
वरिमें नयो मोहिले होम तिली
योनुना स्वधतन ज्यौक हापाइये
कसौ जचरत्र बडे रस्यक बिचत्र
निकौ ॥ जाये लाल मित्र का घोचा
हाये लाये ॥ ५० ॥ कलहा हरि राम
हठी ले नजन बल राना कौ उत्र
यो ॥ उग्रते जनु दार सुधर ॥ घरा
सावा ॥ प्रेम पुंजर सरासि सदाग
दसर गावा ॥ नरुन को प्रपराध
करता को फ ॥ घायो ॥ हिरन कसि
प प्रहलाद प्रह दिष्टो न दिषायो
॥ स्फुट बकता जगत ॥ राजस
नानि धर कसायो ॥ हरि राम हठ
जले नजन ब राना कौ उतर दीयो
॥ ५० ॥ का र राम जी की ॥ राना सां
सने हसदा चौपरिकौ घेल्या करे
॥ ओसौ सिन्हासी नौ मि संत की धि
नाइ है ॥ जाये के पुका सोसा थू

श्रीब्रह्मचर्यगुरुदत्तचरितसाग्रगुण
 ग्राहकवितनोषनिरदोषनाथसे
 वामेनाग्रबोनीबंदिनबिदुषसु
 संगोपालप्रलंकृतब्रजरजग्रति
 शरथ्यवरुंधारीसरबसुच्यतस
 निधिसेदाहरिदास॥ धृष्यगोरस
 कद्रिडवरतलीयो॥ गपरधरनिरीडि
 कृष्णदासकौतमात्रिसाडैहोयो॥ ४
 टीकाकृष्णहालपंकतिकी॥ प्रेनरसर
 सिदकृष्णहालजुप्रकासकीयो॥ ली
 योनांथमोनिसोप्रमानजगगाईये॥
 हिलीकेबजारमेजलेषीसोनिहारीने
 नानोगलेलगाईलगाबिदुमानपाई
 येधरागसुनिनिकनिकोचयेप्रनुराग
 बसिससिबुषमालनूकोजापेकेसु
 लाईये॥ देधिराडिबाराकेनिकटबु
 लायलइलईसंगप्रप्रेजगलाजको
 बलाईये॥ ३४०॥ नाकेप्रनुरायेपरप्रा
 चरनपररायेसोथोहलगायेहरि

टकाये द्वारगाइये मोहननौ छा
वृरिमें नयो मोहिले सोम तिली
योनुना स्वधतन ज्योः ॥ ५० ॥
कसौ जचरत्र बडे रस्यक बिचत्र
निकौ जाये लाल नित्र कायो चलो
हीये लाये ॥ ५० ॥ कसौ सुरिरोम
सठी ले नजन बल राणा कौ उवदी
यो उग्रते जनुदार सुधर चराई
सावां प्रेम पुंजर सरासि सदाग
दसरगावां नकनको प्रपराथ
करेताको फल गायो हिरनकसि
प प्रहलाद प्रहृदिष्टोत दिषायो
स्फुट बकता जगत नै राजस
नानि धरक लायो सुरिरोम सठी
ले नजन ब राणा कौ उतरदीयो
टपा कासर रामजी की राणासो
सनेर सदाचौ परिकोषे ल्याकरे
असौ सिन्हासी नौमिसंतकी छि
नाइसै जायेके पुका सोसा थूकि

मनदुःखजां निसोसुजां ननां पद्मयो
हरसाये तनगुवाल सुधदाईसौगो
धरधनतीरकसी प्रागेबलबीर
जये श्रीगुसाई चारसौ प्रनामयो
जनाईसै ॥ धनरुबतायो बोदिया
यो बिसवास ॥ प्रायोहाये सुध
धायो संकपंकलेबुहाईयो ॥ ३ ॥
लाबद्धमानगंगलगंतीरनुनैय
नरुनिकिके ॥ श्रीनागोत्पलधा
निप्रमृतनयेनदाबुहाई ॥ प्रमलक
रीसबप्रबनितापहायक सुधदाई
नक्तनसौ प्रबुरागरदानसौ प्रनद
पाकर ॥ नजनजसो ध्यानंद सुनुस
धरके प्रागरनाधमनरुप्रगज
उदारकलिजुगदातासुतिकोबुद्ध
मानगंगलगंतीरनुनैय परुनिक
किकेना ॥ नमूनगरांनरासप्रतापत
येमगुसाई धेनकर रघुनंदनकोदा
स प्रगटनकंकलजांनै ॥ सरबसुसी

रंगगयेना नास्वामीजु वैगइये
निवृत्तिलुकपांचलांगप्रोचहै
हायेकनारुधस्थोकोटिककबीति
प्रथयाहीदौरलेदिबायेकबिता
सांचहै। राधाकृष्णरसकीप्रोचार
जतकहीयामैसोही॥ ५जीवनांय
चदछुपैबानीनांचहै। बडेअनुराग
येतौकबोबडाईकरा। प्रहो जनक
पाडीष्ट प्रेमपोथाबाचिहै। ५३
दावनबृजजुसिजानतनकोउप्रा
ये। ईइसायेजैसीसुकमुषगाईहै
रीतिरुउपासनाकी। नागवृत्तअन
सारलाघोरससारसोरसिकसुषइ
है। प्राग्याप्रत्तपायेपुंनिगोपीसुर
के। प्राये। प्रोच्यनायुनकिना
तिसबपाईहै। येकयेकबातमैस
मातमनबुधिजबपुलकितगातड
गकरीसीलगाईहै। ५४। रहैनंदगाव
रूपप्राये। श्रीसनातनजी। महासु
रूपतोगसभीरकोलगाइहै॥

ताको सुत बाबल सो सदा स सुधरा
 सिहाये लाये बैस थोरा जयो बडो से
 वे स्याम सै बो ल्यो नर थ स नाम बि
 आवत ना बि प्र सुत वि प्र ले कै प्रा वि क
 ला क द क लो प्र ज्यो को न सै फे रि कै
 बु ला यो करो जा गर न या हा डोर क
 स सम जा योगा वै ना छे यो न थान
 सै ४५ गये संग सा भू निले बि ने र
 गरंगे सब राना उ ठि प्रा डू दे ना कै प
 थ रा ये सै का ये जा बि छो नां ती नि
 छा तिन कै उ प रि ले ना च्य गा ये
 प्रा ये प्रे म ग ये र ना छे प्रा ये श्र ये सै
 राजा नु ष न थो से त दु ष न को गारी
 हेत संत न रि प्र क ले त अ र म थि ल्य
 ये सै न प्र बो से न ट करी दे स बा ल
 नां ति परा पा ये सु थि न ई दि ना ती
 सरै ज गा ये सै ४५ उ ठे जब मा पे ने
 ज ना ये सब बात क ली स हान हा ज

अतिहीअनूपयश्च विकविकैसैकसै
के धरहेलधिमान्नीये कसालंबध
नूनरेसागूनगागरिकेनागररसि
सायेनिसदिनआनीये रहेआसना
तनजूनदगातपाव^{मराठ}नपेआवनदि
सतीनदूधलेकेपाइये सावरोकि
सोरप्रापपूछै किहूआरहे कहेअ
रिनाईपितारीति जुआरहेगये
ग्रानबुझिअररहेपेनपायेकहच
हृदिसहेरिहेरिनेनजरिडारीये
बकेजोआवेपि रिजाननहापावेस
दलालपागनावेनिसदिननुरथ
रीये ॥ ५ ॥ कहीबालारूपबेनीनि
रधिसरूपनेनजानीआसनातन
जुकाबिअनूसारीहोराधासरती
रडुमडारिगोहूलेफुलेदेषतल्प
लपानगनिमतिवारीये आयेयो
अनूजपासिफिरेआसपासिदेवि
नयेअति आसगहेपावउर
रीये चिरतअपारउनेनाईहित

मंनसा दुःखा ॥ जब फैलि गई चरित्त ॥
 तये सिध बर हो जाये कौ ॥ बडा हासना ॥
 जहां तमानों सिध स्यात प्राये ॥
 बबिब आये ॥ गुनी जन बुठे गाये ॥
 प्राये ये कनटा गुन रूप चन जटी ॥
 वै जाँतान कटी चर पटा सी लजाई ॥
 दाये घट नूषन ले नूषन मिरत कस ॥
 चहु दिखसु रिपु बदीयो प्रकलाय ॥
 कै ॥ ४ ॥ चरंगी राय नावना की सिधय ॥
 कराना सुता नयो दुष नारीने क ॥
 लरुन पीजीये ॥ कहु कै पढाई वासे ॥
 चाहसे ईधन लीजे नेरौ प्रान्त रुप मेरे ॥
 ये बिनती को काजीये ॥ जिते गुन ॥
 नदीये अनगंन दास पा ॥ ये न ॥
 कस्यो प्राप देत स्यान ली जीये ॥
 ल्याये ये कडो लने बरे राये रंगी ॥
 जको सुंदर सिगार कला बावत ॥
 इहो काये नरत नारी जो बिन ॥
 तो वारी ॥ प्राये चरिगं क चरि ॥

हैगाईये। सुषदैचरत्र सबरसिकबि
चत्रते जानत प्रसिधिकाहाकहाके
सुनाईये। ३६०। आंग्रहै त्यागरागक
दौ प्रिया प्रा ति मसो बि प्रवउचाग
आग्यामईरिजाबीये। तेरीउनेसु
ता। ब्याहदेहोलेवेनावमेरो। इनके
जीबंसस्यो प्रसंसजगमानाये। ता
हाद्वारसेवाविसतारनिज नकनक
प्रगतिनकी गतिसे प्रथिपहचो
नीये। बानिबि। प्रवातग्रगयो सुषल
दो। सबैसे जीतये रुमनमें नशनी
ये। ५१। राधिकाबल नलात्प्रग्या
सेवसातदसेवामें प्रकासप्रौबि
नासकुंजधामको। सोहीबिसतार
उषरासिद्धगरूपपीयोदीयोरस्यक
नेजिनलीयोपधिबामको निसदि
गागानरसमधुरीको। पानउरग्रतर
गहानयेक कामेस्योमको गुनसो
नूपकहाकेसैकेसरूपकहैलै

रिक्के बिडास्योपस्थो बिनुषकेव
सिद्धात्सांचाले कूटारिहो प्राये
हरिरामजपे सबसाजतारिहोति
प्रातिकरिबोलेचलौं प्राडो प्रायो
चाईये प्राये बडे प्राये जल जल
मै नलाघो नरप तै समजायो जा
स्योफेरि नू दिवाइहे ॥ ५ ॥ मूल ॥
कमलाकर नट जगत नै तलु बाद
रोपी धुजा ॥ पंकित कला प्रन प्र
दिक प्रादर दे ॥ मुहुर ज ॥ सं प्र
दाये सिरधुत्र दुली लबो ना ध्या
रजा ॥ जिते करु कि प्रो तार सबे प
न करि जोगे परि पाटी धुज बि
सदस ना गो ति ब धो नो ॥ सर लि
मरत समत पुरा नै धन मुडा ध्या
नुजा ॥ कमलाकर नट जगत के
बाद रे पी धजा ॥ ८ ॥ धुज नु मि न
का नद सार चि प चि हरिये के का

रिक्तं विडास्योपस्थो विन्नुपकेव
 सिद्धालसाचालेऽवैरुद्राये
 सुदिशंनजपेसजस्रान्तारि शति
 प्रातिकरिबोलेचलोऽप्रागैऽप्रायो
 चाइयेकायेबडेऽप्रायेजलमनल
 केनलापोनरपतेसमजायोमा
 स्योफेरिचूद्विवाइदेऽप्रा॥मूल॥
 कमलाकरनटजगतनेततुबाद
 रोपाच्युजा॥पंकितकलाप्रबप्रा
 इकः॥प्रादरदेऽप्रादरज॥सं प्र
 दायेलिरध्वत्रहुतीनलोमाध्याच
 रजः॥द्वितेकसकिधोतारसबेपूर
 नकरिजानेऽपरिपाटीच्युजबिजे
 सदसन्नागोतिबधोनेऽसुरसिद्ध
 मरतसंनतपुरंनल्लसुडाध्यादी
 नुजा॥कमलाकरनटजगतनेततु

पद्मच्छेदिदरेधनमननामै
शिवैचहवारतः कलदाससाधुसे
माकीडेकने पात्रतानकरोनीके
करिवो लोकरुको पिजेरते तबस
मनायोसंतगोरव हापोयेहसबको
उज्ज्वले सिवायेविले साठो निस
नोरते चरितप्रपार नाव नस्यके
नवागपार कापोयेवे रागसारक
हे कौनछोवते मू बुदावनक
नाधुरीयनजिलि। ग्रापो इनकाये
सबसुनाध्याखन नटगोपाल
गर शीषीकेस नगवाल विपुलव
हलरस साग्र पात्रे स्वरीजगं
लाकनप्रकानूनिमधुजीरंग
कम्बदासपडालु नेगृधिव
हरि गंगबंडी डगलवकिसोर
नगन्तीनीविहववनसायोः
हलवनकीनाधुरीयनसील्य
हनकायो १५४ टी श्री वा

व्यासिस्वहाइशायालदिना

कुमानोकोउलालकोसुसैनलनलन
किंकरिचैरसोइसोलेप्रसादपायो
^{महात्मनी} प्रायेत्यदिनलुसो
जताइसोकिरिजिनकेसीलसोनेतोइ
ठसायेसरोठरोजिनचालबहाग्रा
वेनरिप्रसोइसुसुनगंनलेतका
नसुनिलन्यासविप्रजिनकुलात
तमूरक्यासाग्राइसोबकेसायधार
ठकेनसरीरसुधिबुदिजेनप्रांवे
प्रेसीबातलेदिघाइसोप्रागुसांइ
रणपुरपाछेप्रायेदेधेप्रांकेनेक
गन्तयेसासलागियोनवपरईसो
प्राग्यंअंचलागीप्रेसांतनचीन
नयोयेलप्रेमरीलिकापेजातगाइ
पधंप्रागेविदचंदप्रायेनिसकंर
नदीयोदयोसबनेदकहैजासोप
चानामेअरहोमैधरिकसांठिपे
सिनोरसांजसांचेदूधधारग
जायेदेधजानीयो

नावमात्रिस्तित्ताजाये कस्तान्
प्रधानकरु राजनोगरीति न्नांति
प्रबले विराजमाना देषिदे धिजाजी
धः २५ श्री कस्तु हा संपडति कोठीका
श्री गो विदचंद्ररूपरासिरसरासि
दासकस्तुहासपंकितयेदूसरेयोजा
निलै सेवाग्रनरागग्रंगप्रतिप
ग्यरहीमतिजोपैतौपैयेरुमानिलै
प्रतिहरिदासनिसे विबधिपरसाह
देतहायेलायलेतदेषिपधतिप्रमानि
ले सरुजहाकीरतिसे प्रतीतिसो
नात्पकरिहरेबाहावोरमनग्रननब
येग्रानिलै २५ श्री नृग्र गुसाई
टीका गुसाईनृग्रनबृहावनदिव
स्कीयोलीयोसुपबेदिकुंजगोवि
ग्रनपसे बडेई विरकतग्रनूरक
पनाधूरिमेंताहाकोसवादलेत
नकनपसे मानसीविचार
रसो निहरिहगसेम नबृति

रघुगेजगेजगमोहिमातेमानमनु
 चाराये सधोचरसाप्रधानहिरदै
 ॥ श्रीकालः ॥ श्रीहरिवंसगुसाईचरन
 कीरतिस्कृतिकेनुजांनिसैः ॥ श्री
 चरणप्रधानहिरदैप्रतिसुदिहनु
 पासो ॥ कुंजकेल्यदंपतितरुकाकाक
 तषवासी ॥ सरखसुनहाप्रसादप्रसि
 क्तकेप्रधिकारी ॥ बिधिनिषेद्
 नहादासअनन्यनुतकटवृत्तधारी
 ॥ व्याससुवनपंचप्रनुसेरसोहा
 लिपरुचानिसैः ॥ श्रीहरिवंसगुसा
 ईचरनकीरतिस्कृतिकेनुजांनि
 ईश्वरीका^{हितसुयी} ॥ सुखसुखाईकुकीरति
 जकीरतिकेनुलाघनमैयेकजानै
 ध्याप्रधानमानेपांचैकसुधाईये
 निपटबिकटनावहोतनसुनाव
 सोनुनहीकाकपाइधनेककैयोहर
 ये ॥ बिधिगैनषेदयेदिडारिपान
 रेहायेजीयेनीजदासनिसदिनव

पचावमाजिमतित्तोजीये कसाले
 प्रधानकरु राग नोगरी तिनोति
 प्रबलो बिराजमाना देषि देषि जी जी
 धः २५ श्री कस्तुरा संपडति कीवी का
 श्री गो बिदचंद्ररूपरासिरसरासि
 दासकस्तुरासंपकितयेदूसरेयोजा
 निले सेवाग्रनूरगग्रंगप्रतिपा
 ग्यरहीमतिजोपैतौपेयेरुमानिले
 प्रातिहरिदासनिसेंबिबधिपरसाह
 देतहायेलायेलेतदेषिपधतिप्रमानि
 ले सरुजहीकोरतिसें प्रातीतसे
 नात्पकरिदुरेबाहावोरमनग्रननब
 येअनिले २५ श्री नृगु गुसाई
 टीकाः गुसाईनृगुनबृहावनदिस
 सकायेलायेसुधबैदिकुंडगोबि
 ग्रनूपसे बडेई बिरकतग्रनूरक
 पनाअरमिताहाकोसबादलेत
 नकतूपसे मानसीबिचार
 रसोनिहारिसगहन नबृति

मनमोहजसञ्जोरनलोम को ५५२॥
मूल ॥ आसधारुहेतकररसिकछ
परिहासकी ॥ जुगलतामसोनेन ॥
जपतनितिकुजिबिहारी ॥ अबलोकत
रुकेलिसघासुषकेप्रधिकारी ॥ जा
नकलागंधर्वस्यामस्यामाकेतोषे ॥
उत्तमज्ञोगलगायेमोरमरकटति
पोषे ॥ नरपतिद्वारठकेरुहेइसन
साजालकी ॥ आसधारुहेतकरर
सकथापरिहासकी ॥ ५१ टीका
रुदासजीकी ॥ स्वामीपरिहासरस
सिकेबघानके ॥ रसिकताप्राप
इजापनप्रियाइये ॥ ल्यायोकेउचो
वावाकेप्रतिमननोवावाभेडास्
लेपुलानपरुषोवालायेप्रियाइये ॥
निकेसुजाबकहा ॥ लेदिषावाला
लप्यारेनेसुकनुधारिपटसुगंध
काइये ॥ पारसघघानकरिजलडर
येदायोकापोतबसिषत्रैसैनाने

नादोरदुष्टसिरमौरजसंततग्राप
ग्रापेन मिलेन, सहीसिधग्रा
येकेसुजाहवातजावोउठिप्रातये
ननीपलेसोगाये समतापडावेका
नकसिसनकावे सबजनमेनग्रा
वे. ज्ञानीनेसुदुखायेने च्यंताजि
नकरोसायेनरोनिसचिंतताईने
पस्रप्यिग्राई दानाईनकहाधायने
एव सुनिग्रायेगुसुठरकसील्यावे
केरेछरदेयोकरानांतितवालग्रापेस
सुबाईने कलोग्रांनिग्राचजावोच
लोननग्रांनदे घेंचलेसु प्रमानि
ग्रायोसायीअनछाईने - निकैक
नारनानिगये ननितारिसके ग्रापु
रससारबांनीबोलेजेसीगाईने बो
लेनदीकानकसि छाडोगानमलत
नसुनिगयोसायेनाइहेरसोनवा
ईने - ३ असेहेगनीरदिधितेगयो
ग्रायीचकला क्रापकिरिअनकीयो

जंजु... लोपे वाग्ये...
सर्व...
शै...
द्वि...
त न...
ति...
तीन...
दं...
अ...
वास...
प्र...
क...
नि...
नि...
अ...
जा...
वं...
त...
सै...

पैनप्रवितसोप्रोनेकोनु ६ धारहे
साधुयेकगयोगफलयेनेषदास
ननमनने प्रसादनेमयावेनलीनी
रहे: बालेदिनतीनधारिजल लै
पीयावेध्याय: गंगाजूनिसारिकधि
तडोयोसुसदीरहे: २६ ॥ चव
प्रवासनित्यतारहितप्रवलंबनये
जननये: सोमसावांग्राधारपी
रुतिनांमत्रलेचन: ग्रासाधार
सो राजनीरसदनादुषमोचनकार
स्वरप्रबधत: कस्रकिंकरकदल
यासोचनदाराकनामदुगरवतध
दीया: पदमपदारथरोमदासबिन
लानंद प्रमरतश्रीये चव प्रवासनि
सतारहितप्रवलंबनयेजननये:
२६ टी श्री इ जू: सदनाव
साईताकीनीकाकसिग्राई: जेसेवा
रेवांनीसोनेकाकसोदीकसिग्राई
हे: जावकौनबधकारै: अयेकुला

नारी की ॥ श्रीगोपालचन्द्रके लीये वै
रसालबसेल
नसरूपसे नानो नो गरागकरै प्र
तिप्रनुरागपगे जगे जगानाहि हि
तको लुकप्रनूपसे बंधाबनका
रीप्रगाधको सवादलीयो जायो
नपायो सातनये रसरूपसे गुन
साको लेत जीवप्रै गुनको सा
करुना निकेत कर मसेत न
प्रसे ६४ गीटा प्रै लि नै गवानकी
प्रै लि नै गवानरा नसे वासाब
नमना बंधाबन प्रायक प्रै रै
तिनइसे दे धरासने डलनै
तरसरा सिबाढी धि बिप्यास
सुधिबुधिगइसे नानथरि
प्रै बिहारीसे वाप्यारी ८
येना जिगुरु सुनाबातनइसे
निपथारे प्राय जाय प्रगथी
सइसे नैरे तुम सुधपायोको

धैर्यप्रवृत्तसोऽग्रोनेकोनुधुधारसे
साधुयेकगयोगसुलयोनेषदा
तनमनकेप्रसादनेमपीवेनही
रहे। बातेदिनतीनधारिजल
पीयावेधारः गंगाजूनिसारिमि
तज्योयोसुसरीरहे। च३ जल ॥ न
प्रवासनिसतारि। तः। विदत।
जननयेः सोऽसीवांग्राधारच
रहरिनामंत्रलोचनः। आसाधार
दो राजनीरसदना धमोचनक
स्वरप्रबधूतः कस्रिं करकद
या सोचूनुदारामनामदुगरवृत
रीयाः पदमपदारथरोमेदासबि
लानंदं जलददधे। यि। नवप्रवास
सतारहितग्रवलं। जये। नमप
रुद्राटीका आसदनाजूकः ॥ सदना
साईताकीनीकाकसिआई जेसे
रेबानी। जलदद। सादोकसिआ
हेः। ॥ वकोनबधुकरैः अयेकु

शे

५५५

रुरेगजासि

श्वारसहति

रनोगश्रारत

नश्राष्ट्रदाब

नीने॥मजन

धैबहुदने॥

ररनजनचू

रुरारिबुदार

सादीयाटीका

रकमुदरिसा

॥: पावैकोलपा

रहै: संतधरन

रहै: ताहाकोप

नाम पूजाकरिनुदधारीयै: श्रावैहरि

दासतिनदेतसुबदासिजीनयेकब

प्रकाससकैयकैसाबिधारीयै: कने

Handwritten text in a central column, consisting of approximately 15 lines of characters in a specific script.

Handwritten text in a left column, consisting of approximately 15 lines of characters in a specific script.

॥: ॥

मरतकसाटग्रह... हाँ: ताहाकोप
नाम पूजाकरिनुदधारीयै: श्रावैहरि
दासतिनदेतसुबदासिजीनयेकब
प्रकाससकैयकैसाबिधारीयै: कने

धैर्य प्राप्त होने को नुदु धार है।
 साधु एव प्राप्ताया नदये। तेष दास
 तन मन नै प्रसाद नै मया वै न हीन
 रं है। बाले दिन तीन धारि जल लै
 प्राया वै धारः। गंगा जू निलारि मधि
 त ज्यो यो सु सरी रं है। च नू जल ॥ नव
 प्रवाल नि सतार हित प्रवलंब नये
 जन नयेः सो जा सी वां प्रा धार धी
 ररि नां मंत्र लोचनः। प्रा सा धार
 द्यौ राज नार स दना धन च न का
 स्वर प्रब धृतः क्रुन्न किं कर कट ल
 या सो नू नु दाराम नाम दु गार वृ त ध
 रीयाः पद म पदार रामे दा स बि म
 लानंद प्र म र त श्री ये। नव प्रवाल नि
 सतार हित प्रवलंब नये जन नयेः॥
 सदा टीका श्री स दना ज्योः॥ स दना क
 साई ता की नी का व सि प्राई जै से बा
 रे बांनी सो नः तद सो टी क सि प्राई
 हैः जा व को न ब ध करैः अये कु ला

शक्तिरुदीसो लेवोमोकोसंगतारोक्
दोतौनहोयेरंग। बुझीप्रैरकाटीग्रीव
पेनडरीहै। कलाप्रबपागेमोसोना
तौकोनमोसोतोसूसोरकरिउठीरैन
मास्योनीरकराहै। टसुहाकिसपक
रिपूछैकहैससिनास्योनेडास्योसो
चनारी। कलासाथकाटिउरीये। क
टै। कस्योने। कस्योने। कस्योने। कस्योने।
जानीकधैचकमेरीयेरुउरबारीये।
उधानाथइहा। गैपालकापडाइले
नसदनासो। नककसाचैनबिचारी
है। चहेप्रयेपनूपासिस्वपनसो
मिद्योत्रासबोलेहैकसोटीरूपेनक
बिसतारीहै। ५०॥ गुण श्रीगुसोईका
सीस्वरकाटीका ॥ गुसाईकासीस्वर
ग्रागेप्रबधूतर करिप्रीतिनाला
चलरहेलागेपानाकोहै। कस्योने। कस्योने।
सचैतनिजकीग्राग्यापाये। प्रायेब
दावनदेविनायो। नयो। कोहै। से।
वाप्रथिकारपाये। रीसिकगोबिदचै।

हायोत्तक्रिनावसे । कांननेसुनाये
नांननांनले गुपालदासनालयस
राईगरे प्रगदौ प्रनावसे । पुष्टसि
मौस्तूपलधिनुसीठोरुश्राये । प्राव
लिपदायोहायेनयोप्रतिचावसे । न
पठप्रध्यानगावकितेकनवीनदीये
लीयेकरजोरिमैगोफलयोना । उपद
वसे । पक्षनयोगाडंनक्रिराजसाधु
सेवासाजसंतनसमाजदेधिकरतप
नांनहो । प्राणिडोरेगोतिंबनजारनफ
वारैल्लोश्रायेईपुकारनसवजसागुर
प्राभहो । प्रावतसहोधिंमधिपावतप्र
सादसीतबोलेश्रापहाथीसोधिंतिदव
सकामहो । खोदिइईनीतिलवचनगुतन
सौप्रातिबडीसंगहाल्लगुरुफिरलि
गयोनांनसुशटपदहल्लपोचसति
संगजितजालीतिलवोउडुदिप्राचि
ल्यावेसाधेबोहोचोरेहोचहोदिमप
रीसईसोवाहासुनिचिदिनई । भाहाय

शमतिहरीसौ लेवोमोकौसंगतारोक्
दोतौनलेधेरंग। बुझीअरकाटीग्रीव
पेनडरीसै। कसाप्रबपाउमोसौना
तौकौनमोसोतोसूसोरकरिउठीरन
मास्योत्तीरकरासै। टसुसाकिमपक
रिपूछेकहैससिमास्योनेडास्योसो
चनारी। कसासाधकाटिउरीये। क
दोकरचलेसरिरंगनामि। मलेमान
जानीकधचकमेरायेसुउरबारीये
जगंनार्थदेवप्रागेपालकापडाइले
नसदनासो। नक्तकसाचनबिचारी
सै। चहेअयेएए। पासिस्वपनसो
मियोत्रासबोलेदैकसोईरूपेनक्त
बिइतापादे। ॥ १०॥ गु। श्रीगुसोईका
सीस्वरकाटीका ॥ गुसाईकासीस्वर
प्रागेप्रबधृतपर करिप्रातिनीला
चलरहेलागेनाकोसै। कसाप्रचक्र
सचैतनिजकीप्राग्यापाये। प्रायेव
दावनदेधिनायो। नयोकोसै। से
वाप्रधिकारपाये। रसिकगोबिदच

चारद्वैतः चैत्रेमासस्याप्येप्रतिहरिसो
लग्नाइसैः गंडकाकोसुतबीजजाने
तासुतोत्पाकरेः नरेइगसाधुग्रा
निपुजेपेननायेहोक्ताः निसस
नेमैवासाठार देवोमोकोसुनो गुन
गानराजोहायेकोसचाइसोलेके
प्रायोसाधुमेतोबडेप्रपराधका
योकायेप्रबसेकसेवाकरायेन
नायेहैधयेतो प्रचुराकेतोयेजोहा
घाहासाहाकरो गतेचक्रिप्रायोसु
निरुतिबिसराइसोवेहाहरिभु
घारिडा रिदायोक्ताचारचलेजग
नाथदेवचासुतयजाइसैः नि
कसंगसगजातवैसुगातसुबतव
प्रापदूरिदूरिरहेजा निपाइसैः स्या
प्रायोमगजावनि
गयो नयो रूपदे
परासोवैडोयाहाठारकरो
लोरिकस्योः रस्योः निर

अब पदों में नाये तो रिता के टक
कीये छोटोये कजं नूमधि गयो सो
बिलाये बाजि उठौ गजं नाये ३२
सिधका तो जोग्यता ही नी के मन ग्रा
ई प्र ३३ रुका प्रबल प्रपै नै क धरि
को नई सुनो या की बात मन बा
त वन गति कही सही ले दिघाई प्रो
रकथा प्र तिरस मई वै तो प्र नू पा
ये चूके प्रथम प्र सिध पाये प्रो प्रो
फल दे धि हरि जोग गु प्र जी नई ई ध्या
सो ५ लस्था म-न कि ब सि क री ३
ह प्र तो प्र प्र प्र प्र सब वि धा न र का ग
ई ३३ री म री का बा का की ॥ रा का प
ति बा का ॥ या बा ३३ र प कु प म उ न के
न चा है नै कुरा ति क धु न्पारा है लू क
री नि धी नि करि ॥ वि धा प्र ब न क र
ध रै हरि रूप हा ये ता ही सू जी वारी
हो बी न ती कर त ना म ६ क स न दे
व जू सो ॥ का जे इ ध री क ही न

घारहरे जेचे मास त्यापे प्रीति
लगाई हे गंडकाको सुत बीजजा
तासु तो त्या करे नरे इगसा
निपुजे येन नाये हो कसी
नेमै बासाठार देवो माको सुने गुन
गानरा गोसाये कासचाई हो
प्रायोसाथू मेतौ बडे अपरा
यो काये प्रबसेक सेवा करी येन
नाये हे धये तो प्रजु रीके तो ये जो सी
घासासासा करे गने चरि प्रायो सु
नि र्मति बि सनाई हो
घारिडा

नाथ देव चा रुच पजाई हो नि
कसंगसंग जातवै सुगात सुख तब
आपूरि दूरि रहे जा नि पाई हो स च
प्रायो मग गां व नि ध्याले नये कडां
गयो नयो रूप दे
परासावै डोया हा ठोर करी
होरिक सो र लो

परायण न चक्रिये कामधै निकल
 जुगके लक्ष्मण लफर जलदु संत
 जोध्रपुरत्यागी इह कुतल दोस बि
 मांती धेन बैरागी चावन बिरही
 रतन फरहरिके सलटेरा हरिदास
 प्रजो ध्या चक्रपांनि योसरजूतर
 केरा तिलोक प्रधर दि बिजलनीउ
 द्वव बन चरबं सके प्रप्ररय परायण
 नगतये कामधै निकल जुगके
 टीको लई चक्रका लकूनो मचक्रज
 यनीक सेबे मुषदे सके स न सत
 व गंते पाप पाप देवीको प्रसन
 करे मानस कौमारि धरे लै गये प्र
 रित सा मारिबे कौला गे है प्रतमा कौ
 फारि कराल रूप धारि प्री लैके
 तरवारि न इह ते न जे ना गे है प्र
 गे न रत कलै इ ग न रे सा धू पाव धार
 प्रै से र ध वारे जो निजन प्र नै रा गे है
 स पा संत न ह की वी का स सा धू
 से बा प्र नू रा ग रे ग पा ध र नि म

चारद्वैतः चैत्रमासस्याप्ये प्रीतिरुत्थिते
लगाई है गंडकाको सुतबीनजाने
तासूतो लोकरे नरे इगसाथ्युग्ना
निपूजेपेन नाये है कही निस्यस
नेमैवासाठैर देवो मोको सुनौ गुन
गानरागोहाये को सचाई है लोके
प्रायोसाथ्युमेतौ बडे अपराधक
यो काये प्रबसेक सेवाकरीयेन
नाये है बधे तो प्रजु रोगे तोये जोही
चाहो सोहा करौ गदौ नरि प्रायो सु
निरमति बिसरई है बौलाह निजु
धारिडा रिदोयो कूला चान चले जग
नाथ देव चाहु जप जाई है मिल्योये
कसंग संगता त्वै सुगत सब तव
आपदूरिदूरि रहे जा निपाई है सचा
प्रायो मगगां व निष्कालेन ये कडो
गयो नयो रूप देखि कोई बापारी
परासो बंदो या साठैर करौ नो जनन
होरिक सो रसो निस सोयो प्राये

घातलक्षुधारविंदजीवन्यजोजीकोसो
निलिलालडवेतावसाग्रबुदुविको
नपारावारपावेसुनिलगैजगपाके
हो॥३॥ सुलक्षकरुणाधायान्नकूप
लयेकलजुगपादपरचेजतीरंम
रावलस्यांमधोजीसुलसीहादना
पदमसनोरथरांकादोगूजपजीहा
जाडांचाचागुरुसुखाईचाइनिपा
पुरखोलनसोसांचेचतुरकीताकल
कोजिलिनेदोप्रायांमतिसुंदरघी
थागंमससादद्याननाहिललच
कसुलाधायान्नकूपयेकानेक
गयाइपूवेः॥३॥ मयोनीजकी॥
षेजीनकगुरुसुदितावनाप्रथालन
हाइइसुतसनेवाचिचियासांमो
नीयापावेपुनइइककजांनइनेनी
नोयेइपायेपेलवलीवडीचिना
नइना॥३॥ १५५५ ॥ ५५५५ ॥
करपाये

ध्या ०१०० बड़ानाथनुडीसाहा
र तदेवपासव हरिचजनपर
केसोपुनिरिनाथनीमुषेतगे
बिंदुस्तचारी बालकस्तवउ
नरुष प्रथु तप्रपयावरत धारी
पंडागोपीनाथमुकदगजपति
महाजसगुननिधि जसगोपाल
दयेनह न कौसरवसा श्रांगस
दासा निधिरहे कृतपुनिपुंजचल
नागनर बड़ानाथनुडीसैद्वारिकसे
वक सब हरिचजनप ॥०१॥ श्रीप्रता
परुड्ड गजप्रतिजुकीदीका ॥ प्राप्रता
परुड्ड गजपतिकेबषानकायोःनी
योचक्रिनावक्रु ॥ ह पेनदेषीये
नायोःरुपास ॥ टिलेसिन्नासदी
योहियोहलसायो ॥ प्रहोक्प्रहमोक
पेपीये ॥ जगुनाथरथश्रागे निरत
तैरुतत पेना नचलनरपपाप्र
परुयोनायदेपीये ॥ ध्यातासेलगा

चाहल सुधार बिंद जीव न्य जो जी को है
निहिलाल ड वि ना व सा ग बु दु वि है
न पाश वार पा वै सु निल गै जग फा व
है ॥ ३५ ॥ सु ल क रु ना धा या न क प
ल ये क ल जु ग पा द प रे च ज ती र कि
र व ल स्या म धो जी र त सी हा इ ह ल
प द न न नो र थ री का दौ गू ज प जी स
जा ड चा चा गुरु स व र्ण चो द ना पा
पु र षो त न सो सा च च तुर की ता न न
कौ जि हि मे दौ प्रा पा म ति सु द र थ
धा ग श्र म सं सार चा ल ना हि न न च
क रु ना धा या न कि फ ल ये क लि
ग पा द प चै ॥ ३५ ॥ टी का धो जी जू की ॥
धो जी जू के गुरु रु रि ना व ना प्र वी न
हा हे रु प्र त स मे बा धि वं रा सो प्र
नी ये पा वै प्र नू ज ब त ब बा जि नु डे ज
नौ ये हा पा ये ये न बा जी ब डी चि ता
न प्र ना नी ये त न त्पा ग्य बे र न सी रु ते
फे र पा ये प्रा ये वा हा दौ र पो हि दे ध्ये

षेचिग्पलादेषिमंडमैस्वस्यामसै
मोनिप्रपराचसाधूधकादेनिका
रेदीयोक्तसोप्रगाधकेसैजातैवै
मामसै। भवैदौकंडतीरजाये। निक
पैगोप्राये। बनये। तदगाधेनाके
कलउगताइये। त्वात्तलयेसोच
योकेसैतस्या। तानोइराहोम
रमो। निनोगधस्योपैनधायै। क
तीश्रीगुसांइजूकोकोतिलोइनका
तायेकधूचाहाजो। इवागोतोपै
। कौजाभनाइये। वाकोहतोहाव
तोपैसुतोनावजान्योनहीकही
मोसौबातसोकुमारै। विग्पल्याइये
६५। बनबनधे। नबिन। नतनम।
तेनैकननतजुगारीमूनगनत
रगावैगो। सुधिबुधिसैराइने
बडीचिंतामोहि। ल्याइयेजुग्बेग
। डिक्हैनेकचैनदिगप्रवैगो।
नोगलेलगा। मैतौतनकनपाये

रामलिखराहो चलोलेदिषानु लवते
रेनननांनु रलेवनधि धिदोउ ये लीन
गमांक्रिडावाहो ॥ ५ ॥ अथायेहो बुधायाप
तिपायेबधूआगेस्वामी ॥ ३ ॥ अकली
मगमांक्रिसंपतिहाजीसारीहो ॥ ३ ॥ जाल
योजूवताजाति ॥ कलकलमननचल्यज
तयातेवेग्यसंनरसो अरिवापेडा
है पृथी प्रजकलाकापि ॥ नु सिने लि
हरितुमकलानु हाधाललोसे अनल
रीयो ॥ कहेमो सौरकां प्रयेबो काप्र
देवातुला ॥ सुनि पुनूबोलेबातसाच
हेसमारीयेसो ॥ ५ ॥ नानदवसावेरिहे
कलाअरिवातजेये दाहातेबलो
रोसकेरीये ॥ प्रायेहोउली निजेकूपि
यकठेरीदीरी हेहंम्यली पावेतले
चनसाधेरिये ॥ तबलो प्रभगट ल्या
ल्यायेयो ल्यवाया ॥ ३ ॥ र्दे धिनुडफे
कलाअले पुनूफेरीये ॥ ३ ॥ चिनतीकर
रुजेरिअंगपटयरो ॥ ३ ॥ अयस्वो

देवीदेवगतनबिसरामो ॥ जुगती
वीकाकमलादेवरीरांरुचिचैरावो
घेनगतकलजुगजुवतीजननक
राजनेमांसबजावेजगतभीडी
कागणेसदेशकी ॥ मधुकरमास
नूपनयोदेसज्योडुवे कौरानीसी
गनेसद गेकांनानीयोसै ॥ प्र
वैवसोसंतरे ॥ वाक्यतद्वंतनाति
रहोयेकसाध ॥ ज्ञानप्रोत्सुधलाध
होनीपदप्रकेलादेविबोत्योथन
येलाकासां ॥ होयेतोबतांडुसबतुम
॥ जानिहीयोसै ॥ मारीजोगधुरील
धिलेहूबेग्यनाग्यगगयो ॥ नयो
सोचजानैराजाबंदीयोसै ॥ ४१ ॥ बा
धिनीकांनतियोहिगईकसीका
हसौंनग्रायोदिगराजानतिग्रावो
तीयाधरमसै ॥ बातेदिनतीनजान
वेदनिबनीनकधुक्सीयेपुर्वी
मोसोघोदिसबसरमसै ॥ टारीबा

निष्ठाको बल गांव गांव जाये कौं प्र
ये छ वसंत पूछे तायासूं यो संत कला
संत चले जां किक सो मने प्रलसाये
कौं बोली सुन्य जां बो चले मग सुष
दोनी ॥ मिले कसो कित हने सो बघा
ना उर प्राये कौं बोली वैसा चबासी
प्रांच ही को ध्यान मे रें प्रा नि गूं हफे
रिकाये मे मगन जिजाये कौं ॥ १ ॥ सीरी
॥ श्री तिलोक दास सुनार ननु कौटीय
पूरब मे ओ कसो तिलोक सो सुनान ज
ति पायो ननु सारसा धू से वा निरधा
राये ॥ नूप के बिवाल सुता जो राये क
ज रु रिके गदिबे को दीया क लो न कि
के सवाराये ॥ प्रावल प्रनंत स्वत प्रो
सरन पावे कि हं र हं दिन दोय नोय
रो सयो स म्भाराये ॥ व्यावोरिप करि
त्याये छो कि ये म क र क लो नै कर हं
का म्भ्रावे ना तो का रि डाराये ॥ १० ॥
आयो व लो

वायं बसतराषी यो हूरा प्रबात प्राय
५५५५ यो कसारी जिपददी यो सै ७
उकूल श्री मधुष पूजा सतकी आपु
नतै अचिक कसी है ब न ५ ५ ५ ५
सगावरी जटी घाने नाउ । धूदा बनी
पारा म म रतै ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
मौठी जगदी सल ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
लिचारी सुन पय मै न ग वाना सव
सल घां न गुपाल उचारी । जे ब
नेरि ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
सी । श्री मधुष पूजा सतकी आपु तै अ
चिक कसी ॥ १० ॥ दी क गोपाल क ॥ ॥
जे बने रिबास सो गोपाल नी क ई
ता के का यो निरबास बात मो के
जा प्यारी है । न यो है बिरकत के न
लमों प्रसंग सूनौ । प्राये यों पर
लेन । त्रये बिचारी है । प्राये पस्यो
प्राये प्राये प्यारी निज मंडमै । सुदी
न दे घौ म प्रपन के सै दारी घे । चल
जम्बे न दारी तायै रहगी किनारै

मनिचतरदाससोमनामसोमना
पबिकौबिसाघालेनध्यानांनस
दाभूकंदगनेसत्रीबिक्रमरछूजग
जांनो॥ बालनीकबुध्यासजगन
जोरुबादलप्राचारजुहिरिचूलाल
हरिदासनासबलराधवृशारजाया
धेनुध्यातरजुध्वलकपूरघाटन
बुरिकायोप्रकास॥ अशिलाषग्रधि
कपूरणकरनयेच्यतामनिचैचर
दास॥ स्थानकृपालुजिनगतियेय
नायतपूरधारदेवानंदनरहरियान
दसकुदमहापतिसंतरामलबौदी
धेनुशारगनंहिम्बुबादिप्राजुस
तजोरा॥ ध्यातमहारिकादासमाध्व
माकनरुपादानेइचलनररुसि
नगवानबालकनसरकेसोस
सैधुदासप्रयागलेकुंगगुपाल
नीजुसुतगसैचगतनीरा॥ नकि
पालगजिनगतियेधा॥ नायतसूर

सौं नैरौ सिर नौरहौं करै साथू से वाव
हू पाक डारि मौरा । सत जेवत प्रनंत
प्रवावै चौरहौं । प्रसे नै प्रका
लपस्यो । प्रवै चरि मां लजाल । सै
तिपाल करै । तका प्रौरहौं प्रनून
प्रवावै को यो मै जतन । कगा
का नरि गेहूं नै सिं प्रवै करौ गौरहौं
गेहूं को डारि मौरा । दिनै चै देवो
घो लि निकसै प्रतौ लपी सिरो ही लै
नाईये । दुख जि ताते देवो । मापक
बिलोयें लाजे । हाजे यो चप रिसंग छ
चिदै जि नाईये । प्रत्यगई प्रोषे नां
ताया सो । प्राग्यादई । नई मन ना
प्रजूह सिं प्रवावै । नौर नये गाकी
नै सिं प्राई वही रीति करी करी साथू
सेवाना नोचं । तिनरी ठाईये । १७ प्र
इकै नरीति वाकी प्रोति हू नं घानक
जे लाजे नुर धारि सार न किनीर धा
रहै । रहै डिग गावता सां स चापे कर
व नई टिगि यो नाई सो नुगाही को

प्रेमसाग्रबुधे ॥ नयोप्रतिमनना
दूषदेतये निनेधीये ॥ ३ ॥ कृत्य ॥
रिसुजसङ्गप्रचूरकरिजगलिनैये
विजनप्रतिसेये नुद्वारबिद्याप
बुद्धदासबहोरनचतुरबिलारी ॥
गोबिंदगंगारोनलालबृहानाया
मंगलकारी ॥ पाये दयालप्रसरोम
चक्रचरिषाट्के नंदसुवनकी
कवितके सोकोनाको आस
करनपूरनवरपति ॥ जाषमजन
दयालगुननहिनपारा रुरिसुजस
प्रचूरकरजगलिये किबजनप्रति
सेनुद्वारा ॥ श्रीगोबिंदसुवामीकी
टीका ॥ गोरधननांयसाधिबेलेस
दामेलेरंगप्रगसप्रनावलीयेगे
विदसंनामहै ॥ खंजीकरेदयालत
कीबातसूनिलीजेनाकेसुनतल
सातनेनरातिप्रनिदांसहोबिल
केनालसंगगयेनुठेदायलेकेब

हि यो ध्यान में प्रेम मोपै बिसता
रीये ॥ २० ॥ बेटा से कवारी ब्यास देत
नी ब्यास मन धन हरिसा धन के
के से के लगाईये लेके की जसि
काजे वा के काज कही जगनां ये देव
जनै ॥ लीजे मोपे दुब नरने कनही
आईये बिदापे न न ये चले दुग न रि
लये गये आगे नरप न क म गये
का प्रक कोपे बिदापो से सुपन न
जन सुठ करो अजुह का लिई ई लई
बन के ज ताईये हुक बोला ॥ २० ॥
धालके गे ॥ २० ॥ रिआये ता मे ले लया
पोक बेटा ब्यास का पोहे और सब
न न बुलाये के प प्राये दो ॥ २० ॥ ली
प ग दास सुधरा सिध लीया ॥ २० ॥
सै ही बसत दाम प्राह ॥ २० ॥ नि लम
तले ले संत नुगताये अति हरधि
प हीयो है चरित प्रपार क धूमते

रासबाकाज बेजाये तब मोहपौक
धूनावे गो। चले उ दिव्यायेनी
दिनीठिके मनाये ल्याये मंडकेषा
मित्यकसा गरे लावे गो। ७६। गये स
देवहारनौ मितहाक समूह्य आ
करा। बडी थूम आकवो डिन सोमा
रिको। येन ह निहारिनु ठिमार दर्वा
हासंजूको तुक प्रपार सधि नावर
संसारको। मातामग चौसठे रन
ई आई ताहा क हा बार लाई प्रोटपा
ई नुर धारको। आयो यो विचार प्रन
सार सदा चानका यो लोयो येन गा
ठक नूकत स नारिको। ७७। आबत स
नोग म्हा सुइ सुमं हरको र सो मग
बैठे क हा आगे जो हिदा जाये नयो
को। नार पार उ रिजा पुकार करी।
नरान प्रनाती जति लोवाये सुलीजी
प्राबो ल्यके सुनारि प्रसे क हा न न प्र
रीत ब धो लि के ब ताई प्रजू वात कान

सिवध्यां न तै न जात ब्यार परै का ह
धि द्वार सो न सु धि ले न से । ये ती ना
चारि नृष प्या सद ई टा रि यो । पु ग
परु प ध्यारि न यो सा ये से त । बो ले
र मो ग्य प्र जू सा गि मैन जा न त हो
मै जो ई प्यारो सो सा दे हो च्य त ये
हो । परु सो सो च चारी मेरी प्रान प
रानारी ता । एत त बि क से ने नि
ने ति । प्र भ दायो मै बू का सुर को बर
र न यो ता सा त्रै से न र के टि को टि य
ये वारि डारी ये । बाल क न सो ये ये
पां ल क से लो क न्य को । मन को बि
र क सा दी जे । न प्यारो हो । जो पे न
दे त मे रो बो ल्य ने । अ च्य त सो त । ये
नी ज से त त न प्राली न के थारे । ल्या
बृं द बि न । स न ड ल ज टि त न नि प्र
या प्र न ग न बि च्य लाल जू नी सारो ये
र प ही र नि ष च्य त रा स न ड ल न धि त
दो न र चि त प्र प्यार न र ति जा न त न

दोये चारिनर्षकै विचारपस्यो कस्ये
समाधानजीनग्रानौ जित् चरमस्ये
फिरस्यो आसिपासिचूं मिापरनतरा
संकरी चत्तिको प्रचावृष्टाडित्तायाप
तिसरनस्ये ॥ ७ ॥ रासूलासुरिके समत
जेनकते दासनिके दासनरबांसनबा
सुनबरी स्वजापूजे मलबी दावतजे ये
तद्वा रा रूपे अनचइनुदारावतग
नीरे प्रज्जेनजनारदन गोविंदजीत
दांमोड्सापिलेगदाई धरेरुमबादीत
मया नदभै मांअनंतगुहाले तुलसी
दास सुरिके समतले नगतले दासन
के दासः ॥ ० ॥ श्रीनरबांस एजु कीटी
काः ॥ दरुचये गावनां धनरबांसनसा
धूसेवी म्हाटलई नावजाकाबंदीषां
ने दीयोसै लौंडा आये दैन कथुषाये
को आदुदया प्रतिप्रकुलाये लैनुया
यं येरुकायोसै बीलीनाथाकस्ये
लेहीरुबिसनां मा पूछे सिधनां न
कसो पूछी नामलीयो

सिद्ध्यां न तै न जात व्याप्यै का ह
विद्वार सो न सुधि ले न है ॥ ये ती ना
चारि नृष्य्या स द ई टा रि यो ॥ पु ग र
प्र रूप द्वारि न यो हा ये से त है ॥ बो ले ब
न मां ग्य प्र जू ना गि मैन जा न त हो नु
मै जो ई प्यारै सो हा दे हो च्य त चेत
है ॥ प्र स्यो सो च नारी मेरी प्रान प्या
रानारी ता रूप फल त बंद क है ॥ ति
ने ति ॥ र भ दायो मै बृ का सुर को ब र ड
र न यो ता हा त्रै से न र के टिके टिया
ये वारि डारी ये ॥ बाल क न हो ये ये ह
प्राल क है लो क न्य को मन को बि च
र क सा द जे प्रान प्यारै ॥ जो पे न ह
हे त मे रौ बो ल्य बो प्र चेत हो त दायो
जी ज है त त न प्राली न के थारै ॥ ल्या ये
प्रंदा ब न र ॥ स मंड ल ज टि त मन प्री
प्र प्र न ग न बि च्य लाल क नी सारी ये
प्र सिर जि द्य न द र क ड ल न धित
हे उ र चित प्र पार न र ति जा न तानि

गसि चले स्वर्गि युगे नेकं हे ध्यायामे
रीये न १० ये कपे लमा चो दीयो दूस्
नेरे लकीयो हे बोधा कपोल ये ये ल
नाक लोप्य दीये सु निग्ना सु च रिग्ना
जाय ल प राये राये के से क सी जाय ये
तरा ति क ल्प न्मा रा हे न कि रि धि सु न्यो
मेरे ब डो प्र च न्मा रा हे न कि रि धि सु न्यो
न ई स्वि ध्या न्मा रा हे न कि रि धि सु न्यो
प्र प्र च न्मा रा हे न कि रि धि सु न्यो
राये क से ये ल
म स स ल स
र ध र धं ड कि
म नान बि स्त
रीः ज ग न्मा रा
या यो हे री दा
रा यो सु र
ल कु र्थ्य त
यो बि न्मा रा
की ॥ ल
ब धान का ये

तराजावत औ सेवा बिधि धारी
जेती द्विजजाति दूषनयो प्रति
तमानो बडे उत पात दोष न र
बिचारी है ते तौ रूप साग मैन
रम गन कला ॥ व स कै कला करि
है वीर गपर धारी है र चतार धर
रत साध्य प्राय पुरा है को उं क
धि दे ध रुम रिका स धारी है
जे वर है दे ध क ही जात ही नगा
नूष नर सी बि इत साह प्रागे
म डारी ये चरन प करि गपर जा
जो लिषा वी प्र हा क ही बार बार स
बान ती न डारी ये न प्रो ल व ना
ब्रजाय व ही री ति करी नर प्र
वारि मेर नाग क हा वारी ये ॥ १५ ॥ स
से रूप प्राग नि हे रा करि दे ई प्रागे
जे पद दे वी लिषि क ही बार बार है
जाना ब ल ता ए नू दाम है प ठाय
लिषि ता ए नू दाम है प ठाय सां वत

विचार हो तो लोचन दो को जुं... प्रोह
रको तो न्याय दू को ली ज्ञाये स नारि
लाहा संत नव पाव हो... जाल नव वि
ते नदा योग हं दे स न्या स न्य न... इ नि
ज नों सि संग सब सी र हा रों... ४१८
मा र वा रि दे स तें च ल यौ इ स्या धा ग की
ये... ली ये ज गं नो च दे वृ धा हा प न जा
इ ये... नो ल न र नार नो ल वा रि फे रि उ री
कै से करै त न ध्या री जे क स र न न नु र ग
इ ये... प लो यौ नि क ट ज ये पा ल का प ठ
ये व... क सै ला षा न क कौ न ले ग प दे व
ता इ ये... का रु क सै दी ये जा ये क र ग स ली
ये... ज ज च लो प्र न्त प लि ये स थि त ली
बु नार ये... कै स च है धा ल की के प ल य
त पा ल का जे द जे लं... कौ दं न का स न
ति जं नि सारि ये... कौ ल न प्र न्त क री
सु र नो व न ये ल यं... जू व प न री
मो हि स नि उ र का री ये... च ले च नि
ढ का यो चा है ये न ज नी नै

को नांव है। सुता सो सुसुरारि न
यो धु धु क वि चार सा स द त ब है
गारि जा कै वि ॥ ५५ ॥ ना व है पि
ता सो पठ प्र क सी प्या तो जे न रा ॥ ५
न जो प्ये क्क धू हा यो जा य् आ धो य
स द व है ॥ ३ ॥ च ल गे गा हा ट टा सी
ले ट ट न नै व ल जा रि ॥ प हो चे न
गर व्वा र दि ज क सी जा ये को ॥ सु न
त सी आ य् दि वि म्म रू पो य् र दि पि
रा हो म न ही ये क तु न को यो का हा
आ ये को ॥ यं ता तित करे जा ये
सा स दि ग ह रो लि वि का ग द नै
ध रो अ तिनु त म अ धा ये के ॥ क
सी रू क्क जा ये ॥ नि नि प ट रा सा
ये नु ठी ॥ को यो प्र हा स त्य धो ग
व ष्णा सा ये के ॥ का ग द ले अ र्इ
फि रि हू स रै फि रा ई पु नि नू लि
पे न पा ई जा त पा ध र लि धा ये ह
र रु से को द ई डै र फू टा ह ई पो रि

अनुभवकरकलौतनसौं जिनरु... प्रिय
प्रायः नपिजीयोहै - ७२२ ४० ॥ ज
बिदतनरसी ननु गुजरु... २२० ॥
नकनी कगसरी रथगज... १० ॥
सनजलौं मालामुं इदि कि... १० ॥
निडावनें: जै से बु... १० ॥
नागोलश्रीमनी न... १० ॥
षडदोषयो जिनरी... १० ॥
रथोहायो रसरी लि... १० ॥
जगबिदतनरसी न... १० ॥
नकनी: ४१०८: ४१... १० ॥
नागदुबासधिल... १० ॥
रहै येक नाई... १० ॥
डोलत फिरत... १० ॥
नीव... १० ॥
रेबरसै... १० ॥
रेके सै... १० ॥
श्रीश्रीजूवा... १० ॥
जाकसे बि... १० ॥

दत्त के महाप्रसाद नैनाग सिष्यो क
रे कौन दूरिष्ठा विपूरिष्ठा नित्याषी
ये मेरो कहा जाय प्राय प्रसे कल
कतु मेरा घाये निसक सार न। क
रिनां घाये रसे तासा सा रुकाये न
ले बिवास जनि तीयाये कन कक
है रुकि को दिषाये नर सी कहा
नले सोई प्रन बानी छि सी सांच
रिई गये प्रौरा गच्छु टवाये बो
ले पट घोला दीये कीये दुसन ता
ने पट सोये वर देवो कही ना
ये लीये दान काम कीये काग
गहाये द यां कच्छु घाये वक पाय
ले निजाये ४२ गहनै थर सो हो
ग के दारो सा रु छरि थरि रूप नर
को जाये के छुटाये हो काग दले
स्यो गोद मोहन रिगाये नडे प्रा
ऊन ऊन स्यां न सार पर राये हो
ये जे जे कारन पर पाये लि पटा
गहो साये ना व सो प्र ना व ड स

न्याः अर्धपञ्चमीपारीचंदनानीन
 सद्यः तारीदिनकरतादीनानाः तिले
 तपःपरीक्षे ग्रीवकादुर निजान्ध्र
 दीर्घरनिक्षप्रमचरसुनजिसुनि
 अवनतिप्यारीये लजतवृद्धगर्व
 सौच्यंगसंगप्रंगलुतलरगद्योवि
 जीकीज्यारीयेः २ इहरेरेससावन
 यनिरसिनिना लः लईत्यानद
 ठिपरीकोननईयेहप्रोइसैः लिल
 सचरीयंगनवीज्जुठरीव्यतलकुइनु
 स्वकातनैनकोरले जताईसैः च्यानि
 यादौदारोयहचयसै प्रानजागीतल
 स्यान्निदिगाप्रायकलीनीकेरुहाज
 ईसैः जावोयसैप्रायतकरोकरास्र
 प्रोउजसोप्रायेविनैठान्बदपल
 सीलगाईसैः क्वरीदेरब्यारीदि
 प्रसुतानईन्यारीः मेकसुतनु
 इजगन्तिसिखिलतारीहैः प्रोइ
 हसंतसुषोलेकैः प्रनंतगुन

वैतालये ज्ञायेवै ॥ रहै दिन चारि
पै बिचार ॥ नो दोष ॥ न आ ॥ ६ ॥
सिरु कानी किमिले आये कै ॥
दोर दोर पकवोन सोत तीर्य गांन क
त्रे छुरत नीसान कान सुनी येन बा
ताहै चिब्र नुष कीये लै बिचत्र पद
रानी प्राप छोरी रंग बोरी पै चहा
घो सब रात लै करी सो जौ नारता
मौ मान सप्र पार प्राये दुजन बि
चारि पोद बांधी पै नसात लै न
ए नैम ॥ साज बाज गजर घनुद के
रुम कै कि सोर प्राजिस जी यो ब
रात लै ॥ ४ ॥ नर सी सोक लै गे है लथ
तुम साथ चलो अंत रिष नै ल चले
येती बाल मां नीये कही अजु जं नै
तं न मै लो लाये प्रां नो यरु सुषम
न नै रौ फेंद ताल प्रां नीये ॥ प्राप ही
बिचारि सब नार नुदाये लीयो दीये

न्यारोयैपुपुजीपारीचंद्रचोदनीन
 सजलारीदितकरतारालालगतिले
 तप्यारोयैग्रीश्वकोदुरनिकरग्र
 राभरनिचषमचूरसुरनिसुनि
 श्रवनतिप्यारोयैबजतकदंगके
 सौचंगखरगप्रगचवततरंगछवि
 जीकीज्यारोयैरइइलेमसालस
 यनिरधिनिताइलचइलालइ
 दिपरीकोउनईयेहैप्रइसैस्विस
 सैचरीरंगनरीप्रटरीबतकइक
 सकातनैनकोरनैजताइसैचासै
 याकोदारोयैहैचासैपानवारोतब
 स्यांनदिगप्रायकहानीकैसमजा
 ईसैजावोयेहैप्यानकरोकरोसुह
 प्रांचजहांप्रायेनिजेदारुचटपट
 सीलगाईसैकानीठोरप्यारीबि
 प्रसुतानईन्यारीयेकसुतउनेब
 इजगन्तिसिखिसतारीसैप्रावेब
 हसंतसुधेतकैप्रनंतगुनगाव

पुद्गासबसजसो धरसदन नईन
क्ति नपायनी सुतकलिव्रसमत
सबैगो बिंदपरायेन सेवतहरि
रिदासइवतमधरांनरसायेन सी
तापतिकोसुजस प्रथमसो गोवनब
घान्पौ द्वै सुतदजेको सिकबतसब
रुद्राज्ञान्यौ परागो हतसो लोम
धरसंतनअनंददायेनी दिबिदा
सबसजसो धरसदन नईन क्लिप्र
अनपायेनी ॥ १६ ॥ निंदद। सअन
दने धरसिकसू प्रचूहितरगमगे
लीलापदरसरी तिगुधरचनार्जेना
गरसरसउक्तिजुतजुक्तिरसगोन
नडागर ॥ १७ ॥ धरलो सुजसरो
मयुरगोमन्यवासी सकलसुकुल
सेबानलितनक्तिपदरै निजपासी
चंद्रसासअगो सु ॥ परम प्रेमपा
मैपगे नंद। सअनंदनिधिरसि
चूहितरगमगे ॥ १७ ॥ संसार

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यद्दीर्घायै जूकाजी
 ये निःसंककाजः गये जदुराजः यो
 लीः ॥ पूर्वप्रोसोबजारसैः ॥ इदुदुकि
 रिसारे नूषप्यासमीडुडोवेपुरत
 जिन्नेयेनघारे ॥ इषसागुप्रपारस
 ४३० ॥ सासकोसस्वप्रकरिप्रयेको
 कोयेलाय्यरिकौनपासिरुंडीदा
 ललीजीये ॥ यत्सायेकैः ॥ बोल्पनुदे
 दुंकि सारे चले जूनासारे प्रजूकली
 लाजिसने देतनेरुपाये प्रायेकोः
 मेरासे ईकोसोबासजानैसरिदा
 सकोडुलेवोसघरासिकरेचीदी
 ! जेजायके ॥ धरेरु रूपयादेरलि
 पाकरैवेरवेर ॥ फेरिप्रायेपाती
 ईलईगरेलायके ॥ ३॥ देधिप्राये
 ररुहैरिनिलेउत्सां प्रंगवेनुरे
 वोरिसंतसंगको प्रचावसैरु
 लिधिईदांनलायेसोघवाय
 काये प्रनूपूरकानसतन्य

ह

वृदासबसजसो धरसदन नईन
क्तिप्रनपायेनी ॥ सुतकस्त्रिसंमत
सबैगो बिंदपरायेन ॥ सेवतसरिह
रिदासद्रवतकषरांनरसायेन ॥ सी
तापतिकार ॥ अस प्रथमसो गोवनब
घान्प्रौ द्वै सुतदाजेको हिकवतसंब
रु ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥
धरसंतनप्रानंददायेनी ॥ दिबिदा
सबसजसो धरसदन नईन क्तिप्र
नपायेनी ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥
दनी धरसिकसू प्रचूहितरगमगे
लीलापदरसरीति ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥
गरसरसउक्तिजुतजुक्तिरसगोन
नजागर ॥ प्रचूरपयुधलौ सुजसरो
नपुरगोननवासी ॥ सकलसुकुल
सेबानलितुजुक्तिपदरे निनुपासी
चंद्रसासप्रोगुसु ॥ परमप्रमपा
मे यगे नंद साप्रानंदनिधिरसि
कसू प्रचू लितु ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

जाते बड़े सिर और प्राये बसो क धपाये
हैं न दे पदाये न ही नोति लके प्रो
दास नये बरखा सि राये दं क मोहि
कै ज नताये है कोर गस प्राणि प्रागे प्र
सो नि बायो। डारिले व न धते न लो म प्र
न ग न प्राये है ३४ न क प र राये धि
बि दार्थे योज स ग द प्र ता हा क र ज
त ड न य ध र ह प्राये क र स ग य क न
ले त्त ब त प्र ने क ज ह लो नो न ला पा सि
राये स ब मि लि पा र ये है वि न लो कर
बे दा ही जी ये जू ल ज र है ही ये न ग यो
ह रि फि रे कै बु ल ये है प्र ग न म म
स ता ता त को लि न वि र ग स न च ली
उ घ ति त्प्रा य ये क प ति ह न की ये है
ये फि र ल न न ये न स ये न
न सौ न न न द ह ल न न क न ही यो
प्रा य ल गि य है को क लो स स का गा
लो पा ये व को न ग ली क धू पा के दू प
ले चाले ह रि न लि लो क ड ड ये
ग ये ली ज को जे बा न ह रि उ
म रा ये है ० ३ १ ५ ५
ग मे ये क पा त

सैः विम्वधिसिखानेनये गयेनुदि
नयेनांसिः विनरुदिक्रपान्त्रिपं
यजातपायोसैः अकरनसगाईप्रा
प्रयोपायोवरनायेनांसिद्वरधरधि
स्योले द्विजनरसाबतायोसैः प्राये
सुधपायेपूष्यो सुतसो दिषायदी
योकायोले तिलकमनदे धलचुरा
योसैः प्रजूरुमलायकनलु मसब
लायेकसौसायेकसो धुदो जायेन
वले सुनायोसैः सुनतसो सायोहो
रिक्सेतालकंटा वरुबालबोरिप्राये
जावोफेरि दुषद्यायोसैः मकाटिके
अगुटाडारं तिलसो नचारे बालम
नमै बिचारिकायो तिलकालनाये
कौजांनै सुता नागयेसं देसोचि
प्राय सब प्राये जबव्यासिबेकौध
नदे प्रध्यायेकौ स्वगनरुं लिषिदीये
दजप्रातिनीमोमनिगयोकरुंगा

कायोलायोसीतप्रतिकेनुनुप
जीनवीनहैचढीफेजसंगचढौ
बैरापुरनारिबढौकडोरोपीपले
कैसारासयेकपीनबहैडारेसब
बेचिपागपेचमदि रायोभुषि
नायोसोअमोलकरौजगनाथस
नहै॥५३॥कोनाकानीनईनरप
बातसुनिलईकसीसीराधरुदेये
तोपेअरमाफकीजीयेआयेसम
जावेबहुजुगतिबतावेयाकेमन
मैनआवेजायेबकसयेहैअ
गदबहनलगेवाकीवापगला
सौदेवोबिधमारौफिरतुसीपगत
धियेहैदरतरसाईघरगरलमी
योपाकनोगहलगायोअजुआवे
बोलिलीयेहै॥५४॥वाकायेकसुत
संगलैतबैदिजेवनकोआदुसोधि
पादुकसीजेवोकहंगईहैजीवत
नबोधिहारीतबसोबिचारीप्र

डेरापुरासकभीकीपरुचाबियेमान
 सपदायोदीनप्रायोपेनप्रायेः प्रहोदे
 विद्युविद्यायेनरपूये जूबषांजाये
 ४१ नरसीबरातमातितानोयेनरसीक
 नरसीनपावेप्रसीसनिप्रयारहोः प्रा
 येकेसनाइसिबसुधिबुधिबिसराई
 कलौकरतरुसाइबिबलनाभोलिरधार
 गयोज्ञोसगाइकिरिद्वरप्रायोद्विज
 नेजुप्रंगमैनमातकेसेरंगबिसतारे
 जेकहीयेक १ ॥ ५ ॥ नराससेनपूजे ६
 मरुचरुंहिसपुरीरहादेघोचरुहिस
 सै ४ ५ चलेप्रचरुजमानिदेविप्र
 मानगयोत्तयोपयोषांजनकोरुके
 पधिलीजायेजायेगोसपायेरुहोः
 नरिदयाकरिगयेद्वगन्तरेपालप
 कृपाकाजीयेसिलेचरुप्रकलेदि
 योसोमयंकमुषरुजीयेनिसंकइ
 नारसुतादीजायेः ब्राह्मकरिप्राये

नसुनिसुनिजाजाय ३४
 ते

कायोलायोसीतप्रतिकेजुजुप
जीनवीनहैचहाफेजसंगचहै
बैरीपुरनारिबहौकेडोरोपीपले
कैसीरासयेकपानबहैडारेसब
बेचिपागपेचमधि राव्योनुधि
नाधोसोअमोलकरौजगनाथस
नहै॥५३॥कोनाकानी नईनरप
वातसुनिलईकसीसीराविरुदेया
तोपैअरमाफकीजीयेआयेसम
गबैबहुजुगतिबतावै॥याकेमन
मैनआवैजायेसबकरुदायेहैअ
गदबहनलगेवाकाचूवापगैला
सौदेवोबिधमारौफिरतुसीपग
धियेहैकरतरसेईघरगरलमीला
योपाकनोगहलगायोअजुआवे
बोलिलीयेहै॥५४॥वाकायेकसुता
संगलैतबैदिजेवनकोआदुसोधि
पादुकसीजेवोकहगईहैजीवत
नबोधिहारीतबसोबिचारीप्रति

सर्वत्र व्यापक नई जी किराज रंगोपा
लका नहिते जगति जाल सतकंड
लको अडना बुधि प्रवेसना गोति
यसं सयेको अडना जंरहं गावति
वास ॥ देसबाण्ड निमतस्थो
नवध्या नखिन प्रबोधः प्रन निदास
नबल ध्यास्थो नहिते कपाजा धीस
पद्दरज र्दिया लालको संसन सर्व
व्यापक नई जिकरी जनगोपालक
१११ साधो दिहु मही नुपरै प्रचूरक
लोरा नीति प्रसिद्ध प्रेमका वातं
दु प्रचा हीयो नुचै ते नरो पालस्थ
सां चोपनकीयो सतना तीधु नि स
सचलत नुही पुग्घाटी चरुल सै
ति प्रेमने मनसी का प्रंग छाटी
रत करत नहित न संना रसका रस
जनकनकी सकल साधो दिहु म
नुपरै प्रचूरक दी लोरा नीति ११२
सा सा गो जी ॥ गढा गढ पुरना ल
धो अदी प्रेमने मिजो टित बनी रस

अन्तर्दोषः गन्तोयदेवाः प्रा
ग्यादिदेवास्तिसुधिदेवो प्रायकैस
नाईनाः ॥ १ ॥ गयोजायदे
येतिरपरजगन्मपरस्योः त्वस्योस
धनैन्ननकौकापैः ततगायोहैः ॥ ५ ॥
राजास्योः ग्याः ॥ ६ ॥ योः प्रनत्मा
ग्यकस्योः प्रावैजापैः नागमेरेषां न
नपठायैहैः ॥ ७ ॥ इतोः ॥ ८ ॥ कस्येन ॥
पकेतवचनसुबतबताएह ॥ ९ ॥ यालग्रा
पपुरहिगप्रायेहैः नूपसुनिप्रागे
प्रायेपायेल्पटायेगयोः त्वस्योः उरत्त
येदुपगनीरत्नेनिजापैः ॥ १० ॥ राजास्य
रवसदीयोजायोहरिचक्रकीयोः
हाथासरसायोः नजानेजितेगाये
हैः ॥ ११ ॥ मूलाचक्रः ॥ १२ ॥ जंनरपकानि
क्तिः कौननूपसरवरकरैः ॥ १३ ॥ नक्तप्रा
गममनसुः ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
कजाईः सदहनग्राः निसतकारसुद
सगोबिदबडाईः ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

सकल व्यापक नई जी किरा जग गायी
लकी ॥ न किते ज प्र ति नाल संत मंड
प्रको मंड न बुधि प्रवे स न गो ति गे
प्र सं स ये को घंड न ॥ न र रु ड गा व ति
वा स नाल दे स न ष ड नि स ता स्त्रो ॥
न व ध्या न वि प्र नो ध्या प्र न नि दा स
ज वृत धा स्त्रो ॥ न किते क पा बा ध्या स ह
पा ह र ज न वि ष्या लाल की सं सार सक
व्यापक नई जि करी जन गो पाल की ॥
११ ॥ मा ध्यो दि ह म हानु परै प्र चूर कर
लोटा न कि ॥ प्र सि ध्य प्रेम का बा त ग
ह प्र चो दी यो नु चे ले न यो पा त स्या म
सां चो प न की यो ॥ सु त ना ती पु नि स ड
स च ल त नु सी पु र पा टी ॥ न ह न सें
ति प्रे म ने मन सी का ह प्र ग ह्या टी ॥ नि
र त कर त न सि त न सं नार स क सर
जन के न की सक ति ॥ मा ध्यो दि ह म हानु
नु परै प्र चूर करी लोटा न कि ॥ १२ ॥ टी
का मा ध्यो जी की ॥ ग हा ग ह पु र ना न म
धो ब हा प्रे म नू मि जो टि त ब नी र त क

नाटा। बरुधले पढाय ये दीयो न
ला तिलकदारदासयो सुनाईये ग
योगये नू लिफु लि कुली बि सता
कायो लीयो यो पसु चो नि अब जं नव
से पाईये ॥ ४ ॥ ५ ॥ बाते दिन बा सती स
आयु नु हा सी प्र सु धि क सी ना हा स के
न प्रायो यो सु ना ई ये बो ले ज नि स क
जा वो गा वो गु न गो बि द के ॥ प्राये व
म धि नू प करी जै सी ना ई से न क वे
प्र संग को न रंग क ले नू रू नू ज
न्यो नु न मां न सो पर धू मि ग वा ई है
दी यो ले न डार घो लि ली यो न न मां न्य
द ई स प ठ मे को डी डारि जरी ल्य प दा शे
४ ॥ प्रायो व हा राजा पा सि स नामे प्र
का स को यो ली यो धन दी यो पा छे सो
हा ले दि घा यो है घो लि कै ल पे टा म हि
सं प ट नि ला रि को डी ॥ स म हि बि चार
हा रे न न मे न प्रा यो है ब डो ना ग व त
बि प्र पं डित प्र व न का नि सार स ली न

रा प्रचूसाधू सेवाध्वारी नुर श्राये म
रु छर रस कले क्र ल्ल कया सु घ सौ वै
दे नौ न कौ न दे धि के से नौ निर सौ ध
दौ जा त लो ल्यो ली या जा ति क लो क
रो नर रु ष सौ सु नि भु ति ग ये व धू
अ न्न ज ल त्प्रा ग्प दायि ल ये या व जौ ए
बि से ल सि न यो द ष सौ ॥ ५ ॥ म ष न
दि षा ल्ये या रि दे ध्या हा सु सा वै क हा न
वै सो हा करे नै क ब द न दि षा इ यो नै
रु ज ल त्प्रा ग्प दायि अ न्न जा त लो पेली
यो ॥ जा यो ग ल नी कौ ल व प्रा प क षु ध
इ यो लो ली नो लो लो जि न यो डौ त न
या हा सि न प न लो लो लो लो यो सु
न त ल मा इ यो क लै म्ब क जे जो ई से
री क ति ज ति ग इ यो ई लो ई न र ह यो व
त क लै स न मा यो ॥ ५ ॥ र लो लो गुर क रौ
जा ये पा ये न नै च रौ लो लो यो चो ए
न ल्य वा ल्या यो न यो सि स ही न सौ
धारी न र मा लो न रि ति ल क ष नो

सद्रसजोपिका प्रेम प्रगदकलः गही
दिषायो॥ निरश्रकुसः तिनिडरसि
कजसरसनागावयो दुष्टनदोषविच
रिमतकोउदनकीये॥ धारनबांकोन
योगरत्नइमूज्यौपीयो॥ चक्रिनिसांत
बजायूँकफतैनाहिनलजी॥ लोकला
... कला नजिमीराग्परधरन
जीभीपाटीका मीरीबाई की॥ मेरतौज
बमचूमिहित नोनहो॥ पगेग्परधार
लालपिताहाकेधाममैराणाकैसगा
ईनईकरीब्याहसामानईगईमतिव
डिबारंगालेघनस्यांममै॥ नावरिपर
तमनसावरेसरूपमांजितावैरसाई
प्रावैचल्पबेकीप्रतिग्राममै॥ पूछैपि
... भातपदग्रालुरनल

ग्परधारालालजी
श्रीरः

नालशयनिलीगरेरीतिकसुदईसु
प्रचलैजिमायेराउनाइकौनिका
सिद्धारदेकरिकवारसबपायोप
नईसुवैरुदुप्रहायेरुशोकसौके
सेजातकाहुवातसुनीनरप्ररुनेमने
सोचातिनईसु ४५ पाचलेबाल्याच
लहाराजायपरुरायेप्रावेज्ञायेघे
शिलीनेनयेनरनधिसायेकेसकली
उरिदेवोकेलराईसुनमुषलेलुभव
सनहीसुमारो ॥ ५५ ॥ पाचपाचपाच
येकेबोलेनेकरुहोके ३५ नहायेपव
रायेदेतलेतमलशोरजलडारोदि
षायेकोबसतहेतिलारीनयज
जायेवनचारीभवहेबानीलागा
शीनरधारासुघंपायेको ॥ ५६ ॥
वरुप्रायेवैतौजलबधिकुदिय
प्रतिप्रकुसायेनेकषोजहन
होराजाचलिजायोसबनीरव
याकचदेधिमुदगायेदुखस

नगरीसुखवै जिनेंलागीचासुख
मकी... ६८ प्रायेकैव एदकहैगसै
किन्चतैनाजीसाधूनसोंहैतमेक
कलागैनारीये रानाहैसपतीलाजैब
यकुलरत जातमांन्यतीजेबातवेगफ
ग्यनिवारीये लागे प्रानसाधिसं
तपावतअनतसुधजाकौदुधहोयता
कौ।निकैकरिदारीये सुनिकैकटोरो
नरिगरलपढायहीया लायोकरपांन
गचडोयो निहारीये नगरलपढा
सोंशासलेचढायोस तत्यानिबिष
सारीताकाकारनसंनारीसहै रानानै
गयचरबैठेसाधुदिगदरतबही
प्रिकरिसारुधैतधारीहै श जंग
धारीलातनिनहीसौरंगजालबोल
सतरख्यालकानपरीधारीहैजाय
सुनारिचइअतिचयलारिआयोलीबे
रवारिहै किवारघोलिनपारीहै ४७०
कैरग्यनाजीकरतप्रसंगनांनोकला
रगयोवेग्यदेवताहियेअगोहाबि

श्रुतीतीया मयदे धिवेकोपनलैद्यु
दायोहै ॥ देषीकुंजिकुंजिलालप्यारा
सुषपुजनीरी ॥ धरानुरमांजिप्राय
दे, रत्नलयायोहै ॥ ४७३ ॥ राणाकमलीन
मतिदे धिवसीद्वारवती ॥ रतीगपरधा
रीलालनितिहीलडाईये ॥ लगीचर
प्रटीचूपनक्तिकोसुरूपजांन्या ॥ अत
इषमांनिबिष ॥ नीलेपढायेहै ॥ वेग्य
नेकैप्रावामोकोप्रांनदे जिवाषोअ
तोगयेद्वारधरनोदे बानतीसुनईहै
सुनिदाहोनगरिरायरन ॥ ४७४ ॥ पे
डोराषोदीनलीननईनेहापाईये ॥ ४७५
मूल ॥ ग्रामेरेअस्थितकुरेनकोश्रीदा
रकानाचइसनदीयो ॥ श्रीकृष्णदास
वपदेइसअसात ॥ चोपायौ ॥ निरगुन
स ॥ गुनरूपतिमरुप्रज्ञानतसायो
क्रा ॥ बाच ॥ दादाकनजा ॥ ४७६ ॥
धिष्टर ॥ सु रि ॥ ३ ॥ प्रसलादधरस
ध्वजधारीजगपार ॥ प्रथारजप्रयो
प्रगदतनसंषच ॥ ४७७ ॥ ॥ ५ ॥

सुशराये शोनी मनसांचे अथवाप
बेदबले रितिनिश्रुगेनाचोपेरीति
रोलाधीसकातजमनधनश्रुगे
प्रेत्यत्रचुजनयेकाचिकुकोकोन
नूपसरनरकरे ॥ ११ ॥ काटीकलुरोलीसे
राजाचत्रचुजकी ॥ पुरहिगच्यासु
श्रास्त्रेकाराषाजेजनयेजेजनसीप्र
वैलिनैत्यावतलिवायेकेमालाथा
री हासद्वंसानिश्रावेकोउदारजेपे
करेबासीरतिसोसुनाइचुपेगायेके
सुनीयेकनूपनरुनियटप्रनूपक
थासबकोनडारबोलिदेतबोल्या
यकेनापानुश्राप्रपात्रुनोबिचारुंजो
नोनासुतोपेकरुजेसाबातदईने
कमेउडायके ॥ ११ ॥ नगवतगावेन
कनूपयेकाबिप्रतरुबोल्याकेसुन
वेजेसाभतजिनलाइयेपादेप्रासेत
नरुदेनोनमेप्रवेसकरिचरिश्रुनु
गकरुअरमधिप्रशिष्येकरालेपरं

पुरसत्तोरककस्तै
आरसवस्त्रदि

मिलीतीया मृषदे विवेकोपनलै
दायोहै ॥ दिषीकुं जि कुं जिलालनप्य
सषपुजनीरि ॥ धरानुरमाजि प्रा
देसबनगायोहै ॥ ४७३ ॥ रोनकीमस्त
नतिदे विवसीहारवती ॥ रतीगपर
रीलालनितिलालडाईये ॥ लगीच
पटीनूपनक्ति कोसुरूपजांनप्र
दुषमांनिविष ॥ नैलेपढायेहै ॥ वे
लेके प्राविमोको प्रांनदे जिवावो
तोगयेद्वारधरनौदे बानतीसनाई
सनिदाहोनगईरायरनछेउजुपेव
डोरावोधीनलीननईनिहापाईये ॥ ४७४ ॥
मूल ॥ आमेरेप्रच्छितकूरेमकों प्रादा
रकानाथइसनदीयो ॥ श्रीकृष्णदास
उपदेस प्रमत्तप्रचोपायो ॥ निरगुन
स गुनरूपतिमरुप्रज्ञाननसायो
को ॥ बोचैवधकलंकमनागंगव
धिष्टर ॥ स रिपुजाप्रसत्तादधरक
ध्वजधारीजगपार ॥ प्रथार ॥ धरु ॥
प्रगदतनसषचक्रैकंडनकायो ॥

सो लिप्रो नि के बं ता यो क र्णो जु ल बा न न
क र्णो नि प्रो प्र चान् न ज री नु दि के पा ठा ई
मा लि गु ण स न क यो दै ६ रा स ज्ञा री डि पा
प्र ग र्ण क र्ण जू न च न नी के प्र ये नौ क प्र
य जा य त त या को ल्या ई यो प्र ये दौ रि पा
प ल प टा यो नू प ना ये न रे प रे प्रे क सा गु
मै च र चा च ल र्ण इ ति च ल्ये न हे त सु य
दे न च ल ले लो ल म न धो ल्य के न ड र ही यो
ला यो न री क र्ण यो नु ने स व्वा सा रे क र्णो
ये क क र्ण र्णो नै रे द ई प्र कु ला यो ल ई म
नौ नि धि पार यो ६ ३ प्र ये र ज स न्ना ७ ३
रो ज स न्ना लि नु ठी सा रे क

दर स न्ना
पे न पा नु पार सा र सु नि च
कि प्र ये सी स पा व च्च रे सै रा धो य ल ध ग
त नि ले प्रो प च्च रे सै ६ ३ क र्णो लो क

धोये ४७७ ग्रहो प्रची राजकैकरी
सांजीसां सबां नी लही ग्रायो नु दिहौ
वासी रौर प्रच दे धे से छुं नो कसौ का
न अरौ गो कता ग्र सना न करौ सु नि
कौ प्रगत यो पु नि बिन क हं पे धे से
सं ध च क्र म दि ध्या प त न स ब ध्या पि
गई नई यो ग्र धार रौ नी ग्राय प्र बरे
है : बोलें र सो नार नै सरी र लें सना
प्र का डी ली डे ना थ हा ये नि ज ना ग
रिले धी ये ४७८ न यो ज ब नोर व पुर
बहौ न कि से द य र सो क र्यो ग्र नि
इ स न न रं नी र नारी है ग्राय सौ स
त ग्री न स त ब डे ब डे ध्या ये : ग्र ति सु व
पां ध दे ह र च ना नि हा री है ना ना न
ट ग्रायै हिल न सै जो सु न वी अ राजा
न त ल ज वी जो नी कृ पा व न धारी है
मंड करायो प्र नू रूप य प धरा यो स व
ज ज स ध्या यो क य मो कौ ला गी पा
है ४७९ बि प्र ड ग ली न से ग्र ना
वै ज ना ध धार यो प र्यो च य च ह म

देवैः दृग्दृग्सौलगायंचलीसुधनस
 मायचायप्रानपतिपायकैः पलौचीन
 व्रनसासुदेविपिंगवनकायोलीयाश्रे
 रबरगठजोरो कायो नायकौ ॥ ५६६ ॥
 देवाके पुजायेबेक कायोलेनुपायेसा
 सूबनये पुजाये पुनिबधूपूजिनाषी
 ये ॥ बोलाजुबिकाभोसायोलालगपर
 आरीलधिः प्रौरकौ ननधै येकवाग्रन
 लाषीये ॥ बढतसुहागयाके पूजेते ता
 ते पूजाकरौ करौ जिनसुदसीसपायन
 मैनावीये ॥ कसाबारबारतुमधाहानि
 रआरजांनौ वहीसुवारजायेवारिफे
 नाषीये ॥ ६७ ॥ नबलै धिसोनी नईप्रति
 जरिबरिगईईपतिपासियेबधुन्ही
 कोनकी ॥ प्रबसाजुवाबदायोकायोप्र
 पमाननेरौ ॥ प्रागेक्ये प्रपमानकरे
 नरेस्वास्मानकी ॥ रानो सुनिकोय
 कस्यो चस्वोहायैहारिबोईठोरन्या
 लालनि

नईयेकसुबोतरिकेसकैल
नीचेमोन्पनइसोसुइबिचारी
तथात्प्रपबंगलाकेबिचत्रलेब
येहैःबिबधिबिद्योनाःहरर
नुहोनां पां नहांनधरिसोनाज
परदासिवायेहैताःतारः
कररचनाकृतारिधरेःनरेइरि
कीआपनावसुधताइहैमान
धिधारेलालसेपगधारेपां
घातलेनुगारडारेयोहेसुषदाई
तायाःकनसुजांनैदोनाईनीध
नांलेवेकोटिसारसायेफिरीने
आइहैपतिकोसुनाईनई
प्रतिमननाईवाकूषिज्जडरा
ईजानीभागप्रधिकरिहैःवचर
कानधकरसाहकीः॥मधकरस
नांमकीपोलइफलजांलेंनेध
सारगहैहजतप्रसारको॥प्रौड
कोनूपनक्तनूपधरूपनये
पननाराजानकैप्रौरनबिचार

राजेंक्यूतेसो नहाला जे प्रचूहे धिसुध
साजेंशावैषो ल्यइसायेहो नयोईधि
मानैरा नौलिष्यो चित्रनीतिमानोउ
लटिप्रयानोकायोबैकुमनंश्राईहै
देष्योउप्रनाकप्रयेनावमेनबिधो
जायेबिनाहरिक्रपाकहैकैसैकरिय
ईये॥४७॥ बिसईकुटलयेकतेपचरि
सायूलायेकायोयोप्रसंगनोसोप्रंग
संगकाजीयेप्रसंगनोकोईप्रसंग
गपरधाराप्रहोसासधरिलईकरने
जनहलीजायेसंतनसमाजनेबिधो
येसेजबेलिलीयेकप्रबकोनकी
निसंकरसनीजायेसेतसुधनयो
बिधेनावसबगयेनयोपायेनिंप्र
येनोकोनक्तिदानदीजाये॥४८॥ रुसुध
कोनकाईनूपप्रकबरनाईसीयली
येसंगपतानसैनदेबिधेकोंप्रायोहैम
निरधिनिस्तालनयोचबिगपरधारील
नपदसुधजालयेकतबहाचहायोहै
धुदाबनप्रायेजावगुसाईजूसो

जिसे कसुबो फरिसे से के लडा ये
नाचेना नमंड सो सुदु विचारीना
सुधात्प्र प्रवंगना के विचय लेखना
येतः विववि विचाना से जरा जत
कुंदा ना पा न हान चरि से ना जरी
परहा सिवा ये है ताका हा र साही
कर रचना कलारि चरे चरे इरि चो
की ज्ञाप च वि सुधु ता रिने जान सी
विचारे लाल स्वरे ज प्र ग जारे पा न
प्रा त ले न गान डारे ये इ सु प्र हा रिने
ताया हुन चे इ जने से न सं नी चरी
बाने दे प्रे के कि से र से ये फिरी नारे
ज्ञा रिने यति को सु ना ई चरे
- ज्ञा तिलन चा ई प्र का ज ज्ञा ड र पा
ई ज्ञानी न ग ज्ञा च का रिने वं च र ही
न क सा काः ज्ञा कर सा
नाम का यो न स फल जने ने ध गु न
सा र ग हे ज्ञा ल प्र सार को प्रो ड छे
के ज्ञ प्र न न प्र सु ध र प न यो
पा प न ना री ज्ञा न के प्रो र न वि चार

प्रबिरं प्रचिंतकूरमकौ आहारकानां
इस नदीयो ॥१६॥ टीका प्रथी राज रा
की ॥ प्रथी राज राजा च ल्यो द्वारका श्री
मासंग्य प्रतिरसरंगनस्ये ॥ प्रमपा
नूपाईसै सुनिकै दिवा सुन दुष
निनिसकानल ग्यौ कला पग्यो साध
सेवा नक्तिपुर धारि सौ देषाये निहा
कै बिचार कजे प्रथी जे ईल जे न स
साधि जावे खात ले हूराई सौ प्राये
रनूप साध जो रि करि ठा को र सौ
देस सुान्य देसन सु लाई सौ ॥ ७ ॥ द्वार
तीनां थ देषि गो सती प्रस नान कने
धरो नुज धा प्राय सन प्र न्य लार्घ
ये चिंतान सी को जे ती नू बात या ला
जे प्रज द जे जो ई प्र ग्या सौ सी सिर थो
रा घाये प्राये प सौ चाये दूरि नैन जल
पूरि बहै ह सै रे अ नारी कला स्व ग र स
घाये बाते दि न होये नि सिर सै सोये
ये ग ई न कि

नें : नरतपुत्रजागोति : ६ प्रसक्त
वृषांने : औरनूपकोनुधुवकेडुति
जायनासिनधरी कलजुगत्रि
कररीकमान रामरै निकैरिजुगव
री : ११६ टीका : ॥ पून्योमै प्रकासना
सरदसनाजराह बिबधिबिलस
निरतिरागरंगनारीसि : बेठेरसच
जिदोनुबोत्यो : ११७ टीका : जिनेद
लाकजै बि प्रकहासोहाप्यारीहै :
रकौबिचारे न निसारे कहनेकध
टासुतारुपघटाग्रनरुपसे वा
जारी : रहासनासोच्य : ११८ टीका : क
त्यवायल्यायेनेषसोदिवायेफे
संपतिलैवारीहै : ४ च मूल : रहा
उ रहरिदासनस्यौरामधरनिसो
रहा : औरजकेनुपदेस : तोनु रनाक
धास्योनवधादसधापीतिग्रानध
नसै बिसास्यो : अचुतकुलग्रनर
११८ पुरधारथजान्यो : सारासार

बिरे प्रसिद्ध कूरज कौं आहार कानां य
ह स्व नदीयोः ११६ टीका प्रथम राज रात
श्री ॥ प्रथम राज राजा च लोहार का श्री
मासंग प्रतिरसरंगनस्यै ॥ अग्रा प्र
नूपाईस्यै ॥ इति कै विदिवं कून दुषम
नि निसकानल जौ कला प्रयो साध
सेवा नक्तिपुर चरिते दे घाये निसरि
कै विचार का जे प्रथम जे ईल जे नली
साधि जावे स्वातले हुराईस्यै प्रयो नै
रन् प्रसाध जो रिक रिदाने रस्यै प्र
देस सान्प्र देस नस लाईस्यै १७ ह्यै
तानां य देषि गे दती प्रलना न क
धरो न्दु ज छौ प्राय मन प्र न्य ला व
ये चिंतान ही का जे ती नू बात या ला
जे अज्ज ही जे जे इ प्र ग्या सो ही सिर
राघोये प्रयो घ हो चाये दूरि नै न
प्रिब ह ई ह र श नार कला संग
घोये वाते दिन होये निसर ह सो
ये जाई नक्ति ग्यदा प्रयो वाती न य

सकेलेकबिलानेहैं। प्राग्पाबारदोयेच
 रिन्नइनेकेरहायेयाकोतबसारदेवि
 सिबधि। लानेहैं। प्रचारजप्रंगके
 प्रगोधासौप्रगोद्योजायेप्रयेकैस
 नाईद्विजगौरबडरानेहैं। नभोमग
 वायेतनधुवायेदायोधुयोनेनधुल्ये
 चैन्नयो जनलधोसरसानेहैं
 ४८५ मूलः। नक्तनकोप्राइप्रधिक
 राजबंसमेइनकीयो। लबुनधुरान
 रताचक्रप्रतिजेमलप्रोषे। टोडेन
 ननिहानरामचंदलनिजनतोषाप्र
 नेदामइकरेसलजनेमनीवाके
 नारीकरमसु। सुरतांतनगवाल
 रमनूपतिबूतधारी। ईस्वरप्रधैरा
 जरायमलकांतरनधुकरबधस
 बसदीयो। नक्तनकोप्रधिकर। जब
 समेइनकाया। ११७। टीकाजेमलनूक
 मेरलेबसतनूपनक्तकोसरूपजा
 नेजेमलप्रनूपजाकोकयाकलिग्रा
 यलैकरासाधुसेवारीतिशीतिनई

बंस चरणवल चत्र - जागौ उद्देस
तीरथ कायो ॥ १ ॥ टीका स्वांती चत्र
जाजूकी ॥ गौडवांतो हिन्दू क्लियेस
हून देष्यो कहं मोनस कोमारिश्य
देवकें चदायो है तहा जाय देवता
कौ मंत्र ले सुनायो कान ले धोनुन
मां निगावल पन - प्रायो ॥ स्वाम
चत्र नज के वेग्य तुम दास होनुन
तो होये नास सब गाव न ज्यौ प्रायो है
ज्यै सै सिष्य काये माला ॥ टीपाये जीए
पायेलीये मन हीयो ॥ प्रानंत सध
प्रायो है ॥ ८ ॥ चाग देल गावै नां नांस
तनल डारै कथा चागावत गावै ना
त्र न क्लिबिसतारी है ॥ न ज्यौ धन ले के
कौ उचनी पाछे पस्थो ॥ सोनु प्रांनिके
दबायो बैठिर होन हा सारीये ॥ नीक
प्रीपुरां नबात करै न योगात दिष्या
सध्यासू नि सिष्य चयो ॥ गस्यो यो
पुकारी है ॥ कहै या जून न मैली योफ

कंदी अकि प्रावै को नु चोयै यग पावै स
दान् इदुर्ष रगरडा स्त्रौ माल चार
सै पाये प्रचाल कही प्राज जो निसाल
काये सोये द्ये दुष पावे गहै इग धा
रहै ४८ अमूल ॥ धे माल रतन राठो
रकै प्रटल न कि प्राई सदनारे ना प्र
रगुन रां न न जन न रा ग वत नु जाग
प्रेमी प्रम कि सोर नु दार रां रतन
कर हरि दासन के हा स सा उ चो धु
जि प्यारी ॥ निर नये प्र नं नि नु दार र
सि क न सर सना चारी ॥ ह स धा संप
ति सत बल सदा रति प्र फूल त ब द
न ॥ धे माल रतन राठो रकै प्रटल न
कि प्राई सदन ॥ १ य कालि जग च कि
कर री क मो न रां जे नै कै री ज कवी
॥ प्र जे र ध र म प्र च र्यौ लो क हित
न नो नील कंठो ॥ निंद क जन प्र न दाये
क लान लि मां जा नै जो नू स वा ॥ विदिं
गं च बी वि बा स का यो दु स फल
सुकंतला वि स वा म त्र ज कां मे न
की वे टी क न्व मु नी नै पाली

कसनरुक्मनीकेलिस्वधरचोजन
बधिगाईपरराजधरनिकीधाय
पराजलधरज्योगाजै। सतसिधंडी
मंडरुदेप्रानंदकेकाजै। जाडै। सनेज
जाडिताकंददासदेसीधरीचाल
कंदस्वयं। चरुदिसनुदधिप्रंत
मोप्रनुसरी। ११५। बिमलानंदप्रबो
प्रबंससंतदाससीवाधरसगो
। नाथपदरागनोगंधुपनः जी
। प्रपुपद्धतिप्रनुसारदेवदंपति
। लसापे। नगवतनकसमानहो
। द्वैकोबलगायो। कबितसूरसे
। मलतनेदकधुजा। १६। पाथो। ज
। नमकूमलीलाजुगतिरहेसिन्न
। कनेदीजरम। बिमलानंदप्रबो
। प्रबंससंतदाससीवाधरसगो
। २०। बसतनिवाईगोमस्याम
। कोलगाईनितिप्रसी। मनप्रै
। नोगंधुपनलगाये। प्रतिकीस
। चाईयैजगमैदिषाईसेवैजगना

कंठी अरि प्रावै कोनु जोयै पग पावै
दाज्ज ई दुषे प र ग र ड ड स्त्रौ माल चार
सौ पाये प्रछाल कसी प्राज जो निहाव
कोये सोये दुये दुष्ट पावै गहै इग
रहै ॥ ४ ॥ ७ ॥ अमूल ॥ धे माल रतन राठौ
रकै प्रटल न कि प्राई सदनारे ना
र गुन रां न न जन न रा ग व त न जा ग
प्रेमी प्रम कि सोर नु दार राजा रतन
कर रु रि दा स न के दा स स उ च्या
जि ध्यारी ॥ निर न ये प्र नं नि नु दार र
सि क ज स र स ना चारी ॥ ह स ध्या संप
ति सं त ब ल स दार रु ति प्र फूल त ब र
न ॥ धे माल रतन राठौ रकै प्रटल न
कि प्राई सदन ॥ १ ॥ य कालि जग न कि
कर री क मां न रां म रे नि कै री ^{माल} करी
प्र न र ध र म प्रा च स्यौ लो क हित
म नो नै ल कं ठा ॥ निं द क ज न प्र न रा ये
क ल म लि मां ज नै जो नू स वा ॥ बिं दि
न गं च बी बि बा स की यो इ स कं त प्र व
मु कं त ला वि स वा म त्र ज को मै न क अ प छा स
की वे टी क न्व मु नी नै पाली ॥ इ स कं त रा जा व्या

इस मन्त्री सगुन ल्याये है कही प्रवाप
वै प्रापमदन गोपाल ल्याल परे प्रेस
धाल ल्या रिक्र कर पदाये है प्राये
निस नये स्याम काये प्रग्घा जोग
लेके गुरु लो लगावो नोग नगे
कि ल्याये है ११ पद ले बनायो न
कि रूप प्रदु साये इरिसं तन का पास
ने कोर हक कल नु मे काह सी धि
त्यायो साधु लीयो चाहे पर चैके
ग्राधे द्वाय नंद के पालि कही प्रां नु मे
रहो वै दिनाय जती साधु मे नु दाप
ली नो का नी पूरा प्रास मे नी निस
नगावु मे नी नी त्र बुद्धा वै श्री गु साई
बार दीये च्या रि सेवा सौ पी सार क
जन प्रग ल्या नु मे १२ प्रथा पति संप
तिले साधु निष वाये दई न इति हा सं
कयो निसं क नंग पागे है प्रायो सो
प्रजा नो ले न नानो ये ल्या ल प्र सो
पाथ र ले न दे प्रा प्र प्रा निस न
है रुकालि वि डारे दो स ग ट के ये

वेषदातीनौमनमान्योदासातनप्र
 नंनिनुदारतासंतनिकुधराजाकली
 हरिगुरुरिदासनसौरांन सुनिस
 चारसी॥३॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥
 जारामप्रनिरोमदोनुदाभयेनराषं
 साधुबिषन्गतायै। प्रेसेयेनुदा
 ररासुधरचसकारनांतिचल्यबो
 बिचारनयोर्चूदीदिप्रायैले मंडस
 तपांचमोलषोलितीयाआगेधरे
 दीजेबेच्यगयेना नकर परराये
 पतिकौबुलायकली। नौकेदेधिराजे
 नीजेकादिकेकरज पुरुप्रायेदं पढाय
 लौ॥३॥प्रनिनाषनुनैषेमांलकतेकि
 सारपुराकीया। पायेननं प्रबाधिन्य
 रतनगधर्रीहितनांच्यो। रांनकलस
 मनरलीसासतानैनहाबोच्यो। बांन
 बिमलनुदारभगतिभैमाबिसता
 री। प्रेमपुजसुदिसीलबिनैसंतन
 रुच्यकारी। शृष्टसराहेरांनसुव

दाम्बरीसगुनल्यार्थैहै कितीपूवाप
वैप्रापमदनगोपाललाल परेपुस
व्याललादिदुकराप्रदायेहै प्राये
निसनयेस्योमकायेअग्नाजोग
लकैः अखलालगावो नोगनागे
किरप्रायेहैः ११ पदलेखनायोत्त
निरूपद्रसायोइरिसंतनकापास
नैकोरइककलनमैः काहसीधि
त्यायोसाम्पुरीयोचाहैपरचैको
आयेद्वारमंडकैपोलकहाग्रानुमै
रह्योबैठितायजूतीसाथमैबुदाय
लीन्ताकादीपूराआसजेरीनिसदी
नगाबुमैः नीचबुदावैअगुसाई
बारहोयेचारिसेवासौपीसारक
जनपगआबुमैः १२ प्रथोपतिसंप
तिलैसाधूनिषवायेहैचइनिहास
कयोनिसंकदंगपार्गलैः प्रायोसो
पनाबोलेननाबोयेस्वातप्रतो
पाथरलेनरेआपग्राअनिसनना
हैः रुक्कालिप्रिडारिहोसगदकैयेः

वैशालकनीज्योहायोहायोसनन
 नसंतसनासबुगोप्येपाकृत
 वेवालरतनरादोकेसुफलबेल्य
 हाफलीरुरिहासुरिननकनका
 इकोकलसो॥नजननावप्रयक
 हदेनागीरथजलसो॥तिरथाना
 तिप्रतिप्रननिरांनकारतिनिब
 हा॥रुरिगुर॥रुरिबलना॥तितन
 हासेवाइहताही॥पूरणरिदुप्रमु
 तनुदधिमोहासदेधिबाहेरली॥वे
 मालरतनरादोकेसुफलबेलिसीव
 फली॥२७॥रुरिवसथराणबलचत्रन
 जगौडुदेसतीरथकायो॥गायेनति
 प्रतापसबहाहासतइहायो॥राथा
 बलननजनग्रन्थनिताबिर्गबहाये
 मलीभरकाछापकबितप्रतिहानि
 रदुपन॥नकनकीप्रंघरेनुवेधारी
 सिरनूषन॥सतसंगएद॥सुतस्वंगभर
 ग्रानंदनेप्रेमनहितनीज्योहायो॥रुरि

स्वरधुजद्विज निम्नलदहलपाय
चरुलप्ररुलहायेजुगलप्रका
है। मदनमोहनजुहैईष्टईष्ट
प्रनूप्रचारजकहाकपाइष्टिप्र
नयासहै॥५॥ कल॥ कात्यायनी
केपुसकी॥ बातनुगतकायेकही॥
मारगजातप्रकेलिगांनरसनाजु
चारैतालमदंजीष्टधरीजिप्रमर
तहाडारे॥ गोपनारिप्रनुसारगर
गदगदप्रबेसी॥ ज००३पंचतै
इरिप्रजापसैनहालेसी॥ नगवान
ति॥ प्रनूरागकीसंतसाधिमै
सही॥ कात्यायनीकेपुसकाबातज
कायेकही॥ र॥ कलबिरहैकंतीस
रतौंमुरारितनत्यागकीयो॥ बिह
बिलौंदागावदेसमरधरसबजा
काम॥ सवमंधिसंतपावदप्रवा
पगनधुंनरबाधिरानकोचरि
प्रायोदेसी॥ सारगपोनिहंसितासं ५

कत्तौस्त्राज्ञान्यामनुन्यौ कहीबडोकाम नयो येते
सन्तारोसोईश्रापसुनिलीयोहैः

मुदीयोफारोसोपत्तेनुवास्वोपनूरी
तिलगोप्यारीहैः राजागुवमानिकस
करोजिन प्रानपाकोःसाधुयेविरान
कोनलेकलंकदयोहैःचलेबेवमार
वेकोः ॥ धारबेकोसकेकसेनेनचमि
श्रायेनारबोत्याधनलीयोहैःकहेन
पसाचोकेकेरूवोडिनरुजेसतन
रुनोमूनंतकहास्वामीश्रीसोकायो
हैः ॥ चूपसुनिश्रायोनुपदेसमनन
योसिधनयोतनपायोनीजिगयो
हीयोहैः ॥ चूपकियहोषेतसंतश्राये
करलोरिलेतजिलेरधवारिमुधसेत
सौवकायोहैःलेकेस्यध्यानश्रायेसं
षडधानकीपोलीथेप्रपनायेऽज्ञानि
नीजोमेरोहायोहैःलेगयोतवापु
नांनोनेडिनकराथेनक्तचरकाथ
लायेचापहरीहलरसपीयोहैः ॥ ८ ॥
मूलाचालककाचरचरीचहरीइस
नुदधिअंतलेहनुसरीःसिककाप
सुदिचरतप्रसिधपुनिपंचाध्याइ

आयो प्रन्तदे धिवेकौ गयो वरैरंग
नुकिजा नो सो प्रसंग स न्यो बरै
बात व्हाई है ॥ १७ ॥ गये सब त्याग
प्रन्त सेवा ही सौ राग जिने नरप
दुष पाग्य गयो र ताये तवातः
होत हो समाज सदा नूप के बरै स
मां डि दुसन का ह होत मां न्यो ग
त पात है चले ही ल्य वायु बे कौ न
हा श्री मुरारि दास करी सास दांग
रासिने न प्रक्रयात है सुष ह
न दे धै या कौ ॥ १८ ॥ प्रको लो
प्रसोपे धे लो ग क है ये ॥ रु सिष
प्रात है ॥ १९ ॥ ठा डो हा थ जो रि म ति
दीनता नें बो रि का जे द ड मोपे को
रियो नि हो रि सुष चाषाये चरत
न मेरी आय प्रक्रया हा का छटती है
बडती सी करी ता तै ॥ २० ॥ राषी
ये सु निकै प्रसं न नये क है ले
प्रसंग नये बाल मी क आदि दे दे

अहो प्रायस्कं ५ चिसोजिवा येरा
जाबो सुपनदीयो नावले प्रगद
काबो संतसुके ग्रहमेतै जेवो येरा
जाये है नक्तिके प्रधीन सब ज्ञान
त सुहान जन प्रेसी है रंगीन लाल
ठारठार गाये है ॥ ५० ॥ मूल ॥ श्री नंद
जमोहन सुरदासकी नाम संघल
नरी प्रटल ॥ गानका विगुनरासि सु
हृदसुखर प्रवलादी ॥ राधा कृष्ण
नुपासरसि सुखले प्रधिकारी ॥ न
त्रसनु धिसंगर बिबधि नातिक
रे गायो ॥ बदन कुचरती वरस सुसा
राइ नवसे धायो ॥ प्रगीकारकी प्र
धि ये है ज्यो ॥ प्राध्यानाती जमल ॥ श्री
नदनमोहन सुरदासकी नाम संघल
पुरी प्रटल ॥ २१ ॥ टीका सुरदास महन
॥ हनकी ॥ सुरदास नाम नैन कंज प्र
नराम फुले फुले रंग प्रीके नीके जी
के श्री रज्याये है ॥ नये सो प्रमीनयो
रडीले के नवीन प्रीतिरीति सुहृदेष्य
गावकी नाव रीति

जलेकै जीवै न्पारेकौ। पोथा तुंम बा
चोहीये सारनहा। सांचो प्रजतते
मनकाचो दूरिकरै न प्रंधारेकौ। न
धोयोथा बांच्यनां मम मां कहीसा
रच्यप्रपै हत्मा करैकैसै तिरै कहिदी
जाये। आवैजो प्रतीति कसोकसाया
कैसाय जीवै सिवउ कोबैलतवपं
गतिमैला जाये। थारनै प्रसादली
योचलेजासापनकायोबोले प्राप
नांमके प्रतापमतिचा जाहै जैसी
र मजातो तैसाकैसै कैबषांनू अहो
सुनके प्रसंनू पाये जैजै अ निरीक
है। प प्राये निसचोर। चोरा करनह
रनअनदे घे स्यांमवृनसायचाप
सरलीयेहै। जबजब आवैबांनसां
धिडरपावै। वेतो प्र तिमडरावै प्रपे
बली दूरिकीयेहै। नोर प्राय पृथै प्र
जसांबरो किसोरकसां सुनिकरिमे
निरहे प्रासुडारिदीयेहै। दीयो सब

तत्राला य संडी लै उपजे सब संतन मिले
 सुरदास मदन मोहन आधीरा। ति सठके
 संतन नै घातै हूँ मै सठके लचले जब
 जागे सै। य लोचै स जरि नूप छो लिके।
 इ कहे धे धे धे प्रक का गे हूँ मै री ऊँ
 नूर गे सै। ३३ लेन को पदाये कही निय
 टरी काये। रु नै मन नै न ल्याये लिष
 च न तन डा स्यो सै। डे डर दिवान कस्ये
 धन को बिना सकीयो ल्या चोर पक
 रि लुड फेरिके सक्यो सै। लै गये ह
 जरि जर पबो ल्यो। लो लो डूरि राषो। प्र
 सो क्हा कूर सो प्रि दुष कष धा सो सै
 दो ह।। ये कत म प्र धी न्यारो करै सु
 नि द ई पु नि ता ए भ द का न ते र ध्या करै
 दि। ल न नि प्र क ब र सो स।। लि धि दाने
 प्र क ब र रा मे दे धि ली नो जा वो वा सा
 दो र तो पै इ व स ह वा स्यो सै। प्र। ये लु
 दा व न मन मा ध्य रा मै नी जि र ल्यो क
 ल्यो जो ई पद सु न्यो रू परा सि सै। जा
 दि न प्र ग ट न यो ग यो स त जो जन पै
 त न पै सु न त नै द बा ही ज ग प्या स है

गलेकैजीवै न्यारेकौ। पोथी तुमबा
चोहीये सारनही सांचोप्र तात
मनकाचो दूरिकरै नग्रंधारेकौ। न
दधीयोथा। च्यनांमममां कहीसा
च्यप्रपै हत्माकरैकैसैं तिरैकहिदी
जाये। आवैजो प्रतीतिकहोकहाया
कैसाथजीवै सिवजकोबैलतपं
गतिभेलाजाये। धारमै प्रसादनी
प्रोचलेजासापनकायेबोलेप्राप
तांमक प्रताप। तिचाजाहै जैसी
रुमजानोतेसीकैसैकैबषांनू अहो
इनके प्रसंनू पायेजैजै अ निरीक
ते। प्रप्रायेनिसचोर। चोराकरनह
नधनदेखे स्यांमवृनहाथचाप
रलीयेहै जबजबप्रावैबानसां
चडरपावै। वेतोप्र तिचडरावैप्रपै
पलीदूरिकीयेहै। नोरप्रायपूथैप्र
सुसांबरे। किसोरकहांसुनिकरिमे
नरहै। प्रासुडारिदीयेहै। दीयोसब

सुखदायक मदन मोहन आधीरा। ति सतके
संतननें घालें है है सतके लुचले जब
जागे है। पले चे लुजरि नूप बो लि के
हूक दे से ये छे प्रक का गे हमें रा के छे
नुरा गे है। ॥ ३ ॥ लेन को पदाये क ही नि
टरी काये। रु मे मन मे न ल्या ऐ लि की
बन लन डा स्थो है। हो डर दिवान क लो
अन को बिना सकी थो ल्या चो रे प क
रि लुड फेरि के स क्त। है लै ग जे
जु रि न र प बो ल्यो मो लो हू रि र लो
सो क्हा कूर सो पि दु छ क व थो लो
हो ला ॥ ये क त म अ थो र लो
नि द ई पु नि ता ए प्र द स त न त
न म नि प्र क व र सा लो नि
प्र क व र रा गे दे थि ला लो
र तो पै इ व सब वा स्यो
बन मन मा धर
गो जो ई प द सु न्यो
न प्र ग ट न यो ग
न पै सु न त

कवितक विजनमननायो कोस
र ५५५५५५५५ नन्य दासति
लीनौ जांनकाजीवनसुजसरा
निसदीनरंगनीनौ शंभापेन
ठककीरहसिउकतिनाषाधर
गीपेकेलपरबुनायकीमानदास
र ५५५५५५५५ श्रीबलनजकेब
मेंसुरतसुगिरधरबाजमानप्र
धरमकांनमोषिचक्तिप्रनपाय
दाताहसतामलर रतिग्यानस
बहासासत्रकेज्जाता परचर्याब
राजकूपरेकेमनकूकरेधेइसन
न ननातसंनार्धनइनेरतबरधे
बीठलेसनइनसुनापुजगकोउ
तासमोनि श्रीबलनजकेब
गुननिधिगो नलजा ५५५५ ति नुद
सदाप्रधेत्तसहज्जसुइमतिच
धी गुरवातनगिरिशिराजप्रलय
सज्जगसाधा बीठलेसकाचि

उपवहायो नुपमां प्रौरनजगतमौ
 थाबिनां हिन बियो कृष्णबिरहैव
 तासरारत्नो मुरारितनत्तागीयो
 रडाटाको मुरार होसकीः॥ श्रीमुरारि
 दासरहै राजगुरु नक्तदासग्राव
 तस्नानकाये को धनकी जीये ज
 तिको चामार करै सेवा सो जचारि
 है प्रचरना मृतको पात्र जोई लीज
 ये गये छरनां जिवाकै देखि डरकापु
 ठो ल्या वो देवो हंमै प्रहो पांत करि जी
 जीये कही नै तो नून तु विबोले हंमहं
 ते सुध जानै को ननो हिनुमै मेरी म
 ति नी जीये ॥ ५ ॥ छहै इ गनीर कहै मे
 रे बडी पीर न इतुम सति ध्यार नही
 ने राजोगताई है लायो धुनि पट हठ
 डे पट साधकता नै स्यां मप्यारी न
 रुजाति पाति लै बहाई ये फे ल्यगई
 गववाको ना वलै चबवाच करै नरे
 रपको न सुनिवां हन सुहाई है

नाये दीजे काजे ये सादुरि छु बि
रि दे घौ घ्याल है। तोर जो बिचा
रै नही धारज क धारै बांहा जा
नुको उमारे पैडे परस्यो ये हला
है ॥ १५ ॥ प्रै से दिन तीन प्रजा देत
वै प्रबीन नां प हाथ क हा मेरे
बिन गये जतो जे सो गये दार
रपाल बोले जु बिचार ये क ही जे सु
धि कान सुनिषि जबात करे गो
का हने सुना पृ दर ली जी ये बुलाय
अ हा क ॥ अर हरि करे करे हरि
दरे गो ॥ जाय व हा क हा ल ह ॥ अ
घनी पिछा निमित्ये ॥ सुने मेरे
नाम स्यां न क लो न हा ॥ रे गो ॥ १५
क ल ॥ रस कर गी लो च जन पुंज
सु विबन धारा स्यां न को बात क
बित बड च लु र थो थो ॥ इति
आने ॥ सारा सार बबे क प्रम ह स

नाना विधि साधीये। प्राये निजगो
नायसु निरुत्तसाधुधाये न पोहि
माजवेसे देहिप्र च्यला जीपे। १५
ग्राये बसो गुनी जनन तिगोन प्रा
धुनिप्रये संतरन चानन स्वाजीप
न देवीये। जानिके प्रधीन उचेन
रनवीन बाधि स पल सुन तीन गो
लीन नये ये धीये। राये रुध्रता य
जके वनको जाले व सगे ता संगे
न प्रा न च्यल गन गये धीये। नये
दुधरा सिधु सये ये धीये। राये रा
ये रा नये सिधु सये ये धीये। प्र
१५० धनू ल। क सिधु सये ये धीये।
रहित बालनी क सिधु सये ये धीये।
का वि निधि क सिधु सये ये धीये।
ये क रये धीये। ये क रये धीये।
रहित बालनी क सिधु सये ये धीये।
ये क रये धीये। ये क रये धीये।
रहित बालनी क सिधु सये ये धीये।
ये क रये धीये। ये क रये धीये।

गी। सुइसीससनावसदा संतन रे
बृत। गुरुधरमनिकषनिर्वसौवि
श्रुमेविदतबडोचतग्रलमरावत
कृपाप्रादिप्रतिष्ककतीधरी। कलि
कालकठिनप्रजुगजीतीयो। राद्योका
पूरापरी। पररुदिदासचलपनन
नवलवावनज्योबडौबावनो। प्र
तकुलसूदोषसुपनरुडुनही
प्राने। ति। क। प्रनूरागसब
निगुरुजनिकरिमाने। सदनमा
वि। बैरागाविदेहनकासीनाती। रा।
धरनमकरेहररुतमनसामद
ती। जोगानं गुजाग्रुवसकरनिसि
दिनरुदिगुनगावनो। रुदिदासचल
ननजनवल। बावनज्योबडौव
वनो। परजंगलीदेसकेलोगसब
परसरांन जोगेपाएह ज्योचंदे
पवननाबपुंनिचंदनकरईबिरुत
कालतमनिबिउनुदेहापकज्योहर

लीलूटायजंतीचोकारामरायेइहिल
इंनूतैदाष्यासिष्यासुचक्षीयेनयेहै
धाकायेतनबिजत्प्रागल्गायचली
संगतीयाइरिहातैदेधिकायेचर
नप्रनांनसैबोलेयोसुहागवतीम
स्थोपतिलोनुस्तीप्रबलेनिकसि
इजायेसेवेरांनसैबोलेनिकैकुटंमव
हीजायेनिकैकरोसहीगहितबबा
जीवदायोअनिरांनसैजयेसबसा
प्युष्याधिमेटीलेबिजुषताकीजाक
बासंरहेतौनसुगैसांनच्योसै७
दिलीप्रतिपातस्यासुगैदीपहाये
लेनताफोसोसुनायोसुबैबिजुष्याये
जानीयेइधिवेकोंचोहनीकेसप
सोनिबाहैग्रायकसैबहुबिनेंगही
चलेमनग्रांतीयेपसोयेनरपति

दे बित बृदावनगाजै नागोतसुधा
वरषेबदन ॥ काहूकोनांनिनदुषद
दुनांनकरग ॥ धरनइप्रतिसब
तानकोलाजैसुषद ॥ ५६ टीकासां
नरंगरेजी त्नेचहौ पदसु निकैगु
मोइजा ॥ वपत्रलप थि ॥ नैसाधुबे
पध्यायेहै रैनाबिनरंगकैसैचउ
प्रतिसेचबहोकागदमै प्रेमम
तहालेके प्रायेहै ॥ पुरहिगकंप
हांबैठेरसरूपलगे पृथिवेकौति
हासोनांबलेबताये ॥ ५७ ॥ रसौकोन
रस्यरमोर बृदावनधामनामस
नसरछाहागरे पांनपाये ॥ ५७ ॥
हाहकसी नरश्रीगदाधरजयईजा
मोमांनौब ॥ प्रादाजा ॥ रिक्केजी
प्रायेहै ॥ दायोपत्रसाथिल्य प्रो सी
वसो लगायेचाहिबांचतहाचले
ग्यबृदावनप्रायेहै ॥ मिले श्रीगुसां
जिकौं प्रांवेन रिश्रीनार सुधिना
वरिधारव ॥ प्रायेहै ॥ पडेस

नीलूरायजांलोचोकोरांमरायेदहिल
इतने दोष्यासिध्यासुधस्येनये
धकायेतनबिप्रत्यागलाग्यचली
संगतीयादूरिलतेदेधिकायोचर
नप्रनांमसेबोलेबोसहागवतीम
स्वोपतिलोनुसतीप्रबलेनिकसि
इजायेसेवेरांमसेबोलिकैकुदंम
तीजायेनकिकयोसहीगहालब
जीवदायोअनिरांमसेनयेसब
अध्याधिमेटीले
बासंरहेतोनसुगेस्यांसध्यांमसे
द्विपतिपातस्यासुलेदीप
लेनताकोसोसुनायोसुबे
जांनियोदेधिलेकोचाहेनी
सांनिबाहेग्रायकहेबहुबि
चलेमनग्रांनियोपहोये

तनमनछाजिहै ६० का रिजायन
मिते समायजय औताकहेव है
गनीर के प्रखीरस छिगईतेरा
अकबलनसहाप्रगट प्रकास
सन्नयोदुधरासिसु निसौबुलाए
सइहै साचकहेर जिनहाअनी
बलाजिउरिसबकहेरायोसप्र
योसंग्यानइहै काटिप्रवारीता
मारिबेकल्लानगयोदयोपुनो
हमेंकरादयानइहै ६१ रहेका
समेकलतप्रायेकघामाजिप्रा
ठयेदेपेसबेसाचकताजेये
प्रप्रातकौनलोतसोचसोत
रेलेनुप्रायेदे लगायनिर्घषा
संतयेकजा निकेजतायहरे
कौंगयेनुडिसबेजबमिलेअ
ऊहे जेसाचाहलयेमेरे यो
रकली चलाजलधाराजे
प्रायेधोजेहै ६२ प्रायेयेव

बेलादिदताकेनगवततेजप्रत
नमितनरवरपदजाके। निरवि
कप्रसथेन। दारनजनपुंज
परधरनिरल। श्रबलनजकेव
नके। गुननिधि। गोकलिनाथ
प्रति। आदीको। प्रयोकोनुसिधते
नल्याथेनेदलाधनकीनाधनकी।
आलपुरीये। बेराननतिराजापैत कहते
स्वनेहतेरौकेहबस्तसूनतेननेक
नेतिरकहीरुमगुरुदुहिसीजाथे।
प्रेमकाबातयांहाकरहापलटिज
तगयोदुषगतकहाकेसैरेगनु।
जाये। १३कांन्हासे। लालघोरवै
रिदीयोमनलेकेस्यामरसहाग
मेजागरसालहे। गोकलकेजाथे
जुने। नेम्पलेइतम्पेईजे। जिस
के। लुपनमांनिनिपुनश्रीलांथन
नें। ग्याइइं। तिनीं। नई। औरस
लले। गोकलकेनाथसूबे। पलेन

धचौराचंद्रजगतस्विसुखगुणजा...
रमानंदप्रकोत्सुप्रलम्बधिरप्रधान
माधोमधुरामधिसाधकजीवानंद
सीवां हृदानरायणदासनांसमं
तनग्रीवां चौरासीरूपकचतुरबर
नतबानीजूजूवा चरनसरनच्य
रननक्तसि धायेतयेताहवा॥६५॥
करमानंदजूकोटीकाः॥ करमान
दचारनकाबानीनुचारनदारनजो
हिदै सोर्नुपीबलौये दायोग्रत्पाप
हरिसेवाप्रनूरागचरबहूवासेग्री
वासाधचुरापधरायेहै काहठौरज
पेगाडिनसोपधराये वापेंत्यायेनर
प्रनूचूल्यप्राए कसापारिये फेरिच
तनईईस्यामकौजता वावावा मग
वायदेधिमतिलै न्यजाये ॥६६॥ को
तजूकोटीकाः॥ कोलप्रलु राईहोन
कथासुषदाईसुनौपहैलै बिरक्तमद
मांसनसाषातसै हरिसाकेरूपगुन

न प्रबाने सहाचारसंतोष नूतसब
 के अर्थिकारी अज्ञान गुनलन अमि
 तत्त कि दस ध्यावल्यारी प्रसन पुन
 त आस प्रनु हार अ प्रत्ये स्तु चार सुष
 ध्या न के ॥ रसि करे गाले न जन पूज
 सु विवे चारी स्या म को ॥ र य ना ग व
 त न ली विधि क र न को ॥ च नि ज न
 ना ये के ज न्यो ॥ ना न न रा ये न की प्र
 स न व ल ज नु जा गु न कि नि का ग
 ति नार न कू द स ध्या के आ ग्रा अ गु
 नि ग म पुं रान स न स स त्र स ब दे
 सुर गु रु सु क स न का दि ब्या स न
 द जू वि से षे सु ध्या वे च नु ष स
 ना ज स वि तां न ज ग मे त न्यो ॥ ना
 त न ली वि धि क र न को ॥ च नि ज
 ये के ज न्यो ॥ र स ॥ क लि काल क
 ज ग ज्ञा ती घो शो का पू रा प री
 को स द मो रु लो न की के रि न ल

धचौराचंद्रजगतस्वरुज नजां ॥
रमानंदप्रकोल्प्रलम्प्रधिरप्रवाने
माधोमथुरामधिसाधकजीवानंद
सीवां हूदानरायेणदासनांसमंजन
तनग्रीवां चौरासीरूपकचतुरवर
नतबानीजुजुवा चरनसरनचर
रननक्तसि धायेनयेता हवा ॥ ६५ ॥
करमांज दजू कीटीकाः ॥ ६६ ॥ मान
दचारनकाबानीनुचारनदारनजे
हिदै सोनुपीबलौये दायोग्रत्पाप
हरिसेवाप्रनूरागचरेबहूवासेग्री
वासाधचुरापधरायेहै काहठोरज
येगाडिनसीपधराये प्रापैत्यायेनर
प्रनूचूल्यप्राण कलापाइये फेरिचा
रुनईईस्यांमकौजताः ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ निग
वायुदेधिमतिलै न्यजाये ॥ ६९ ॥ की
लजुकीटीकाः ॥ कौलप्रलुजाईहोन
कथासुषदाईसुनौपहैलै बिरक्तमद
मांसनसाधातहै हरिसाकेरूपगुन

तद्दयुनिरुद्विबाससांतजारागप्र
 सरहाकधाकोरतननेमदसनांस
 गुननुचारईगोबिंदनरुगदरोग
 ततिलकदांसदददददहाजंगली
 लकेलोगसबपरसरामकायेपा
 लदपकाटाकापरसरामजूकी॥ रा
 लीमंतदेधिगयोकोनुअंतलैनबो
 योजुअनंतरुदिसंगमायादारीयेहच
 रेनुठिसंगपवाकेपसरिकोखनिप्रगध
 ठिगपरकंदरानैलरागीठोरप्यारीसोल
 ताबनजारेप्रायलंपलिचहापदईदई
 प्रारपालकीतकसीसांनिसारोधि
 तायेत्यपराधेयाधेनायेमैनजानेयो॥
 कछुप्रानेनिसांकिप्रवेपालवारिडा
 येकूलगुननिकरगदापरनइअ
 तिसबलानकोलागेसुषुदासजलल
 तदसुसीलबचनप्रैरिजप्रतपाले
 निरमत्तरनिलकांमकपाकरलाके
 लयाअनन्यनडनद्रिडकारनध
 बपनकनिकाजेप्रम

धौरचंद्रजगतसिद्धरु वज्रानेक
रमानंदप्रकोलप्रलम्बधिरध्वान्त
माधोमथुरामधिसाधकजीवानंद
सीवां हृदानराधएदासनांसमं
तनग्रवां चौरासीरूपकचतुरवर
नतबानीजुजुवा चरनसरनच्य
रनचक्रुहा पायेकयेताहवा ॥६५॥
करमांज दज् कोटीकाः ॥ ५८ मान
दचारनकाबोनीनुचारनदारनजो
हिदै सोनुपीबलौये दायोग्रत्पाप
हरिसेवाप्रनूरागचरैबहूवासेग्री
त्रासाधधुरापधरायेहै काहठोरज
येगाडिनहापधराये प्रापैत्यायेनर
प्रनूचल्यप्राए कलापाइये फेरिचा
रुनईईस्यामकौजताः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥
वायदेधिनतिलैन्यजोये ॥ ६३ ॥ ६४ ॥
स्तज्कोटीकाः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
कथासुपदाईसुनोपहैलैबिरक्तमद
मांसन रोधातले हरिहाकेरूपगुन

वृत्तसंगनाना कृत्स्नकथारंगरस
 कीर्तनगङ्गागनायथायैतौ पथमां
 वलोकल्यानसिद्धजां लिङ्गपूतपूत
 वेदोप्रापकथासौगन्ततरेगलागै
 सौनिघटनिकटवास्योरैनाप्रक
 सगां वृत्तासप्रसासतज्योलायादुप
 प्राग्भासौ ज्ञानानन्दसंगसौग्ननं
 गवासदुरित्तकिरैलेकेनईप्रांति
 हाप्रेकांमजाग्योसौगन्तकिरतह
 तीज्जुप्रतीप्रोग्नन्तलीलेरुपयावी
 सनेकंकहंराग्योसौपसगदाधरन
 दज्जुकाकथासे प्रकासकसौग्नसौष्ट
 प्राकरीग्नबसेरासुधिलीजीयेह
 ईलोडिसंगुलैरंगच्यतचंगकी
 येदायेलेबलायेबोलाभेरोकांनक
 जीयेबोलेज्ञापबैठियेज्जुजायन्ति
 तक्त्वाहायेयायेनहभेरोगुइइए
 हीजीये

१६

सिद्धा

धचौराचंद्रजगतस्वरु नजां ॥ क
रमानंदप्रकोल्प्रलम्बधिरप्रवा
माध्वोनथुरामधिसाधकजीवानंद
सीवां हृदानरायणदासनंसमं
तनग्रवां चौरासीरूपकचतुरवर
नतबानीजुजुवा चरनसरनचर
रनचक्रसिंहायेकयेता हवा ॥ ६ ॥
करमानंदजू कोटीका ॥ चरमान
का ॥ ६ ॥ कबिनीनचारनरनजो
हिदै सोनुपीबलाये दायोग्रत्पाप
हरिसेवाप्रनूरागचरैबहूवासेगी
नासाधचरपधराये है कोहठोरज
धेगाडिनसाधधराये प्रापैत्यायेनर
प्रनूचूल्यप्राए कसापाइये फेरिचा
तनईईस्यामकौजता ॥ ६ ॥ ६ ॥ मिग
वायदेधिनतिलैन्यजाये ॥ ६ ॥ ६ ॥ को
स्तजूकोटीका ॥ कोल्प्रलुजाईहोन
कथासुषदाईसुनौपहैलैबिरक्तमद
मांसनसाघातहै हरिसाकेरूपगुन

रसंप तिलदौरिगा रिबां धिलै मरौ
रिक्ता हं न देवा रिचा दीसो ज्ञाये के न
ठाये दई दे बीये नदी लि नई सु छे ना
मशी लि नई न ले के विचाया हो बो
ले ग्राप ले य ध्या नो हो तहा सवारी प्र
वे प्रोद सगुना ले रै ले शय है ज्ञाया री है
प्रानन के प्राणो ध्य नो प्रा नि के न पा
ये करौ त है सब माये नयो सिध बो
तार है। प्र नू को द सल निज करन
रत प्राप न रि सै न द ता य जं नो ना
ग वत गा री हो है ल हुते चौ का को नु स
ष ब ह न रे द ला यो द रि सी तें हं न दे
वे प्रायो सो ज न्ना री है। जो जो ला य हो
वे प्राये सु नि के रि सा य नु वे से वा ह
मै चाये व को धि जि स न मा ये है न स
ये हा त न सि ज्जा प्रा स को नि रा स
का यो पी यो ये मर स ल का बा त ले द
घा री है न द का कूल।
न न कि स रि गा य क ये ता ह वा।

पुन प्रथीराजक बिराजहव ७३
खाकानै रिके राजा प्रथीराज ता
कीटीकाः मारवारिदेस नीकाने
रिके नरे सब डो प्रथीराज नाम
नक्तिराजक बिराजहै सेवा प्रन
राज प्रौर बिषै राज प्रै सोराना प
रुचांनी ना सिमानों धो ग्रा जि
है गयो सो बदे सतां सो मोन सा प्र
बेस कीयो सो योन ही धुवै के से सरे
मन काज है बात दान तान प्र
मंडन ही दिठि परे पाकै हरि दे बे न
यो सषको समाज है ७४ लिखि कै
पठायो देस सुइ सं देस ये मंदर न
देषे प्र हरि नै बीते दिन तान है
ली ध्यो प्रायो सो चि बां चि प्रति हा प्र
सन नये लगे राज वै दे न प्र नू बा ह
रि प्र बी न है सु नो ये क प्रौर प्र त ग्पा
करी सो ये धराम प्र रा सरी त्या ग क
रे र स ली न है प्र थी पति जो निकै
म हा म द ई का बिल की बिल प्र धि

बानीमिनुचारकरे धरे नहि नोवली
 येताकोयेसबातहोइहसदीअनुजडा
 पायेस्वन्ननमानोनरपतीकोगावे
 प्रचूकनडाप्रतीहोइहसदीकेपुथीन
 चलेप्रायेपुरलाननयेनयेचोडन
 इनमेंसुनोकांनबातहोकेहनेसुन
 येसबजेजेनानायेदगायेसुप्रायेअ
 लूहोयेच्यारिकहेसकुचालेनामस
 हाहकारो॥प्रचूकलीगरेआराडी
 ल्यायेपरुनवेकहोमेरोबडोच्य
 होइदयेयेनयाहादीचोबडोअप
 माननयेगयेबुडोसिअनेहुवके
 नपारहोबुडलहीअशेचूनिधाय
 चल्योचरुमिअलिहोअतीति
 लेनांसिमनोतरवावहोसोलीलेन
 आयेहरिजनमनचोनगील्योहिल
 कलजायेपायोअतिसुषसारहो
 वेठेडबनोडनकोइइनेपाल

गहरिद्वारवती नाथ योपुकारेरष
कोजीये सदाचगवांनप्रापनक्ति
पुतपालकरै करेपुतिपालनेरोस
निमतिचीजीये तुरकअजीजना
मंआंनकोंनगाईग्राग्यलईग्रींवा
योरबिकीअशयुदककोजीयेदुस
सबभारे पुचूकधेतेसुबोर निजए
नवारिद्वारे: यकेनयोरसवीजीये
१८ नू श्रीधाराजनुपकुलबध
चक्तिचुपरतनावती कथाकोरत
प्रीतिजीरचकनकाचावै: कामो
कहलिनिलननइलावलनइवै: म
द्वयरणचतवनचक्तिचककोध्व
ध्यानी धमिपुलोचनकाधोरेक
पनबिलीदारीचलपननवै विसे
हाइअरेरसदक सुलधाजती उ
धीराजनुपकुलबधचक्तिचुप
तनावती ३५ ती द जो ती
एमीने जी का मांनसिधरा
ताकोधोरोनईकाधोसिधराव

राजीमें उचारकर धरना ही सा प्रसा
मेला को ये सुखात है दू स्वर्गो प्रबुद्धता
प्राये स्वबनुन मानो नरपत्नी कों गावे
प्रचूक नूडा प्रती है है प्रो के पुथीन
चले प्राये पुरलान नय नये यो जग
हर नै सुनों का न बावत के लने सुना
ये सब जे जे ना ना चंद गाये प्रो प्र
लू होये चारिक से सकुचात है च स्व
हा हं कारो न प्रचूक सो गरे बारा डारे
प्राये परुन विं क सो मे रौ बडे च्चात
हो ६७ दये ये न धा सा दी प्रो बडे प्रप
मान नये गये छू डे सिंग मे दुष को
न पार है बुडत ही प्राये नू नि पाय
च ल्यो न नू मि प्री ति सो प्रती ति न
ले नां सि मनौ तरवार है सो ही ले न
प्राये हरि जन मन चैन जी ल्यो नि ल
क ल जाये पाये प्रति सुष सार है

रोहरिद्वारवती नाथ यो प्रकारे रघु
को जीये । सदा नगवान प्राप नक्ति
तपाल करै करै पुंतिपाल मेरौ सुं
निमति नी जीये । तुरक अजाना
मध्यामको लगै आग्य लई श्री बाग
घोर निका आग्रह क को जीये दुसर
सब मारे प्रचूक पेटे बुबारे निज प
नवारि डारे । येहन घोर सपी जीये ।
७८ मूल । प्रियारा ॥ तू पतु लव प्र
नक्ति नूपर तना । ती कथा कारतन
प्रति नीर नक्तन को नावे । म्हा मो धे
उदति नि । न । लडवे । मक
द्वर ॥ चतवन नक्ति म्हा मो ध्वन
धारी । पति प्रलोचन कायो रे क प्र
पनी नही टारी नल पनस है बिसेष
ही प्रामे रे सदन । सुन पाजती । प्र
धी राजन प्रकुल बधु नक्ति नूपर
तनावती ॥ ७८ मी टा कारत नावती रा
ए म्हा मेरि कीटी का ॥ म्हा न सिंहराज
ताको घोर नाई माधो सिंघत का

बानी नै नु चार करे अदे न लि न्ना व्र स
ये ला को ये सु बा त लो दू र व नै अ उ ज न
षा धे स्व न न मा नौ नु र प ली कौ गा दे
प्र चू क नु जा प्र नो ह्ये लो कौ प्र धी व
च ले प्रा ये पु र ली न न य न ये लो ज न
द न नै सु नौ का न बा त ल के लो नै सु न
ये स ब जे जे ना ना धं द गा धे पा धे अ
लू हो ये च्चा रि क ले स कु च्चा लै न न स्
ली लं का रौ न प्र चू क ली ग रै लार डारै
ल्ये ये प रु ना वै क लौ मे नै वि डै न्ना त
लौ ६७ द ये ये न धा सा दी प्रो ब डो अ प
मा न न यो ग ये लू डै ली ग नै दु ष कौ
न पार है बु ड ल ली प्रा शे नू नि पा धे
च ल्यौ न नू मि प्री ति सो लू नी ति न
नै नां लि म नौ ल र वार है सो लौ लै न
प्रा धे रु रि ज न म न चै न गी ल्यो नि ल्यो
रु ल जा ये पा यो अ ति सु ष सार है ॥

वृक्षप्रधानरसहोर्कर्मयोगीकरे इमं तदाचहं
श्रापहीनतामैमातदै २६ अहं प्रकही चलोदारं
नितारहंही मिथ्यातृयुर्नो गयामैश्रायुर्नो गयामै
बानीमैनुचारकले ध्रुवे च नितारहं
येताकीयेहवातले दामो प्रकही
षायेसबनुनमानो नृशरु लोको गले
प्रचकन्तुता प्रदुो हरे श्री दे प्रुधीन
चले प्राये पुरलीन चय जये योजनं
हरभैः सुनो कानबातं के लने सु
ये सबजे जेनांना सुद गांध काये प्र
लूदोपे च्या निकले सकु नरो चरु
ही हं कारौ न प्रचकसी गरे २३
ल्याये परुनारै क सी जे लोको गले
है ६७ दयोपे न दामो दामो दामो दामो
मान नये गये ल इ सि गले न चय
नपारहै बुडत ल प्राये चालि
चल्यो नरु मि प्र नितारहं
ले नां लि म नौ ल द वा र हं स
श्राये रु दि जन मन चै न र्म
रु र्म जाये पाये प्र नितारहं
वै ठे ड ब नौ जन कौ द इ न र्म
ने दु स री ज उ के सी क ही ज ही न

गाही कही करे लागी प्यारी है ॥ ८ ॥
 प्रेम में नने महे मथार ले न मंग्य
 ली चली इग धार सो परो सि कै जि
 ये है ॥ नी जिग ये सा थकने ल सागु
 गाध दे धिने न नि ॥ मे धत जित्त
 मन चा ॥ १ ॥ चंदन लग ॥ ५ ॥ नि
 बी रा ह प्र वा य ॥ स्या म च र चा च ला य
 च प्र रूप सर सा ये है ॥ धु म प्र री गा
 व ॥ ३ ॥ मि ग्राये सब दे धि बे को दे धि
 र प्र पा सि ति धि मा न स प ठा य ॥ ४ ॥ है
 करि नि सं क ॥ नो बं क ग ति ल ई न ई
 द ई त जि ला ज धे ड ॥ मो ॥ न की नी र ॥
 ल्य च्छो ले दि वान न र ग्रं नि सो ब ध
 न की यो बां चि सु नि ग्रं च ल गी नू प
 के स री र नो ॥ प्रे म धि ॥ ५ ॥ त ता सि क
 ल सो र सा ल प्रा यो नाल पे तिल क
 ल कं ठा कं ठ ती र नो ॥ नू प ॥ ६ ॥ म
 की यो न र न ज ता प दायो बो ल्यो वी
 ड किं प स्त्रो मन पी र नो ॥ को पि न नि

कारिनी काल के प्रथम दिन है ७५ वीं व
नक्षत्र चिंते है निपट प्रत्यय दिन व
प्रथम सप्त निबिने प्रलन छिन्नत है
आगज जना प्रदीये चा है इन सों चा व
योली यों चिन्ना वडा के सा योगा त
त है चत्थों चढों संहाना के लई म
अपुरी प्रांनि करि के सनांन प्रांन
त जे सुनी बात है जे जे अुनि चई व
धि गई अरु वोर प्रले चूप ति चकेर
जे अं हन दिन राति है ॥ ७६ ॥ मूल ॥ कारि
को है सि पालं टली प्रचह सारिंकी धा
अरु म प्रसुर प्रजा ज प्रनी ति प्रंगुनि
के करि पुर का थौ ॥ सांग न सुत नें सा
दरा प्रन छोड रुही थौ ॥ अरा थों मध
नका ज मर न बीजा रुमांडे ॥ के कम
अज कुट के रुवे थौ क बतुर चंजनी
यांडे बाहुल बडि का बीकट क चांइन
संम चांडे सबल द्वार का दे स पालं ट
प्रचं ह सारिंकी धा प्रदल ७७ ॥
॥ का प्रपति सांवा

नाथोवाचिकैमगनसायोरीजिबह
दईहै: नैबतिबजाईद्वारखांटसबधा
ईकफूनूपतिसुं: नाईकसारतिन
ईहै: पूर्वैनुपलोगकलोगस्यदेस
बसोगनईनोडीकेजूजोगखांगकी
योबनिगईहै: नूपतिसुनतबात
अति धगाततयौलये।बैरनाव
चंद।त्पाराधतनईहै: ६१ नरपस
मजापराधोदेसमैचबावहोय
बुधिवंतजनक।६६ तसोडनारह
बोल्पोबिषैलग्नकोटिकोटितनष
येयेकतक्तिप्रकांसअविशैसीमत
अईहै प्रायपरिमाग्यलईदईजोप
संनतमराजानिसचल्योजायकरै
मननायहै: आयोतिजपुरहिगत
रिनरमितेअनिफस्योसोबघांति
सबच्यंतानुपजाईहै: ६२ नवन
सकीयोमन्त्रीसोबुलायेलीयोदाय
कहैकटीनांकलोहनिश्वारी

जा नौ तादा जा का ता तले का गनीये दि
गने का नाथ निरौ स्वास्ति जन्त नोन
रु जटल का नौ अरौ व गुण शोनीरे
नरु ज कि सोरक ह नद के का नोरक
बृहदावन चंदरु शोनी विवाणी
हे सनत वी कलन सगि से का चात
चरी ती ति थ से न र क धु प्री ति थ स चा न
ये २० का र बा र क से क र क से ज र गौ
के र ब से इ ग नी का प र न र धि ना र
प र ता म ति बान का को र इ ब ना ति
स्व न नि ज गाल का ला धु का पा न र
जु र पु ल कं द रौ का सो सौ ति थ र
ब र सि क न रे स र बा नी क र
ट ल ल धु डा दु रौ का नौ रौ
दा न गु रू ब रू का रौ थ रू ज रौ
न रौ रौ रौ नि स रू रू न स न्यौ क रौ
कौ रू रू रू रौ दे दे रू रौ न रू ज रू
ग रू रू रू रौ क धु रू रू थ रू य रू क रू ज रू
ष रू रू रू रौ त रू रू रू रौ ज रू रू रू रौ

दया आद्य वाकै बचन सुनाये है क
रत पुना मराजा बोली प्रजूलाल ज
कूने कफिर देयो ये कबार ये
ये है बो ल्यो न परांज धन सन्ती
तिहारे धारो पतिपे न लो न कही
करो सुष नाये है ॥ ५ ॥ राजा मान
साधो सिंघन ने नाई चह जा ॥ ६ ॥ क
रत सा बूडि बे कौ नरि है बो ल्यो बडो
नाता प्रब का जाये जत न कौ न नौ न
गियान कियै ह्यो रे सुधि दई है न
न ध्यान कीयो तब आनि कै कि नारो
गयो ही घो हल सायो ज उचा जई
रई है करो आये इस न बीने करि
गयो नूप प्र तिही प्र नूप कही ये ब्रा
र गई है ॥ ६ ॥ मूल ॥ धारो घ पर सि
कुल का थ ड्रा ज ग नां थ सी वा थ
म ॥ आ रा मां ॥ इ क्तो ॥ धी ति र ति प न
र दे धा स्थो सं स कार स म त त्व ह स
गो बु धि नो वि चा स्थो ॥ स दा चा र म्

जानौं ताया जाका बात ले बबानीयेता
गसोषवासनिसौखासनिचरतना
रटतजटतजटनपेमरांनानुदप्रान्ती
नबलकिसोरकबूनंदकेकिसोरक
बूछंदबनचंदकसाप्रार्थेनरिधानी
धौसुनतबीकलनईसुनिबेकाचास
नईरतिथैरनईकधूप्रातिप्रसचा
यो। ७७ कारबारकसैकलाकसैउरगसै
केरोबसैइगनीरउश्रीसरीरसुधिगरी
पूछोमतिबातसुषकरोदिनरातिथे
सहैनिजगातरागीसाधकक्रपाचईस
प्रतिउतकंटादेधिकस्योसोबिसेधस
बरसिकनरेसनिकाबानीकहैईसै
टसलधुडापुश्रीसिरासनैलैबैठायै
त्रासिगुनूबधिज्राइसोयसुजांनौरीति
नईसै। ७१ निसदिनसुन्योकरैदेधिवे
सोउप्रबरेदेवेकैसैजातजलजातइ
नरेसैकधुकनुपायेकाजेसोसुनइ
पायेइजे। तबसुतौजीजेवैतौप्रानिउ

नैकु प्राप्य च लौ नुसारति कौ बिले
किये जुबडे सरब गणकें दू धे नही जाये
५५ पाये परिगये लेके जाये दिगवा
नेये चाहुताये राधोपेन फिर सोच
पर्यो है जा निगयो प्राप्य दृष्ट्या
को प्रताप प्रये मारों कर जाये ये बिच
र मन ख स्वो है मुठिहें ब्यादा नति
ज प्रागे प्राई नही चाहुत्य पटा न
यो प्रे सो मानो म स्वो है कै करि द्य
ल जा जिवायो स्वम जायो प्रीति पंथ
सायो सीये नायो रिध क द्यो १२००
निस्पक न राधो हादासको प्रेम पु
प्रागे बढौ पद लानो प्रसिध प्रीति
जामे दिहनाते अविस्तन जये न
मदन मोहन संभारतो जा चत स्व
को नु प्रा हि काहिये य स्वनि प्रावे
चित्रि पत सार स्या विनगी देसा ज
दिषावे सुडी या सराये देष ल दुनी स
पूर पदवी को चढौ न लकन राय न
सको प्रेम पुज प्रागे बढौ ॥ टीका

रिर्भूमिमीश्वरानदासबधुपातलव
नहरजसगांयेनाजौसूरोमदासन
रद स्यांनपुनिरुनारायेनक
स्त्रिजावनचगवानजनस्यामदा
सबिहारीग्रभतदा। गुनगनबि
दगोपालके येनेतजदयेदरदा
निरवर्तिनयेसंसारतेतेमेरेजज
मानसबनधवरामैरेनिप्रसरोम
गंगाधूवे तनवासी। अचत
कुलकृष्णदासबिरभ्रंमसेसस्या
सीकेवासीकिंकरफूडाकृष्णदास
धेमसोडागोपा नंदजेदेवराघो
बिदुरदयालदामो ज्ञोपुन प्रमा
नदनधवरधनांधीचतुरोनगन
कुंजजौकजेवसतग्रबनिरबरत
येसंसारतेतेमेरेजजमानसबाप
राकबिदुरजकी॥ जयडेहिगही
मेजेतारनिबिदुरनयोचयोहरि
नकसाधकसेवानतिपागीहोवर

राजांगयो चीतरसौसेचनयो पाये
पृथिलयो कासुनरनबषांनिके
तन्नतो बिचाराग्रलेमोडी हीसुमार
जातिचयो सुसुषुगातनक्तिचावन
रुग्रांनिके प लिष्योपत्रमाजीकौजू
प्रातिहायेसाजीजोपेसासप्रबाजी
प्रापराघोतजिप्रांतकौ। स नामधि
नूपकसासोडीको बिरुपनयो रह
प्रबमोडीके हीचूलोमतिजा निके
ट ॥ लिष्यो देपढायोबेगपसांनस
लेप्रायो जसारांजी नक्तिसांनीसां
ईघातीबांघीये। प्रायोचदिरंगबा
चिसुतको प्रसगबारनाजेनेफुले
लदूरिकायेपेनसांचेहे। प्रागेसेव
प्राकनसो मरुलबस्तजायत्यायेया
हीदोर प्रचूनीकेगायनांचाये। प्र
नूपपत्याग्रदोये। लिष्यपत्रपुत्र
ईमोडी। प्रजुतुंमहितकरिजाचाये
१० गयेनरपत्रदोयोसाससौलगाये

कविप्रगसगकोलघावनयोदयोचर
अनवथ्रुपाकरिलाजीयेध्यामप
अरायेसुप्रपापकेपनामकरीधरी
वृजन्मि नुरवसेरसपीजीयो
गोविर्दजूकोचौरसाइलकरि
सा सिंगारराजचोगनदगांसमै
गोवर्धनराधाकुंदुलेकेप्रवैबृदा
वनमेनमैहलास निलकरैचासिजा
ममैरहे पुनिपावनपैचूषेदानती
नवीते प्रायेदुधलेप्रवीनयेनुरंगे
स्यांसमैसांग्येनेकपांतीलावोफेरि
प्रलेपांतीकहादुधमतिंनिसकहा
कांसमैसंधांतीसोनकाजवृजन्म
मैबिराजदुधपीवोवैरखरयेहप्र
ग्याप्रचूदईहैयेतोवृजबासीसबै
पीरकेनुपासीकेसेसोकोलेनदेहै
कहादेहैसु ननईहैडोलेध्यांसधा
मस्यांसकहोसोहासा निलीयोदी
योप्रचैहु प्रतीतितवचईहै जहांजा
धियावै पात्रबेग्यप्रापहुडि त्यावै

आदिबोकलंकहनप्रावेयोसुनावै
पकाहृद्युधिव्रतनैबिचारीलेनु
रोलेपुनासुरजो... योजरामैदाजे
डिलीजेमारियाथैतेप्रकरिवालि
बातदावडारीयो।सबनसुहाइज
येकरोमननारी।अथोदेष्योषवा
सिक्कसोसिंघजूनीसारीयो।॥३॥करे
रुदिसेवान्नरिरंगप्रनूरागदुगिस
नीयेसुवात... नैकनैननुतपरै॥
चावृहासोजानैठठिसनमानैअरे
अज्ञानेरेनागअज्ञानिरस्यंघजूप
थारैहै।चावृनासचाइविहासोना
लेदिघाईफूलमाहपहनाईरिचिटी
कोलागैप्यारैहै।नौनतैनिकसि
आयेमानौघनफारिबिसुधसमु
रुततकालमारिडारैहै॥॥४॥नूयकै
घबरिचईरांनीजूकासुधिसईसुन
कीचान्तिप्रापनूकहोकैप्रायेहै।
अथसासटांगकरैरुरामतिचरी

कविप्रगसंगकौलधावचनयोदयोचर
धनवधूपाकरिलीजीयोधासप
धरायेप्रुपथायके पुनामकरीधरी
प्रजन्मिं नरखसेरसपाजीयो धृ
गेबिर्दज्जकौचौरहाइसकरि
सा सिंगारराजचोगनदगांमने
गोवर्धनराधाकुंदलेकेप्रविषदा
प्रनमोनमैहलासनितकरैचासिना
मनेरहे पुनिपावनपैचूषेदानती
नवीले प्रायेदुधलेप्रवीनयेनुरंगे
त्यामनेसाग्धेनेकपांजीलावोफेरि
प्रहेपांजीकहादुधमतिनि सकली
कामनेभीपांजीसोनकाजसृजनुम
नेबिराजदुधधावोवरवरयेरुप्र
ग्याप्रचइईहै येतौप्रजबासीसब
धीरकेजुपासीकेसेजेकौलेनदेहै
कहाइहैसु ननईहै दोलेधांसध
मस्यामकह्योसोहीनानिलीयोदी
योप्रचैहु प्रतीतितबनईहै नहांजी
धियावै पात्रनेग्यप्रायहुइ त्यावै

क. इतइदं. राप्रथालिनुजराग रांत
दास सुतसुनग्रं. निदयकाके
नुरधोतनपुनदतेनचैंगपस
नका पारथप्रसिद्धुलकायडाज
काधसीवाधरना १७ कीरतनकरत
का सुपनरुमधुनादासनिमंडीयो.
सराचारसंतोषापरदिसुठिसालसु
नाथीसे सुसलकदीपकनुदैनेदतम
वरतु प्रकारे सरिकोलीये बिस्वासनं
द्वदनबलभारी कलकलसकोने
मजगजानैसिरधरीश्रावृद्धमान्तु
रुचनरतिसैलंगु सैनिहिछांडीयो
कीरतनकरतकरसुपनरुमधुरादा
निमंडीयो: २८ दीका। ससिकैतीजा
नासिनक्तिरसनरसिकरीकरीयेक
तताको पुगटलुनाईये: प्रायोनेष
रीकोनकैरसालगामसेवाडोल्स
गासनपैप्रानिनीरथाईसै स्वा
केजुसिषनयोतिनरुकेनावदेवि
तीकोपनावप्रापकसोहाये: ३०

काजीयेविचारयेकसुनतिनुपाये
कहानिदिल्यावाजलगइ २कलये
नलइतसमईसबनगतनिजिमाइ
है ॥ ५७० ॥ अथ ॥ ३ ॥ अथ देधिप्राप
सीबराइहायेकाकैम ॥ ३ ॥ इदुधसा
गुबुडापूहै ॥ विमृषविचारितायकु
जाजूनिकारिइई ॥ पतिकीयेअौर
सीमनअइहै ॥ पस्योहाअकलबे
बेटीसोनपाहिसकैतकैकोनुदोर
कतिप्रतिप्रकुलाइहै ॥ लायेसंगक
होइए ॥ ५७१ ॥ ता नूषनोइप्राप
रीजायराकैखांजीकोसुनाइहै ॥
५७१ ॥ नांनोबिधिपाकहोतसंतप्रा
वेजेसैसोतसुष ॥ धिकईरीति
कैसैजातिगाइहै ॥ नतबचनवाक
दीनदुधलीनकहा ॥ ५८ ॥ अथनका
मनकांदिद्याअइहै ॥ देधिपति
॥ ५७२ ॥ अतरोयतिदेधियाहिकैसै
कैनि ॥ ५७३ ॥ संकेपरीकरनाइहै ॥ रहे
॥ ५७४ ॥ करौकरौपहोचैप्रहारतुसैमै

रिहाके प्रागेनरतिकैरैहविषयवैसीह
देसनिमेंजासांनिकीनारहो।।हड
सरायेमधिजायेकेनिवासलीया
योसुनिनामसोमलेछजातिमीरो
बोहिकैपठायेकाजनहदिजनसब
प्रायोहोस।दनगुनीत्याघोचास
रीहै।प्रायेकेसुनार्नईबडीकठ
शुबकाजेजेईनार्नईनिपठप्रथ
सोबिनाप्रनूप्रागेनिरतकरीयेन
मथेससेवावाकेप्रागेकहोकेसे
सतारीयेयेकवोरबेदोमीरनिर
नैकेरइगमगनकिसोरसुपसु
लेबिसारीहो।याहैककधुवोरसे
रेओचकहिप्रानसाधिराहि सुनक
नकोनोमीचलागीप्यारीये।अनू
गुनगनबिसदगीपालकेयेलेज
नयेनूरिदाः।बोहधरानगीपाल
वरिबरगीबिंदसाकलध्यातसांन
जसवंतगदाधरप्रनंतानंदचूल
कीयोयोविचारउंचेसंधा
लमीनिहादिदि

षाननईषेतीसुविजगई। च्यंतानई
प्रचूप्रग्याईबडोबडनागीहोषेत
कूकटावो। जोगसुवो। जौबड। वापावे
दोरुझारनगांप्रचूसुन्या। प्रेतिजागीह
करावहा। रीतिले। गारे। धैन। प्रतीति
गाये। हरि। च्यंतैरा। सिल्यागी। प्रन
रागीहै। मूल॥ श्रीस्वामीचतुरौनग
नमगनरै। निदिन। चमन। हित। सह
पुक्तप्रनूर। कन। तिकमंडुलको। पोषल
पुरमथूरा। बृज। चो। निर। कल। सबली
कैतोषता। प्रमथूरन। दिहु। कदन। देव
श्रीगुरुप्रारा। ध्यो। मथूर। बेल। सु। विठे
रहरिजनसुधसाध्यो। प्रकंत। मंडल। प्रन
तजनजस। बिषल। रेतजासु। नित। श्री
स्वामीचतुरौ। नगन। मगनरै। निदिन
मजन। हित। ७। वटीका। प्रचै। गुरग्रे। ह
योसनेरुसौसेवाकरै। ध्ये। रं। हा। सेसांचे।
नावू। प्रतिमति। ची। जीये। मट। रु। ल। ल। ग।
पदई। रूपवली। ली। प्रा। ही। यो। वा। सो। क। ली।
यामी। क। रं। सो। ली। की। ध। नी। लो। ने। म्मो। जुर।

नहीं है। प्रायोकोनुकालधनमाल
इति ब्रह्मालनये च्यासे पनपास्यो प्रा
ये जलप करारि तैरसे बिप्रदुषस
निचयोसुष चूषबुढी प्रायोयोसं
जातु करे। द्वारामन प्राइसै। प्रति
सनमानकायो व्याधो जोईसोपि
दीयोला योगाठि बांधि। फतव
बीनतीसून। इतै सतन जिमावो
चावोरासलेकरावो चावै जैवो सुष
पावोकाजेबातमन नचाइसै सीधो
लायेकोठैप्यस्योरेकहोसोयेली
नस्यो। हुजनबुलायेदेत किहनुष
ठाइये जितनो निकासे तत तै सो
गुनो बढत येकये डोरबीसगुनोदे
प्रठाइये ५१५ ५२०। इसवलनक्त
जेमालकी रुडारापीराठबडनग
तनसो प्रतिचावनिरेतरअंतरना
सी करजेयेयेक पायेकुदतमन
गपामोसी। प्राहुंदाबनबासकुजन
डासुच्यचावैरथ्याबलनलातवि

तिसुषपावैकानालालानसमसिनोऽ
१०॥ जूल ॥ अंशककराशागसेवेन
रुत्तिनप्रह्वर्वालसानकाथोपजोप
जांनंदप्रथोर्नद्वारकाभुशराजारा
कालकसांगावेरिचल्लोचगजाचा
जोरा॥ अंशकलदोडे वेनपद्मगोप
जिबोनेजेतारिलगोपलनकेनरुप
वेनोत्पलायोअंशककराशागपसे
रगततिनप्रह्वर्वालसानकाथोप
दूषान्दुर्गाका॥ अंशकलदुपसाग
कुलनीस्तारुथोकेकनमेला
यकसेवाम्प्रीननंनकेन
जायेवहस्तजोकिकिंनदुलनला
दोपवेकेनदुर्गाका॥ अंशकलदु
नदुर्गाका॥ अंशकलदु
सिधकेननीयदुर्गाका॥ अंशकलदु
दुर्गाका॥ अंशकलदु
नेननीयदुर्गाका॥ अंशकलदु
दुर्गाका॥ अंशकलदु

चरजलोगप्ररीगोमथकमही ॥५७६॥
आवतहाभगमांठिछुटिगयोतनप
नसांचोकायोस्यांमबनप्रगटदिषायै
है। आयेइसनकायोईवृगुरप्रेमनरि
नेमपस्यौपूरोजायचारघाटकायोहै
पाथैआयेलोगसोगकरतनरतनैनै
नसबकहीकहातादिनहाआयेहै। न
किकोप्रचावयामेंचावहैरब्रानौ। ति
नबिनकृपासरिबेकैसेजांतपायेहै।
॥५७७॥ कूल ॥ नगतिनारजूडेजुगल
धरमधरधरजगबिदत। बामोलीगे
पालगुननगंनारगुनारटदधिणदि
सबिदसदासगावकासीरमजननन
नगतनसोंयेहीनायेनजेगुरगोबि
दजेसै। तिलक। मआधेनसुबरस
तनप्रतितैसै। अच्युतकुलपनयेक
रसनिबलौज्योआमृषगदित। नग
तिनारजूडेजुगबलधरमधुरधरज
गबिदत ॥१५२॥ नकुल ॥ मदीका ॥
रहैगुरनारिदोनसाधकसेवाहीयेप्रेसे
धदाईनईरी तिलेचनारिहै जायेजह

लिसुषपावैकानीलीलासमईसो.
१०॥ मूल ॥ अंमककरीजायेसेवेन
कृत्तिनप्रहंबलिसानकीये
आनंदप्रधानंदारकासुधरा
सांगानेरिजलो

जैतार

ककरीजायेसेवेन
तिनप्रहंबलिसारकीयेगा११।
काः कसतकुफारडग

आयेबहुसंतज्ञातिकरिलेप्रजंतदु
नप्रतप्रपेसीधोनही

३

३१

सिबेकौबनीया

कामहैकायोबोलकहांतोलि
नाकैरोलिकरितिसौजावायेडी
नैप्यारोयेकस्यामहै११रायेकुवा

पृ० ५२० साधुग्रूप राधजहाहोतत
ला आवतनहायसबमानसंततोहा
प्राये देधिप्रातिरतिहमनिपदप्रस
जचयेत्वयेनुरलायेजालुआकवीरपा
प्रेग्नागेजोनितारैचक्ररजिद्गथा
रेचलीबोलेहसिग्नापकोडमित्यो
उषदाईहैकतगौहाजूलानिईनईह
पापूरनयोसेवाकोपुलापकहोका
सगगाईयेः ५२१ कालकपाकी
रतिबिसद प्रभपारषदसिषबिस्त
गटग्रासकरनीधिराजस्वपजगवा
ननक्रगुरुचत्रुदासजगत्रनेछाप
शीतरजूचातुरबस्त्वार्थेग्रदभूतरा
मेमलधेमेजनसाकृमध्याचारस्य
करार्थमलगौरदेवादाजोइहरिरंग
राचा स्ववैसुमंगलदासइडधयस
करेश्वरनजननर किलकपाकीर
तबिसद प्रभपारषदसिषप्रगट
५२२ रसरसिजुपालिकनक्र
राज नाथच इनिरमलधेमेकप्रग

नित्यमिदं धारयैव नानुसृतैः
प्रपन्नपातनीयापूरीकौप्रका
रन्नेनयेजबन्नेविदाकीनीनु
वैःपूतिर्यत्तानत्रैलधालप्रव
संज्ञांजलासत्त्वं रंगरेरसचारस
सैःकरैनाकोः यस्मैलसेवावि
लयेकरैर्नापूतं यद्यद्युज्यासक
ननइति नानानिस्वादीदीको
ईननोत्पत्तीया निलगायलबल
लानितिनइति निलगायलबल
नयेसिधसतं निलगायलबल
सिद्धप्रयाग सकोधजाः
रसबन्तल देदीपूरनबनद
धारीको नानदिवाकदि
गनायत तिरदैकिसैः
धरेषमधं शौरुप्रनूग
विधिताधर रमधील
जिनसिर ननसर्वेसैः
नयेसिधसतं श्राप्रगु
नरतल उच्यते

अत्र निरात्मको दिकामस्तै नृलेखा
जकामः सेवासांनसी पिद्यंती है।
वीतिजातज्ञानितनवांमिग्रनूकुल
ये फूलिफूलिग्रंगगतिमतिद्युवि
सांनीये ज्ञायोपतिगौनोलेनचापे
पितकांतसाये लीयेद्यतचावपद
ज्ञानरनग्रानीये पृष्वरपस्योसोच
नारीकलाकीजीयेविचारीः साडच
मसौसवारीदसुरतिकेनकामकी।
तातेहेहोत्प्राग्मनसेवेजिनजा
ग्य अरेदिसै गुरुहागकरिसांचा
तिस्थांन वा लाजकोनकाज्ञोपे
सैवृजराजसुतबडोसीग्रकाज्ञते
करैसुधिध्यांनकी ज्ञानीनोरगौन
होतसांनीअनुरागरंगसंगयेक
हाचलीनीजीमतिबांनकी पृष्व
ध्यानिसिबिकसायोबसीसापेन
तिसोपुरनसनेहननसुधिबिसर
देः नीरनयेसोरपस्यो पितुसांत
अकलोपेनाननदोरसेगुहिअप

रठोरकेयाहरिकथाहैप्रतिहरिज
वैमकरबचनबुलौलापे
बिधितिनैहैलडावे।।मनावया
निरदुषनरतिचेतसी।।

२३५५।।मूल।।

रजतरुफनकारि

।।नैजिनरसबिलासक
तिनकावै।।नकनकोबस
कार

शैलुंनुभगवाजकेः।।१५५।।टाका।।
श्रावैमथकपुरीने
सिहैमहाबुटा

इयोसंतनजिमायेना
यायायेहुजिनबुलायेक

बिजन्तततननप्रेसोजानौ। जोये
योचाहोकरौपीतिजसगाइये।
कहीतुमकटीनांककटेजोयेहा
नाकयेकनगतिनाकलोककैने
होये। बरसपचासलगबिधैहामे
बासकनैर्यो। तउनउदासम
कौचबाइये। देवेसबनोगकैने
धोयेकस्याम। जातेतजिकामत
सेवामैलगाइये। रातितैजोघातह
तअसैतनजातनयोदयोलेसरु
पनूगयोहायेप्रायेहै। ५२७ प्राये
निसधररुसिसेवापधरायचाहिम
कोलगाये वहा। ८९९ सुप्रसन्नो
जातप्रावतननावतमिलायेकहं
पनूपय्यैद्विजकलासुधिप्राइसैबो
योकोउजनध्यामस्यामसंगपगे
इनिप्रतिप्रनूरागे। बेग्यधबरिन
गाइसै। कहीतुमजायेससायेप्रसास
करो। कहीनूपप्रायाहायेचाहउद

विप्रतितासिलउवैः प्रमधरमनत्र
ध्याप्रधानासदनसांचनिध्याप्रेमज
अडः जसर्वतनगतजेमांलका॥रुड
राधीराठबडा॥१५६॥मूल॥सुरादास
नगतनरहितधनिजननीयेकेजन्ये
प्रमितमहागुनगोपिसारबिंतुसोही
जांबी॥देवे॥कोतुलाधारदूरग्रासेन
नमानो॥देयेदमांभूयेजबिदतबुंदल
नपायो॥राधाबु ह्येन ननुनप्रगर
प्रतापदिषायो॥प्रमधरमसाधनसु
दिहकलजुगकांरचेनिनेगिनो॥
सुरादासनरुनरिनधनिजननीये
केजन्यो॥१५७॥सुरादासमहाजनकीटीक
सुरादासबनिकसोकासोहिगबासदुर
को॥ताकोयेरुधननगत्यागोबुजने
मही॥नयेजुननाडीथीनयाडिगये
बेदतंनबो॥योथीप्रबानसुंदाबनर
सकुमरु॥बेटीचारिसंतनकोहृद
प्रगीकारकरे॥धरोडोलासांकिमेक
ध्यादनइगलाकंमहा॥चलेसाब
ध्यानराधाबलनको

नी ज्ञानरंगचढौ नारी: नावकवि
हनि इग रूपचढ नितताये ईकी
र हनि जो विलद र नितताये प्रे
लत नै जाये किले त्वा ग्यत नचा
वनां सो. केलत ज्ञपार सुधरी कि
दे सवारी से प्रे नका सचा ईता की
रा तिले दिघाई नई नावक निसर
साई बा तलना गी प्यारी से ५५०
सवास्यां नमन नावतौ: गंग गुवाल
गं नी रमत स्या का नुज का सखी नां
न ज्ञा गन विधि पायो गना लगाये
बुज गां व प्रथ कनी कै क रि गायो
कल्ल के लिल सव सिंघ्य प्र ब्रुट नु क
तस्थर ली तार सके नि ति न गन
ज्ञ सद ज्ञ लप न कर ली: बुज बा स
सबुज नां थ गुरु न ली चरण
रुज ज्ञ नं नि गति सवास्यां नम
नावतौ गंग गुवाल गं नी रमत
ध ३ टी प्रथीय ति ज्ञाये सुं द ६

महाद्यौमैबुलायेहलसायेऽपूजासंग
गाडीसांभा... सोचंडारीसोमिलारिये।
आकोतातपुत्रहंतघटतीनसहाजात
आलवेनजानैसुखसांनैरनचायेहस
बडेगुरुसिद्धजगबैसांप्रसिद्धबाल
बानैकरजोरिकहिकैरुजाहै। ५७
चारुतमसौचोकायोहलसतहायो
नितलीयोसुनिबोलेकरोबेगपदेत
पारासौचहंदिस्डासोनीरकस्थे।
नौतोप्रेसेंचार। प्रावेबहुत्तरसंत
रनिसवारीहै। प्रायेहरिपारियासु
औरतैनिहारोनेनजायेकाधारिसी
सबीनैलेनचारीहै। नैजनकररबेदि
नपांचलगिष्ठाये। ररुपठपहनाये
सुषदायोअलिचायेहै। ५७
गुरदैनेरप्रावेकिरिप्रासिपासि
क्हासुषरासिनांबदेवजूनिहारैहै।
बुजलबसनतनयेकलेप्रसन्नमन
चलेजातबेगपसीसपायेनमैप्यारी
यो। बेहादेवताश्रीकवीरप्रतिधारस
धुचलेहोनचारी। पुदधिणाबिचारी
दोही क्तनतक्षपकोधारिकें।
कंपाजिनवैकारी श्रानि क्तता।

नरिनलागो विस्तरातसमराति
बने रैतनताज्यो न। कववातीवृ
दमधिहलसेज्योरज्यो परीनक्ति
सरि - - - - - घापुदे गुरुपरतापगाढी
गली जीवतजसपुंतिप्रमपद ला
त्यदासदौनौरसही १६५ नकनक्ति
नगवंतरची देलीनाथोगुवालकी
निसदिनवैसैविचारदास जिसवि
धिसुषपावे तिलकदाससूत्राति
हेरदेग्रीतिलरिजननाव प्रमारथ
कोकाजिहियेस्वारथनहीजांने: इस
धामतकदाल सहालीलागुनगाने
नारीतलरिसीवस्मृश्रितिश्रितिप्र
तिपालकी: नकनक्तिनगवंतर
चीहेलीनाथोगुवालकी १६६
श्रीगुरुसुगुरुप्रतापते पूरापरीप्रया
गकी: नानसवा चककार्यराम
चरननच्यतदानो नकनक्तिनर
प्रमनाथगोक रिसिरत्वाने: रासम
यमनिज्यो: नकनक्ति दिसादिधारी

ननिगलपुरांनसारसास्त्रजूविद्या-
 ली॥ ज्योपा रौदेपुटहीसबनकोसा
 रनुवास्वो॥ श्रीरूपसनातनजवृत्त
 तारायेणताप्यो॥ ह्योसरबसनु रसा
 चजतनकरिनाकैराप्यो॥ फेनाबस
 गोपालसुवरागीप्रबुरागकौप्रेनस
 वरसिनुपासिकचक्रि राजनाय
 नकनिरमलबैर॥ ६० मूल॥ कठ
 निकालकलजुगने॥ करमेतीनैकल
 करही॥ नखरपतिरलियापकृष्ट
 पदसौरतिजोरी॥ पबेजगतकाफा
 सिचकतिनकाजोतोरी॥ निरमकुल
 कायडाप्रनिपरसाजिनजरी॥ बिद
 तबुदाबनबाससलकुषकरतवडर
 संसारस्वादसुधवातिकरि॥ फेरिन
 हीतिनतनचली॥ कठिनिकालकल
 जुगनेकरमेतीनैकलकरही॥ ६०
 काबाईकरमेतीक॥ सेषावलनरप
 केपिरोहितकाबिटाजा॥ बाल्लेज

चार एक हाथ में न साल या कै पाये
चलि जाइये। ५१२ जानीये सुवात पर
चावै काफ़ि जात ये सुप्रबहा बिलात न
लेचैन को उधरीसे। जमना लौं प्राये
अचरज सो लगायो। अनत न प्रक
वायो। अति वाहा रूप करीसे। चरन रि
अस्यो सा संपद वृ। प्राये गयो प्राग
प्राचरन ही देवी कला करीसे। लागी
चर पटी प्रन सम जियरे चरन टी
नई नई न नीर करीसे। ५१३ कथा प्र
मी कहै जासै गैसै। नाव नरे करे
तपाइधि। सुप्रजद वष पायोसे। जा
कै संधा प्रापात स्या लउ रदा। जये
कही तीया नली को समूह बर ध्यायो
प्राये चावदार कहै च नोइ सीवा
वारकारी प्रनू प्रागे अस्थो चाहेसे
चलत बस गाये। येन

५१४ को नरु नगवान ही
अनि बैवे

है। च्यासु वोरदोरिनरुप्राये दिग्दिर
 ज्ञानिनुं टकेकरकमधि देसजादुरा
 है जगद्गंगाधिकोनुप्रेसाबुरील
 ७॥ जामेबहुदुगंध्यसोसुगंधिस
 सुलाइहे ॥ ५४ ॥ ७॥ तिदिनतीनवाक
 कलीमैसंकनसीबंकप्रतीतिरीति
 सेकेसैगाईये ॥ ज्ञायोकोनुसंगता
 संगगंगतीरप्रारिबसासोअन्हायेदे
 बनबनाइये ॥ दुदुतपरसुनामपिता
 कपुराज्ञाये ॥ येलेलेबतायेजायेम
 चूरमित्तायेहे ॥ सदानबिपन्यबृस
 कूड प्रवरयेकचडिकरिदेषी नूनि
 सुब्रानिजायेहे ॥ ५५ ॥ ५॥ नतरिकेअ्राये
 दोयेपायेलपडायेगयेकटीमेरीन
 जगन्मधनदिषाईये ॥ चलोग्रैसबास
 रे ॥ लोकनुपलासिहरोसासबदजा
 मतीसेवच्यतलाइये ॥ कोनुसिंबव्या
 धरंबपकोबिनांसकरेवासमेरैहेन
 फिरमित्तजिवाइयेबोलाकहीसंज

पावैयेकतुमही प्रीजेहै लेवेदेस
गावसदापावहीसौलागेरहंगहन
हीनैकुधन... पायेबरुध्राजेहै
संगदेमसावताहीकालमेंपदाये
योकपाटजायेलेलात्तप्यायोतलध्री
जेहै ५६७ ^{जूल} दुनीयाजाहिदुबरो
कहै सोनजनप्रतापसोटोमहतस
दचारगुरसिषत्माग्यबिधिप्रगट
दघाडीबाहरिनातरिबिसदलगी
नहीकलजुगकाई ॥ राहोहृचिरसुना
प्रसदप्र... लापनचावै कथाकी
तननेममिलेसंतनगूनगावै ता
तोल्यपूरौनिक्सज्यौंछनप्रसुंनिही
सहत ॥ दुबरोजायेदुनीयाकहैन
नप्रतापसोटोमहत ॥ १६४ ^{जूल} ॥
सनकेदासतकौंचौकसचौकाये
मडी ॥ हरिनावायेएनपतिदपेंम
रैछैबिराजै ॥ गावहूसंगाबाद
रलनधौचलध्राजै ॥ चेलसेतुल
दास ॥ नरप्यावे कल्याणो ॥ लो

होवे देघिन पप्रतिरीति पूछास
बात (कही नैल प्र प्रपात बह रंगी
चास नैल बरुडल प्राये नूप जोये के
अवाये ल्यां नुं पां नुं जोये नाग नैरे
हुडा चा रु प्र ग नै ॥ काल इ के तीर न
ही नीर रूप दुग नूप लबी रूप क
औरै क हा क रु जे न संग नै ॥ ५८ ॥
मूल ॥ जो बिंद चंद गुन ग्रंथ निकोष
रग सै न बा नी बि सद ॥ गोपी गवाल
धित मांत नां ज नै क थो चारी न
हो न के लि दा प क प्र चूर प्र ति बु धि
बि चारी न स् वार स धी गोपाल काल
त्या ल नै बि त थो ॥ का प्र थ कूल नु डा
र न कि दि ह प्र न त न च त थो ॥ गो
जा तं व न र च्या न ध्य र त न त्या गै न
दु ल स र दा ॥ जो बिंद चंद गुन ग्रंथ न
को ॥ प्र रग सै न बा नी बि सद ॥ ६१ ॥
टा का प्र रग सै न की ॥ गु वाली धे र बा स
स दा रा स को स मा ज के रे ॥ सर द न

मन्त्र्याहसईसहसंगसुनावैकौरिजोरान
रीत्यायेसैबलसहसंगसुरनरतही
धायोरंगप्रतिहारीगायोडुगप्रसूवा
बलायेसैठकोकरजोदिवीनंकररी
पेनधरोहीयेजीयेवृजन्नीसहासां
बचनसुनायेसैकैदकरिसापिनीये
द्विष्टीतैधुरायेद्विष्टरीदासलुंयनेंय
येधान्पायेसैमंगी॥मन्त्र॥स्वोलीय
साधुस्तनससराहुतीयेद्विष्टाकन्धो
हीयो प्रजन्तकिप्रताप्यगन्तधुल
नेकनाधारी स्वात्तापजिकोसुनायेध
हनसोत्तितप्रतितादी नृपनकालीय
निष्कगन्सगाध्यानीधिगगां नवद
दिके अन्नादप्रलयोनेचयवहाइरी
ननुयासिकेधापदुदुमेगोदन्धुनका
जान्तीयेससोतीयाग्यासेनैलसका
हनीयेद्विष्टाकन्धोनीयो अन्तर्गत
जन्तपुनिसुनायेसैकैदकरिसापिनीये
नीरिष्टीकन्धोनीयो निष्कगन्सगा
अन्तर्गा

नत्वा इति न जितिकुपचनकरेह
वाहेनकतौ कान्तरदाससंतनक्षपा
सरिसारदेवालोयसोः १७२ ल
दोसदेराग्रान्निविधिप्रमथरमग्र
तिपीतलनकलवीररुनीयेकयेक
अनूपदग्रनुरागीजसवि तां न
जगतबौसंतसंमतबडजागी तैसो
ईपूतसपूतबुतफलजैसोईपरसाः
सरिसारिदासनठहल कबितस्थ
नापुनिसरसाः सुरसरानंदप्र
दयद्रिडकेसवग्रधिकबुदारमन
लदोसदेराग्रान्निविधिप्रमथर
मग्रतिपीतलनः १७३ केष
तरांमकलजुगकेपलितजीवपावि
नकीयाः नरुनागवत नदविम
प्रग्रुस्वनांननजांनै जैसैलोकग्रने
क जैचिसनमारगप्राने निरन
लरतिनैकांनग्रजातेसदाउदासीः
तत्वइसीतल सरनसीलकरनाकी
रासीः तिलकदासनधधारतनः

का आसकर एजु की ॥ नरवरपुर
राजा नरवरजा नौ मोहनजु र दि
ये सेवानी की करी है ॥ घरी इस मंड
स्यौ की द्वारि पावत न जान को नु
मति सरी है ॥ पस्यौ को नु का म प्रा
प्रबसी लि वाय ल्या वो कहै प्रथी प
लोग कान नैन थरी है ॥ प्राई फो ज
री सधि दी जी ये रु मारी ॥ सु निव ह
तरारी परी प्रति पर खरी है ॥ पस्यव
सिकै पढाई क गे की जी ये ल रारी ॥ स
रु चिनु प जाई च ल्य प्रा थी प ति ज्ञा
है ॥ पस्यौ सो च नारी तब बात यो वि
चारी ॥ क कही प्रा प ये क जा वो ग यो
प्र चर ज पायो है ॥ सेवा करि सिद्धि
सा सदांग होये नौ नि परे ॥ दे धै ब डी
बे र पा व घ डु ग न ल गा यो है ॥ ६०० न
ठि चि क डारि तब पा धे सो नि हारि
की यो म्जु र रा बि चारि पा त स्या सु प्र
ति रा जे है ॥ सित का स चा ई नै क चा ई
हा त च र चा च ला ई ना व सु नि चा जे

१००
 १०१
 १०२
 १०३
 १०४
 १०५
 १०६
 १०७
 १०८
 १०९
 ११०
 १११
 ११२
 ११३
 ११४
 ११५
 ११६
 ११७
 ११८
 ११९
 १२०
 १२१
 १२२
 १२३
 १२४
 १२५
 १२६
 १२७
 १२८
 १२९
 १३०
 १३१
 १३२
 १३३
 १३४
 १३५
 १३६
 १३७
 १३८
 १३९
 १४०
 १४१
 १४२
 १४३
 १४४
 १४५
 १४६
 १४७
 १४८
 १४९
 १५०
 १५१
 १५२
 १५३
 १५४
 १५५
 १५६
 १५७
 १५८
 १५९
 १६०
 १६१
 १६२
 १६३
 १६४
 १६५
 १६६
 १६७
 १६८
 १६९
 १७०
 १७१
 १७२
 १७३
 १७४
 १७५
 १७६
 १७७
 १७८
 १७९
 १८०
 १८१
 १८२
 १८३
 १८४
 १८५
 १८६
 १८७
 १८८
 १८९
 १९०
 १९१
 १९२
 १९३
 १९४
 १९५
 १९६
 १९७
 १९८
 १९९
 २००

होसुजानके हरिन किन लई गुन
गंजीर बाटे परी कल्यांन ॥ ७७ ॥
बीठलदास हरिन किके दोनु हाथला
डुलीया ॥ आदि प्रति निरवाहन कि
पद रज बृत धारी रसो जगत् सौं प्रै
डि नुछ जां नै संसारी ॥ प्र नूला प्रति
कोप प्रति प्र गट कुलदाप प्र गाली
महत स नानै मः ॥ ७८ ॥ जां नै रै दास
पद पद त न ई प्र लोक ग ति गुर गो बि
द जुग फल दीया ॥ बीठलदास हरिके
दोनु हाथला डुलीया ॥ ७८ ॥ न
ग वं तरचे नारी न क न क न के स न
मानके ॥ का ह ब श्री रंग सु न ति स
दानंद सर ब स त्प्रागी ॥ स्यां न दास ल
क लंब प्र नं न प ॥ ७९ ॥ नूला ॥ न
रु नू दित क ल्यां न पु स बं सी नाराय
न च्चे ता गु बाल गोपाल ॥ संकर लील
परायेण ॥ संत से ये कार ज का या तो
घत स्यां न र जां न को ॥ न ग वं तरचे
नारी कि न क न के स न मानके ॥ ८० ॥
॥ तिल क ल्यां न ए का न को रु री दास

बांवे हाथरिसनरि कै सुनाये है ॥ येतौ
अपमानि पांनि ॥ दधि एणै लै दायें ॥
हो न प्रजग देवजूकौ ॥ असीक ६ हापा
दुहौ ॥ तासौ दसगुनी लीजे मोको सो
दायाये दाजे ॥ इनहा जायेका ॥ मो-
हये सुहाई है ॥ ६० ॥ कितौ सनु जावै
व्यावोक से ये ॥ जग लागी गइ बडना
गीया सिब सतनेरा ॥ दाजाये काटि
हीयो सा सतनर है ॥ ससक्तिलष्यो ल्या
इबक सी सघारहो ॥ धिदे धिली जाये
बो ल्यकै दिघाये नरपमुर ॥ अगपरयो
ननधनकी नबात ॥ अबयाकौ कहाकी
री ये ॥ नैजूदानो हाथजांनि ॥ अनिग्राव
तारिदई लईवाकी री ॥ जिप्रदतानसुनि
जाजाये ॥ ६० ॥ सुनाजग देवरी तिघाति
प्रपरजसुता ॥ यिसौ बघांनि कहीवसि
कोलेदाजाये ॥ तबतौ बुलाये समुजा
ये बहनां तिघो ल्यबचन सुनाये ॥
अजूबेटी मेरी लाजाये ॥ नयो सतघार
जबकहा डारो ॥ नारिनलेनारिबेकौ ॥

हिये विंगै रामदास सुहै प्रेम
जाने ॥ बोलो प्रमान देके भुजा संव
धर्म की बडी ॥ दास निहासत कौ चो
हस ॥ चोक निडी ॥ १७० ॥ मूल ॥ अब
बलासरीर साधन सब लये बाई हरि न
गति बल ॥ दसां प्रगट सब दुनी ॥ राम
बाई बीरां हीरां न निलाली बारां ल
धिनीं जुगलियार बत जगत धनि
॥ अच निंके सी ॥ अनां गोमती न कि
नुपासनि बिदरां जी बिदति गंगा
जमुनारै दासनि ॥ जावां सरषाजे
ये द्विनि कूरि शब्दे कारति प्रमल ॥ अ
बलासरीर साधन सब लये बाई हरि
गति बल ॥ मूल ॥ कान्तर दास लल
नि कपा हरि हिरे लोहायो ॥ अगु
रुसरीं अये चर कि नाराग सति जांन
संखारी अरमही अडि कुंऊरु ॥ असां च
धि अनां ॥ जे साधादुरम चंद जगत
सौं ही बिधि न्याये ॥ अब नूरु समनि
धिनुन निगं नीर अति नारो ॥ ननि

ये मैं नक्त कौंकलंकः प्रये संक
वही साधक बरतान नाई है नई ना
नारा बिषे बास्य चोपे डारी ना कै निवे
सुधरा सिचा है कहुं दिजा इये ना
पेट मगन कीये ना ना बिधि सुधरी
ये दये ये न जां न मिले लाल न लडा
इये जो बिद प्रनु ज जा के बासुरी के
सां चोप न मन नै न ल्याथो न
प्रय हा बिधि गाइये ६०० मूल ॥ न
दकु वर कृष्ण दास को निज पद ते नू प
स्दीयो ता न मान सुर ताल सु लें सु
दरि सो है सुधा अंग नून गंगान न
पनां को को है र न्ना कर संगीति रांग
ना लारंग रा सो ॥ राजा देव ध्या लाल
नक्त पद रै निनु या सी खर ए कार
॥ ६०० ॥ नून पार न जन पन डिल
यो न सुधु वर कृष्ण दास को निज पद
ते नू पर व्दीयो ॥ ८१ ॥ कृष्ण दास सुनार
कीरीका ॥ कृष्ण दास सुनार राधा
म सुधसा रलीयो ॥ सर्व करि पाये
दक्षि गाढी बणी कु क म कीयो पतिसा
ली कीरे दे के न म र च व के बाह

नग्रां मदेव
करपाकरिडिदद्यात्केवलरा
लज्जुगकापलीतजीवपावनकाया
७४ ॥ टीकाकेवलरामकी ॥ बरबरजा
रकले ॥ पदेदजेमोकोकस्वनसेवाक
नेनामलीजेचितलायेकोदिषेनेषध
रीइसबीसकहं प्रनचारीद्वेषप्रनूस
वनकोरी तिसाखायकोकरननिघ
बकोउसुनेनहाकानकहबैलकेल
गायो ॥ लोटिदयात्रायकोउपेइती
प्रगटतनसनकासचाइप्रलोनयत
दाकारकहोकसेलसकायेको ॥ पर्या
मूल ॥ श्रीमोहननिभृतपदकमलः
सकरएजसबिसलस्यो ॥ अरमसील
गुनसीवक्ताजागैतराजरिषप्र
राजकुलदीपाचोमसुतबिदतक
लस्यथासहाचारप्रतिचतुरबि
रलबानीच ॥ नापदासूरचारनुहार
नेनलपननक्तिनिरुहासीताप
राधासुवरनडननेमकरमथन
श्रीमोहनः ॥

प्रीतप्रथेदूसरीकसदासकलि
जाति ॥ टीकाकसदासजूका ॥ वैरह
गुफामैदेवैसिद्धहारप्रापगयोत
योयोविरहैहो जूतिपिअजुप्रायोहै
दईजाजुअकारिईकीजायेप्रहार
अजु ॥ महैमांअपारअरसकवनि
बतायो हैदायोइसनप्रायसाय
मैरहोअनजाये ॥ ६ ॥ परसचाइदुष
जान्योनबिलायोहै ॥ अंनजलदेव
हाकौआधत ॥ पातपरकरिकौन
सकैजनमननरमायोहै ॥ ६ ॥
जुल ॥ नलीनांतिनिबलीनकिस
दागदाअरदासकी ॥ लालबिहारी
जपतहैनिसबासुरिफूल्यो ॥ से
वासहजिसनेहटसदाअंनंदरस
मूल्यो ॥ नकनसौंप्रतिप्रीतिरीति
सबहामनननाई ॥ आसयेअधिक
नुदाररसनाहरिकारीतगाईहै
रिबिस्वासहायेअंनिकैसुपने
हंअंननप्रासका ॥ नलीनांतिन

कौं ब्रह्मदिनको ननु पञ्चकस्ये सतायेः
 उद्योपतिदुषयायो सुनी चोत्तरिष्ठा
 जेसैः करे बिप्रसे बालिनैः जावलिषि
 न्जारेः दायैवाके आनप्यानेः लाडकरे
 कसे श्रीजासैः ॥ ६० ॥ मूल ॥ जैरे किंचन
 चक्रननजैरु रिप्रतिलं हरिबसके
 कथाकारतनप्रीतिसंतसेवाग्रनूरा
 गी ॥ परायापुनरपरीतिलाहि ज्योसेर
 बसत्यागी ॥ सलोषी सुठिसालग्रुसह
 प्रलापननावेः कुरुबुधानसो जाये
 निरंतरगोविंदगावै सिद्धिसाधुतं श्री
 रंगा कौमुदतपारसहृष्टसके जैरे किं
 जनकन निचजैरु रिप्रतिलं हरिपुती
 तिरुतिबसके ॥ ७ ॥ मूल ॥ हरिचक्र
 जसई गुनगं नारवांटे परीकल्यानके
 नव किसेरद्विद्वृतिग्रुनं न्यजार
 गयेकधारा ॥ नवक रेवचनननर
 न सुषदजा नत संसारा ॥ प्रनुयकारि
 बिचरसदा वस्तुनाकारासी ॥ नवब
 यसरबससुय नकपदरे निनुयासी ॥

षडेवोग्रहको नयोउपदेसनात्ति
 देसजनजांन्यो सांध्यनत्तिकोवि
 सेसर हाजांनोचावनेसको ६१७
 कूलान्नगवत्तत्रादयोः तिनि
 तसुहृदसालसजनसरस नज
 ननावश्राः उडुपुडुपुनडाड्यातद
 लितजसा श्रोताश्रीन गोतरहासे
 ताप्रधारस मधुरा रोनिवास
 प्रासपदसंतनियकचित श्राजुत
 घोडीसामध्याससुधकरप्रनूच
 रहित प्रतिगंतीरसुधारमति
 हृत्वसतनक्तना ७ इस नगवान
 दासध्रासहतनिति सुहृदसाल
 सानसरस ११ पाटीका जानि
 कौपनप्रश्रीपतिमनश्रापुपोदु
 ईलेदिवाडीमालातिलकनधार
 ये मानप्रान प्रा नलोचकेलेक
 त्प्राग्यदीये धृष्टीयेनहीजातजांन
 ने ज्पमादीये नवा १६७ रनक्ति
 सुधरासिनस्यो कस्योलैसुदेस

कप्रतिलीये प्रमथरमबिसतान
हितप्रगटनयेनां हिनतथा सोद
रसो नू रामकौ नो संततिनध
कथा ॥ २० ॥ बुडीये विदत
नरु रक्तपालाग्रातमारामप्राग
इसी कक्षकौथं नष्टेत्तकुलप्रम
उजाग्र घामांसा य नोर सरब
लधिनकेप्रागर सरबसूरुहि
नजां निहिरदै अनुराग प्रकासै
सनबसं संमान करतप्रति
उजलप्रासै सो नू राम प्रसादत
कृपाइष्टि सब प्रबसी ॥ कबूडीये
विदत कनरु कृपा ॥ ६ ॥ तमाराम
प्रागमइसी नरु रतनमालास
धनगे विंदकड बिकासकीये ॥ रु
चारसी घननीललीलरुच्य सुम
तिसुरतिप्रति ॥ बिबधिचक्रि
अनूरक्त विक्रबह्यरतचतुर
प्रति ॥ लघुदीरघसुं दे बचनप्रव

बोला वरुमरो सतिनाजीसो इच्छि संन
देधे कही ल्यावो काटि कडु ल्याये चाहि
सास प्राधिन कौंगयो कि ररा गये नि
छारि जि वी री ति ना नी लि सता रये सो
सु नो सा क से वा रु रि दा स डू ने क नी मि
पु दान संत सो रू दे ल रू गे न ल लु प्र र
लौ रु ध जा नि न ति लु ला चित थ र गे मि
दो नु मित्य सो वै रि लु ग्रा ध म को यानु
परि गा त पु गा त सो ये सु ध्य न हा परी
रू दे दा तु न के क रि ले को च दे स से प्र प्र
पु चा दरि नु र ई ना चो प्र ये ध्या न न
राले ३३ जा ग प्र ये र दे लु प्र र व र दे छि च
द रि कौ पे धि य रु च्या नी सु ता पि ना दान
जा नी रू सं त ड र न ये अ ले व रू न ग
ग ल ये ग ये ले इ को त वी यो री त न ल य
नी रू ने कु सा र ध्या न हो कं ग लो
नी सं क का म् इ छ र राजि छि डू ग
क रू वानी ति नु न कं ग नी ल रू र
रै स वि नि हा ये ने रो डे नि न्त
नी न हो त सु प्र दानी रू ३३

लरिबेकौ चले प्रागै प्रागै सदा प्रा
ये रहे। ल्यावे जलसी सईस नरु
ही पोर गही। सान ज स त जे
सिंघ जुके हला स नयो। बदेषो
दिली नां रुनीर ल्यावत नंग
नूनि परि बिने करी। अर दे सु तु
ही नै जाते नयो ने रुनी जिगये य
प्रसंग ही। ६१५ नप ति जे सिंघ
जूसो बो ल्यो क रुने रुने रे तेरी
जाब रुन ता का गंध कौ न पाउ
मै ना नदी प्र कु वरि सो बडी न क
मान जां नि वरु र स घां नि प्र पे क
ध क ल ड उ मै। सु नि सु घ नारी
नयो। ती रा स वा सो रा। ल्याये
गां व का ठि फेरि दाये रु रि ध्यां न
मै। लि धि कै प ठा ई बा कर सो
करा ए दी जे। सा थ क से वा क रि नि
स दिन गां उ मै। ६२० मू ल्य। ग पर
अर न ग वाल गो पाल को स वा स

नरतिगांन बिस्ता ~~क~~ शये लोक रि
कगनकाह दिवतन सुधि चूलीये
कषगनुपरसो ज्यस्वो जसवतारीहि
लालप्रतिरंग चदे जुं नो ता ति नंग
नई पाये निज सो ल्य प्राये लो यो सु
ष चारीये फेरि सुधि प्राई दे धिया
राले बरुई नैन कार ति यो एाई जग
चरि कलागी प्यारी हि दुप सी कूल ॥ प्र
कधरम प्रतिपोषको संभासीये क
दमनिचित सुखटी काकार चरि सर
बोपुराधी नद सो दली रथ न सं वीम
अन चन बिधि चली च दो उदेय हरि
च ते नर सिंहा दन की नी ॥ का थो म
सूदन सर सुती अमरु संकी रतिली
नी प्रबो ध्यानं द राज नंद ग दानं द क
लजुग यनिं प्रब धरम प्रतिपोषको
संभासीये क बुकटम निधी च द मटी
का प्रबो ध्यानं द की ॥ प्रबो ध्यानं द ल उ
रसि क प्राने द के द प्री चैत नि चै द प्र
के सार ध प्यारे हे रा ध्या कू ल कु ल के
लि नि पट न बेल क ही म ल र स प दे

हरिबेकौ चले प्रागै प्रागै सरापा
छै रहे ल्यावै जलसी सई सनस्यो
ही पोर गही सुनिज सवत जे
बे सिंघु जुके हला सनयो ॥ बदे धो
दिली मां फिनीर ल्यावत प्रनंग
नूमि परि बिने करी ॥ अर देह त
ही नै जातै नयो नेरुनी जिगये
प्रसंग ही ॥ दीप नप तिजे सिंघ
जूसो ॥ बो ल्योक हाने रु मेरे ते
जाब रुन ताका गंध कौ न पांज
मै नानदी प्रकु वरि सो बडी न
मान जां निव रु सघां नि प्रपे
थू कल ड उ मै सु नि सु घ ना
नयो रुती रास वा सो दारी ॥ न
गां व का टि फेरि दाये रु रि च्यां
मै ॥ लिखि के पठाई बा ई करे
करा दी जे ॥ सा थक से वा करि
स दिन गां उ मै ॥ ६२० ॥ मूल ॥ ग
अर नग वाल गो पाल को स

प्रीज

बही चक्रिगदा अरदासकी ॥ ११७५
टीकागदा अरदासकी ॥ ॥ बुराहा
नपुरा ॥ दिगबागतामै बैदे प्राय
करि अरु नुराग ग्रहतागप पागेस्पा
जसो ॥ गां वसै नजात किते लोगाहा
हाघात लुधसां निलीये गां तन लोका
मग्गै रकां मसो ॥ पस्थो अति केरुदे
सब सन निजाये डारे ॥ तब हरि प्या
रे बोले सरग्र न्यरां मसो ॥ जो दिनी
ठिल्याये हरि बचन सुनाये ॥ जब तब
करवाये ॥ नुं बो मंडु सवा ॥ रि के
प्रचूप चराये नो मलात्त ग्गै विरुस्ते
स्पां मग्गै प्रति अच्यरां मरु परस्त न
हारिको ॥ करैसा ॥ कसेवात नो निपद
प्रसन हात बासी ॥ त्त अं न से म् य
त्रकारिको ॥ करतर सोई जे उ गं गे ॥
धि पाय सामो ॥ प्राये हर संत म् ग
कहा ॥ जे ॥ वापै रि के ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नू नू खरे ॥ ताके ली पेर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ध्यांत ब प्राप दे ॥ नोर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पोषकौ जगतजसो चाश्रितरी प्रग
दप्रंगकौ प्रेमनेमिसौ मोहनसेवा
कलजुगकलूषनलज्यो दासतेक
बहनचेवा। बाबासीतलसुषदस
सज्जगोविंदधुनिलागी। लघिणा
कलागंतीर श्रीरसंतनिप्रनुराग
प्रंतरसुद्धसदारहै। नरस्यकन
निजजुरधरी गोपालीजनपोषक
जगतजसो चाश्रितरी। १२५
श्रीरामदासरसरीतिसौ नली
तिसेवतनक। सातल प्रमसुस
बचनकोमलसुषनिकसे। न
वदितर बिदेधिरिदौबाराजस
बिकसे। प्रतिप्रानंदमनउंस
संत प्रचारीयाकरली। चरण
देडोतबिबधिचोजनबिसतन
बधवने। बासबिस्वास
जगलचरणनुरजगसंत। श्री
दासरसरीतिसौ नलीनांतिसेव

बेसरा तिलागाप्यारोहै शक्रानर
पदे धिराक्रियपुरा निवासपापाम
दिकरायो हरिदेवसे निहाराये क्षी
मूल ॥ ७ ॥ नक्रियधिनदारतायेरुनी
रबहाकल्यानकी जगनाथकोद
सनिपुनप्रतिप्रचूमननायो ॥ प्र
मपारषदसक्तुजिजानिपीये निव
दिबुलाये ॥ प्रांनपमानोकरतनेर
रकपतिसौजोस्यो ॥ सुतदाराधन
धाममोहतिबकाजोतोस्यो ॥ को
धन ॥ १ ॥ ध्याननुरमैरुसो राजना
मकुषजानकी ॥ जगतिपधिनदार
ताये निरबहाकल्यानकी ॥ १ ॥ मू
ल ॥ सोदुसेनूरामके सुनोसतति
नकीकथा ॥ सतदासदिदृष्टतजग
तद्योहाकरिडास्यो ॥ सहेमाक्ता प्रब
ननक्तबितधरमबिचास्यो ॥ बरै
स्योमाथोदास नजनबलप्रचोदी
के

विप्रसारसुतद्वरिजनम ॥ रांनराये
हरिरतिकरी ॥ नक्तिग्यानबैरागते
गजप्रव्रगतिपाग्यो ॥ कामक्रौंसदुलो
नमोहमत्सरसब ॥ त्याग्यो कथा
कीरतनम ॥ गनसदाप्रानंदरस
शूल्यो ॥ संतनिरधिमनमुदितनु
दितरबिपंकजोफूल्यो ॥ बैरनाव
निजद्रोहकोयेतासूपागधिस्यने
परीः ॥ विप्रसारसुतद्वरिजनम ॥ रा
नरायेहरिरतिकरीः ॥ १२७ ॥ जूल ॥
नगवतमुदितनुदारजसत्सरस
रसनाप्रासादकाये ॥ कुंजबीरारी
लिसदाप्रनिप्रव्रन्यासे ॥ दंपति
स ॥ जयसुतजनातिप्रमतिप्रका
प्र ॥ ननिनजनरसरीतिपुष्टम
गकरिदेषी ॥ विधिनिषेदबल
ज्यपाग्यरतिरिरेबसेषी ॥ न
धवैसुतसमतसिकतिलक
मध्वरिसेवजीये ॥ १२८ ॥ नवत

स्वधनुचारना विस्ववासविस्वा
सदासप्रचे विस्वनारत्ना। ज्ञानिज
गतहितसर्वगुणनिसुसमनिर
येणादासदाद्यो न कुरुत नालस
धन गोविंदकंठ बिकासकीयेः॥
१२ रामूल॥ न हिते स न कुरुत न तोष
करिसंतनयपतिजासो कुवरेः श्री
जुतनरपन निजगतस्य हृदि
न गति प्ररायत्। यिक जीति की
ये सुवसि सा ललपि की जा वा य ए
जा सु सुजसस्य हृदि कुटल कलि
कस्मिजुग धार्ये का। शुग्धा शुदलस
प्रगटसु नट कट्टक नि सुधदा प्रक
ज्रतिहा प्रचंड भावते इ स्वर्तम
षंडन दोर दंडु बर। न ह्ये स न कुरु
न बतोष करिसंतनय र पतिजासो
कुवरे ॥ १२३ ॥ टीका। जगत को पन
मनसेवा नारायण जी की ज्योति
जे सो पारायण रहै डोला संग ली ॥

बृंदावन नमन ति ध्याजी सोर
गौनु १५ साल ७ र दाल को न प्रो वारा
रकी घोले बिचार प्राग्या माप
न प्राये है र ह सुष ल से ना ना प
र च्य क से ये कर सि न र ब से वृ
न बा सी जा सु रा ये है कानी धर
घोरी त न के क न र द वा को र ना सि
श्री मति रे ग लाल प्यारी डग धा
ये है ब डे ब ड ना गो अ नू र ति
जागी जग मा अ व र सि क्खा त स
ना प्य ता पो ये है ६२ ६ प्राये अंत
काल जा नि बे सु धि पि धा नि सब
आगे र ते ले के चले बृंदावन जाये
है प्राये प्रा धा दु रि सु धि प्रा ई धो ले
चूर से के क लो ला ये जा त कूर क
हा जो ई धा प्रा ये है ६ ६ प्रा फे री त न थ
न जाये बे को पात्र न ही जे रे बा स अ
वे प्रा धा प्रा ये को न ना है जान त
शे हो ये सो हा जाये गो जु ल पा सि अ

चलौसंगकौ॥ प्रीतिनक्षत्रप्रसिद्धगो
ब्रह्मप्रतिगद्गदबांती॥ प्रेक्ष्य प्रनूसे
प्रीतिप्रगटरहेनासिद्योनी॥ निस्त
करतप्रामोदद्विपनिलनवसन्
द्विसारे॥ हाटकप्रदसिलदानरशि
ततकालगताने॥ मालपुरेकंगल
करणरासरच्योरसरंगकौ॥ गण
धरनिगवालजोपालकोस्वधर
सांचलौसंगकौ॥ रिश्याडीकाशिर
धरनिगवालसाथकसेबाहीकोधा
लजाकौ॥ देघ॥ खोबाहालहातप्रीति
सांचीपाईसै॥ स्थलतनधूटहतेले
तधरनामरतजो॥ प्रीतिप्रबरीति
काहकापैजातगाईसै॥ नयेदिजपं
चयेकठैरेकेप्रपंचमांड्यो॥ प्रान्ते
सनांमोजिकतेद्योदैनसुहाद
तिजाकौ॥ प्रनावलतलेहमे॥ चान्रजा
नै॥ मिरतकयोबुधिताकौ॥ चारोंसु
ननाईसै॥ हरीकूल॥ गोपाला

१२३० नूतन। हरिः जस प्रतिहरिद
खको तौ हरि चावै हरिदास जस
नेह प्रसरे प्रबट निबसे चो लंग
प्रायो प्र चरको नत करध स्यां
प्रपने मधगाथौ ॥ ओत प्रोत
ग प्रति सबसां गजां नै पु
सर बुबीर नत्पकार तिजुबया
जगु प्रनु गगु नबरुते साता
निलि होय बसि हरिसुजस ह
दासको तौ हरि चावै हरिदास
जस ॥ १३० नूतन ॥ नुत करध सुनत
तनको ॥ चरको नुज निकरो दु
रबास प्रति स्यां नदा सबस ता हरि
चाषी ॥ च गज पुनि प्रहै लाहरा
मसबरी फलसाषी ॥ र ह ह ह ह ह
नाथ चरण चो धे जं नु टाई बसे पो
बु बिपति निवारि दायौ बिष बिषी
यापारै कलि प्रबेस पुचो प्रगट प्र
सतीक कै च्यत थर ॥ नुत करध

चलो संगको ॥ प्रेमि नक्ष प्रसिद्ध गो
न प्रुति गद्गद बांनी ॥ प्रु प्रु प्रु प्रु
प्रुति प्रु गद्गद बांनी ॥ निरस्त
करत प्रामोद बिप नित नब सन
बिसारे ॥ साटक प्रु हित दोन ररि
तत काल नु तारे ॥ माल पु रे मंगल
कराण रासर चौर सर रंगको ॥ गी
धर निगवाल गोपालको सधा
सांचलो संगको ॥ १२ भाटी का गी
धर निगवाल साधक सेवाहीको
लजाको ॥ देष ॥ धोना लाल हात प्रु
सांची पाई है ॥ सतत न धूटे हते
त चरना मर लजे ॥ श्रीरु प्रु बरी ति
काहं कापे जात गार् है ॥ नये दिज
चये कठैरे सो प्रु पंच मान्यो प्रु
सना मोजिक है छोडे न सुहा
सांजाके प्रु ना व म तले हने प्रु नत्व
ने ॥ निरतक यौ बुधिताको वारो स
निजाई है ॥ ६२ ॥ मूल ॥ गोपाली ज

१३ चाजोहरि प्रीतिको प्रससै तो हरि
जनको गुन गुन गाये । नातरिसु कंत
जे बीज ज्यो । नत कल कल एतद्वय
१४ एत न सुख ज्यो तै तैरे कषनस
ख प्रन तो द सो प्रनु कौ प्यारो पुत्र
ज्यो वैठै हरिक गोद ॥ १५ ॥ प्रनु त कु
रज सये क बर ह जा का नति प्रनु
रागी । नन को न नि ज ज ज कृत को
न श्रै होये बिनागी ॥ १६ ॥ न कि दो
न जि न जि न कथा ॥ तिन का रुठ नि
प्राये । नौ न तिसा रुठ प्र धिर दै की
नौ सिलो ब नाया ॥ १७ ॥ का ह के बल
नो ग ज ग्य । कुल करनी का प्रसा
न नौ माला ॥ प्र ग्य ॥ ख स्यौ न रा
प्रा ए दा स ॥ १८ ॥ ये ती न न्त माल श्रान
प्राये ए दो स डू त्त कूल के सजा त प्रती ॥
प्र अ टी का के श्री हृ गुरु बर न न ॥ क
बि त ॥ र सिका ईजा सि दानी तिन पाई ॥
न ईसर साई सि ये न व न चाये सौ नु
र रंग न व न नै रा थि का ख न ब स

टीकारोमदासजूकी॥सुनियेकसा
कप्रायोचक्रिनाबदेधिवेकौवेदे
रामदासपूछे रामदासकौनहोउ
ठेप्रायद्योयेपायेप्रावे रामदासप्र
बज्ररामदासकसामेरेचाहूँगोन
हैचलोजूप्रसादलाजेदाजेराम
दासअनियेहीरामदासपगया
रोनिजभौनहैलिपटानोपायेन
सोचाहिनसंजातिनाहिनार्थनिसे
नस्योहायेभूयोजसजौनहो॥६२२
बेटाकोबिवाहबुरबडोचुतसाहन
योकायेपकवाननानाकोठक
जिधरेहैकरेखवारासुतनातीसु
दीयेतारोरेहैऔरहालगायतारीक
लिनहाडरेहैप्रायेगुहैसंततिने
टबंप्रायेहैपायेयोअनंतसुके
सेनावनरेहैसेवाश्रीबिहारीला
लगाईपाकस्वच्छताईमेरेमनचा
सबसाधकनुरहरेहो॥६२३॥मूत्र॥

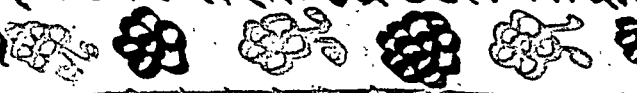
चतकस्तप्रस्थलागैः तिस्रो
 सनी। जोये प्रेमलपिनांकीचाहि
 प्रबगाथायाहिदिष्टैः सुखरुते
 कनेननहजोसनी। टोकाप्ररकू
 लनामनूल्यतातिर नैजधरस
 कप्रन्यानिनुप्रसोतबिसुमोसनी
 नाजाजूकोप्रनिलाध = रनलकी
 योमैतो। ताकासाधिभपचमस
 नाईनेनाकेगाथेते। नक्तिबि
 स्वासजाकेता। नसांप्रकासकजि
 चाजेरंगहायोसी। इतददद। यि
 के। इतद। सिद्धदससाकतनुन
 तरफांगुनमासबधिसपतनी
 बितायेके। दनारायेणदासस
 घरासिनकमाललेके। प्रायादा
 सउरवसारहेगायेके। १४७प्र
 गा। इतद। इतद। इतद। इतद।
 नावे। लापेच। वि। होरिगरल
 पिवावे। नावे। बांधकवावे। के

दितनुदारजसरसरसनोप्रखादकी
ये॥२॥७॥१॥॥सूजाकेदिवानन
जवंतरसरवतनये॥दोबनबा
स्निनकासेवाश्रीसीकराहै॥बिपके
गुसाईसाधककोउबुजबासाजाहा
देहबहोप्यनयेकप्रीतिमसिहरी
है॥सुनागुरदेवप्रधिकारीश्रीगो
विंददेवनामरुदिसजायदेपेच
तधरालेजोग्यताईसावांप्रचूदुध
नातमाग्यलायोक्तियोनुतसाहत
उपेयेप्ररबरीहै॥हरकासुनागुरप्र
वतप्रसावतकिहप्रंगरंगनरिता
यासौजकहाकहाकीजीयेबोली
घरबारपटसंघतिनंडारसबने
टकरिदाजेयेकथोतीधारित्ताजीये
रीकेसुनीबानीसांचीनक्तिहैही
जांनीमैरेप्रतिमनमानी॥कहाप्र
वैजलेनाजीये॥यहाबातसुनापर
कांनंप्रश्रीगुसाईलईजांनिआयेफे

कौंसाधसो लक्ष्मी लगाये साधसं
 सीके लक्ष्मी को मनी सो लगी
 रहे सुवारथके ना दिव है संतन
 का मेला कहै ना ही सो लरतु है
 तिलकको कहै मांटी तुरलीको न
 रकाठी निहासको पाप कूपमें प्र
 तु है चरणं मरतसी तसौ न प्रीति
 लाजाके तत्कमाल लालताके क
 ननधरतु है र लेले प्रकाश कि
 प्रता निरगुन अ नमासिने दक
 ध्यानो नोसिने लाल रूपना
 वृन्त क्रिसौरि कायो है संतनको स
 वै सीत चरना मृतको लेवै तनम
 नधन देवै माला तिलक बनायो
 हो काहकी न प्रासो लक्ष्मीके वि
 स्वास दास निको दास होय प्रे से हा
 निबायो है प्रे से चीन हो जा नै क
 सानर नारी तानै ताको म क्रिमा
 ल मोहि ना ना स्वामी लीयो है ३॥

नाबरसिताहीदौरचल्पपायेसे
शमूल॥ दुल्लनमानषदेरुकेल
मतीलासोलायो॥ गोरिस्थानसै
प्रियाप्रितियेजमनाल्लसै॥ कुज
स्यो॥ ब्रसाबटसो॥ प्रियाप्रितिव
रजपुंजनसो॥ गोकलगुरुजन
प्रियाप्रितिवनबा॥ रेवनसो॥ म
पुरासो॥ प्रियाप्रितियरगेव
धनसो॥ बासजुटलबुंदाप्रिनि
दहकरिसो॥ नगराकायो॥ दुल्लन
मानषदेरुकेल॥ लमतीलासोलायो
भरटमूल॥ कबिजनकरतविचार
बडाकोउताहितनीजे॥ कोरिक्के
वनिबडी॥ जगतप्रथारजनीजे
सोद्वारासिरसेससेससिवचूषन
कोनीसिवप्रस नके॥ लासनुजा
नरिरवाणानी॥ शरवाणजीत्योबा
लिबालिरा द्वायेकसायकडेडोप्र
यकसैत्रीलोकने॥ हरिपुरधारेतेबडे

चक्रिभालसुधै ना समवतव
 येती श्रीचक्रभालसंपूर्णसनाप
 नीती सांबाएसुधि ५ गुरवार ॥
 जंत १०८५५ ॥ लीखतं कंठो जिराजा
 तापसिंघकार जूने सवाई जै पुरमे
 ती डुंगरी ॥ हसकत गुसाई पूरण दार
 जीको स्यां धां ना धां द गुलां ज चरण
 की रज्जुदासा नहास हासदास केसे
 दासका जोको ईवां चै सु एौ त्पा संत
 नै ड डौ तना लूना के डौ डार ह डार
 डार साषी ॥ बां चै पहै साषे सु एौ न
 रेहरी कौ ध्यां न के सो दास गुलां व
 तिन कं बा संवार पुनां नी साषी ॥
 अघिर दूटै तुक घंटे तले सौ संत सुध
 रि म म ग्री गुण स बध क सं सौ घंटे
 नतारो पार साषी ॥ चक्रि जोग बें
 ग सी ल्या सं प तोष ग्यां न गुर धर स
 येती ही ज्यो संत लो ॥ अटै जौ नौ कौ
 रमा ॥



संलनकौप्रचरजकोनुजनिक्नौ॥
११३१॥फलप्रस्तुतिदोहा॥पादप्रपेदुह
सीचते॥पविप्रंगप्रंगयोधप्रूरव
जाज्योवरनते॥सबमोनिपोसंतो
१३२॥नःकृजितेनुलोककै॥कथेकौ
नयेजाये॥समुद्रपांनसरधाकरे
कृत्वाचिरायापेटसमाये॥श्रानूरति
सबबैह्यवल्लुदारबुगुननिप्रुग
ब्र॥आगेयायेवरनते॥मतिमानो
प्रपराथ॥फलकासोनातेलतर
लरुसेना॥फलसेये॥गुरुसिषक
कारतिमैप्रचरजनासकोये॥३५
चारिजुगनमेजोचक्र॥तिनकेपु
कोथकरि॥सुखसुखिरधरिगध
मेराजीवनिमूरि॥३६॥जगकारनि
मंगलउदोतानौतापनिसापे
जनकौगुनवरनते॥रुखिदुदु
बसाये॥३७॥रुखिजनकेन
नते॥जोकरेअसुय
उडबहेबिधा॥प्रस्तुते

नृत्तिमालसुधै न ॥ संभवतव
 येती श्री नृत्तमालसंपूरणसमाप्त
 कीती सांवणसुधि ५ गुरवार ॥ ५
 संत १०८५५ ॥ लीवतं क्लाराजिराजा
 तापरिंशकारजुकोसवाइजैपुरमे
 तीडुंगरी ॥ हस्तकत गुसाईपूरणदा
 जीकोस्यंघांन ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
 की रजादासांनदासहासदासकैसै
 दासका जोकोईवांचै सुणौ तपासंत
 नै ड डौ तमा लूके द्वै डौ डारुडार
 डार साषी ॥ वांचै पहै साषै सुणौ व
 रेहरी कौ ध्यांन ॥ के सो दास गुलौ व
 तिन कंबा संवार पुनांन ॥ साषी ॥
 अघिर दूटै तुक घटै तलेहौ संत सुध
 रि ॥ नमः श्रेष्ठ ॥ एतद्वद कसहौ घे
 नुतांरो पार ॥ साषी ॥ ॥ नृत्ति जो पावै
 गस्रात्वा ॥ संपतोष ग्यांन गुरधरस
 येती ही ज्यो संतहौ ॥ न्यरे जौ नौ कौ
 रमा ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥



प्रत्नप्रापतिकेचरुनुपाये सोस
तसंगकरे मनलाये नवनिच
तरननावसतसंगा ताहासोहा
राचहोरंगा ॥ ८ ॥ सतसंगतिप्रध
रसंसार प्रहाकहत रिषिवारंब
रा तातै संतसमागमकीजे नि
सचेमां निला नयेलाजे ॥ ९ ॥ संत
संगको सुनो महातम तातै मिटे
सकल संसै नरमा के माग्रमित
सकेको गाई मति प्रमां नवुनो च
नलाई ॥ १० ॥ लिषिहो सकल पुरात
नसाधी सो बिचारिके च ॥ ११ ॥ च
नाधी बरनी जेना पुरा नन ॥ १२ ॥
रुहिहो जेती कजांनी जांही ॥ १३ ॥ कि
त्र विज्ञप्ति ॥ ये ॥ ये नाम लको
रो ज्वलगल त्यायूष धारा धर
एक्ति प्रोहि बिराजमान रसनापा

टिसापत्यप्रदावौसुधीसुभ्रगैडरवा
मोसिदुधनहापायेवी।बृदजनप्रा
नपकांनूबातयेरुकांनुकरौ।पैन
हिसौबिसुधलाकोमधुधनदुधा
येवीवट॥येतीश्रीनरुमालनीति
रसबोधनीटाकासंपूरणा॥सुनिबे
प्रधिकारीकवितो॥जाकेरुसि
वाप्ररुसेवागुरुसाधकनीकाप्रे
रनहादेवचिरुगेवाजगजालको
रुकोसोवककेवसुधलाके
प्रधरेःटाकाहासौप्रेमजाकेमाल
रुकोनेमतकेसतनकीसातधाय
नेटोनेकालकोःशोरनकोमान
करेलकताकोप्रापधरेःइरेनहा
चेटनाकोनेटनाकचालकोःतजेले
कलाजसारीगावैलितिलालपार
जेसेगुनधारीःप्रधिकारीनहि
मालको१सुनिबेप्रनप्रध्याकारी॥
सुनिकैबिसाररछुनापडदुनाधन

आरिबेदकतादुजकोई मेरी न
तिहायेनहाहोई सोनोको प्रायेन
गतनाहं ॥ प्रौरजीवसमिसो ३ ग
ही ॥ १ ॥ सुपचहमेरी नक्तिरुकरही ॥
सोममप्राय ॥ सोनवनिधितिरही
ताकौदोजेतासौलीजे ॥ मोसमित
कोपूजनकाजे ॥ २ ॥ ५६५६५५ ॥ रि
नेजमप्रकही ॥ सोनपलीजायोसो
रबसही ॥ ३ ॥ आदिपुराणे ॥ श्लोक ॥
तमेनक्तुश्चतुर्बेदा मद्रक्तः सुपच
यः ॥ तस्मैदेयंततो ग्राह्यं सच पूज्यं
ग्राह्यं ॥ ३ ॥ चौथई ॥ नगवदन
सुदुजोहोई ताहि सुदुसांनोसति
गई ॥ सबेअर ॥ नक्तुश्चि सुदुवहासि
दक्षनक्तिजिनद्रिडनगहासि ॥ ये
बसाधिजित्ताकमेगाई ॥ सोसबप
पपुराणलघाई ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ नशु

लायवे प्रन प्रधिकारी ॥ स्वारथके सां
 धिवे कं प्रनके प्ररा धवे कौ ॥ दानन
 के बा दिवे कौ दौ र लनु का प्र के को म
 क्रपाल सिये संतनको स्वदा चार नु ज
 लनु दाता सौ वे बौ प्रल साय के ॥ प्राल
 सी प्रलो म सु ध धां क दो न चं इ नू ल
 कूल्यो न व सिं ध मां लि फूल्यो धन
 पाय के ॥ के र कि चाल लाल का ला
 न तिल क नाल ॥ जै से न क मा ल रि
 जे क हा लाय के ॥ ५ ॥ ना ना सां सी क
 प्रस्त ति ध्र पे ॥ न के नौ क हा रा जि न
 मो श्री ना ना सां सी ॥ गु न नि ध्या न स
 जै जां न ॥ का ल त्री ये प्रं त जीं मी ॥ च
 माल सु द जाल न क व स प्रं कू ल
 नी ॥ ज ग त सिं ध्र के त र न प्र न नी ल
 फे का न्ही ॥ ना गौ त थ र न स व क
 न के ॥ च नु वे द म प्र ग रौ म ही ॥ ज
 न लाल दा स के प्र स के ॥ च र न सर
 रा धौ स ही ॥ दो हा ॥ बा र बा र ध र न क
 ना ना श ना शे न का डौ गा

दर्पितमनोवचनेहिता र्थे प्राण
पुनाति सकुलेन तु नूरिमानः ॥

५ ॥ चौपरी ॥ सुइनीलस

चाधमजोशी नगवदन् ॥ परा

एहोई ॥ तिनसीजातिकहिकरेज

रका मखिबुधि ॥ ज्ञायेवदका

॥६॥ श्लोक ॥ आदिपुराणे ॥ शुद्धं

नगवदन्ते निषादं श्रुपचंतभा

बिद्यतेजातिसामान्यं सयाति

रकंध्रवे ॥६॥ चौपरी ॥ हएअंध्र

लिनदकिराता ॥ आनीरकंकजब

षसजाता ॥ हरिदासनिकैसरा

वे ॥ होयेपुनीतनागवतगादे ॥ हे

यअनंनिरुचिन्नक्तिहाधारे ॥ स

एगतिकौतगतधिनतारे ॥७॥

द्वितीयस्कंदे श्रकवाक्यं ॥ श्लोक ॥

चित्पदाह ॥ आंध्रपुल्यंदपु कसा

श्रीश्याकृष्णनमो ॥ सोरठा ॥
प्रथमं हरिकल्पिनीं तिलतका
जेजे ननु कुंभारि ॥ जयश्यामस
रत्नसरना ॥ प्रथमो बरद्विचारि ॥
प्यारीपालरुदीनजन ॥ १ ॥ कारतल
लीउदारकरुणां विधिजसरावै ॥
व्याघ्रजगतप्रधारलेसीप्रलिकी
त्वांनिनी ॥ रामेशरुपनिध्यांन जीत
नकी ॥ प्राणेश्वरी ॥ लुनहो प्रमस्युजी
न करियकां नडनधीनती ॥ ३ ॥ प्रथ
तिक्रपाकारासिजयति विदुज
विसारणी ॥ नदीने निजपददस्त्रपु
वरिकासोरी जहदीकौ ॥ ४ ॥ त्वांनिनि
सुजसप्रकालधायरहोतिहंलोक
ने ॥ प्रवश्रीवतकोवासलनी ॥ प्रली
कौदीजीये ॥ ५ ॥ जयपुंदावनचंल
जयजननेरचिनेदिना ॥ सदा

दर्पितमनावचरेहितार्थे प्राणं
पुनाति सकुलेन तु नूरिमानः ॥१॥
५ ॥ चौपई ॥ ~~सुइ नील सु~~ सुइ नील सु
चाधमजोशी नगवन्दनकूपरा
एहोई ॥ तिनसोजातिकहिकरेजू
रका ॥ मधिबुधितेनेगेनरका ॥
॥६ ॥ श्लोक ॥ आदिपुराणे ॥ शुद्धवा
नगवन्दने निषादे श्रुपचंतभा ॥
बिहतेजातिसामान्यं सयाति
रकंध्रवे ॥६ ॥ चौपई ॥ हणग्रंध्रप
लिंदकिराता ॥ आन ॥ रकंकड ॥ वि
षसजाता ॥ हरिदास निकैसरणे
वै ॥ होये पुन ॥ तत्ता ॥ पाव ॥ तथा ॥ वै ॥ हे
यग्रनं निरुदिन किहा थारे ॥ सर
णागतिकौतगतधिनतारे ॥७ ॥
द्वितीयसंदे श्रकलाक्या ॥ श्लोक ॥
नित्यातहणं श्रुपुल्यंदपु कसाग्र

श्रीश्याकृष्णच्यो नमो ॥ सोरठा ॥
अथग्रंथरिक्लिचिचिण तिलतक
जेजेनांनुकुंमाशि। जयश्याग्रस
वनसरना। अथनोबरदबिचारि।।
प्यारीघालरुदीनजन।। कारतल
लीनुदारकरुणोनिधिजसरावरै।।
व्यायेजगतप्रधारबंसीप्रलिकी
स्वामिनी।। रागोरीरूपनिध्यानप्री
तकी प्राणेश्वरी।। तुमहोप्रमसुजा
नकरियकांनजनबीनती।। अज
तिक्रपाकारासि। जयतिनिकुंज
बिहारणी।। अजेनिजपददास्यव
वरिकासोराग्रलकौं।। स्वामिनि
सुजसप्रकासधायरसौतिहले
नें।। अथश्रीबनकोबासलतीअल
कौदीजीये।। अजयबुंदाबनधंमः
जयजननेरबिनंदिनी।। सबधि

प्रसादस्य नाजर्नदंनिकाजनाः
॥११ चौपरी॥ सुनोत्तवांनी चच
नरुमांरो सारविचारयेच्यतया
रो ॥ सकलदेवप्राराधैजोनरा
रेसेवा ताते सरुपेपर ॥ सबदे
नकोपूजनकरे ॥ बिद्वप्रराध
नसबत रुरे ॥ हरिसेवाहतेयस
सहमा ॥ बे ह्रुव सेवा तुतकनु
ग्रागमसा संप्रबचनयेलु गु ॥
सोसिवपारबती प्रतक ॥ ॥ ॥
॥ ग्रागने ॥ पारबती प्रति सिव
नाकिं ॥ ग्राधनानां सर्वेषां वि
द्वो ग्राधनं परं ॥ तस्मात्पर
रं देवितदीयानां सकर्चनं ॥ १२
चौपरी ॥ सिवके लिगसजारली
सेवे ॥ सालग ॥ मसतपूजनले
कोटिबिप्रपूजेसनसांनी ॥ येकस
ध ॥ सेवासा ॥ ज्ञानी ॥ संतनकोपूजा

शिविरं बभूवते ॥ ना ना के लिकला
कलाप विलसत्यां डित्य विख्यापि
न श्राकहोपि चतान् प्रणैति शिर
सान् नटो जगन्नाथकः ॥ १ ॥ चौपरी
ब्रह्मण छत्री वै सजू हो ही सुइ जालि
प्रं त्र जपु निरकोई ॥ कृद्यन किजा
के उरि श्रावो ॥ सब ते न त म सो हा कल
वै ॥ १ ॥ पाद्ये ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मणः क्षत्रि
यो वैशः ॥ शुद्धे वाय दिवे तरः ॥ वि
द्यु नक्ति स मायु क्ते जेयः सर्वो त मे
तमः १ ॥ चौपरी ॥ नक्ति सरु ति जो न
जे गुपाला ॥ मन्नी ते श्रेष्ठ ज दि प चं ड
त्या ॥ द्विजि हो ये रु रिका नक्ति न ग ह
स्य च प्रथम सो हा दुज सहो ॥ २ ॥ च
श्लोक ॥ चांडालोपि मुनि श्रेष्ठे ॥ विद
नक्ति परे यदि ॥ विद्यु नक्ति विहा
स्तु द्विजोपि स्य च प्रथमः ॥ २ ॥ चौपरी

विष्णुपुराणे ॥ श्लोक ॥ शतसुखाय

येनित्यं वैष्णवानां चकारेनां कु

र्वेति तेनागवताः कृद्देतुल्यान

संशयः ॥ १५ ॥ चौपरी ॥ देवता नको

येरुप्राचरणां प्राणिकोदुषसु

कैक्याणां संतनकोसुजावबुहार

दावनां वकोदुषदासाः तुमसेस

साद्येत्याह वसुदेवना रदु

करुई संतनकोसुजावसुदुषा

येकादसमधि साधिविषंजी ॥

१६ ॥ श्री नागवते येकादससकदे ॥

श्लोक ॥ नूतानां देव चरितं इ स्वाय

चसुखाय च ॥ सुखायैव हि साध

नां त्वादशात्मच्युतीजना ॥ १७ ॥

चौपरी ॥ जिनको जसजगलजल

री ॥ जैसैकराणां सिद्धिदुसरी ॥ जि

नकेमसतवै ह्येवयास ॥ जिनको

दजोकरेनुपासा ॥ जिनको वैलसा

दानगवद्भक्ता यदि नागवतोत्तम
सर्ववैष्णवेषुते श्रुदायेन च काजना
देनो॥१॥ चोपई॥ दुजकुलसमाहितन
मजोलेहा॥ द्वादसगुणवृत्तकारिरह
ई॥ हरिचरणानितैरिबिम्बुषजोहोई
तासममदबुधिनहाकोई॥ सपच
होयेहरिनक्तिनिदाना॥ ब्रह्मिज्ज
तेवसुश्रेष्ठप्रमाना॥ सपचत्तक
निश्चैन्नवतिरहै॥ पुनिप्रपनस
तकुलनुप्ररहा॥ २॥ बिम्बुषविष
प्रापरुनहातिरहै॥ ज्योरनपारक
सातैकरिहै॥ नक्तिप्रनावकक्षये
जानै॥ सप्रमैमधिप्रहलादवषा
न्ये॥ ३॥ ५॥ सप्रमैस्त्रंशे श्रीप्रहला
दवाकिं॥ श्लोक॥ विषाद्विषडगुण
युक्तदिरबिंदनान्नपादारबिंदवि
मुरवातश्चपचंवरि॥ ६॥ मन्येत

जनहरिरंगराचै॥ मेरो तत्कपुन
तचरित्रा॥ सकल चतुःसोदरे
तप्रवित्रा॥ संतनकांजे सांमनह
नी॥ होय प्रसनहरिनीजसुषवर
नी॥ १८॥ नगवानके तत्कपुन
कौपुनीतकरैहैं तांसां श्री नागवतप्र
सांण॥ श्लोक॥ वागाइहाइवतेय
स्य चिहं उदात्तनी दणं रुदतिव
चिञ्च॥ बल उदायति नृत्पते
चमइक्तिरु कोचुवनं पुनाति
१८॥ चौपरी॥ संतनकीनिंदारतने
नर॥ तेही प्रगरग्रामकेसूकरासू
करग्रामकीनिष्ठाघाई॥ ग्रामसे
तेनितिकाराई॥ साधुनकीनिंदा
प्रायेजेही॥ तिनकेयापप्रापग्रहि
लेही॥ निंदा न्यथानुइ निन्नरही॥
साधुनकोनिरमलनितिकरही॥

नीरकेकायवनाः खसादयः येन
 ब्रह्माप्रायद्वाश्रुयाश्रुयाः शुच्यं
 नेतस्मै पुन विद्वानमेः ७ ॥ चौप
 ३ ॥ कसेतवचनयोपकजनैना ॥ स
 निष्प्ररजुनतमेरेवेना ॥ मेरेनक
 चलैजसाश्रुये ॥ चलयो जानुमेति
 नकेपाये ॥ तिनकापदरजमोवप
 लागैतवमेरेचमतप्रतिप्रनूरा
 जै ॥ नकनकेपायेनसौलागी ॥ सि
 धिम्भक्तिराजतजगन्मगी ॥ ८ ॥
 ज्वादिपूराणे ॥ श्लोक ॥ मद्रुकायत्र
 यति तत्रगुणमिनादे ॥ नक
 नात्मनुगर्षे ॥ नुकुयोम्भक्तिनिः
 स्वरु ॥ ८ ॥ चौपई ॥ पुनिरूपसाग्र
 तेजलही ॥ तमप्रग्यानबिनासनपु
 ही ॥ जडजाकोसतसंगतिबिराजे

बिर

निष्कृतस्तत्त्वसोईसोहिताः तारय
निहंषांवनकरिदेताः नवनय
खिजावजेडरे हरिप्रपतिचित
चास्तखरे तुनरे नक्तनसोहित
वने तिनसो रूच्यकसेनसामा
ने हरिसो हरिकौदास निलावे
येसुत्रसाधिनागवृत्तगातेः
क। तेषां विचरतो इयांती र्थानां
पावनेषु यः। चातस्य किंनरो
येततावकानो समागनः २५॥
श्रीप्रदी नस्तपुरसञ्जानतेग्रा
ईदीनग्रहाग्रहधारेण्णैः तिनव
करन विपुलकल्याणोः प्रेसकार
कारनकौरेनहीग्रानो बृजरामा
जकोयसुखांनो कहागर्गैरिषसो
सुखदांनोः ॥ २६ ॥ श्री नगवृत्त
बृजरामाजवापुरे ॥ श्रीक। कृदि
चलनं नृणां गृहिणां दीनचेतस

व्याख्यानं तत्रैवैवामप्युपराणव
धन ॥१३॥ प्राद्विद्वत्पुराणे ॥ श्लोक ॥
शिवलिंगसंस्काराणां ॥ स्थललिंगां
शतस्य च ॥ तुल्यः स्यात्कोटि वि
प्राणांसेका एव च वै श्लवः ॥१३॥
चोपरी ॥ वृत्ता नैवे वै दुर्जो लसो ॥
उच्छिद्धरस्य हा ही कौंग्रहो ॥ स्था दृ
न इत स्थित्तसो जु ॥ स्तनकी रस्स
सौ चं जु ॥ यस्तक ही हृदि शान्द पक्ष
नी ॥ नै च ह सो हा ला धि व धां वी ॥
॥१४॥ प्रचरणां क्रये ॥ श्लोक ॥ दैवै च
पुरतो निरुपं दृष्टुं च स्वी कृतं नथा
रुवं वै हा प्रजि हा ग्रे न्ना दिव
मलो इव ॥१४॥ चोपरी ॥ इत का
कठिका रतन कारती ॥ स्तनकी न्दु
न चर शी ते ज्ञा ग व त रु ॥ इन्द्र
नां ॥ ये ह नु त म म त हि च व न्दु न्दु
विष्णु पुरा ण व धां ग त न्ना यो ॥ १५

त्रिचरतसंतमहाईहासिताः तारण
निहं पां व न करि रेहाः ॥ नव न य
खिजावजे डरे ॥ हरि प्रापति चित
चाह त खरे ॥ तु नरे न क न सौ हित
ठानैः ॥ तिन सौ रू च्य क से न सामा
नैः ॥ हरि सौ हरि कौ दा स मिला वै
ये स न सा पि ना ग व त गा वै ॥ श्लो
क ॥ तेषां विचरतां इत्यातीथानां
पावनेषु या ॥ नीतस्य किं नरो
चेततावकानां समागमः ॥ २५ ॥
श्लो ॥ महतपुरसग्राश्रमतेग्रा
ईदीनग्रहाग्रहचारेंपाई ॥ तिनके
करनविपुलकल्याणां ॥ पेरुकार
कारनकौरेनहाग्रानां ॥ बृजरजा
जूकोयसुखानां ॥ कहागर्गुरिषसो
सुखदांनीः ॥ २६ ॥ श्री नगवतेश
बृजरजावचकं ॥ श्लोक ॥ महदि
चलनं नृणां गृहिणां दीनचेतस

नसमृदाः सै होये बधुपदसमग्र
तिष्ठुदा ॥ बधुपदते सरतिकानिका
रौतामैयेकचलूजलडोरौ ॥ तिरुनु
त्यंगतजोलगेनबारा ॥ प्रैसै नवनि
चित्तरेप्रपारा ॥ प्रममृद्विबैकुंठसी
प्रावै ॥ प्रापतिपदसंसारनग्रावै ॥
दसममधि शुक्कबुधकीबांती ॥ स्त्रै
हालषासरससुधदोनी ॥ १७ ॥ दस
मे ॥ चतुर्दसाध्याये सुकवाक्ये ॥ जै
क ॥ समाधितायेपदप इवप्रवर्ण
सत्पदं पुण्यशोभुरारे ॥ नरवोबुद्धि
वत्सपदं परंपदं पदं पदं यद्विपदां
नतेषां ॥ १७ ॥ जौपरी ॥ गदगदकंठक
बधै प्रावै ॥ चित्तुद्वैतनधुल्लक्ष्म
नावै
होये बिलजुगावै रसनेवै ॥
मगन सैयेकबहनांचै

धीननयनीचैगपरई। कृच्छ्रनति
कोपातनसे। नक्तिबीजप्रजर
मरसेरी। कृच्छ्रनाकेकौथ। प्रक
नां। विद्वनवधान। आदिपुरा
॥३१॥ आदिपुराणे ॥ श्लोक ॥ पतंती
दयः सर्वे स्वकर्मफलनोगिनः
कृच्छ्रनकाश्चैकेचित्तसर्वधान
तंत्प्रथः ॥३१॥ चौपई ॥ सरिनक
मिलैजुकोई। म्साप्रसाध्यसेहोई
जैसेजलप्रपबित्रमिलाई। गं
हामिलतगंगा नैजाई। यहाबि
हंतहं। नैलाषी ॥ बरनत प्र
उटपुराननिसाषीः ॥३२॥ प्र
न्यञ्ज ॥ श्लोक ॥ साधुसंगपरि
गात्र प्रसाधोरपिसाध्यता प्र
गमपिगंगास्यात् गंगाघांपतित
प्रथः ॥३२॥ चौपई ॥ वाकोकुलप
बित्रनयोजांनौः जननीतासूक

तनका निंदा प्रतिबुरी ॥ ब्रह्मपुरा
साधिये चरी ॥ १५ ॥ साध्य निंदा बु
री है ॥ तांसा ब्रह्मपुरा ॥ एवा किं ॥ श्लोक ॥
निंदकाः सूकराश्चैव सफलानिर्मि
ताहरेः ॥ श्रुद्धं तिसूकराग्रामानं सु
द्धं तिनिंदकाः ॥ १५ ॥ चौपई ॥ को
टपतंगग्रादि सबकोई ॥ मुक्ति क्षेत्र
जिनका गतिहोई ॥ निंदक करे जो क
टिउपाई ॥ वैद्यूदोसा मुक्ति जाई ॥ वै
ह्रव विम धल है नही चैना ॥ अग
गमसा सत्र करत ये वैना ॥ २० ॥ अग
मे ॥ श्लोक ॥ मुक्तिः काटपतंगानां स
र्वेषामिह देहिनां ॥ मुक्ति क्षेत्र निंदप्र
पत्रै ह्रव देहिणा विना ॥ २० ॥ चौप
ई ॥ वैह्रव प्रमथर ममये जानी ॥
प्रमतपोमये वैह्रव मानों ॥ वैह्र
व प्रमथरा धल है है ॥ प्रमगुरु ह
वैह्रव हि कहे है ॥ २१ ॥ अदि घुराए

॥ श्लोक ॥ त्रिःसप्तत्रिः पितापुत्रः
पितृत्तिः सहतेन ब्र॥ यत्साधोस
॥ हे ज्ञातो नवा ॥ न्वैकुलपावन

॥ ३४ चौपरी ॥ जहाजहाममचक्र
धिराजै सांतसुध्र ॥ मत्तातग्र
तिराजै मोमैसाचेनावही धा
प्रीयासहतिचिबिनैनिहारे
सेसाधूनदारचरित्रा ॥ बसेमगो
तिरुकरैपबित्रा ॥ महमायहप्र
तसुधदोनी ॥ श्रीनरहरि

बांतीः ॥ ३५ श्लोक ॥ यत्रयत्रचम
इक्ताः प्रस्योताः समदर्शिनः ॥ स
ध्रवः समुदाचारा ॥ सेपुयंत्यपि
काकटाः ॥ ३५ ॥ चौपरी ॥ कृद्मंत्र
तैर ॥ नरपापीदुरातमा
सोई ॥ स्वानबिष्ठाग्रनताकोमानै
कुंडालमडा ॥ केतलनो ॥ लीघोपु
तनसा ॥ दिलागो ॥ तंत्रमधि यवचन

स्वमांतरतैकरे पुजाता ॥ तातै वै ह्य
 द्वापयनपैसी ॥ ती रत्न थ इतमाह
 तै सरसै सतनका करै मां मै नाथ
 ताको बिदत नगवत साधी ॥ २३ ॥
 श्री नगवते ॥ श्लोक ॥ न ह्य प्रथ
 न्निती र्थो निब देवा म् द्वि लान य
 ते पुनं त्पु सु का ले न्द री नी दे व सा
 धवः ॥ २३ चौपरी ॥ नगवत नको ल
 वसत संगे ला सननां हि स्वर्ग सुध
 रंगाः म् कित्किता का समन हा प
 वे तु छै राज का को ए च ला वे दो ल
 सबे तुल म् ति नां हाः ल व सत संग
 ति ॥ सम ये नां हाः ये कै मां हा सं ग
 ल करनीः प्र गद पुरा न नग वत
 वरनीः ॥ २४ ॥ श्री नगवते ॥ श्लोका
 तुल याम ल वे ना पि न ॥ स्वर्ग न पु
 न न वं ॥ नग वत संगे ल ग स्थ म
 ती नां कि म् उ त्पि सः ॥ २४ चौपरी ॥

नसबै जिहैंकरे: चारिबेदजिस
उचरे: जिह्वाग्रप्रेमजुतहाये
जिहिरिनांमज्झिनुचारणाकी
ये॥नांमकातमया॥३८॥
तीजूप्रनूप्रतिकरौ॥३८॥
तीयस्कंदेशीकपलिनप्रतिदेवहती
काका॥श्लोक॥अहोवत॥
ओतोगरायानयजि॥
नामतुन्पातेपु॥सपत्तेजुरुवुःस
तुरार्यावस्तान्युः॥नामगणति
घेते॥३८॥
वजोकोईसोई॥
नोसोई॥संनाषणतिरुकरियेनां
ताकाकबरुधुवोमतिथ्याही॥सा
खनकानिकिरुकाराघै॥पदप
राणबनयेनाघै॥३९॥
क॥अवैहूवास्तयेविश्वदे
आद॥धमास्मृताःतेषांसंनाष

निःश्रेयसायत्तज्जलिनकल्पतेना
न्यथाकचित् ॥२६॥ चौपरी दाय
धराईकधरासुजाशीबसेजसाहुरि
केजनप्राशीलीरथसकल्पसासोज
नौ ॥ संतजननजहाकायोठिकांनौ
जुहातपोवनवृत्तसबासाजहास
रिजनसेरिबृत्तससाहाः प्राग्यसा
मांसि साधिरेकली ॥२७॥ ग्रामिने
॥ श्लोक ॥ कुरुतेवाकुरुतेद्वयत्रि
ष्टतिवैद्विवाः ॥ लत्रैवसर्वतीर्थोदि
तदेवचतपोवनं ॥२७॥ चौपरी ॥ हे
श्रीशुकमुनी राजकृपाला ॥ हीनव
दौचारनबिरुद्धयाला ॥ तुमसेस
सन्नावकुरुदत्तरहा ॥ तिनकोसु
रणमात्रसाकबरहा ॥ सिधेगुरुसथ
केगुरुपावन्या ॥ प्रैसेसंतरसिकन
ननावन्या ॥ तोतुमरोसुठिइसन
याचरणप्रसिकरिपदरज

कौसंगकरजियलजा। प्र ० धतह
बिम्बस्वदितेहृदये ॥ नक्तिमाहिजि
नप्रंत्रपरे ॥ नैबिचारि ॥ ल्यप्या ॥
प्रमांनो ॥ ताकोसाषापद्यपुरान
॥ ४१ प्रद्युम्नपुराणे ॥ श्लोक ॥ संगस्या
जोविद् ॥ एतन्नगवद्विमुखैर्जनैः
तदालो ॥ ४२ ॥ नगवद्विक्ति
बिस्मृतिः ॥ ४१ चौपरी ॥ म्मरसां
पनाहरसोमिल्याये ॥ प्रैसोहनय
सुषकरिफिल्याये ॥ प्रैपरिसत्यतु
त्यवेबाध्यका ॥ नानादेवनकेशर
ध्यका ॥ तिनसोमिलनौ ॥ प्रैनाहं
येनि ॥ ज्ञानौमनसांहा ॥ ४२ ॥
प्रद्युम्नपुराणे ॥ श्लोक ॥ ग्रालिंगनव
रंमन्ये ॥ व्यालव्याघ्रजलौकसांन
संग ॥ ल्ययुक्तानां नानादेवैक
विनां ॥ ४२ ॥ चौपरी ॥ वैह्ववसोहि
तका ॥ वतर ॥ वैह्वजनसोमीली

निःश्रेयसाय नगव न कल्पते ना
नप्रथा क्वचित् ॥२६॥ चौपरी ॥ दोय
द्वरी ईक वरासु नाशी ॥ बसे जहास रि
के जन प्राशी ती रथ सकल जहास ज
नौ ॥ संत जन न जहास कायो ठिकानौ
जहास पोवन नुत्तम बासा ॥ जहास
रिजन सोई नुत्तम सासा ॥ प्रांगं न
मां हि साषिये कही ॥ २७ ॥ प्राजिने
॥ श्लोक ॥ कुरुते वा कुरुते ईयत्र ति
ष्टंति वै ह्यवा ॥ तत्रैव सर्वतीर्थानि
तदेव च तपोवनं ॥ २७ ॥ चौपरी ॥ हे
श्रीशुक मुनी राजकृपाला ॥ दान न
दौ धारन विरद दयाला ॥ तुम से म
रानूना व कुरुत्तरहा ॥ तिनको सुम
रण मानसी करहा ॥ सोये गुरु सथन
के गुरु पावन ॥ प्रैसे संतर सि क म
जनावन ॥ तो तुमरौ सुठिइ सन क
प्राथराण प्रसि करि पद रज लाये ॥

ते वै ह्यवे च किंचित्पितः रे ए सु
 व्याप स स्वर्गे मन्वन्तर नृतेने
 ॥६८॥ चौपरी ॥ जन्मरुजार काय
 अपराधाः कोटि जन्म संके पा
 अगाधा ॥ संत जदो चर ॥ कतल
 त इतने पाप न स्पृकरि देत ॥ ये
 समासु निजाये प्र न्यलाषी ॥ लि
 र्वी न्नि विस्पौ तर मधि सास्त्री ॥ ॥ ॥
 ४५ ॥ श्लोक ॥ जन्मांतर सह स्वा
 कोटि जन्मांतरे ॥ यत ॥ प्रद हं सी च
 पापानि सतां पादोदकं पिबेत् ॥
 ४५ ॥ चौपरी ॥ वै ह्यव को नु छिष्य
 जसे सति पितरु न को दे दे ई रे स
 हि इ जिले तिन हि ॥ प्र वित्र हि क
 ही ॥ त्वे त ही हि ये न कि सं चर ही ॥
 वृं स्त ह त्पा स रू रु जार सु नां से ॥ नृप
 ह त्पा स त स ३ वि नां से ॥ पा प सर्व
 निरवृ तिक रि दे ही ॥ वै ह्यव प्र स

॥ अथ च निवहन्मिदं
सावैव गुरुश्च निसबसामनन
पितरस्वर्गवासासबकोरीः ॥ ३३ ॥

॥ ननु वषडम्

॥ ये नैनां सब कर

खानाः ॥ ३३ ॥ पाठ्यो ॥ तं वषडो ॥

कुलं पवित्रं जननी कृतार्थं विश्वे

धन्या स्वर्गे

त्पितरोपि धन्या येषां कुले

धेयं ॥ ३३ ॥ चौप

सिंहाय सब च न सुनायो

किम्किम्

कुल ईकास्य

॥ पाठा इती कृत

गुरुसाधु ब्रह्मवचनं

श्रीः

सकं दे प्रसदा

स्मृत्कुले जातः सोऽस्मा न्स्वतार
ष्यति ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
नरमत सोऽसारा ॥ पिंडु हितर स
तवारबार ॥ ४८ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
नोई ॥ क्रद्म न्नक्ति नो लौ नहाहे
॥ ४९ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
मंति संसारे पितरां पिंडु तत्पर
या वल्कुले सुः ॥ ५० ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
तौ न जायते ॥ ५१ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
दुःखं बालर मुखं तस्य सारा पि
डुं न देवा लरि ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
तनसोऽप्रगीकाराः यरुसा सुव
यो निरधाराः ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
लि मुरं वन ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
॥ ५५ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
तं सर्वमनर्थकं ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
न कून पराधीनहा ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
बंध्यो डोरि सोई सौ ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ तौ लौ पित

कहौ है ॥ ३६ ॥ तंत्रे ॥ श्लोक ॥ कुरु
 मंत्र विहीनस्य प्रापि धुस्य दुःखरात
 नः श्रान विष्ठास मंचा न्ने जलं च
 मदि रास मं ॥ ३६ ॥ चोपरी ॥ अवे
 वका दध्याले कोशीता हिन कनि
 करि होई ॥ फिर बै द्दव गुर बिधि
 करि सेई ॥ तिन सो मंत्र गुरु एका
 लेही ॥ कधु कुरुव कल्पित मोन हि
 खी पद म पुरां एय ह बिधि साध
 ॥ ३७ ॥ प्रथम पुराणे ॥ श्लोक ॥ अवे
 ह्रवोप दिष्टे न मंत्रे ए निरयं वृजे
 पुन श्रे श्व विधिना सस्य क ग्राह
 ये ह्द ह्द वा कुरो ॥ ३७ ॥ चोपरी ॥ सु
 चव है है याते श्रे षा धता ते वा को न
 ग्प बरे षा ॥ जि का अग्र तु करे न
 मं ज पत पर है सुं इ प्र निरा मं त
 सु प्र च सब हात पक नौ ॥ प्र ग नि ह
 म ति है सब करि लानौ ॥ तार थ ह

स्मृत्कुलेजातः सोऽस्मा न्तरा
ष्यति ॥ ४७ ॥ चौपडी ॥ तौ लो पित
नरम संसार ॥ पिंड हितरस
तबारबारा ॥ कुलमे पुत्रनकर
नोई क्रद्वन्नक्तिजोलौ ॥ ४८ ॥
॥ ४८ ॥ पदमे पुरांणा ॥ श्लोक ॥ ताव
मंति संसारे पितरां पिंड ॥ ४९ ॥
यावत्कुलेसु ॥ क्रद्वन्नक्तियु
तै न जायते ॥ ४९ ॥ चौपडी ॥ क
द्वन्न बहिरमुख ॥ संसारा पि
डदान देवा हरि ॥ तारा पितरक
तनहा प्रंगीकारा ॥ यरुसा स्व
यो निरधारा ॥ ४९ ॥ श्लोक ॥ ब
हिरमुख ॥ त्रेण आद्वयति त
गां तथा ॥ ज्ञातव्या पिंडदानं यत्क
सर्वमनर्थकं ॥ ४९ ॥ चौपडी ॥ ॥
नरुन पराधीन होये प्रैसै पंध
बंध्यो डोरि सो जै सै ॥ नरुन मेरे

एंस्य शी दूरतः परिवर्जयेत् ॥३५॥
 चोपई ॥ रुमरे सबे जग्ग धुकारा
 धुक रुमरे बृत बुधि प्रचारा धुक
 बद्दा पढ बो सब गपनौ ॥ धुक रुम
 शैये ग्या तापनौ ॥ धुक रुमरे बृत स
 बहा करे ॥ धुक कुल मद्द प्रत्ति मोन
 निन्तरे ॥ धुक निपुन तार जो गुणा
 न श्ये ॥ साबै र क दृते विमड प्रजून
 ये ॥ क ह्न न कि म्मां ड बजांनी धनि
 ज म्ख धुक ता हि जन बघांनी ॥ ध
 निये पतिनी रु रि मन ना वना य
 नहा प्रसि रुम सोय रे पावनः ॥४०
 ॥ श्री नागवते दसमे स्कंधे यज्ञ प्र
 तिवाक्यं ॥ श्लोक ॥ धिकु जत्मन
 खि वृहि द्या धिकु वृतं धिकु ब ऊ
 तां धिकु कुलं धिकु क्रिया दा द्यं
 विमर बाये त्व चो दा जे ॥४०॥ चोपई
 रु रि के विमड प्रदू रिते त जीये ति न

स्मत्कुले जातः सोऽस्मात्सन्तारः
प्यति ॥४७॥ चौपई ॥ तौ लौ पित
नरमत संसारा ॥ पिंड हितरस
तबारबार ॥ कुलमे पुत्र न
नोई ॥ क्रद्म नक्ति जो लौ नहाते
॥४८॥ पद्मेपुराणा ॥ श्लोक ॥ ताव
मंति संसारे पितरां पिंड
यावत्कुले सुतः क्रद्म नक्तियु
तै न जायते ॥४९॥ चौपई ॥ वृ
द्म बाहुरमखर ॥ संसारा पि
इदं न देवा हरि ॥ तारा पितरक
त नहा प्रंगीकाराः ॥ य ह सा स्व
यो निरधाराः ॥५०॥ श्लोक ॥ व
हि मुरवन ॥ त्रेण आइं यत्पित
गां तथा ॥ ज्ञातव्या पिंडदानं यत्क
॥ सर्वमनघकं ॥५१॥ चौपई ॥ ॥
न न पराधीनहा ॥ प्रै सौ पं
बंध्यो डेरि सो जै सै ॥ न कन मे

आशिवे ह्रव

। निरमलसोयेदि

क्तिकरेजो नो जना

सोये कनारी।

धपनश्लोकनकासा

॥४३॥ श्लो

क॥ आलापाद्गात्रसंस्थरीन्नि

सात्सहजो जनात्। संचरंति च पा

निंतेत् बिंदुरिवां नसि ॥४३॥

चोपरी ॥ वै ह्रवको देघतसो जे नर

चूपर ॥

नेरजका ॥ तनसो लागे ॥

सनिग्रनूरागे ॥ तितने सतमब्ध

तरतांसी ॥ सततरसै स्वर्गके मांसी

कैयसुतिषिसास्त्रग्रनूसारा ॥ ४३ ॥

गकमसै मां करुत प्रपारा ॥ ४४ ॥

आगजे ॥ श्लोक ॥

आदिपुराणनक्षिसुखदेनाः॥
कृष्णकहैः प्र. न सौबेनाः॥५॥
आदिपुराणे ॥ श्लोक ॥ यत्र यत्र
चमद्वक्तास्तत्र तः सर्वानि
च गंगादिसर्वतीर्थानितैः
यांतिसर्वदा ॥ ५२ ॥ चौपई ॥
मेरेनक्षलगतजिहैप्यारे सो
हीमै सांजपायये ॥ ५३ ॥
हिकोउबलननाही ॥ अरु न
सतिकहिलौतुवपाई ॥ ५३ ॥
क ॥ अइहोउद्वेनोयस्यसएव
ममबध्नन्ततत्यरोबध्न नोत
स्तिसत्यंसत्यंनमाइंन ॥ ५३ ॥
चौपई ॥ बिखईनक्षहोयनोको
ई ॥ इराचारजातैकध्रहोईभेरे
नक्षपबिब्रहीजांतो ॥ अंगनत
नकनमनमैआनो ॥ नक्षदोष
॥ मनमेलावे सोतरबरकमा

ही जो नर लेही ॥ अरु रुक्म सांख कन्ता
जा जानू का सी घंड प्रती चि वषांन
न ॥ ४६ ॥ काशी खंडे ॥ श्लोक ॥ वैश्य
त्रि चिष नोषं वै पितृणां च दिवोक्
सो ॥ सर्वेषां नू सुरा ईनां न किंदं
कल्प घाप हा वृत्त हत्पा स हत्पा
ए न्नु ए हत्पा सता निचो ॥ तस्य पा
पानि न न्प्रति वै द्भुवो ॥ चिष न
जनात् ॥ ४६ ॥ चो प्र ई ॥ वाके पितर
हर प्रसिधे नर ही ॥ खं न ठो कि बि
निरत्त हिक र ही ॥ अ निक हत्त हत्त
वारं बारा ॥ वै द्भुव कुल मे न यो
मारा ॥ अरु रुक्म कौ नि श्रौ तौ रै गौ
अप नौ हं कार ज सारै गौ ॥ वै द्भुव
न हं मा प्र गट जना वै ॥ पद्म पुरा
सा खि य गा वै ॥ ४७ ॥ च प्र वृत्त पु
सो ॥ श्लोक ॥ प्रा स्फोटयंति पित
न त्पं ति च नु कु र्मु कु र्मु वै द्भुवो ॥

नी ॥ निज न कनकोय ह प्रता ॥
कसै बराह अर निसो प्राप् ॥ ५६ ॥
वाराह पुराणे श्रीवाराह देव वा ॥
किं ॥ श्लोक ॥ योजनानितयात्री-
णि मम चेत्रं बसुंधरे ॥ स्त्रेष्टे
शे शुचे वापि मद्भक्तो यत्र तिष्ठति
५६ ॥ चौपरी ॥ नक्तुह मारे बांधव
नांके नक्तुह केरु मबं धव सहा
के मेरे नक्तुह गुरु वे मेरे मे गुरु
क्तुह दा मम चरे नक्तुह का म
॥ ५७ ॥ श्रीमद्भक्तो यत्र तिष्ठति
लघाई ॥ ५७ ॥ श्रीमद्भक्तो यत्र तिष्ठति
श्रीमद्भक्तो यत्र तिष्ठति ॥ नक्तुह
बांधव वा वयं ॥ श्रीमद्भक्तो यत्र तिष्ठति
नक्तुह नां गुरु व वयं ॥ ५७ ॥ चौपरी ॥
मे मां क्तुह प्रसाद जितेका ॥ गो वि
नां व प्रना व तितेका ॥ नां न वृं स्त
हा स म ङि दुरा पा वै द्य धा म ह क

तिहितजि

प्रोणस्यमा

इदलास्यासमा

॥५०॥ श्रीनागवते ॥

श्लोक ॥ प्रसन्नं च पराधीनो

स्वतंत्रश्च हि जास्य च्यु

॥ ५० ॥

॥ नेनेलिदेसा च राजां नो

साधनकोरिये मेजसा

बिनसाधुकाह राजां नो ॥ तिल

॥सा

॥५१॥ श्लोक ॥

साधुवो हृदयं सास्यं

महन्प्राप्त

॥५१॥ चोप

॥

गंगा

यकवोगनप्रोवै॥ तौकहा॥ ॥
चावमिटावै॥ वृत्तइवता ॥ ॥
तजहांही॥ हरतिवृत्तसत्याधिना
मांही॥ तैसैसिसंतउ बिंदुयाया
सबहासनाको नजन ॥ राजामै
कधूसंदे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
बैनाः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जनितेवपुषस्तदोवैर्न प्राकृत
त्वमिहन्नत्तजनस्यप ॥ ॥ ॥ ॥
गात्रसांनखलुषु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वृत्तइवत्वमापग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मैः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तुवगुंनगावो॥ श्रवनिनिः ॥ ॥ ॥
तिहारोईनावो॥ हस्तच नसेपी
नितिलहो॥ कस्तकचरणकधल
मधिरहो मनः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्यप्रसगहोतिहितजिचिन
 ज्ञातनरहो ॥ प्रोणक्षमोनिन
 कृप्रायमोक्षीनदूरबासासमगा
 जंतोक्षीः ॥ ५० ॥ श्रीनागवते ॥
 श्लोक ॥ प्ररुंनक्तपर्याखीनोस्व
 स्वतंत्रश्वहिजासाधुनिर्गस्तस्व
 दयोचनेनेकजनशियः ॥ ५० ॥
 चौपदी ॥ मेरोहिदेसाधुजांनौ ॥
 साधनकोहियेमेबरहीछानौ ॥ मे
 विनसाधुकाहूनजांनौ ॥ तिनवि
 नकोमनतनकनमानौ ॥ दूरबासा
 सोहरियेरुकरही ॥ सारख्यसुहास
 वपूरतनमहाः ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥
 साधनोहृदयंमस्वसाधुना
 हृदयंत्वरुंमदहन्या ॥ तिनज्ञानंति
 नाहंतेन्येमनागधि ॥ ५१ चौप
 दी ॥
 जसःगंगा

नाभ्यं स्मरन्ति न जायन्ति च
श्रयामि ॥ न किस्वदायपदपं
कजमादरे ॥ आश्रानिवास
षोत्समदेहिदास्यं ॥ ६१ ॥ चौपरी ॥
वासुदेवकेन कृष्णं न्या ॥ सांता
सुहृसमचितवेधन्या ॥ तिनके
दासनिदासकहाउं ॥ जन्मजन्म
प्रन्तयबपांजं ॥ तबयेनरतनह
यपुनीता ॥ विदुरकहतमधिप
उवजाताः ॥ ६२ ॥ पांडवगीतायां ॥
विदुरवाक्यं ॥ श्लोक ॥ वासुदेव
स्य येन कृष्ण ॥ सांतास्तज्जन्मानस
तेसांदासस्यदासोहं नवेजन्म
निजन्मनि ॥ ६३ ॥ चौपरी ॥ जास
कुलमैजोनरतनपावै ॥ तसाज
गवतनांमकहावै ॥ सांताताकी
उवताहै ॥ पित्रनकौं चुरधरत
वहाहै ॥ गरडपुराणबषाणतश्र

स्त्रियप्रसंगस्योतिहितत्रिचि

हृजातनरस्योऽप्राणसमोति

हृप्रायमोक्षोऽद्वैतवाससम

उंतोक्षीः ॥५०॥ श्रीजागवते

श्लोकाः

स्वतंत्रश्रवहिजासाधु

दयोऽनन्तैर्नैकज्ञानप्रियः

वपूरतनमसोः ॥५१॥

रुदयंत्वं

३॥
जसुःगंगा

रुक्मोगदसुं . सोयहविधिः

॥ ६५ ॥ नारदीये रुक्मोगदप्रति

श्रीशंभुदेववाकिं ॥ ६५ ॥ श्लोक ॥ श्वप

चोपिनाहापाल विहो . लो . वि

जाधिकः . विह्मनक्तिविहीनोपि

यतिश्वश्वपचाधिकः ॥ ६५ ॥ चै

परी ॥ इ . सवैतुमतुष जलोक्त

काकसनां सुनाये सोक्त ॥ ६५ ॥ पच

हाईडमरे श्वरसे बिल्ला प्रबृल

कै सोशी तुमते विमुरव बृल्लइस

नां ॥ सदादेवहाई स्वपचनिदान

रवाप्रंड सकंद न राणां ॥ ६६ ॥ बृल्ल

निजमपचनवषांनाः ॥ ६६ ॥ ६६

स्कादेरेवाप्रंडे श्राष्ट्रलोको ॥ श्लोक

॥ ईडोमरे श्वरो बृल्ला ॥ प्रबृल्लतदे

वही श्वपचोपिचवत्येव य

दातुषोसिकेशव ॥ श्वपचादपि

कषत्वं बृल्ले सानादयः सुराः ॥

हिदुषवै जोयुजनीचां कल्याण
सुनोसाखियेकदिपुं

मइहाः रु...
रीनेलो...

तत्वसें ज्ञ...
सें देस...

तासमां
तापूतदे

क्यारेत तहि
तदे...

मास्तिल
न्येय

नालां...
ताज...

तीजे नतानदुतर...

सोचितधरार्थे ईश्वरसारनुधा
रमधिलहाः धरभराये तन
सौकहाः ॥११॥ श्लोक ॥ सर्वत्रै
दृग्वाः पुज्याः स्वर्गमते रसात
ले देवतानामनुष्वाणां तथै
वोरगरक्षसां ॥ येषां स्मरणमा
त्रेण पापलक्षशतानि च दह
तेनात्र संदेहो ॥ वैश्रवणमहा
नो ॥ ११ ॥ चौपरी ॥ वैश्रवणकी
चरणरजपरसौ ॥ गंगस्नानस
मशुच्यफलसरसौ ॥ जगज्जल
दानधिजो ज्ञायो ॥ सोफलचय
तचरणरजलांघ्रौ ॥ चरणोदिक
कान्तरुमांजेती ॥ सोपैक
नहातेती ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ येषां
प्रा- रजसा प्राप्यते जा ज्ञावीज
लं नार्मिदं यामुनं चैव किंपुन
पादयोर्जलं ॥ १३ ॥ चौपरी ॥ वैश्र

नक्तु प्रताप ॥ अल्पपुत्रसंख्य
जीरुयासा ॥ तिनकैकबरुनसोये
बिस्वासा ॥ तानैयेनमैदिठकरिन्
वा ॥ बरनौपदसपुराणनुपावा ॥
५८ ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लोक ॥ महाप्र
सादेजोविंदेनाजबुस्तानिबेदुमवे ॥
स्वल्पपुणपवतांराजन ॥ बि
श्रासोनेवजायते ॥ ५८ ॥ चौपदी ॥
जोकादाचिरुरिनक्तुनभांही ॥ स्वन्
विकजहोषइसांशीतथादेरुक्रुदत
इषाणइसै ॥ रुरिनक्तुनकौंकबरु
नप्रसै ॥ नक्तुदोसप्राक्तुनभांतीये
नक्तिनकौंबाध्यकनजांतीये ॥ श्रौ
रनकौपुनातक्तुप्ररथा ॥ सर्वलन
तिंतेसदासमर्थो ॥ ताकोयरुइषां
तबिचारी ॥ सोसुनिकैसैदेरुनि
चारी ॥ गंगासुबिबुदबुदाप्ररकागा

षष्ठे च तदर्थं ततः ॥१४॥ चौथी
कंदर्प ललाटेनाम विराजोपव
जमणी एतत्कामुत्तसा ॥ बाहू म
लसंखादिककोये ॥ हरि मंदिर
मस्तकप्र ॥ ये ॥ ज्येष्ठे हरिदे न
सुहाये ॥ नुवनपिबत्रकर चुक
ये ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ वंजलप्रत
लसी नलिनाक्षमालाये बाहु
मलपरिचिह्नित शंखचक्राः
येवालयलाट ॥ कंदके लसदूर्ध्व
पुंडाते वै ह्यवा नुवनमाशुप
वित्रेयं ॥ १५ ॥ चौथी ॥ नित्य
प्रात उदियरुबूत धरंसी ॥ वै ह्य
वनां मकारतनकरंसी ॥ कलि
मै प्रमनागव ॥ जोरी ॥ कृ ह्यस
मानिजानीये सोई ॥ दारावती
महातमसा ॥ रवी ॥ श्री प्रह्लाद
बलिहाये नारवी ॥ १६ ॥ दारका

हारौ ॥ संततुमहिरनयननिरुहौ
सतकुबेरिकेऽप्रीतिबडनागी ॥ ६० ॥ श्री
नोडूजूसौयसुभांगी ॥ ६० ॥ श्री
गवतेदसमेसकंदेनलकुबेरबाक
श्लोक ॥ बाणागुणानुकथनेश्रुत
णौ कथायांरुतोचकर्मसुखन
स्तवपादयोर्नःस्मृत्यांशिरस्तव
निवासजगत्प्रणामेदधिःस्वत
दर्शनेस्तनवेतननाः ॥ ६० ॥ चो
परी ॥ श्रौरनकसौश्रौरनरिसुनौ
श्रौरनकौचितवनपनगुनौ ॥ श्रौर
नसुनरौश्रौरननजौ ॥ श्रीश्रयश्र
रकरतसौलजौ ॥ हेश्रोकृद्वच
सुवरासी ॥ हेरुदासिकरिचरण
निवासी ॥ येकुकंदमालाकविने
हितकरिलिसासंतसुषदोनी ॥
धीमकुंदमालाया ॥ श्लोक ॥ नाब्द
वदाभिनश्रुणोमिनचिंतयाति

साक्षादपि च पुष्पसे ॥ १ ॥ त्वक्त
सर्वकुलाचारो ज्ञानायातव
वानापि ॥ विद्वोर्नक्तं समाश्रि
त्पनरो नार्हति यातनो ॥ ८० ॥
चौपडी ॥ वही चो नमद चूनि
जांनीये ॥ सोही निरस्ये समा
नीये ॥ जहां न संत सफल
छोही ॥ सातल करन ॥ रतही
नांही ॥ येक घरा हुताहां न वसी
ये ॥ तहां तैबे ज्य कसरि हा कस
ये ॥ संतन का न हे मा सुख दाई
य सब सेष्ट रिखिबर नि सुना
ई ॥ ८१ ॥ वापु सेष्टे ॥ श्लोक ॥
यस्मिं दे शे मरोत ॥ नासि
सजुन पा पः सफलः शीत
लं छायेन तत्र दिव संवसेत
॥ ८१ ॥ चौपडी ॥ सदा संत निप

सै॥ मैमांनकृत्विर्विनेतैसैः॥
६३॥ गरुडपुराणे॥ श्लोक॥ कलौ न
गवतं नामा॥ यस्य पुंसः प्रजायते
जननी पुत्रीणि तेन॥ पिबेत्पुण्ड्रं
रं धरः॥ ६३॥ चौपडी॥ अतः काले
मैजिह्वासा॥ रसिकबैह्वकैरे
निवासा॥ बृंहस्तथानयपायास्त
हेनगवतघातपायसैसोईरुति
जनमसैमांस्तुतिदेनी॥ अकारक
डेजूकायबानीः॥ ६४॥ श्रीनारक
केबोक्त्र॥ श्लोक॥ समीपंतिष्ठते य
स्य स्वतकाले पिबेत्पुण्ड्रं गच्छते
परमं स्थानं यद्यपि बृंहस्तान्न
येत्॥ ६४॥ चौपडी॥ स्वपचरुवि
भुक्तजोलेईदिजतैअधिकम
ायसोई॥ बिह्नुक्तबिभुजती
रुवै॥ सुपचतैअधिकसुधिक
पावैबोमदेवनारहपुराणमधि

बिनि सनाये ॥ ८ ॥ गरुड पु
राणे ॥ श्लोक ॥ सत्रया जिस ससे
न्यः सर्व वेदांत पा ॥ १ ॥ सर्व वे
दांत वितकोद्या विष्णु नको वि
शेष्यते ॥ १ ॥ वैश्वानो सस से न्य
रको स्येको वि शिष्यते ॥ एकांति
तस्तु पुरुषागच्छंति परमं पदं
॥ ८३ ॥ चौपरी ॥ महादुरा चाराहा
नेई ॥ कै प्रनं न्य हरि न जे जू सोई ॥
गोवा कौ साधु राजा नौ ॥ नि श्वैत
ह पिबत्र हा मा नौ ॥ या बिधि कौ
ने प्रजु न साखी ॥ कृष्ण चंद्र गाता
तधि नाषी ॥ तस धिन धमी त्पा
रु होई ॥ प्रम संतिको पत्वे सोई ॥
बजय स प्रकरितू कहियहा ॥
हृष्ण न कृ कौ नासन सहा ॥ पा
॥ हजौ न जन हा करहा ॥ मेरे चर

लदेवाच्युतयात्प्रेतेयदैवत्वंपर
इमुरवः॥६६॥चौपडी॥हेकेसवैजे
तुमरोन्नक्त॥सर्वधरमकरतावृ
जक्ता॥तुमरोन्नक्तिजिहानहागही
सर्वप्रधरमकर्तासोसही॥ब्रह्माज
परुमहमाजोनी॥सोपुनिकारसाध
डवरवानी॥०६७॥तंत्रवाक्यं॥श्लोक
सकत्रीसर्वधर्माणां॥चक्रोयस्तव
केशव सकर्तासर्वपापानां॥श्लोक
नक्तस्तवाच्युत॥६७॥चौपडी॥हे
हरितुमरोन्नक्तजुकोरी॥साकौंश
त्रुमित्रसमिहोई॥बिरवरुजायेष
य्यकैजाई॥कदैप्रधरमधर्मलौ
जाईःफलपाईतुमजोकृपानकरे
मुरारी॥मित्ररुप्ररिहोयेमांडैरार
पथिवस्तुबिरवकौफलदेहा॥ध
र्मकर्तप्रधर्मफललेहा॥६८॥श्लो

गुरते हि ब्रह्मदाई तिनकौंद
देहसमचाई जेरुरिगुरपदव
नकरई तिनकौंदना ॥ ५ ॥ अंमप्र
सरई ॥ ८ ॥ नरसिंहपुत्राणै धर्म
जनाकरं ॥ श्लोक ॥ असमकारग
धर्चिलेन धात्रायमशतिलोकहि
हितेनिबुक्तः ॥ हरिगुरुविमुखा
प्रशास्त्रिमर्त्यानरुरिचरण
एताश्चमस्करोनि ॥ ८ ॥ चौ
॥ जिहुरिके नरुप्रनंन्या ॥ तिन
दोसहोयकधुप्रंन्याधतोकसा
नकौंदोसहसावे ॥ नजनप्रन
तेनिकटनशावे ॥ शिशिनैजद
कलंकलखावे ॥ तोकलचंद्र
तिमरदबावे ॥ येरुनरसुरिपु
॥ सोसुनिचक्रना
अनिलापी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ नग
ततिचैहरावनन्यचेता नराम

ब्रजनकावाणावशिस्वेहातरथ
कस्योविचारिबचनतीरथजेक
रिस्नानातामहैमाकेसुनोबध
नांगंगाजलरुमेविनज्ञायोस
हंसतीरथमजुनविनूयायोसव
तीरथप्रसन्नानफलहेशिताको
बचनसुनोप्रबसोहीः॥७३॥ श्री
क॥ येषावाक्यजलौघेन॥ विना
गंगाजलैरपि॥ विनातीर्थसरुसे
एस्तातोचवतिमानवः॥७३॥ श्री
प्रदी॥ सषचक्रप्रकिततनुसाजे
तुलसिमंजरीसासबिराजे गो
पीचंद्रनमंदितप्रंगाः रंगेरस्त
जेरुरिकेरंगाः जैसैज नकेइस
नलरुहीः तिनकेपापकहातन
रुईः॥७४॥ प्राद्वे॥ ७५॥ श्री
खतचक्रांकिततनुः शिरसासंज
रीधरः गोपीचंद्रनलिमांगोइ

॥ ८७ ॥ चौपरी । जेहन देव वरु

नमस्तुते । प्रतिवडि जागरे

कुबपुष्यारो वृक्षा देह अने

ननां नी । प्रसवा पसुपुष्यत

पानां । सुदास यजामि कस

का । अइ प्र सुवसेकु गुनगोक

॥ ८८ ॥ अ देस मेवु त्रस्ततो ॥ श्री

का ॥ तदस्क कोजा यस नूरि चाग

नवेववा न्यत्र तुवातिर श्री ॥ ये

नाहके कोपि तव जुवाला

नत्वा निचे वैतव्य इष सुवं ॥

८८ ॥ चौपरी ॥ संतनकी नाह मापे

पार ॥ सवने नाकोक रे विचार

जद्यपि जयतु विजय हायो प्रप

नी निरकलता के लोयो । जो जहे

क धूसंग हकनी । सो सो न जनाप

रि सुहरी । के उलो क सो जी वीर

हे ॥ सो सतसंग ति हे वयु मा ही

रेचलिजेयो नूनसौहृद्विभिलि
रंगबहईये। इदिपिवेनुपदेसन
करसीजोकधुमुधरबचनउच
रई। सोहानुपदेसमांनिसुच
लाजे। ईसीबिधिनिजकल्याण
कराजे। यरुबसिषुजवरबलक
नौ॥ सोयेसारबचनमैलीनौः॥
८२॥ वासेषे॥ श्लोक॥ सदास्वालो
निगंतव्या। यद्यप्युपदिसेतित
याहिस्वैरकधसेषामुपदेशा
वतितता॥ ८२॥ चौपरी॥ सहसर्जिष
जोबिधिबतकरै। तासेदोबेदा
सरे। बेदांताजुकोटिसतिसतस
तिहितैकरेनगतप्रतिउतमाति
नमैजोईकांतीसाधूरसिकनक
नहमांसूग्याध्यापिरुपुराणके
बचनसुनायो॥ सोहाबरनिकैस

नगवद्रुह संगोहिरुहिनिकिस
मिधता ॥ १५८ ॥ चौपडी संतसं
भगवत्प्रकृतकहांसी सागरते
तौनिकस्योनांसी ॥ १५९ ॥ राकि
क इकरतगायो ॥ तानहैमाकोपा
रनपायो ॥ सागरतेवस इकरतनि
कास्यो ॥ विश्वरुकोवसबं धुकर
वै ॥ जन्ममरणान्तयनाहिसिदि
तातैश्रेष्ठप्रंमतयसुजांनौ ॥ संत
प्रचावनहिकथुथानौ ॥ पुनिस
संगरसायनरूपो ॥ संवेरसाय
नकौयसु ॥ १६० ॥ नुपा ॥ नरुकरस
वनेरसायन ॥ वनथके ॥ रो
सकेसुसिदायन ॥ सुलनमितै
तरंगाएराएन ॥ नावनीकिडुत
विपददयेन ॥ प्रगंनंदरुनसत
संगा ॥ जगकौरंगकौचिकौअंग
जगतसंगसाइराइ ॥ कूपसौ संत

ए सरणं अनूपरहा ॥ शुद्धै शपुत्रय
वाहानारी ॥ होये मुक्ति पदके प्रधि
कारी ॥ विप्रराज शिखं कुकर सने
तेन वतिरैकं शुद्धसं देहा ॥ ८५ ॥
श्लोक ॥ प्रधिचे सुदुराचारो न ज्ञे
तेमां मननप्रजाक्वासा ॥ सुखे संन
तव्यः सम्पत्वाव सितो हि स ॥
दिप्रंचवति सुखमोसा ॥ श ॥
व्यांतिनिगद्यति ॥ वैतेय प्रतिज
नाहिनको नरु ॥ शणा शयति ॥ राम
हिपार्थव्यापा ॥ श्रित्तये धिसु
प्रापयो नयः ॥ श्रियोचे श्पास्तथा
डास्ते प्रियांति परांगति ॥ किंपुन
स्नणाः पुण्ण नहंनरा जययस्त
॥ ८६ ॥ चौपरी ॥ नररु रपु शं एमोसि
यगाई ननना जम हुल विवदति
षाई मूक्ष चंद्र प्रनु प्र नरु दाना
मोसि मूक्ष चंद्र प्रनु प्र नरु दाना

नाहोइसंतसंगै ॥ होयेनहि
संतसंग ॥ रगत ॥ सोपरचीनसु
कृतसौंमिलईतबयेमनअन
दरसजालई ॥ ब्रह्मद्वारदाकृत
तप्रमानां ॥ सुखीबचनच्यतध
रोसुजांनाः ॥ १०१ ॥ ब्रह्मद्वारदापू
रणो श्लोक ॥ नाः ॥ ब्रह्मद्वारदा
कृतसंगेनपरिजायते ॥ सत्संगः
प्राप्यतेपुंनिःसुकृतैःपूर्वसंचि
तैः ॥ १०१ ॥ चौपडी ॥ सर्वोपरिरि
तसंतसंग ॥ उद्धवसौप्र
सौप्रसंग ॥ गुह्यबचनपरुसु
नीरुमारो ॥ उद्धवतुममप्राणपि
पारो ॥ जोगप्रधोगमुक्तिबस
करही ॥ सोखिरुमेरोमननकर
ही ॥ धर्ममोखिबसिकरैनक्योह
॥ १०१ ॥ उद्धवतुममप्राणपि
संतसंग ॥ जोगकीयेह

शान्ति विराजते कबुजः लीलि
शरक लुप्तपुत्र विः कदाचि लि
किरपरा नवती नुपै लि चंद्रः ॥

८६ ॥ चौपरी ॥ ललक म व च न न क
रिखो यो दी वे हा व प व न व किये
न ही जो ई ॥ य क ये क दि सर छा क

न ही ॥ य क दि स न रु ड न क व ह व
न ही ॥ य क ये र ति ह पार व द दो रे
ल रि र छा ता के च ह यो रे ॥ वि ह प्र व

जा डा करे ज को शी यो ने री सा न
य न लो री न म इ त न ह ति न च न
सु हा व ता य है न र ह रि पुरा ण वि

वि श्रा व त ॥ ८७ ॥ श्लोक ॥ क रो मि
क र्मा णां च ज म न सा धि न वि प्र य ॥

वे हा व ता न क ता जा गा रु ड री न
न य द पि ॥ १ ॥ ये क तो य व र्च च क
वे क तो रु . २०५ . २१५ वि
सु इ ता ॥ १ ॥ २०५ . २१५

धर्म एव ॥ नस्त्रा ॥ परमा
स्त्रागोनथापूतनदक्षिणा ॥ २
वृत्तानियन्ताः चेदां सितार्थी
ननियन्ताः माः यथावसं च
सत्संगः सर्वसंगापहोहिमा
१० न ॥ चौपरी ॥ नेत्रपायबेकेफ
लयैरे ॥ नक्तजननकोहरसन
लहे ॥ देरुधं कौयसुपललजि
नक्तसौ ॥ अलिंगनकाजे ॥ जि
का तोवरुसुफलकहावै ॥ हरि
दासनिकेगुणागणावै ॥ येरु
जगमाहिला नयसुजांनै ॥ संत
समागन्तुदुरल नमसंनौ ॥ जनप
हलादसिधरणाकहरी नरुमां
नक्ति सुधोदयलरुई ॥ १०३ ॥
हरि नक्त सुधोदयेयं ये श्री प्रह
लाद प्रतिशरणीविक्रं ॥ श्लोक ॥
अज्ञाणोः फलं त्वादृशदृशनिं हि

॥८॥ वत्सत्रवाक्यं ॥ श्लोकः ॥ अतः
श्रीनगवद्भक्तजनानां संगतिः ॥

॥ काव्यासुखं प्रयत्नेन
विजिगीषुभिः ॥ ८ ॥

रिक्तं सत् प्रजावत्प्रजेता ॥

॥ तिनकोबासि ॥

ॐ प्रथो नो ॥ साधनसुईज्ज
ल्यानां ॥

असहकार्येण पुराजलधो

॥ एवां श्लोकः ॥ नगवद्भक्तपादा
न्यानकोनकरः ॥

धनं च साध्यं च ॥

॥ एवां ॥ चोपशी ॥ वैहृदसंग

नक्तनकासंगतिपाशी
तिकरुमुक्तिकाईसाईलाकोईरु
विहितारयो प्रमोनां ॥

नवसिंघतरौंगो चचुरथै

पञ्चुवसन्नीनी ॥ प्रचुसौधरुज

नीकीनीः ॥ चतुर्थेसकंदे श्री

वाक्यं ॥ चकिमुङ्गः प्रवहता

यिमे प्रसंजो चुथादं तम

नकीला शयाजी ॥ यच्चैजसोत्

गुरुव्यासनां नवा ॥ द्वैनेध

प्रचुण्णकथा गत धौजमत्रः ॥

पा ॥ चौपरीहिरितुवनायाव

जालौ ॥ मकरकन्या नस्यो चम

नसौतौलौ ॥ चकनकासतसंग

तिद्विजे ॥ यलकृपा नदं दनक

जो ॥ प्रजानमजम संगतिसु

कादी ॥ यलकृपा नो हिकरौ बिरु

दी ॥ सतसमागम सुमतिरा

येल प्रचेतन प्रचुसो जाची ॥

१० ॥ चतुरथोसकंदे प्रचेतसा

जासवसुनोसुजांनोदिदिकरुल
॥ ए३॥ पाद्रे ॥

क॥ गंगादिपुण्यार्थेषु यो नरः
तुमिच्छति यः करो
ः सत्संगलोचरः ॥ ए३॥

चौपडी

॥ सतसंगलिकदिषावेसिद्धी
दृष्टाकरशीसंगन

साधुजनोदयसरसीः ॥ ए४ ॥

श्लोक॥ यानियानिदुरापानि
चित्तानि वहातलोप्यतेना
तान्मेवसा

॥ ए४॥ चौपडी सतसंग
वि

॥ सतसुसंगकुक्तिको

॥१०८॥ चौपई ॥ अग्निज्वाल

च ॥ अरजरवै ॥ पाडा सुतो

हनमै आवै ॥ कृष्णचिंतवन

ज्बिभुर ॥ जन ॥ तिनकै निक

टिनबैठी मुहुमन ॥ निकट

बासकी ज्वालत चावै ॥ पाडा

ता सुसहिन हाजावै ॥ १० ए ॥

काल्पायनी ॥ श्रेयवीक्य ॥ श्लोक ॥

वरं कतवस ज्वालापंजरं तवीव

स्थितिः न शौरिचिंता बिभुरव

न संबासवै शसं ॥ १० ए ॥ चौपई ॥

बि ॥ देस उतम प्रस पा शवै ह्रव

में रुचिन सि प्राई ॥ तो जां नायेनी

चन सिर मोरा ॥ तिन ॥ संजास

एत जिबोरा ॥ जो कदा चि संजास

ए होई ॥ तो सरसका ज्यो म ति को

॥ १० ए ॥ स परस कदा चि कै जाई ॥ ति सि

संगसर्वसकलचुपहोबरनौंप
द्वपुराणप्रसंगात्प्रसन्निकैक
राधोसतसंगः ॥ ॥ एषामप्य
पुराणे ॥ श्लोक ॥ प्रसागरोस्यस्य
युष्मद्व्यंन्यसनेषुचोस्य
श्लोकपर्यंतःसत्तंकिन्त्वसमा
नः ॥ एषामचोपई ॥ कृष्णकथा
करतपांनजुचोहोस्यसदसंगति
हेतिगुमाहोनीवक्तव्येप्रसंगसं
तनको ॥ हेसुखदाइकश्चएरु
मनको ॥ आहुरिकथावसायेनरु
पासतसंगतिहेतुहेतुनुयापर
द्वपुराणानाहोस्यसुखानीनारद
जबरनीधसुखहोनी ॥ १०० ॥ प्रद
पुराणेनारदवाक्यं ॥ श्लोक ॥ प्रसंगे
नसतमात्मनःशुतिरसायन
नवंतिकातेनाथस्यकथाःकृष्ण
स्यकोमलः ॥ १०० ॥

कृद्मन्त्रगतितैः सत्तद्वैजैः
 विज् ५५ संत ज्ञानायते ही ॥ सद्
 चार नित करत विचारीये ॥ पुनि
 कर नति ॥ करत निहारीये ॥ तौ ह
 उन कानि ० घ्रा सो ई ॥ न्द्र चं ६
 मै क व ह न हो ई ॥ ११२ ॥ तत्र प्रोक्त
 श्लोक ॥ कृद्मन्त्र कि विहिनाये
 मुख्या संत स एव हि ॥ तेषां निष्
 शु चक्रा पि न स्यात्स च्चरितै रपि
 ॥ ११२ ॥ चौ पदी ॥ कृद्मन्त्र कि विन
 ही न जू को ई ॥ वेद सा स्त्रु ब ह ज्ञान त
 हो ई ॥ क हा हो ये क रितार थ बा स
 क हा न प्रो ० त प्र करित न त्रा सा ॥
 क हा न यो क रि जि ग्य वि ध्यां नां ॥
 हृ ह नै ना र दी क हा त पुरां नां ॥ ११३ ॥
 ३ ॥ वृ ह नै ना र दी पुरां णे ॥ श्लोक ॥
 किं वेदेः किं मुवा ० शास्त्रे किं मुत्त
 र्थ निषेवणोः ॥ विद्मन्त्र कि विही

बसिनहातेसैहैवपुजिबहुजग
रचावैबाप्राकुपतलावसंचाव
वृत्तबहुकरैदृष्टनाहेही॥यनले
मोहिंनबसिकरिलेही॥बलिबै
स्वदेवकरैबहुचांती॥बेदपदेवि
तहितप्ररवातीतीरथजात्रास्व
कलकराईथसनिथननिसाहे
मनमांसी॥निसायनलेकैलस
नांसी॥यालेसतिकलौतुहियांही
वसीकरणजोकोसतसंगराजुह
तिसुतैराचरुदंगरा॥सिक्कादसम
धिक्काहकहीलौ॥इहकदिनह
वसुधिधिगहीहैः॥१०२॥एका
दसेश्राकृत्तचंद्रवाक्य॥श्लोक
अथैतत्परमंशुसंशुश्रुएवतो
यदुनंदनसुगोप्यसपिबुद्ध्या
नित्वंमेचत्पुःसुस्तसखा॥१
नरोधर्या रवा

प्रायश्चित्तानि चार्णानि चारणानि
परांश्चुरखं न निःपुनंति राजेन्द्र
राकुं न निवापगाः ॥ ११५ ॥ चौ
ई ॥ न न के पाप द्यो ज क ब स र
कौमंगल लक्ष्मि न तौ स ॥ जिन
न न मंगल य ॥ जो लो ब स
कसन स रूपा ॥ विष्णु धर्मो न
ग्रंथ का वानी ॥ नै ये लिखी सु
गलदांती ॥ ११६ ॥ विष्णु धर्मो न
श्लोक ॥ कुतः पाप क्षय स्तेषां व
स्तेषां च मंगलं ॥ येषां नै व दि
यं मंगला यत नो हरिः ॥ ११६ ॥
चौ पश ॥ कृष्ण चरणै विष्णु
कोशिकाया श्रवणा ॥ न क दाये
ई नरक पाप के को मंगल ॥
स नै ॥ न क स्यो सने स ॥ जि
रिगु ए न सानु चुर ॥ चित न
क्षपद स न र ए कर ॥ कृष्ण च

तन्वाः फलं ललाह सगात्रसंगः
जिष्णा फलं ललाह शकार्तलोहि सु
दुर्लभा नागवती सिलोके ॥ १३ ॥
चौप्रदी ॥ छिन नंगुरदुरल नयेरु
नरतनाहुरल नहरि नरुकोदस
ननपति छिदेरु लचन येरुली
को नवजेरु सुन प्रति शु नय
बहाको ॥ १४ ॥ येकापस स्कंधे वि
देरु राजावाक्य ॥ श्लोका ॥ दुर्लभो न
नषो देहो देहिना द्वाए नंगुरः त
त्रापि दुर्लभं ननयो लोके वृष्टि यद
स शनं ॥ १०५ ॥ चौप्रदी ॥ हेरु रिजे
अननपलु अहारि जना कषट नरुति
निरमल लिनके नन हलिनको र
गनाथ मोहि दी जो लि लि लि लि
तिनहा लान यरु ली जो कया
धारस पा न करी गो ॥

करिञ्चनमानतिनहीप्रथमां
अर्थधर्मजस अस्तु सुःसादि
यतेसकलबिनासैताकेकरि
हिंमुहजेबैद्वनिंदा॥जानिय
तेनरप्रतिकतिमंदा॥पितरनि
लेरं॥॥मपुरजाईजायपैरे
पुनिरोरवमांसं॥यसुबिधिक
स्तसकंदपुराणां॥बैद्वनिंद
सुनीयेनकांतां॥११८॥सकंदपु
राणे॥श्लोक॥योहीनागवतंलो
कं पहासंनपोतकाकरोति
तस्यत्रांतिप्रर्थनर्जयद्ःसुता
॥१॥निंदाकुर्वतियमुद्वैद्वनिंदा
नांमहात्मनां॥पतंतिपितृनिः
सार्धंमहारोरवसंज्ञिते॥११८॥
श्लोक॥ताडननिंदाद्वेषकंजा
बैद्वनिंदेखिसराहेनहिसो॥क्रो

क्ये ॥ श्लोक ॥ यावत्तेमाकयास्य
ब्रान्नुमाकईरुक्सीनिःलापइ
वत्ससंगानांलग्नःव्याज्जोत्तवे
त्तवे ॥ १०६ ॥ चोपई ॥ यत्प्रादिप्र
येवचनप्रलक्षणां प्रदिस्रप्रधार
महमानिधिप्रदलाःवरदेशाघो
लासोयहईःहरिचक्रधनकासं
गतिलक्षेई १०७ चोपई ॥ हृत् हृत्
मघतैकैप्रसंला ॥ तिनकोसंग
नकरैबुधिवंला ॥ द्विदुषसंगक
रीयेनप्रसंजानी ॥ द्विदिसकसु
रधारथहाबी ॥ वरकज्ञातनो
विधिन्तदहा ॥ प्रज्जोदोदयेतेन
रपरहायातत्रउनाएवप्र
श्लोका ॥ प्रसद्धिःसहसंयास्तन
कर्तव्यःकदाचन ॥ यस्मात्तदु
र्थेहानिः

॥ अत्र कृतस्यारक्षारग्रये ॥ श्लोक ॥

न्म प्रन्तति यत्किंचित्सुकृतं
मुपाजितं नाम शमायातित
त्सर्वपादयेत्यदिबै ह्यवान

१४२० ॥ चौपई वै ह्यवनिंदाजे

कोई करसी ताको कष शासु
हधरसी ॥ वा बा देजा ह्यव

सिं जमके दूत करोत निचौर

सकल जन्म जो हरिको सेवे

सो वै ह्यवनिंदा च्यत देवै वै

वकोऽ करै अपमानां ॥ तासि

प्रसन्ननरि तत्पदना ॥ ये ह

रकामसां तमसां ॥ प्रगदप

नावृणु सकधूनां ॥ १२१ ॥

हरिकाकृतने ॥ श्लोक ॥ क

पत्रे शुफाल्यंते सुती ह्यै र्व
शासनैः निंदा कुर्वति ये या

नकवुनलाघाश॥ पद्मपुराण
रिपेरुजांनं॥ प्रियगिरिजाप्रति
रचुबघोने॥ ११०॥ पद्मपुराणे
चंडे पारवतीप्रति श्रुश्रानहरेव
जावये॥ श्लोक॥ श्रुवे ह्यावास्तव्ये विप्रा
चोडालाहृदमास्तुताः तेषां संन
सणस्य रीसो न पा न दिवर्जयेत् ॥
११०॥ चोपडी॥ कृद्म न द्विक्वांती न
हिचायेन॥ नितसिद्धौ हरसां हि
परायन॥ नितकौ संग कज ऊको
उकरशी न इक जं अल न मे ले उपर
ही॥ जसे जं अं अं अं ग रु ला था अ न ल
कुपमै दो उ स्या धां न दे ये का ह स क
हे सा र वा॥ दे रु बि च्या नि हि ये च रि
रा र वा॥ १११॥ एका ह से श्लोक॥ स
गं न कु र्वा ह स तां शि श्वा ह र तृ पां वृ
चित् त स्या नु ग स्त म ह्यं धे प त त
धानुगो ध व द ॥ १११॥

दि नरु जगजी ॥ नाको जीवन
सुफल सहस्रौ मसिमांस्कंद
॥ राण कसो है नक्ति बिनाजी
वैज ० मासि जावो कल्प क
र बुधांसी : १२३ ॥ बिबुधनी
तरे ॥ श्लोक ॥ जीवितं बिस्मृत
कस्य वरं पंचदिना निच न
तु कल्प सहस्र ॥ ए नक्ति हि
स्य वृत्ते ॥ १२३ ॥ चौपरी ॥
ताते जो हरि पद प्र रागो वि
मुषनकी संगति तत्यां
सत संगति सौरति स साव
॥ हन कस संत कसो वै को
रे ग्यानी को रे कर्मी ॥ वे सत सं
गति के न जगती दुष्ट बा स
वना मेरे संत ॥ हिये में प्रेरि
राधि का कंता ॥ दे न पदे स ॥ स

ना किंतपोत्तिः किमश्चरैः ॥११
चौप्रदी॥ सबवेदके गंतला जा
सकलसासुदे प्ररयल कोने ॥
परंतु रुदि नहि नसे शिलो वे पु
सप्रधन है सो शिकल क सो के
रु विधांनो ॥ अगट पु सस स ब र व
नगर ड पुराणोः ॥११४॥ गर ड पु र
ए ॥ श्लोक ॥ अंत ग लो विवेदानो स
र्वशास्त्रार्थवेद्यपि ज्ञान सर्वेश्वर
नक्त सं विद्यात्सु सदा धनं ॥११
४॥ चौप्रदी ॥ कुरु विदु रवे के श अ
त करी ॥ अश्रित लि ब के पाप न कर
शामंदिरा कु न पु नी ल व से शि पिर स
स जार गंग मे धो शि गंग ज पु नी त
न कर ही लो न सो पा प्र श्रित रु र
ई क हो ये स वि वि क ही क ल सो प्र
जा मिल नु ॥ ११५ ॥
षष्ठे प्रजा मिल

केचरएणनवांसी ॥
स्यो जिरुनांसी ॥ नैरेकौलोकति
नहिलैऽप्रावोः ६
तावो ॥

शी ॥ अरमरा अज्जदुलननरमकुशीः
॥ ११७ ॥ अष्टसकंदे दुतान प्रति
मेराजवाक्यं ॥ श्लोक ॥ लानानय
६ ॥ अमसते लिमुखाज्ज
दारविंदमकंदेदरस्य एज्जस्व ॥ नि
किंचनेः ५

ज्ज्वातगले निरयवत्तै निबद्ध
तदमान् ॥ १ ॥ जिघानवकि
गुणानां नये यं चेत अन्नस्य र
अरणारविंदो
यच्छिरएकदापितानानय
सतो कृतविष्णुकृत्यान् ३ ॥ ११७ ॥
चोपरी ॥

हेतेपरिक्ताखिलसंप ३५
हास्तीर्थपादाथपादता ॥ वि
र्जिताः ॥ १३३ ॥ चौपरी ॥ संतकृप
रिचवनप गारै ॥ हाथजोरिति
बिनयेउ ॥ चारै ॥ आजिधनि
रुकायोक्तपाला ॥ आजुनयो

तकृतप दयाला ॥ मेरेवर प्रचु
जिपथारे ॥ प्रतिदुलनहेइस
रुारे ॥ जैसेहेहरिकोपदप्रस
जैसेहीहेतुमरुहेइसन ॥ प्रैसी
तिबिनतीकरेशी ॥ यमहेमासव

॥ १३४ ॥ । सकंदे ॥ श्री

धन्योसु कृतकृत्यो ॥ यत ॥ यं
दुर्लभं चरीतं नूनं वै

॥ १३४ ॥ चौपरी ॥

धनीहृबेधनीबरवाने जीय
संतहा ॥ आइवाने ॥ आसनजल
धिवतसनमाने ॥ अधनीहृबे

अंकैरंतिरिखरुर्वनसाद्यै। अथ
 पराधपुराणं जताद्यै। अथ पराध
 शास्त्रस्वरुधरशीला नैकोच एक
 हकरशी शुचिगुणसकलनासु
 अथ सोशिलक धातये सैनर सोइ
 सकं पदपुराणाय रुलिरव्यौ अथ
 सः विचारः नानाते तु यरुगारुले
 साराः ॥११॥ सकंदपुराणे ॥ श्री
 कृ ॥ इति लिङ्गितिवेदेष्टि वैश्व
 नानि नंदति कुंभ्यते याति नो
 रुधेदरीनेषतना निष्ट ॥११॥
 योपश ॥ वैश्ववकोकोच किंरुस
 तावे अजाते वैश्वपाडापावे ज
 नन प्रजंतकीये सुचजोशीतावे
 सुकृतनिष्ट सबसोशीई
 रनुधार प्रजांती ॥ सौविधिया
 रु

पुत्राणे ॥ श्लोक ॥ प्रत्यक्षं वापरो च

क्षं वापे प्र संति बैद्ववं प्रसादा

श सुदेवस्य ते तरेति च ॥ ११ ॥

प्रत्यक्षं वापरो क्षं वापे प्र संति

द्ववं बुद्धरुक्मद्यपसेयी गुरु

ताक्षी सदान् ॥ १२ ॥ मुच्यते प्रात

तः ॥ बिह राहने पोतम ॥

३७ ॥ चौपरी ॥ आधा करिके पाक

प्रनावै बैद्ववकौ वरु प्र भन्न जि

तावै बैद्वव नद मधि जो परी ॥

एकौ पुन्य प्रमित बिस्तर ई मेरु

वमां किं न सोह ॥ दिन दिन प्र

॥ प्रद ल रेह सोह ॥ प्रमत्त सार उ

चार बरवां नत ॥ फल ल ह य ह म

आजानत ॥ १३ ॥ प्रमत्त सारो दी

रे ॥ श्लोक ॥ अद्वा दत कन्न च बै

द्ववा श्रुषु जी र्यति ॥ तद नं मेरु

णा तुल्यं न वते च दिने दिने ॥ १४ ॥

३८ चौपरी ॥ देव कार्य हित जो क धु

करै ॥ अधा दिक पितर निग्रनं

बैश्वानां कलात्मनां ॥ ११ ॥ इजितो
नगवान् विष्णुर्जन्मालरुचते
रपि प्रसादति न विष्वात्मानो
ह्यवेचापमानिते ॥ १२१ ॥ चोप
डी ॥ वैश्वकर्मा निरुश्रुति सुनती ॥
हरिनिंदा सुनिस्विसन ह धुन ही
महाप्राप कता कौ वरुलागे ॥ नि
नके संग दंगल सो पागे ॥ निंदा सु
नत जो न धनु डिजा ही सुल्ल पुं नि
सब ता सुन सा ही ॥ आ शुक य म्हे
मां उं चारी ॥ सी र व द ई न न संग
ल कारी ॥ १२२ ॥ द स ने स कं दे
५ श्लोका ॥ निंदां न ग व लः श्रु ए व
न त त्प र स्य ज न स्य व ॥ त लो ना प
तियः से पि या त्प थ्यः सु कृ ता ॥
श्रुतः ॥ १२३ ॥ चोप डी ॥ ह ह च ह
कै हरि र स य वि पांच चार ह ॥

कलशमसैरौ कृष्णचंद्रसौ सुख
 कृष्णकरो संतलकामसैरौ मज्ज
 नी ॥ श्रीरज्जुवृद्धवप्रतिबन्दी ॥
 १२४ ॥ एकादशे श्रीकृष्णचंद्रवोप्य
 श्लोक ॥ ततोदुःखं भासुत्सृज्य स
 सुसंजुतबुद्धिमान्नासंलएवास्य
 सिंदेति मनोव्यासंगं बुद्धिनिः ॥
 १२५ ॥ चौपडी ॥ कृष्णचंद्रकपीगल
 धारी ॥ मुद्रातिलकीकाये मुद्रका
 री ॥ तखलदुरितैरहितचिलधरी
 यो ॥ निकटिजाये प्रहृष्टहनकरीये
 १२५ ॥ श्लोक ॥ अथ श्रीनयचंद्रका
 न्मस्रक्षणे विदुषितान्नाम्याता
 नदुरतोदृष्टा इदं त्वाएतन्मुद्रा ॥
 १२५ ॥ चौपडी ॥ वैश्वदेवकौटिल्योद
 रौ करतप्रणेतिलितैस्त्वसैव
 सरिहोतुनकौटिल्ये ॥

हरिपुरयावै ब्रह्मदत्तारदापुनिये
रुत्ताखै सुनियेसाखिस्त्रियधरि
राधैः ॥१४१ श्लोक ॥ योबिह्नुत्तक
ननिष्कामान्नो जये श्रद्धया
न्वितः ॥ त्रिःसप्तकुलसंयुक्तः सय
तिहरिसंदिरे ॥१४१ ॥ चौपरी जाके
अन्नचक्रजलनो गौ श्रीहरिता
आपआरोधैः लिंगपुराणसाहित्ये
हदेखी बचनतिरवोमैनाववि
सेखीः ॥१४२ लिंगपुराणे ॥ श्लोक ॥
नारायणपरोविद्वान् यस्या
न्नंप्रीतिमानसः अश्नाति तद्दरे
रास्यंगतमनं नदं शयः ॥१४३ ॥
चौपरी ॥ नक्रिस्तान्तज्ञो होयेकुली
नां ॥ पंडित जपतप ज्ञेय प्रबाना
वाकेसव नजानं एसै ॥ नरतक
सकोसंडनअसै ॥१४३ ॥ हरि नक्रि
मुद्गेदये ॥ श्लोक ॥ नगवद्भक्ति

स्थनकरई लाग. स्थके छंदकोयि
चा छ्वाडितज्ञो निमरुत्तप्रपिबत्रा
वाको गरुत्तस्योनस्योन्ना। ज्ञोत्ति
नयानप्रतज्ञतसुज्ञोत्तो। सकंद
पुराणवचनयेज्ञोत्तो। प्रकारकेडे
रिखकस्तवषांती। सकंदपुरा
णे। कारकंडेवाक्ये। श्लोक। यो न
स्नाति नूयालवै ह्यवो गुरुत्तग
तो। तं गुरुत्तित्तिः स्तपहं नमसा
नमिवचाषणं। १२. चा। चौपई।
जाके गुरुत्तज्ञनप्रवै। गुरुत्तनत
सनमाननप्रवै। सिवा विनुजे वि
षपदावै। सतवर्षके सुनिनसा
वै। यहा विदिकरुत्तपुराणसक
दा। जानै नहि विमुखमदप्रधा
। १२. ए। सकंदपुराणे। श्लोक। प्र
पूजितो यदा गच्छेद्देहवो गुरुत्तमे
धिनः शतजन्मा।

१४५॥ चौपड़ी॥ नारीको उजसुस
 गनिहोउ प्रथवाके उ बिधव
 है सोऊ तिनमै जो वैद्यूवता
 रे कूलइको तरसे सोतपारे ताके
 जगमसु फलजगजां॥ मरुन
 जंनपुटा॥ एवद्वौणै ॥१४६॥ ब्रह्म
 पुराणे॥ श्लोक॥ सत्तत्काः बिध
 वाविष्मन्त्रिकिकरोतिया॥ समु
 द्धरेतिचारानं कूलमेकोत्तरं
 सतं ॥१४६॥ चौपड़ी॥ कृष्णनक्ति
 रसमगूजकीई॥ सबजगमां हि
 नरोतमसोई॥ दूराचारहुजो कह
 करई॥ प्रथवासदाचारचितधर
 ही॥ तिनको बारबार प्रनामां॥
 कृष्णनक्तसंततसुखधोनां॥
 ब्रह्मनारदीकायेरुसाखी॥ निश्रै
 मानि ब्रह्मधरिराखी ॥१४७॥
 ब्रह्मनारदीपुराणे॥ श्लोक॥ हरिन

ने प्रमांनै संतनकी लई सामन ल
नी ॥ प्रथुराजा चत्रु ये बौ बरनी ॥ १३
५ ॥ चत्रु ये सकंदे सनका दन प्रति प
पुराजा वी कथे ॥ श्लोक ॥ प्रथना प्रथि
ते धन्याः सा धनो ग सुखे दिनः य
जुहा स्रु व र्थो ब्रु ल ए चू मी श्वर व
रा ॥ १३५ ॥ चोपरी ॥ बौ द्वा व को ज स
न सु प्र जा शी इ स न क रे सी स य द न
री ॥ ये ड पे ड फ ल हो य ज ज स ल क क
त सकंद पुवा ए क ल ल ल ॥ १३६ ॥
सकंद पुवा प्रो श्लोक ॥ स न्दु र व ब
ज मान स्य बौ द्वा व नो न रा सि प्र ॥
पदे पदे य ज लं प्रा क्तः यो रा गी का
द्विजा ॥ १३६ ॥ चोपरी प्र लं क प रे
चि न कि व न न री बौ द्वा व ज न की
क रे व ड ई क ल पा पी रु ड रे न र हो ई
घोर पा प तै सु डे सो ली कृ पा बा सु डे
क का प्राई सो न सा ग र को ति र जा ई
संतनका न क न न न स न्तो न ई
ति र वी पुरा ए नि क धि सु र ई ॥ १३७ ॥

१४५॥ चौपरी ॥ नारीको जूज सु
गनि सो उ प्रथवाको उ बिधव
है सो कतिन कौ जो बे हू वता
रै कुल इको तर से सो त्पारै ताव
ज नम सु फल जग जां ॥ सरु न
ब्रह्म पुत्र ॥ १४६ ॥ ब्रह्म
पुत्राणे ॥ श्लोक ॥ स सतकाः ॥ बि
वा वि ह्मु न किं करो तिया ॥ समु
द्धरति चात्मानं कूलमेको तरं
सतं ॥ १४६ ॥ चौपरी ॥ कृष्ण न कि
रसम गूज को ई ॥ सब जग ॥ ति
नरो तम सो ई ॥ दूरा चार हू जो क
कर ई ॥ प्रथवा सदा चार चित धर
ही ॥ तिन कौ बार बार प्रनां मां
॥ धन न क्त संतत सुख चां मां ॥
ब्रह्म नारदी का ये रु साखी ॥ नि श्रे
मानि ब्रह्म धरि राखी ॥ १४७ ॥
ब्रह्म नारदी पुत्राणे ॥ श्लोक ॥ हरि न

॥ तां दिनको जसै कृष्ण
रिनां चरु लिनको देखै

॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ६

॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ६

यो ददाहार सा चंतु लोकांते ॥

मो दद्यासं चत्वा पितृणां च

तिष्ठति ॥ १३ ॥ चोपरी ॥ जे कति

जनरु रिपु जनकर देखै

॥ १३ ॥

सनां उच्चरही

॥ १३ ॥

शीपापीरुको सरु गति लेरी मरुद

नारदी कलत पुरा नो अरु

हे सुप्रम सुजा नो ॥ एत नारदी पुरा नो

॥ श्लोक ॥ रुदि पूजा रतानो चरु रि

नां मरता लनो शुश्रूषा

ति पापिनो पिपरांगति ॥ १४ ॥

चोपरी ॥ जे

अधजुत चो जनकर देखै

कुलई

संतनकोचरणकरतलेह रहीस
मांनिमिठोकचूग्रीराः कृदमन
ककाइठनिकोरोः याकासास्वा
कहोकसागारिः श्रीधरस्वामीब
रनिसुनाईः ॥१४॥ श्रीधरस्वामी
नीकृत ॥ श्लोक ॥ किंनिषंमधुकि
वरिणोधरसुध्यासिक्कंस्वचक्रा
पितंतस्मान्निषतमंचकिंमुर
रियोनामावलीकार्तनं ॥ तस्मा
न्निषतमंचकिं नगवतानं
स्यसंदर्शनं ॥ तस्मान्निषतमंच
किंत्पदसुध्यातदुक्कशेषामृतं
॥१४॥ चौपडी ॥ जाकाबैद्ववसं
जाहोई ॥ बैद्ववप्रनप्रीतिकरिसे
ई ॥ प्रारथनांकरिनो ॥ नकरंशेय
बिदिवातमोदतततत ॥ नोके
उबेद्ववनांमकरवै ॥ प्रंनप्रवे
द्ववकोनसापावै ॥ प्रंगीकारसुप्र

नस्यजातिरशास्त्रं जपस्तपः श्रुत
एस्यैव देहस्य कंडुबलं लोकोक्तये जनां ॥
॥१४३॥ चौपडी ॥ तालें सर्व प्रयत्न
नकरिकों बैह्मवसेवा करि सिद्ध
तदरिकों बैह्मवसेवा करि जौ जन्म क
रिहै सो नर दुषसक इतै तिरिहै
॥१४४॥ श्लोक ॥ तस्या सर्व प्रयत्न
नवैह्मवान् पुपू जडये त्सादा संल
तरति इरवे च मसा च ॥ ७ ॥ वता च न
त ॥१४५॥ चौपडी ॥ अचर्या सै आदर रा
खै सब अंग बल बंदन अचला खै ॥
सब ठानो बैह्म ससकरि जगै ॥ कीले
नक्त प्रथिका सब जगै ॥ सैदे च त
नसौ हित जाकै ॥ ७ ॥ अहलै निहा
चै बसिताकै ॥ अह चंड निज मड
तै कही ॥ सै हो बां नी दिह सै गही ॥
॥१४५॥ श्लोक ॥ आदरः परिचर्या
यां सबी गैर निबं हनां ॥ अहं क्त जा
न्यथिका सर्व तुते पुन न्मति ॥

हिकाजाचनाकरै॥ अन्न
हितकरिलेई॥ प्रमापिबत्रजांनि
कैजेई॥ अन्ननराजोनाहि
लेई॥ तहासांग्य

सकलपापतेछूटतेई॥ नारदरि
खयहविद्विकरुदेई॥ १५२॥
यहाये श्लोक॥

कोषबुजेद्वैद्यमंदिनं याच
येदन्नसकतंतदनावेजलंपि
वेत् ॥ १५३ ॥ चौपरी॥

कोअन्नपरिपित्रा॥
गोविंदचरित्रा॥ गंगाजूकोबा
रिपुनीता॥ जैसे

ता॥ प्रकटुहाचेतप्र
हरिकैहंतिनीरुमदत्याग्ये॥
कादसीसुद्धवृत्तयहरी॥ या
रनिश्च श्लोक रिगरुहीयेचा

नस्यजातिरशास्त्रं जपस्तपः प्रभु
एस्यैव देहस्य कंडुबलं लोके कये जनां
॥१४३॥ चौपडी ॥ तालें सर्व प्रथम
नकरिकों बैदावसेवा करि सिद्ध
तदरिकों बैदावसेवा करि जिनक
रिहै सो नरदूषसत्तु इतै लिरिहै
॥१४४॥ श्लोक ॥ तस्मात्सर्व प्रथम
नवेदमवान् धुपू जपयेत्सदा सर्व
तरति दुर्वोचं कसा नाशं वलार्थना
त ॥१४५ चौपडी ॥ प्रचर्या नै आदर रा
खै सब प्रगन बंदन प्रचलारखै ॥
सब ठानो नै सस करि जां नै ॥ नीतै
नक्त प्रथि क सब जानै ॥ लैरे नक्त
नसौ हित जायै ॥ उहु वलौ निसी
चैबसिता कै ॥ एक प्रचंड निज मख
तै कही ॥ सो सो बां नी दिह कै गही ॥
॥१४५॥ श्लोक ॥ आदरः परिचर्या
यां सर्वांगै र निबंदन ॥ महु क्त जा
न्यधिकार्य नुते पुन नमति ॥

सेवकतेहैं तिनकी अग्र्या माना
जैसे कलौकल को की जीये जै
कृष्णमाहि प्रचु न कन मोहो ॥
कनेदमांनी येनाहो ॥ सकंद रं
प्रनाक्बरवाँनैः येजाँनै सोहा
जाँनै ॥ १५५ ॥ स्कंदे ॥ श्लोक ॥ कर्म
मनसा वाचाये चर्यंती सदाहनि
तेषां वाक्यं नरे काथं हि विद
समानराः ॥ १५५ ॥ चौपडी ॥ रुमन
वि प्रनहिष्ठ त्रिसहाहो वै स्पन
रुम सुइ नहाहो ॥ नाहिरुम ब्रं स
जिष्ठतधारी ॥ नाहिरुम धौ स्या
मप्रनूसारी ॥ बांन प्रस्य रुमन
न उदासी ॥ रुम पुनिनां तकाव
सन्पासी ॥ पुराण प्रमां नं ह्यप्र
अमृतसमुद्रमधुररसरूपा ॥
जोगीपीजनबलनपादो ॥ कौति
कमनमथमोहनहारो ॥ तिन

क्रिरसात्साहं कुदिता यनरोत्तमां
 इष्टतावा सुष्टतावाते च्यो नित्यं न
 मोनमः ॥ १४७ ॥ चौपई ॥ सबजल
 जीवसिबक गपल्यजाहीसी दुकही
 कवरूनसी रखाशी लोडम हंड सब
 नकोकरई ॥ १४८ ॥ सबनलिके कौदे रबल
 डरई ॥ यो प्रहलाद संसिता करसी न
 हरिन कनको कालन गरई ॥ १४
 ट ॥ प्रहलाद ससियो ॥ श्लोक ॥ लको
 जलचरानु च च्यनूळ इकादी नि
 वर्जयेत् तथा यमः सर्वहलावर्ज
 यतकद्रमसबकाब ॥ १४ ट ॥ चौप
 ॥ यहिज गमां हिकरु प्रतिनिध
 अर्पितडूसेसनुष्टिष्ट ॥ ताह
 हरिनामा
 लिम
 र०
 नकराय ॥ याते निम्य

लन
 हरि

चुर

नो साधन श्रौर कश्च नही मानै ॥
 राह्याण हरिदासन के रे ॥ साध
 र सिद्धि यही है मेरे ॥ दोहा ॥
 न करन को उगाहिर हो ॥
 य श्रु नू सार ॥ शोकै तो हरिदा
 र जी तिन को श्रुधिकार ॥ १५७ ॥
 शोक ॥ शाना बलंब काः के
 चतुर्धा वलंब काः वयं तु
 रेदासानां पादत्राणा वलंब का
 ॥ १५७ ॥ दोपरी ॥ प्रतमां मां हि सि
 त्तान्ति श्रौं ॥ श्री गुर तिन को न
 र करि जानै ॥ जाति बुद्धि बै ह्यव
 मै क रई ॥ हरि चणो दिक् जल च
 न्य रही ॥ संतन को चरणो दिक्
 सारत ॥ ताहि करै जल बुद्धि बिच
 रा ॥ कृष्ण नो मर न पातक जद ॥
 मंत्र जाय हरि को सुषकारी ॥ तिन
 को साधारण करि मानै ॥ श्रुति र
 धि जू तिन को ठानै ॥ हरि स्मर दे

किरसास्वाहंमुदितायनरोत्तमाः
इष्टतावासुष्टतावातेन्यौनित्यंन
मोनमः ॥१४७॥ चोपई ॥ सबजल
जीवसिबक उपत्यजांशिमंडुकही
कवरुनही रत्नाशित्यौजमदंड सब
नकोकरई ॥ कदम्बनक्ति कौदे रवत
उरई ॥ योंप्रह्लादसंहिताकरसीन
रुचिनकनकौकालनगरईः ॥१४
८॥ प्रह्लादसंहिया ॥ श्लोक ॥ बको
जलचरान् न च्युनूतं इकादीन्ति
वर्जयेत् तथायमः सर्वहंतावर्ज
यत्कदम्बसेवकान् ॥१४८॥ चोप
ई ॥ यहिजगमांरिक्कराप्रतिनिष
प्रत्तप्रयितजसेसनुष्टिष्टाताह
तैप्रतिमिष्टकराहैरुचिनानाव
लिमबूरनहाहैरहातेनधुरसु
रञ्जचरायो ॥ रुचिदासनकौहरस
नकराये ॥ यातेमिष्टप्रौरकरहैरु

कसे बर नौ सकें महात्म ज्प्रलिंग
दिप्रतिमधि दूरात्म प्रगकाच
चुपुटीमधि जलनिधि सबसर्व
होसनायेकैसी साधि तैसासंत
प्रत्तावप्रगाथा नैकधूगायेसे
दन्बाथा संतकृपाविनसदण
तिनांही प्रतिनजुगलपदमा
ही तातैसंतसनाजैगमकाजे
नरतनता हिर फलकरिलीजे
सतसंगतिसबसुषकोसाराये
हकहतहौबारंबारा सतसंगति
तैबुधिप्रकासै सतसंगतितै
च०न०न०न० सतसंगतिसति
औरकहाहै लहैसिधि सबजोने
चाहै याहितै हरिनक्तिहापा
वै जाकौं प्रेसादिक्ललचावै
नक्तिसमांनि मपुरधारथ

नूनकरही कुरमपुराणावचन
ऊचरई ॥१५०॥ कुर्नपुराणे ॥ श्री
का ॥ वैद्यवाचानि नोक्तव्ये प्रा
नं वैद्यवे सदा ॥ वैद्यवाना
नंतु परिवर्ज्य संभेद्यवत ॥१५०॥
चौपशी ॥ वैद्यवप्रभुप्रजाकृतकी
जा प्रार्थना करिके हलाजे ॥ स्वप्र
पराचंद्रिकरि देई ॥ वैद्यवप्र
नलेतचि नलेसी ॥ प्रभुन मिलेये
ते ॥ प्रैसे काजे ॥ जलहीत हा मांग
करि पाजे ॥ वैद्यवप्रभुप्रजाव
प्रपारा ॥ पुराणावधानत सा
रा ॥१५१॥ यादुदेव इत जिकु डलसं
बादि ॥ श्रीकृष्ण ॥ प्रार्थयेद् वैद्यवा
नं प्रयत्नेन विचक्षणः सर्वपाप
विशुद्धार्थतद्दत्तावेजलं पिबेत्
॥१५१॥ चौपशी ॥ महापातकाजो
नरहोई ॥ वैद्यवप्रभुमजायेकेसे

कितने ईष्य घ्रा प्रचरति कजाति
नता ॥ गनत गनत च हल ह न ज
ता ॥ कितने ईष्य तिमनमे ल्वर
री ॥ तिनका अग्र्यणितजातिनि
कारी ॥ तापीष्टे - य - य - य - कसि
ये ॥ तिनहंके कधु ॥ रनलसिये
तिनके ॥ चिबिचारिजुदेये ॥ क
नुप्रजातिथोरहालेखे ॥ औरसर
रबहोतजगहोई ॥ मनखदेहयो
रेजगसोही ॥ औरदेहजगबहुज
पजांही ॥ तैसें नुप्रजन ॥ कधु
नांही ॥ देवेकरिबिचारितिनम
ही ॥ जोदकजातिनीचइसांही
नलेष्टुपुलिंदबोद्धकितनेही ॥ ति
नमेंनीचतितनेई ॥ अथेतोयह
नातिनिकारो ॥ अथेरहैसोतिन
हीबिचारो ॥ बेहनिष्टतिनमेंबो
हैतिरेबेहपदेअसकहैधन

बिबिधिरिषमुरतचासी॥मारकंडेना
गारयचाषी॥सकंदे मारकंडेनाग
रयसंबादि॥श्लोक॥शुद्धे नागवत्स
न्नंशुद्धेनागारयाज्जलं॥शुद्धे बिहसु
परंचितंशुद्धमेकादशीवृतं॥१५३
॥चौपडी॥बेहूवहायेकहूरतजेज
नकरहीशुबेहूवकेधरनेजन्॥
पावेजहाजलरुबिनजाने॥नाके
प्रायश्चितवरवाने॥चांद्रायणबुल
करैजसोई॥तिरिघापतेसुद्धतब
होई॥इष्टापूर्तिपुन्यसबवाके॥बि
येअन्यथानिफलताके॥परुसव
दसहिमांलिखिदीने॥मारकंडे
वर्ननकांनीः॥१५४॥श्लोक॥शुबे
हूवगहेनुक्तापीत्वावाज्ञानते
वा शुद्धिचांद्रायणे प्राक्काइष्टाए
तैव्रिथासदा॥१५४॥चौपडी॥काइव
चनमनकरिरतजेहे

चाहिनचाहे केवल
उमाहे मुक्तिमुक्ति
चाहे जानौतिनही
हे ताकासाखिनाग
मकुसेनपपराखत
श्रीजागवतेषष्टसकंद
क्ये ॥ श्लोक ॥ मुक्तानामि
ना नारायणपरायणः
प्र ता ताकोदिष्टयि
१७८ ॥ चौपडी ॥ मुक्तत
इजकोईबडनागीसुजा
...क्षपाते...पाकरह
किलताकोबीजलहैउर
वबिचारसिंकरई ॥ श्री
कजउरधरई ॥ ८ ॥ क्ष
नायीचाहे तबजियेसि
जातिउमाहे ॥ उरसुन

चरणकवलकेदासा ॥ त्रिवन्तहि
हियेससर्निवासा ॥ तिनकोदास
निदासकहाउं ॥ जनमज्जनममेये
गतिपांउं ॥ पद्यावलीयोंकसौब

॥ यरुमोमतिहितहेरुफिस्यो

॥ दोहा ॥ बर्णारुसादोताहिकध

आशुनहनसुखाये जगवैबिर

दासनिदासकहा

॥ १५६ ॥ बद्यावल्यां ॥ श्रोक ॥ नाह

तिनीधिलै श्यान

नोवावर्णीनचगरुपतिने

स्योयतिनी ॥ किंतु जोघनि

नंदा ॥ पूर्णानताब्दी

॥ यहकवैधथैदोसाह

॥ १५६ ॥ चौपईकिलेक

ग्यानप्रवलंबनकरसी ॥ कोजुकक

॥ रुजसोडोको

आई ॥ त्र

सुनाई ॥ रुजनहाग्यां

कोजं ॥

परुचैत क्लिप्तता सर्वा पर बृंह
वन गौ लो क ज हा है कृष्ण चरा
तरु कलि प ज हा है तिन सो जा
य लता लप न हित हा फे लि बि स
तार हि पाई न क्लिप्त तार स स
म नि पा गे प्रेम रूप फल कै
ला गे तिरु माली गुर सी चो कर
ई श्रवन की रत नर स जल डर
सा यहि बि धि लता ल है बि स्त
रा स जल हरि ति बा है ब ड वारा
म त दूर ह वै ह्म व प्र परा धा सो
ई ग ज करै लता कौ बा धा य रु स
या जो लता गुर वारे मो रि मी डि
धर नी प्र डारे ती हि सा थी सो ले
स ब चा ई तौ निर बि घ्न नै लता
ग हा ग रु रा ई या कौ ना प थ रे हे
य धर ई वै ह्म दोष क ब रु न रु व
र ई का ये क बा चि क म न रु न ध

नके स्वांमी ॥ सर्वे सु प्रचुम्भं तरजा
मी ॥ और देव सबको तिनको गण
नही ॥ नी शैजां निजारकी तिन
हं ॥ नक्ति सुधोदय मरमां कही
ये बिधिमा निल्याजीयो सहं ॥ १
५८ ॥ नक्ति सुधोदये ग्रंथे ॥ श्लोक
प्रचे बिद्यो शिला धर्म सुतरम
तिर्वे श्रवजाति बुद्धि बिद्यो लीवे
ह्रवां नो कलि मलय जघने पादत
ये बु बुद्धि शं सौरनी म्नि मंत्रे स
कल कलुषं हं शं वृत्ताना न्प्रवु
दि बिद्यो सर्वे श्रुते चो लहितर स
मधीर्ये स्थाना नारकी सु ॥ १५८ ॥
चोपरी ॥ संतनकी मरमां जू बिसे
सा ॥ वर निसकत नही से स महस
महं माजद कि पिजु धाम ति वर
नी ॥

ईत्यताजाईत्यपदाई। कृष्णचरणसु
रतकृत्तिलसेई। ॥ १२५ ॥ अथ
स्वादनलेई। येहीप्रमद लपुरधा
रथ। अहिसा। मानिकधुंशौरन
स्वारथ। अकुक्तिधरनपुनिअ
र्थरुकांकां। अरुफलसः। हो
सरवधांकां। प्रेमसुफलशास्त्र
दनआगै। तणासमतुष्टिच्यारि
फललागै। सुधाचक्तिप्रेमफल
लहिसै। सुधचक्तिकोलधुणाय
हसै। अनबंछाचिन्ता। अरही
आनदेवपुजानहाकरई। अ्यानक
रमनै। चितनदेई। विरिः यनत
मनबसिकरिलेई। कैअनूकुल
सकलई। इयगना। कृष्णचरणसु
प्रितकरीयेमना। सुधाचक्तिरह
हियेनोई। प्रेमअक्तिउदेतब
होई। ॥ १०० ॥ अथरात्रै। श्लोक ॥

प्रोहीजीवकोसोच्योस्वारथान्तर
तनलाचसकलजगत्सोहीन्यदि
प्रसांतिग्रानकधुनांसी। कलागंन
रचक्तिरससाग्रा। जाकेबसनाच
तनदमागरसस्वसागरगंनारस
होहो। प्राकेपारावारनहीहो। लह
धिप्रपनेसतसमगंवन। बिंदुम
नलिखिहोप्रतिपांवन। कलान
जावनप्रबुबिसतारी। प्राखाह
नकायोहितहियथावी। गुरुसंत
नकोडिहगहैसरनौं। प्रथमचक्ति
इलेनताबदनें। यहास्यसारग्रनं
तजीवगन। लखचोदासीनरम
तप्रमितमन। जावसरूपसाधु
इगचरौं। इति सुधुमते सुधुम
करौं। तिनजीवनकेहैविधिने
ह
गमहंमैनेहधनेसी॥

हृदयं न हृदयं तिसौरी ॥ रतिहागा
 दसाये जव आवै ॥ ताको नांस सु
 प्रसक्त तदै ॥ प्रेम बढोत ॥ ता
 सनेहा ॥ स्नेह बढे कहौ ॥ मान ज
 यहा ॥ मान बढे जव प्र ॥ य कहौ
 जे ॥ प्रणय बढे प्र राग लही जे ॥ रा
 ग ब ॥ बढे तारे ॥ अ ॥ रागा ॥ कै प्र
 नूराग लहे बड नागो ॥ बढि प्र न
 र ग ॥ सरसावे ॥ नाव बढे
 म हा नाव कहौ ॥ बीज ठिकाने
 ताहार तिजानौ ॥ तिरिते प्रागे
 और बधानौ ॥ गांडे के रस ता सठि
 कानौ ॥ सोरस के धल ॥ म प्रमा
 नै ॥ गुड रुठि ॥ नै ॥ सन रुसो ज
 नौ ॥ खांड ठिकाने मान बधानौ
 ॥ रसरकरा ॥ प्रणय बिनागा
 सिता ठिको ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मिश्र
 ॥ एक सौ ॥ अरगा ॥ कद ॥ ॥ ॥

विधिवत्करुणं च ॥ १ ॥
वेदविष्णुवत्तुवेत् ॥ २ ॥
वेदनिसेद्यथा ॥ ३ ॥
पापकर्मणो ॥ ४ ॥
रतस्येति ॥ ५ ॥
तिनमो ॥ ६ ॥
कोश ॥ ७ ॥
कोशिको ॥ ८ ॥
ग्याननि ॥ ९ ॥
टिकग्यान ॥ १० ॥
वनकुक्ति ॥ ११ ॥
कजीवन ॥ १२ ॥
क्तिरलेइ ॥ १३ ॥
सासैनस ॥ १४ ॥
हीसुषध ॥ १५ ॥
रतिवत् ॥ १६ ॥
येसंता ॥ १७ ॥

तौ रस ये श्रवै जंई गौण कल
रसिक चक्ति तिनये नग हसै ॥
रु प्रचर सनु स्वाया पिकै न
न के मन रु ब्या पिकै सानौ
सये श्रवै जंई ॥ आगंतुक ताते
सांई सांति चक्ति नव जागी क
हये सांति चक्ति सन कादि कल
हये ॥ दास चक्र जग मां हि श्रया
राः हरि पद सरनौ जं न्यौ सारा ॥ स
व्या ना व ब्रज श्रादां मां दिक् ॥ पुर मे
प्ररजून सरखा सुत्ता बिक ॥ बाल
ल चक्ति नंद ब्रज सुमती ॥ पुत्र न
व इड क दू मां हिरती ॥ पुर मे सौर
देव की गने ॥ बत्सल ईशुरता मे
सने ॥ मधूर चक्ति रस ब्रज मे गे
गयी ॥ पन करि प्रेम ब्रजा इड
शया ॥ पुर मे नहि घी मधूर उपा

ही जब सूरको सरने आवै तेवे
सूरको नकसवै। जगलका हि
तिनको दिहनावा। संचौ नानै
हितचितचावै। जेसेनाचकस
सूरकासियो। जेसे जगलको सणो
हियो। तबसेलकीरुखकेहितहर
ई। नकिवा जजगलौ परणकरई
सिधको हिरदेहु निरिहिन जालौ।
माली प्रा। जुरहदलपंहे। प्रदण
कोरतन जलसीये डबान
जडलहे सिरवडरतब। नकिर
ताको प्रकुरहई। सिरलके हिये प्र
मसेबहई। प्रसीतलतासिब
दवारा। जेहिबेसुं होय सोपारा।
धृजा धृजलोक परजाई। प्रनबौ
मताहा प्रसीई। येनलोकनकीचा
एनप्रानै। यहई सबनि जेदि
जानै। प्रकबे प्रमरुके तरा

शोभा बेशुब हो प्रक रत डि य ड रि ये
उप सार वा ज ब क दैं प्र पा या ॥ न हि
ल तान ल से ब ह वा रा ॥ नु क्ति डु क्ति
जु क्ति बां चा न र का दो ॥ न न प्र लि
षा ब स त्त च ना दे चित ल ल ल चा बो
इ त्पा दि क उ प सार वा ज नौ ॥ न हि
ता वा चि क ल रि व ता नौ ॥ ये उ प सार
ब द त वि चा नौ ॥ प्र स चि न्ना स्र क नि
का टि नि वा नौ ॥ नु क्ति नु क्ति रु च्या
न न हि मा नौ ॥ न न का स्पृ हा तु ध र
रि जा नौ ॥ त वै मु सार वा वि डि जा
घं हा व न सु जा र्दि ल रा शी ॥ ति हि
ता कै प्र क र त्त रु च्या ॥ क ल य रि प
सु हा ये प्र नू प्या ॥ सो हा क ल य कै
मि प्र ग्प र शी ॥ काली लि लि प्र स्वा
॥ काली श्री गुरु दे व प्र म
प्र व लंब क जा नौ

प्रनरागै॥ पंगेसुधूररसतिहि
केप्रागै॥ जैशुर्जनासकोचही
पाशिन॥ जंनेनजायेकितेदबि
जाई॥ बर देवदेवकीके
ही॥ सुद्धबात्सल्यकृतना
ही॥ यशुर्जनुतबात्सल्यप्रका
सै॥ सुधबा
मास्त्रोकंस कृष्णसुरवभांनो॥
मातुपितुहितवकीयो प्रमांनो॥
एतवदेउननुरसका आंनी॥
पुरुषप्रधान कृष्णयेजांनी॥
॥ २२५ ॥ श्रीजागवते दसनेस
कंदे ॥ श्लोक ॥ देवकीवसुदेव
श्रविज्ञायजगदीश्वरौ ॥ कृत
संबंदनोपुत्रौसस्वजातेनसं
शंकितौ ॥ २२६ ॥ श्री
पश ॥ सर्वानावप्रजुनहिहि

सर्वोपाधिबिनिर्मुक्तं

निर्मलं सुधीकेण सुधीकेण

नं नक्तिरुच्यते ॥ श्रीचागवते ॥

हेतुकरव्यावृत्तिलाया चक्तिः

तमे ॥ सालोक्यसा

रुथे कावकाप्रमुदाहरीयसां नं न

संति विना कस्ते वने जना ॥ २ ॥

वचनक्ति ये गारुथ्युश्चालं तिकु

दास्तः यना तिबुज्जुचुणं स

वायोपपद्यते ॥ २०१ ॥ चौघडी ॥ चु

क्तिमुक्तिरेकैरे जालौ ॥ नक्तिणुद

येहि यनतौ लौ ॥ प्रनधि साचीरे

जोरी ॥ बहज्जरे हेतु नक्ति सुख

तत्रवाक्यं ॥ प्रलोका ॥ चुक्तिमुक्तिस्प

सायावत पिशाचीरे वर्तते ॥ त

वदक्ति सुखस्यात्र कथममुद

यो नवेत् ॥ २०२ ॥ चौघडी ॥ साधन

नक्ति करतनि

बिसेखो॥ यहि बिरकायेलहि
तहांई॥ अंगकधू - तुम्ह
मांसी॥ कैसे चक्रमेरेहीननके
कधू अ चरजधनगान्पोल
नको॥ कहु बिनासब त्रिह्या
त्यागा॥ कहु चरणमधिदिह्य
नरागा॥ सांतिनक्रिकोलखि
एयहै॥ कहु लहै - खजौर
नचहैहै॥ स्वरगमुक्ति सुख
बिबिधिबिधिनां॥ तजैईनही
गनिनर॥ इत्यां॥ अष्टस
कहै॥ श्लोक॥ नारायणपरा
स्सर्वेनकुतश्चतबिच्यति ॥
स्वर्गापवर्गन के सुपितुल्या
अर्धशिनः॥ चौथी॥ पूरा
अष्टस॥ अष्टस॥ अष्टस॥ अष्टस
कैलहै सुजां॥ अष्टस॥ अष्टस
नगोरखहोई॥ सेवाकरै कहु

हरसपागातकहाजावश्रोलाकी
दोरा। यहितेप्रथिकधूनहिस्रो
रा। येजूनक्तिरसरथाहकहिते
प्रमृतसमांनिस्वाहलैलहिये।
जेसेदृष्टिसिआपुटपादौ। हृतम
धूमरचितपुरहसल्यदौ। कहिते
नाजरसालासेधी। प्रमृतधूरप्र
सुवाहनलेधीलेसे। नक्तिनेदृति
जांनौ। ताकेपंचप्रकारबाधाने।
नक्तिसांतिरतिप्रथमकहावे।
इतियेहास्यरतिनृतिजनजावे।
तथायसरवासरतिनाहेमाबरनी।
बसलनृदित्ये। यीजनरुदनी। प
चयेमधूरकधूरनलिकहाये।
कुखिनृक्तिने। रसरलहिये।
प्रदनुतल। दिनीरकरणांमये।
शेइविनलनृदौ। रवरनृदौ। नये।

यह दुसरोई कइस्य मां हिमजतास
रसाई कत भाव प्रिये कौ जिय
अपै प्रेम रंग निज अंग सनपै
सैव सरसनेह अनुरागी तास
न और कौ न बड नागी जानै
कौ न अरु रसकरकी पांचूरस
के यानै धरकी जैसे बकहागु
एजाकासा पर श्रुति बिगुण पा
च प्रकारा लोहाजाणिम अरु
सनांही पांचूरस तिसै इसाई
असै करत नावनां नुरनै कइस्य
वसै तिसै कुरपुरनै कइस्य
प्राते यह रस सागरा ग्रा स्वाहन
करिहै जननागरा सकल रसन
कोयहै निकेता की नौरसक
जनन कसिता रसिकन का पर
जसिर धारी साई हिरस को ल

सा है वैकुण्ठरमापददासी। फेरि
दकुम्भरतिहोये प्रकाश। तिसके
वरनो प्रबे विचार। प्रकसे प्रु
धम मुररस नो शी ह्री बोले वल
वरनी सा शी बुझसे के वला सुध
कासे। प्रे प्रुर्जनानको ग धन
नासे। न मुरात या ह निकासां
हा। मिप्रत ना व प्रकासत हां ई।
वैकुण्ठ मे प्रे प्रुर्जन सा जों स हा च
नुनुज रूप विराजों सुधारतिके
येर सु ना वा। चरन फुरे प्रे प्रुर्जन
प्र ना वा। ई प्रुर्जन इ ब दल कर ई
ता कौ बुझ जन सिधे न सि धर ई।
ई प्रुर्ता कौ न कन ग लों प्रुर्धने ना
व मा सि छु कि र लों लो ति दा। स्प र
ति वा रे जे जन। इ लिन लो प्रे प्रुर्जन
उ हा प्र न व १९५९

ज्ञानं ॥ श्लोक ॥ नैवोपयंत्यपचि
 तिकथयसवेरा ॥ ब्रह्मायुषोपि
 प्रकथयदकुदः स्मरंतः ॥ योतर्ब
 हस्तनुचताम ॥ शुचंविभुन्व
 न्नाचार्यचैत्यवपुषास्वगतिं
 विनक्ति ॥ २४४ ॥ श्लोक ॥ गीता
 मैकहासुरिः प्रबानं ॥ सोयहल्य
 खौत्तकिनिधिदानै ॥ प्रसावु
 धिदेउंमैजातै ॥ प्रनायासमो
 रियावततातै ॥ यासिध्यातसौ
 यरुजांनैये ॥ गुरहीसाध्यातै
 द्यमानैये ॥ गीताये ॥ श्लोक ॥

युक्तानो नजतांश्री
 तिपूर्वकं ददामिबुद्धिभोगंतये
 सुपयांतिते १ कविविज्ञ
 : जातंसर्वपुराणैः सन्महा
 : सर्वैः स्वल्पैः पुरा
 णावाक्यैः किंचित्किं ॥ २४५ ॥

यैसो तदप्रिसरव्यई शूर्जल्योयैसै ।
बिस्वरूपल्य संकाकोनी । अस्य
स्वप्नावतजिनसिवांबरांबी ।
॥ गीतायां ॥ श्लोक ॥ सखेतिमल्य
प्रसन्नं यदुक्तं ते कुरुते द्यादद
हे सखेति । प्रज्ञानतासहिनां
नंतवेदंमया प्रयादात्प्रणयन्
ब्राह्मि ॥ २२७ ॥ चोपई ॥ रुक्मणि
हिये मधुर रसबसै । पये शूर्ज
हिये रतिलसै । कुरु कियो प्र
स्यनजांनो ॥ बिफल नईयेने
मान्यो ॥ केवल सुदुज प्रमजा
हाहोई तलजे शूर्य गंधनहीव
ई कुरु शूर्ज दे खिबुज परि
राकरतनहा संबंध सिधल
राज सुमति सुसुत मुख बिस
जदेयो । तदप्रिकथ

समझाई जेनकेनविधिबहुस
मजीहां कहेसंतगु ॥ तजिजग
ईहा ॥ रसनांपायकृष्णगुनगोने
नहाउचरतौबिफलनिदानो
येरुध्धारिमनदिहबिश्वासा ॥
हरिहा ॥ थक ॥ रिकेदासा ॥ याहि
हेततैमैजीयेजांनो ॥ सारचंद्रका
कायेसुरवदानो ॥ बारबारथरी
बिचारी ॥ हेसुरवदायकप्ररु
प्रबहारी ॥ संतसनाप्रइईही
केरा ॥ कैहेत्तकिप्रतापघनेरा ॥
नकिप्रयोजनजिनहोई ॥ प्रसे
साधोहाहा ॥ दोई ॥ तिनकेमन
कैरुचिउपजावै ॥ कूरकुकैतकी
नकौनहीजावै ॥ इपहनचिं
तवनिघाकौ ॥ करि ॥ सदाबिम
लहियेजाकौ ॥ जिनकैउ ॥ किबि
चादप्रनेका ॥ जानतनाहिनस

॥ तद्दृषिसख्यैः शूर्जल्यैः ॥
वृत्तस्वरूपलया संकान्तानी
वृत्तजित्तिल्या लयांती
गीतायां ॥ प्रथम ॥ सख्येति म
॥ प्रज्ञानतामहितां

॥ २२७ ॥ चौपरी ॥

दिये मधुर रसबसै ॥ पये शूर्ज
दिये रतिलसै ॥ कृष्ण

॥ बिछल नईयेने

॥ केवल सुद्वज प्रमजा
तलं प्रे शूर्यज

॥ कृष्ण प्रे शूर्ज देखि बूज प

करत नहा संव

॥ ज सुमति सुसेत मुख

॥ तद्दृषिकथ

नपावै॥ नक्तनकौजोस्वांगवन
वै॥ ताहकृष्णस्य॥ अथपना॥
प्रतिष्ठापातता॥ मृगचरुरी॥ कृ
द्यदेवकीरतिप्रतिस्वरी॥ प्रहो
लखौप्रचरजयेनाई॥ घातक
रनप्रंथाकर्प्राई॥ लायडुरोज
महाबिखनारी॥ पानकरावत
ततधितारी॥ दुष्टाप्रथमपूत
नानारी॥ जननीगतिदानीगिर
धारी॥ २६२ दोहा॥ नक्षिबबेष
केसात्रते॥ दईप्रमगतितारि॥ प्र
सोकौनकृपातजग॥ सराणगह
नरजाये॥ २६३॥ तलीयेसकदे॥
प्राविदुरप्रतिश्रीउद्धववाक्य॥
श्रीका॥ प्रहोबकायंसनकाल
करंनिघांसयापाययदयष्य
सोद्यी॥ लेनेगतिंधान्मुचि

सिद्धसमाहिदेन गुणज्ञो

॥ सोही विधि लिखी प्रगर प्रज्ञो

सरि विमै दिह बिसवास्तव रवां

॥ सरि विमै च चो है च हां वै कृष्ण

सुख पां वै कृष्ण ते सेवा

॥ यह सरवाय सको व

धरनां ॥ सरवा न किले जां नै

मां नो ॥ अज्ञान प्रविष्ट जां नये

॥ याले कृष्ण सया सौ व सौ

त्सल प्राप ही पा ल क मां नै ॥ कृ

हि पालि पुत्र नि ॥ ज्ञाने

॥

॥ कै म

कृष्ण

निघासे वार

॥ प्रां नै ॥

मि व नी ये जां नै ॥

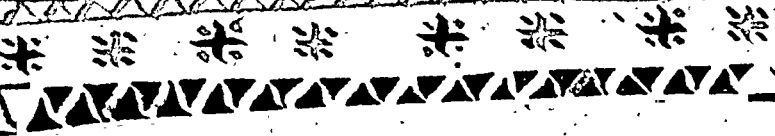
प्रचै॥ पुनिकबहुंकेसैरुंशांति
गतसो
कसबसुखजै॥ तवपदकंज
सरणागतहलहौ॥ बरुकरकप
टीखलप्रपावनतरेसबजिन
जिनगहौः ॥२॥२६॥ ॥ यैपई
सारचंद्रकायहजूसुहाई॥ उरन
ननुदयेनईखलवृशीजाकौ
उजलपायप्रकासा॥ संतचको
रनिन्नयोहलासा॥ सुमतिकुमु
दनी॥ जिहिलखिसरसैउजलर
समयेअनतबरसै॥ तिमरवि
खतासदिनिसावै॥ प्रदंपति
रूपअनूपदिखावै॥ सबनरना
रिनकौसुखदाई॥ नगतकाम
हमांसुनगाई॥ अहोकिसेदाय
प्रबुद्धाई॥ संतसमागमा
सुखलीजैः ॥२६॥ ॥ दौला॥ जिन

अखिकारी ॥ हे श्री हनुमन्तु जन्म
 जाय प्राकान्ता कृपाता सुवीर्य
 बरा ज्यो नुपकार को यो नरे हने दना
 ताको बदले देन सा लज्जना लोला
 तुलि प्रार बल्यपारी ॥ जलन घरे
 तो नुदा यो नपारी लसु नुपकार न
 को यो अनन्ता ॥ लिहें सर सा लसु
 किरहे संला ॥ आसु दि धरि प्रा च
 रज रूपा ॥ कच लक्ष्मण लसु
 सरूपा ॥ कच लक्ष्मण लसु
 लहो ॥ सध्या दे लक्ष्मण लसु
 नसि दान दे लक्ष्मण लसु
 विधि प्र लक्ष्मण लसु
 तरजा सो लक्ष्मण लसु
 प्रपति लक्ष्मण लसु
 जन कर्त्तु लक्ष्मण लसु
 रक्ष्य ग्ने लक्ष्मण लसु
 दम कर्त्तु ॥ ॥ ॥

हारी ॥ श्री ॥ धननवनिंकुज
नौ ॥ दंपतिकेलिप्रहारी ॥ श्रीबं
सीश्राहरिदासी ॥ सर्वोपरिरस
रासी ॥ बीहलौब मुदब्यास
व ॥ नागरादासबिहारनिदासी ॥
१ ॥ ज्ञानेश्वर ॥ इति ब्यासदेवजू ॥ ब
सिकरिषातकप्यारी ॥ अगनि
तडीवनकपरिकर ॥ अंगर ॥ क
ये ॥ तद ॥ थिकारी ॥ किसोरी
दासदांनोडबद्धन ॥ रसकरगे
रसरनी ॥ नटगदा ५ ६ ६ ॥ मर
द ॥ नगवांनरातिसुखदेनी ॥
मलनेन सुखसखीसदानेन
दासरसगायो ॥ २ ॥ दासश्री
दनमोरुनजू ॥ ३ ॥ गवसु नले
डायो ॥ माथोदासकिसोरसूरपु
मनि ॥ सूरहि ॥ सगनां ॥ न
सीमहतामीरोदिकजे ॥ तिज

हं ॥ २४ ॥ चौपरी ॥ तालें करीयेद
सिकजनसंग ॥ तबरा छै ईहा सु
खके रंगा ॥ प्रदेहरसली ॥ लानं गल
करनी ॥ सासु प्रसा निजया कलि
वरनी ॥ महलान प्रतिलौं कलि प्र
या ॥ नसिरे सुकौन ॥ सिनगं चा ॥
प्रहरससि ॥ अं प्रं कलको सारा ॥
ताको कै सें घोड़े पारा ॥ डै से कस
क ऊडाये ॥ अकासा ॥ कबहु पार
न पावेता सु ॥ नै सै ली कें मनी च
लायो ॥ जथा बुलि जस प्र ॥ अयक
गायो ॥ रसकनकी करति रसस
रा कहि जाये ॥ किन प्रकथ प्रपा
रा ॥ लिखौं बरख सुल ॥ न प्ररा
ती ॥ तौ उमोये कहान जाती ॥ जो
हिमांक ॥ लिखीये ॥ प्रौरा ॥ बदैयं
धनही ॥ आवै प्रौरा ॥ तालें ईती क
लीखा बनाई ॥

नीयो ॥ अथनी ॥ मूठनिदेके पात्तो
सकायो ॥ खैचिली
यो संसारसिंघुते ॥ आबनथां
मदीयो ॥ अथमहं थं निकलाये
किसोरी ॥ नमसहागाये जायो
॥ वा ॥ इती आसार चंद्रकासं धूम ॥



नगववेकातसलदुप्यानहेनरति
बिहीना॥ ज्येलेकडरजुनरकोच
नरेकविष्टिकाना॥ स्वेनुग्राहुकर
रिहेईसिकेरातकासदरकालरिबि
तसोबसतेरा॥ विमोहामतेलचन
निहार॥ लिखनकाथेडकेहिदेखि
चारो॥ येअमदेखिदयाकरिसोपु
प्रवलेकनकसिहेकदनाकरा॥ ज्ये
रकोउजेअसहनप्रानो॥ परका
तिहेनहीसुखदबरवांनी॥ ज्येसी
निहाकरेजेकोउ॥ ३॥ चौतिनहा
जोरिकरहेउ॥ बिहावमहैमाव
रहाबाना॥ देखजुसजनसुमति
नुदारातनकलरहेरिवतबदुरकन
हाजेईतनीबिजयेकानिमम
लाजे॥ नकप्रथीनकहूकुअ
तिगाये।

आग्नाहिरदैध रौं लोकाहि
तारथनाषाकरं र श्रीत्त
गवांनविं चाष्यो सोबिरंदि
नारदसूं प्राष्यो सोनारद
व्यासहः सनः नयो व्यास
व्यासकरिसुषहीपहायो
सोसुषकहोपरीष्टतः प्रा
जे इटौदितसुपनसो
जागे सोहीसूतः प्रजहं वि
सतरे सहसप्रठ्ठासीदिष

ताततो न्यं कं वा दृष्ट्या लुं शरणां वृजे
त ॥ २६३ ॥ चोपरी ॥ यतिवै सरणां वृ
द्वकी गरीये ॥ नरकल्याण स्वकल
त बल हैई ॥ निबि सिनापनापि
ततन धारी ॥ स्फुल्ल होर संकृति ह
रव नारी ॥ न्या सुता पबादन सीत
नी कौ ॥ रुद्रिय ह जुगल वृत्र सब
नी कौ ॥ केवल्यता पं कां वृत्ति रु
दी ॥ अं कृत हृष्टि च हृदि स्त ले कर सं
पाते च प्रर रूप हृदि च राणां ॥ ति ह
नराण सुख प्र ह न्य ह नराणां ॥ २६५
ये ह ॥ नै ज्ञ सि त ज्ञाप हे प्र ति जु म
नवर पा ति हे क स्थां कर ॥ बरु क्य
न को न व प र्थो ॥ नै नि ज्ञा कर म व
से बरु दु र व न व ॥ सं चित प्र वि धा
ता हि ॥ व सि प र्थो त प्यो नै बरु वि
धे
पति ॥

नास प्रथममैगायो बहेत
नांतिवेरागन्तो प्रायो ७
हारे परपेयकहो पु निचा
री जनकहीजेग र नो वि
चारी सो नारदबसुदेवही
कहो प्रायो ग्यांन पुसपद
लहो च छठै
साव तेईस करि निज ग्यां
न नाव ॥ दैपादव बिना
साविसता ॥ ये इ कतीस
ग्यांन निज सार ॥ श्री सु
धद रत आरे न श्रोता
नृपति प्रदिगत जिपु न

तेरुकरिसैय्यकैने

॥१२७॥

तिहिजपरसैतस

॥सज्जनजनसुखदांनि

॥मार्गशीर्ष

शुक्लासुरबकर

कंगलनंगलबारसुतिथिइ

॥यहसारचंद्र

शुन

धरी॥अलीकिसोरीगुरुकृपा

पायगायपूरणकरी॥२७॥इ

तीश्रीसादचंद्रकाकिसोरीअलीक

तसंपुरणम्॥दोहा॥अकृतसार

रसचंद्रका॥रुजिनखिमलन

यंक॥खेमदासकीआसयेजस

तिखिसोयेनिसंकः॥॥रागति

॥होईनरसिकनकायनि

नास प्रथममैंगायो वा
नांतिवराजन्तो प्राये
हरिपुरपंचकस्योपनि
री जनकस्य जोगे सरन
चारी सोनारद्वेषु देव
कस्यो प्राये ग्यांन प्रमप
लस्यो च छुटै . ६५ न द्वेष
साव तेईस करि निज ग्यां
न नाव ॥ देवादेव बिना
स बि सता ॥ ये इ कतीस
ग्यांन निज सार ॥ ५ ॥ श्रीस
षद ॥ ६ ॥ रत शरं न श्रोता
नृपतिप्रदिगत जिपुं न

कृपाजननां उभे स्वरस्य तन्नाम
सागरगौरिस्यां च धित हस्तौ ॥ १ ॥
गटकराग्रं धनकारचनो ॥ १ ॥
विपुनिकैकालो ॥ श्री प्रमाने र
सचतुर्भुजो विंदसन्वासरने
कुचनहाल्ललातस्वांभीजात्तु
रसगायकैरुहा ॥ श्रीयानेन प्रचि
रंमनुयासिद्ध ॥ तुनसीद्वलपुन
लानौ ॥ रां प्रसाद प्रसाद प्राय
प्रगद्यो सुजसन्वीनौ ॥ इति
सौरी स्वर रसिद्ध रसंननं गन
ले ॥ श्रीविंसी प्रसिद्ध गुणनं
राध्या सुजसन्वीनौ ॥ श्री
नुयासिद्ध नुयासिद्ध निननं ॥ १ ॥
इरजमसगध्याने ॥ श्री
सुदधि किसेरा ॥ श्री
निसंदौ ॥ इति

नास प्रथममैगायो बहोत
नांतिबेरागज तो प्रायो ७
हारेपुरपेथकहो पु निचा
री जनकहीजेगे रनवि
चारी सोनारदबसुदेवही
कहो प्रायो ग्यांन प्रमपद
लहो च छठै
साव तेईसकरि निज ग्यां
न नाव है प्रादव बिना
साबिसता ॥ ये इ कतीस
ग्यांन निज सार ॥ ५ ॥ श्रीस
धद ॥ रत आरं न श्रोता
नृपति प्रदिगत जिपू न

संनर्थ साहाय्य की दया
सब संतो की दया ॥ गुसा
ई पूरण दास जी की दया ॥
तिष्ठते गुं धर्ये का दस श्री
नगवते नने ॥ संत दास स
तगुर के चरणों ॥ तिन के
गहं दिह करि चरणों ॥ जा
ते उपजे ग्यां न विचारा ॥
धटे करन नरम ब्याव
हारा ॥ ॥ बहु रसों ज क जन
मन ही श्रंभुं ॥ तिन के नि
न जानं दय पां भुं ॥ तिन की

हं वसेरातीये शिव
धरसासनासंगाशे
नव्यापेकारे तिनव
ताकौनवताउं तीन
मैकहंनपानुं ति
वालकहतग्रवश्रे
कमोहिसुपनाकी
व्यारिबरीनैसवशि
ज्यौबुदबुदापवने
राजकृत्यतहंको
र ॥ श्रापहीश्राप
संहार विप्रश्रापव
मौव्याज येसवक

मनसुरे ॥ श्री चण्डिका
प्रापयेत्ताप्यो ॥ सातैर्नाम
राष्यो ॥ प्रापदित्यएको
पंचवतायो ॥ व्यासारगव
हतनसुरियायो ॥ ५ ॥ दाना
व्यासदेवजो चण्डिका ॥
नाष्योद्वादससुंद्द ॥ तिन
मैयेकादससुंद्द ॥ नैन
लसुंद्द ॥ ३ ॥ चोप
ई ॥ येकादससुंद्द ॥ सज
॥ प्रापे तिनकोमोरोक
सुंद्दनाय य ॥ ३ ॥

कोपाप २० ॥ राजा उवाच चै चोप
३ ॥ तेतौ बिप्र नक्तते सारे ॥ प्र
दानं प्रयुसेव कनारे ॥ बिप्रको
प्रकीर्णो कौं पूरन ॥ जातेनां स
नये सवत् २० ॥ २१ ॥ कौन निम
तिश्रापसो कौन ॥ कसो कसपा
कारे करनां नैन ॥ कसपा
यान्दुदक्षारे ॥ श्रापही श्रापके
न बिधि सारे ॥ २२ ॥ श्री सुप्रज्व
ये ॥ नूको भा ॥ नरनके काजा
न प्रवता प्रदोयो ब्रजिराजा
त्रह बिधि नूको नारनुतास्यो
वमनमे गोपाल बिधा ॥ २३ ॥
२३ ॥ जो लग है या इव कुल सारे
गालगनही नू नारनुतास्यो ॥

शुक्रप्रवेष्टुः स्ति कसिपवो
मदेवशुक्रनारदप्रवरबह
तरिषबहूतविसारद॥२७॥
तहांसबैमुनिः सुषसंबैठे ॥
यदुकुंमारतहांशुलकरिपे
ठेः सावहाबनितानेपवता
योः बसादिकनडुद्रशुधि
कायो ॥ २८ ॥ प्रतिबिनतीसैच
रननलागेः पूछे प्रसनपरे
िनश्रागेः येबनितापूछेदि
जिराजाः सुनसुषहोतलगे
प्रतिलाजा ॥ ३० ॥ निकटिप्रस
वप्रायोहैयाको ॥ करोबिचार
आपमेताको ॥ तुंमत्रिकालइ
सीसबजाणैः कहाजाणैसोह

तव सुषतीयेकाये विद्याया
ग्यान विना नास्ति यत्तु इतर रि
ताते ब्रह्म ग्यान सन्तु गेहे ॥
प्रथमहा दिव्यैरागा दुपाजे ॥
पंथा उदै पंथ है जै सै ॥ ग्यान
वैराग मित्स्वरु रि प्रै सै ॥ राज
स नै जगत सुष जै ॥ जिन सै
लाग्य चर मत न रंगै सै ॥ न
ये के टि छु प्र न कु स या द्वा ॥
जो धन घन म दि च हं दि स न
द्वार ति न के व हू त तो ति
बिस तार गिन ती ॥ कर त
लै के पार त व न प्र प नौ
क व ला की यो न व नि धित

हायो ॥ ३५ ॥ रतिरसो हतो प्रति
थि ॥ ताकूनिगत्य गयो धे म
ते चूरनल हरिन के नारे ॥ आ
ये ती र न ये व ए नारे ॥ ३६ ॥ जीव
न र पे क जाला बिसत स्यो ॥
श्रीरन सं ग प म थ सो प स्यो ॥
ताके उ ड लो ह सो पायो ॥ व्याधि ये
क सो बा न बनायो ॥ ३७ ॥ हरि जी
घात सकल से ॥ तनी ॥ बहोत न
सी हरि दा मे शानी ॥ ज दि पि जो
ग्य प्र न्य था करणे ॥ प्र म न मा
हिं सकल सं स्नणे ॥ ३८ ॥ ये बि ध्य
सकल प्राप म नि नो ई ॥ ताकू पे
रे च के वं के ई ॥ नि श्रु यं प्र सी
या पी व्वा पू य ह कु ल घो नुं दि
नं श्रा पू ॥ ३९ ॥ दो हा ॥ ये बं रा ग

तव सुषजीयेकायोबिचार
ग्यानबिनानां होय उद्धार ॥
तातेब्रह्मरूपानसमुज्जं ॥
प्रथमहादिदबैरागनुपाजं ॥
पंधाउडे पंधहैजेसै ॥ ग्यान
बैरागमिलैहरिप्रेसै ॥ राजा
सनों जगत सुषजे ॥ जिनसों
लाग्यत्तरमतनरजेसै ॥ न
येकोटिछपनकुलथाद्व ॥
ज्योवनघमडिचहुंदिसना
द्वपर ॥ तिनकोबहुतनाति
बिसतार ॥ गिनती करत
सहैकोपार ॥ नवनप्रापनो
कवलकायो ॥ नवनिधित

सायो ॥ ३५ ॥ रतिरसो हतो प्रति
 ॥ ताकूनिगत्य गयो ये म
 ते ॥ रनलहरिनके नारे ॥ अ
 येती ॥ नये ॥ नारे ॥ ३६ ॥ जी
 वरपेक जाली ॥ अत ॥ ३७ ॥
 श्रीरनसं प ॥ सोपस्थो ॥
 ताके उद्रलोह सोपायो ॥ व्याधि
 कसो बांन बनायो ॥ ३८ ॥ हरिजी
 वात सकल से जांनी ॥ बहोत न
 सी हरिदासे जांनी ॥ जदि पि
 ग्य अन्ध था करणे ॥ प्रमन म
 हिं ॥ कल संस्करणे ॥ ३९ ॥ ये वि
 स ॥ ल आप म नि नोई ॥ ताकू
 रिसके क्ये कोई ॥ निश्रु व अ
 घापी व पू य ह ॥ लघो नु ॥
 जं आप ॥ ३९ ॥ दोह ॥ ये वै न

गजनाथो॥ उद्वृत्तादिद्वारा
समुजायो॥ प्रथमं चोक्तं प्ररजु
नद्वैत्तं श्री॥ दुष्टं चैतत्प्रस
संन्याहनी॥ १७॥ या विधि चूको
नारुतास्यो॥ नाव रूपजस
को वि सतास्यो॥ जाकुं गहे पां
चै नो पार ॥ प्रागे जे जन होय
प्रपार॥ १८॥ बहूत चांति करि प्र
दसै चतु करस॥ याप्यो चरु
जगत च गवत धरस॥ या वि
धि सबके काज सवारे॥ तब ह
रि जी बैकुंठ पधारे॥ १९॥ दोहा॥
जैसी सुनि प्रद चतु कथा॥ य
दुकुल को द्विज प्राय॥ त प्रसन्न

ईशानसौराजा ॥ ये हतन हरिसे
वाकीसाजा ॥ बंधेजाहि बृहत्स
रराजा ॥ कश्म न्वदेना ॥ का
जा ॥ ३ ॥ असीदेहनागसौपावे
हरिकासेवाक्यै छिटकावे ॥
पलमैकटेकास ॥ पास ॥ हरि
कूपावे हरिके दास ॥ येकबेर
॥ सुदेवकेतौन ॥ नारदकीपो
कपाकरिगौन ॥ तिनबहुरिबि
पूजाबिसतरी ॥ तापीछेबांनी
उचरी ॥ बसहेजेबायो ॥ हेप्र
नूजीतुक्त शौज्रागमना ॥ स
बंदीहनको सुषको नवना ॥
उपमांतुमैकोनकादीजे ॥ जि
नकेइससकलनयथाजे ॥

कमप्राधान्यसे
निद्रुक रजनीके
जोकोईसोनेके
जेजतब
सबडेब
तिपाय
पमेअ
प्रसव
गंपव
शांति
तरिह
राधे
हलर
स्किर
जपूंग

Handwritten text in a cursive script, likely a form of Indic or Southeast Asian script, arranged in approximately 18 horizontal lines within a rectangular border. The characters are densely packed and highly stylized, characteristic of historical manuscripts. The text is contained within a double-line border.

महाबधः सो १२ अक्षर
धवचनः १२ अक्षर
कूसलः १२ अक्षर
बहुकदसः १२ अक्षर
यः उसवसंते १२ अक्षर
नन्नेप्रायः १२ अक्षर
टकायो १२ अक्षर
सलतल १२ अक्षर
सल ३ अक्षर
श्रुताय १२ अक्षर
श्राय १२ अक्षर
श्रुतिक १२ अक्षर
३४ अक्षर
देषो १२ अक्षर
रिलेषो १२ अक्षर
वायो १२ अक्षर

निरूपीयो ॥ ग्यान कर्जिसुक्देव
 ग्यान कर्ह प्रबजोल ग्यो ॥ नार
 दसौ वसुदेव ॥ ३ ॥ चौ प ३ ॥ ऐ ती
 श्री नागवने साप राण प्रष्टा
 दस सह ॥ श्री प्रसहं ससहिता
 या ऐ काद सस्कं दे ॥ यह कुल
 आप निरूपण नाम प्रथमो प्र
 भाष्य ॥ श्रीक ३ ॥ चौ प ३ ॥ श्री
 सुक उषा ॥ दारावती आप जह
 पालक ॥ तहान्द वि आप को ता
 लक ॥ नारद तहानिरेतर प्रावे
 क्रम देव को दरसन पावे ॥ १ ॥
 जीवन मुक्ति जै निति जाक ॥
 वं चो जावत जै को ताक ॥ जो को
 सकल लोक जै काल ॥ जसि तह
 निसा

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines, with some lines starting with a small decorative flourish. The script is dense and difficult to decipher without specialized knowledge of the language.

Handwritten text in a highly stylized script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is organized into approximately 15 horizontal lines, each containing a sequence of characters. The characters are bold and black, set against a white background. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is contained within a rectangular border.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Handwritten text in a script, likely Devanagari, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are written from top to bottom, following the curve of the page. The characters are bold and black, set against a white background. The overall appearance is that of a manuscript or a page from an old book.

Handwritten text in Devanagari script, consisting of approximately 12 lines of text. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is written in black ink on a light background, with some characters appearing to be in a different script or style, possibly indicating a mix of languages or a specific dialect. The lines are separated by horizontal lines, and the overall appearance is that of a manuscript or a page from a book.

Handwritten text in a cursive script, likely a form or document, consisting of approximately 15 lines of text. The text is written in a dark ink on a light background and is oriented vertically. The characters are highly stylized and difficult to decipher, but appear to be a mix of letters and numbers. The text is arranged in a roughly rectangular shape, with the lines sloping slightly to the right. The overall appearance is that of a handwritten form or document, possibly a receipt or a list of items.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Handwritten text in a script, likely Devanagari, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are written from top-left to bottom-right, following the natural slope of the page. The characters are dense and closely packed, with some lines starting with a small circular or dot-like symbol. The overall appearance is that of a handwritten manuscript or a set of notes.

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥

Handwritten text in Devanagari script, appearing to be a list or a series of entries. The text is written in black ink on a light background and is arranged in approximately 15 horizontal lines, slanted downwards from left to right. The characters are somewhat stylized and difficult to read precisely due to the slant and handwriting. The text appears to be a list of names or titles, possibly related to a historical or literary context. The lines are separated by thin horizontal lines, suggesting a structured list. The overall appearance is that of a handwritten manuscript or a list of entries.

१३

॥३॥

॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

Handwritten text in a South Indian script, likely Grantha or Tamil, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is densely packed and appears to be a form of liturgical or philosophical writing. The lines are roughly parallel but show some slanting due to the handwriting style. The ink is dark, and the background is light, making the characters clearly visible. The script is highly stylized and characteristic of ancient South Indian inscriptions.

Handwritten text in a South Asian script, likely Odia, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and difficult to decipher due to the cursive nature of the script and the image quality. The lines are roughly parallel and fill most of the page.

Handwritten text in a highly stylized, cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines, sloping downwards from left to right. The characters are dense and interconnected, with many loops and flourishes. The overall appearance is that of a handwritten manuscript or a collection of notes.

ಶ್ರೀ ೧೨ ಅಕ್ಷರವು

೧ ೨ ೩ ೪ ೫ ೬ ೭ ೮ ೯ ೧೦ ೧೧ ೧೨ ೧೩ ೧೪ ೧೫ ೧೬ ೧೭ ೧೮ ೧೯ ೨೦ ೨೧ ೨೨ ೨೩ ೨೪ ೨೫ ೨೬ ೨೭ ೨೮ ೨೯ ೩೦ ೩೧ ೩೨ ೩೩ ೩೪ ೩೫ ೩೬ ೩೭ ೩೮ ೩೯ ೪೦ ೪೧ ೪೨ ೪೩ ೪೪ ೪೫ ೪೬ ೪೭ ೪೮ ೪೯ ೫೦ ೫೧ ೫೨ ೫೩ ೫೪ ೫೫ ೫೬ ೫೭ ೫೮ ೫೯ ೬೦ ೬೧ ೬೨ ೬೩ ೬೪ ೬೫ ೬೬ ೬೭ ೬೮ ೬೯ ೭೦ ೭೧ ೭೨ ೭೩ ೭೪ ೭೫ ೭೬ ೭೭ ೭೮ ೭೯ ೮೦ ೮೧ ೮೨ ೮೩ ೮೪ ೮೫ ೮೬ ೮೭ ೮೮ ೮೯ ೯೦ ೯೧ ೯೨ ೯೩ ೯೪ ೯೫ ೯೬ ೯೭ ೯೮ ೯೯ ೧೦೦

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ३ ॥
सर्वकष्टहर्त्रं कुरु ॥ ४ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ५ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ६ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ७ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ८ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ९ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १० ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ ११ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १२ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १३ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १४ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १५ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १६ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १७ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १८ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ १९ ॥
सर्वदुःखहर्त्रं कुरु ॥ २० ॥

Handwritten text in a South Indian script, likely Grantha or Tamil, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are densely packed and slanted downwards from left to right. The characters are intricate, with many loops and flourishes. The overall appearance is that of a manuscript page, possibly containing a list or a series of instructions. The text is written in black ink on a light-colored background.

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines, written from top to bottom. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are roughly parallel and fill most of the page. The text is written in black ink on a light-colored background. The overall appearance is that of a historical document or a record book.

Handwritten text in a South Indian script, likely Grantha or Tamil, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is densely packed and appears to be a form of liturgical or philosophical writing. The characters are highly stylized and consistent in their form across the lines. The overall appearance is that of an ancient manuscript page.

Handwritten text in a script, likely Devanagari, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The characters are dense and closely packed, with some lines showing a clear rhythmic or structural pattern. The writing is contained within a rectangular border.

Handwritten text in Devanagari script, consisting of approximately 15 lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The characters are dense and closely packed, with some characters resembling modern Devanagari but others being highly abbreviated or combined. The lines are written diagonally across the page, from top-left to bottom-right. The ink is dark, and the background is light, making the text stand out. The overall appearance is that of a handwritten manuscript or a page from a book.

Handwritten text in a script, likely Devanagari, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are written from top to bottom, starting with a small number '1' at the beginning of the first line. The characters are dense and interconnected, making them difficult to decipher without a key or context. The overall appearance is that of a handwritten manuscript or a set of notes.

Handwritten text in a script, possibly Indic, arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are dark and somewhat stylized, typical of ancient manuscripts. The text is contained within a vertical border on the left side of the page.

८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

Handwritten text in a script, likely Indic, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is dense and appears to be a continuous passage or list of items. The script is highly stylized and difficult to decipher without specialized knowledge. The lines are roughly as follows:

Line 1: [Illegible characters]

Line 2: [Illegible characters]

Line 3: [Illegible characters]

Line 4: [Illegible characters]

Line 5: [Illegible characters]

Line 6: [Illegible characters]

Line 7: [Illegible characters]

Line 8: [Illegible characters]

Line 9: [Illegible characters]

Line 10: [Illegible characters]

Line 11: [Illegible characters]

Line 12: [Illegible characters]

Line 13: [Illegible characters]

Line 14: [Illegible characters]

Line 15: [Illegible characters]

Handwritten text in a script, likely Devanagari, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The characters are dense and often overlap, making it difficult to transcribe accurately. The lines are roughly parallel and fill most of the page's width.

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines, written from top to bottom. The characters are dense and somewhat stylized, typical of older handwritten documents. The lines are roughly parallel, following the angle of the page. The text is difficult to decipher due to the cursive nature of the script and the high contrast of the image.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

Handwritten text in a script, likely Devanagari, arranged in approximately 15 horizontal lines. The text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are closely spaced and run diagonally across the page. The characters are bold and black, set against a white background. The overall appearance is that of a dense, handwritten document or a page from a manuscript.

Handwritten text in a highly stylized, cursive script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is organized into approximately 15 horizontal lines, each separated by a thin horizontal line. The characters are dense and interconnected, with some lines starting with a vertical stroke that may indicate a new section or line. The overall appearance is that of a dense, continuous block of text.

Handwritten text in a highly stylized, cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is organized into approximately 15 horizontal lines. The characters are dense and interconnected, with some lines starting with a small symbol that resembles a cross or a similar geometric shape. The overall appearance is that of a manuscript or a set of notes written in a specialized script.

Handwritten text in a script, possibly Indic, arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are dense and stylized, typical of ancient or medieval manuscripts. The text is contained within a double-line border.

राजा हरि नृपिता को हरि को
जी कायो बिहू मजिन ला पुल
ये पुले दिषायो मधु सुधंशो
नि सुनाये ॥ ३ ॥ बसो रिबर
रूप हरि ख्यास्यो मरि नाष
प्रतिदूष ला नास्यो मबो राह
ताम ला डाल सों सो करि नुपा
यद्य रिज्रा न राजा सों ही ही किं क
कूरम सो ये मंद्र डि र ख्यास्यो ॥
अमित का हि सु र का र ड सास्यो
ग्राहा ग सो ज ग ड राज पूका
स्यो तिव हरि जी त त काल न
बास्यो ॥ ३ ॥ बाल धि ल्या दि क
जे रिष राजा पू गु सु स व य प्रा
कार वि राजा क सि य कैं का जै
ये क बार ॥

रिज्जके चरता। सुधर प्रप्र
रिजातव ध्यासे। सुमापिताः
पाषंड विस्मयि रसेन प्रप्र
रिच्यैरेगे लिङ्गका मया।।
तिप्रपरा ध्यासे। सुमापिताः
लिके उपलब्ध प्रप्र प्रप्र।।
बहोरि प्रप्र प्रप्र प्रप्र प्रप्र।।
वेद प्रसे लिङ्ग प्रप्र प्रप्र।।
राः कोऽके लिङ्ग प्रप्र प्रप्र।।
कथयेत् प्रप्र प्रप्र प्रप्र प्रप्र।।
रकोऽके लिङ्ग प्रप्र प्रप्र प्रप्र।।
कथयेत् प्रप्र प्रप्र प्रप्र प्रप्र।।
लिङ्ग प्रप्र प्रप्र प्रप्र प्रप्र।।
प्रप्र प्रप्र प्रप्र प्रप्र प्रप्र।।

Handwritten text in a highly stylized script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is organized into approximately 15 horizontal lines, each containing a single line of writing. The characters are bold and interconnected, with some lines starting with a vertical stroke that may indicate a new section or a specific marker. The overall appearance is that of a dense, rhythmic sequence of symbols.

कजबरहोः प्रष्टमैजमसनाम
तवकहः ॥ २ ॥ चमसगुवाचै ॥
रिज्ञाविप्रवदतैकरेधवा
हनतैषित्रीबिसरै ॥ जाध
नरुतैवैसुयजावेसइति
मैचरनतैप्रायेः शयेलीमांति
कायोः प्रासरमांतितालेनजन
सजनकोऽवरमांतेप्रायली
करैषतपालाः प्रायलीयोधैद
नदयालाः ॥ ३ ॥ प्रैसेयुचकौजे
बिसरैः ॥ तेप्रापरः प्रापरः चनि
करैः ॥ जेगुदोलीपिउदोलीः
स्वामाद्रोलीकितिघनोलीः ॥ ४ ॥
पातिनिप्रप्राथ्यनिप्रगतिजा
वैः कवहचूतिरसुवलिनपा
वैः सुद्रोपितः प्रतपजः प्रादीः ॥



कजवरहोः प्रष्टमैल्लमसना
तबकरहो ॥ २ ॥ चमसनुवाचै
हरिजाविप्रवदनतैकरेपवा
रुनतैषित्रीबिसनरै ॥ ज्वांघ
नरुतैबैसनुयजाचिससुइति
मैचरनतैप्राये ॥ इयेसीमांति
कायोप्रासरसांतितालेचइल
सजनकोखरमा ॥ लेप्रायसी
करैपतपाला ॥ प्रापलापोछेदी
नदयाला ॥ इयेसेपुनूकोइरे
बिसरै ॥ लेप्रपांरुप्रपदाचनि
करै ॥ जेमुइहोसीपिबुइहोसी
खांमाइहोसुक्तिद्विनीहोउरे
पातिनिप्रप्राथ्यनिप्रुंगलिजा
वैकंवरुनूलिरसुवोरुनया
वैसुइजेधिनप्रुतंजप्रादीः

ना पनमैयेकलेसफु म
मैनां सुरगलोकको भूषण
रूपा ॥ ३ ॥ जातेयुसब ॥ म
प्रनूपा रक्षातनसबहा ॥ ३ ॥
कौकीयो प्रनांमां लीनीयेक
उरबसीनांमां करिप्रनांम
पुनिवारंबारा ॥ पहोचेसंत
ईड्डबारा ॥ २ ॥ तिनईड्डहाप्र
संगसूनायो ॥ बिसनयेवास
ईड्डमनप्रायो ॥ बहरिसायोहं
सः वतारा ॥ चारि न ॥ ३ ॥
कादिकूंबारा ॥ २ ॥ दतकेपि
लप्ररपिताहंसारा ॥ ३ ॥ ४ ॥
सरूपबिसतार ॥ ३ ॥ ग्रावम
भूषांन निनिवारैः ताकरिस
रिवेदुर्जधारे ॥ २ ॥ सतिबरत

रिचक्रननहामाने बहूत
मनोरथनिसदिनकरै त्रस
नाताप्रजलनिनहादरै ॥१॥ य
मदपानप्ररुमासप्रसर
नारीनेहसहतिजगसारा
तौससकलत्यागिबिनमि ता
बिधिमेवेदलगायौ च्यंता
१५ संगकरै तो नारिबिवांई
ताहमेबहूतै तिथिनांहा ब
हुरिकहादेवै रतिदांनो
परजानिमतिचिंतनहाप्रो
नो ॥२०॥ यबिंकरमकरमव
हृथुदावै ॥ बहुरिबेदसबत्या
गकरावै ॥ प्रैसैलाप्रोमिषप्र
रु मदपानो ॥ जग्यमाहिना
सिकहंप्रानो ॥ २१ ॥ बहूसैवह

कलेईइहादाये । बलिक्काच
लिआपबसि नये ॥ ४१ ॥ बहानि
अधरमहाकुं पजे राजा ॥ प्र
सरांमप्र ठगटे तिनकाजाः
इकईसवारकरी निहयिची
नूमेकहंनराथैधित्री ॥ ४२ ॥
बहोरि नयेदसरथसुतरा
मा जेहें प्रगटलेकप्रचिरो
रमाः सायंरुपरिसैलजि
नतारे ॥ रावणाप्रदिदुषसं
तारे ४३ ॥ आगैरांमक्रदम्प्र
वताराः नूकोप्रबलहरेगे
नारा ॥ इदुकुलजनसकरम
तेकरिहें जिनसौंलाग्यजी
वनिस्तारिहें ॥ ४४ ॥ प्रसुरदे
धिजगपनकेकरती ॥ जीवनसा

प्रै सो धनते सुदुप्रधानां देह
 का जिषो वै चरं नां नां । काल
 निरंतर रहत न देवौ । बह मंद
 मंत दूरि करि लेवौ । रक्ष मंदसां
 सम ग्रमों प्राणी जौं प्रै र चूलि
 कहना वन ली जौं । तैं लंके प्रापु
 लेई प्रिया नां । प्राण बान ते प्राण
 ती जां नां । र प्रै बनि तोरितु हां
 न हां देवौ । प्रै र चूलि कहना व
 न लेवौ । सो कैं नी लगये क सुत
 होई सुत के नये लगीये सोई
 र प्रै सो लक लख न लो धर
 मां । ताको चूलि न पावै मर मां
 धर मां हां न कृति सुक ति वषां
 नै

निद्रुमलिके। कानी प्रसन्न
रेंद। ॥ ५५ ॥ जीति काको
नगति। जेन जे गोबिंद।
येती श्री भागवत महापुराणे ये
कादस स्कंदे। बिस देवना यह
सनाहे। जाले यथा स्वाने च
नु यो अथ्याये ॥ ५ ॥ चौपडे ॥ ५५ ॥
२ श्लोक ॥ ३३ ॥ विदेह उवाच ॥ चौ
पडे ॥ जेन हा करे हरिजी का से
वा। जिनकी कहे को नगति दे
वा। तिनके पालन पतन
वे। निसदिन च भाग्यनिज
लावे। ये जो बह विधि परम
उपजावे। तो मोहि कहे कथे
सूषपावे। ये कहे बधन न

तापतपेतेरहैं। करै मजोरथ
फलनिन लव है मजहल मति
अमकरिनु पजाये। सुलधि
तदारासकलसन लये। इम
तिनसबनिनको द्योडिइहाह
बधे प्रापजमहारेनाई। जम
केइतनरकमपवोवै। तिन
केइधरुपसिधकलनजावै। इ
तिनकोनहासपनिनराह
रिरधिकलोनहासकहास।
कहाकहकधूकसीनजाई।
हरिबिनकहपलनवसुधनाह
होला। चमसबचनसुनिनप
के बाढोत्रासप्ररुपार। तब

निदुमलिके। कानी प्रसन्न
रंद॥ छै प्र नू जी तिन का कौ
न गति॥ जे न न जे गो बिंद
ये ती श्री भागवत महापुराणे ये
कादस स्कंदे॥ बिसद्वे वना रंद
संनारि॥ ज्ञातिय पाखाने च
नु यो अ ध्याये॥ ४॥ चौ प ३॥ ४॥
२ श्लोक ३३ बिंदे लज्जा चै॥ चौ
प ३॥ जे न हा करै हरि जी का से
वा॥ जिन की कहै कौ न गति दे
वा॥ तिन के त्रपति न सूप नै प्र
वे॥ निसदिन ब्रह्मा अ गनि ज
लावे॥ पौ जे बह बिधि चरम
उपजावे॥ तो मो
सूष पावे॥

री। कंठजनेर्क करजपसाली
देडकमंडलप्रसूतगुणशाली
आतवमनिप्रहोवैसबसुदा।
सबनिरवैरसुहृदे प्रबुद्धा।
विश्वरकदि ईदीयेमन शो
नां। करैसबनिलिहृदिकोप्यो
नां। पाहससुपुनश्चरसजोगे
सुर। निरगिल प्रकातनप्र
रुईसुर। पुरधोतनवैकुण्ठप्र
बिक्ता। तिनकेनानरेपुन ८
बिक्ता। धारकतनवेलाडुग
माही। नृपुननेपुनगलि
पहराई। पीतकेससुरवादि
कहाथा। दिगजुजु स्यामवय
नयनाथा। प्रसबलिनहितन
पाहीककंवे। वेदबलितकरम
रुजानबिसतने।

सुनभारैड ग्यानी ॥ तिनप्रय
राधनसकैजानी ॥ १४ ॥ य
तनौधनश्रायोयेहप्रैहै ॥
येतौमिलियेतोतबद्वैहै ॥
कुलसंपतिविद्या ॥ १५ ॥ कुरा
इ ॥ त्प्रागरूपबलकरमब
डाई ॥ १५ ॥ इनकौमदबा ॥ दौ
अधिकई ॥ तातैसमजिहिर
देनहा ॥ आई ॥ हरि ॥ गतनसो
ठानैसासी ॥ मगहरमरेधो
॥ उकासा ॥ १६ ॥ यावरजंग
मसबधटमाहा ॥ हरिपूरन
पालीकहनांही ॥ ज्यौंअका
सलिप्रतिनहाहोई ॥ त्योंहरि
॥ दकहतहसोही ॥ १७ ॥ परि
वेमुहनकबहजानै ॥ जातैह

मगवान्प्रनंता मजिन्कोको
इल्लैनप्रंता ॥ १ ॥ बिस्वस्य
बिस्वसुरस्वामी ॥ सबीतमस
वप्रंज्जामी ॥ ब्रह्मतितांतिप्र
स्तुतिप्रबुसामै ॥ बिधिसेंहाप्र
पूजाकरै ॥ १ ॥ कलजुगपीतपि
तमरप्यारी ॥ क्रुद्धदेवद्वनस्य
मसुरारी ॥ स्वरुतिपारद्व
रुप्राचरनो ॥ स्वरुद्वनकीरत
नपूजाकरनो ॥ १ ॥ इंडीयनन
ब्रह्मचरेबिकारा ॥ तिननेरापे
चरननुसारा ॥ स्वर्द्विधि
वतीरथकोवासा ॥ सुमरत
पुरवैसबप्रास्था ॥ ५ ॥ सिन्धुति
रेचिसुरनरमुनिप्राये
कोनेद्वेदतसापा

हृत्तैश्च ड्रावैः ॥ ज्यैसो तात प्रज
सोपावैः ॥ हरिकैसरने प्रावै
कोई ॥ सारा बिधि समजे धक
सोई ॥ र ३ कैजे ॥ तिनकासर
नहा प्रावै ॥ प्रचि प्राये सारो
सोपावै ॥ वेरु ॥ जनप्ररु हरि
नजानै ॥ प्रापुहा कौपंडितिक
रिमानै ॥ २३ ॥ तातैतात परज
नहा जानै ॥ पहि पहि बेद प्र
नरघट्टिगानै ॥ धा नये सोजे
कैरे उधारा ॥ सो ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
बृथागंवारा ॥ २४ ॥ जो धन
हरिकै कारज लगवै ॥ सोत
बपु मत्त गतिकौ पावै ॥ तातै
हे ॥ यं ग्यान प्रगासा ॥ तंब हरि
मिते ॥ मिते नवपासा ॥ २५

सुनैकहै सुमरै प्ररुवाँवै । तै
ततकालततकहै पावै । राणा
बिधिजे जुगजुगलुनिसेवै ॥
तिनतिनकौं सुनिग्यो लहादे
वै ॥ ग्यानपाये निजतत्वसमा
वै ॥ डांहाजाये बहस्यो निहा
वै ॥ शीजे कलि सुगले पुनको ज
नत ॥ तेवह बिधि सु सु सु ति
कौं ठानत ॥ जैसा जसपारक
लिमांही ॥ जैसा जैसा जैसा
नांही ॥ ररा ॥ सुतनु जैसा ज
ग्यत्रेतामाही ॥ हापप्रगनना
पूजै रामही ॥ कलिने कलिने
मादि किगवै ॥ रो
तकालहापावै ॥

इंद्रियमनासिक्त्व लक्ष्मि यन्ने
द्रोहकरैवसौजीवनमारेते
वरुज्जनमतिनैहिसंसारैः
पावराजगमसबधटमांसी
येकैहरिदूजोकोनांसीतिन
कोद्रोहकरैतनपोषेद्वारास
तनिप्रानिसंतोऽशिनसि
रघनहातत्वग्यानीपहिप
ठिग्रेथसोसिप्रतिमांनीतेप्र
साधिरोगीसबजांनीतिन
सौंग्याननमांडैग्यानीहरते
सबकरैः।पनौघाताःसुपने
हनलहैकुसलाताकरमप
घमेंसुषंकोचाहैप्रमितदे
कैविषहाबिसाहैइइनांनो

अरु अमनां लो वरु नि सु अर त ल
रि मां हि सं नारी सी र ७ अरु क
ह क ह को ई दे स ही सु द्या ॥ इ
व डु दि मां न व त लुं बु ह ॥ उ
ऊ जे ते न कि ल क रे ॥ ता ले ता
ता व हो त बु थ रे ॥ र चा अरु स
हो ॥ तो मू य र णी क ल व सो ल्या ॥
कां वे रा प य सु नी लि सा ल पा
अरु सर सु ली प थि म नो लु न
गंगा प्रा दि दू रि ल सो दं ह नी
रु धे जे मां न वें प्री पे ड ल ई ल के
॥ इ रि लो थि रि र दे म ल ति न
को ॥ ते स र्व थो हो लि रु रि न
ग तां स थू सं र ग हो थू अ
ता ॥ ३० ॥ व ल कु दं स
दे वा ॥ ये न के रि नी ०

जैसी कौन समै कै सो प्रव
तारा ॥ कै सो वरनना मग्रा का
रा ॥ की ही विधि नै वरन मग्रा
सरमा ॥ कहौ ग्यान के साधन
धरमा ॥ जिन तै ग्यान लहै स
ब भागै ॥ निरि हरि चर ॥ कष
ल प्रनू रागै ॥ सुनि नर पवै
न न गतै ना जन ॥ तब बोलेन
व मे करन ॥ नना ॥ कर जाँड न ड
वाँचै ॥ सति वेता ॥ प्रकल्प का
बहुत नाति न जीये गोपाला ॥
बहु बधि वरन बहुत मग्रा कारा ॥
बहुत नाम ब ॥ न जब प्रकार ॥
सति जुग ॥ दु ल व र न नू नु च्या
री ॥ सी स ज टा त न ब ल क ल धा

उनकहिरदेउप्रतिजपा...
नाहसंसेकोटोएकक...
जाग्ये...
पूजाकी...
प्रदधिनादीनी...
नपाये...
येतत...
हये...
रतक...
चि...
वि...
पु...
न...

हरिकौं जौनें तब हरि सब यो
पुजा दौनें च प्र ह्य ग्र च न र
गाये क सिजे वि ह्य मु व क
पि ज ग्य च नी जे सर ब वे द
अ रू कर म वि ज ये ता अ से ना
म क से सब सं त स द्वा प्र पी त
ब र न घ न स्या ता सं घा दि क
आ यु ध्य अ नि रौ नां च रि वां
हृ नृ गु ल ता थ र ना ल धि
मी ची न्दु ब से त आ न र नां
१ चाम र ध्व ज्वा दि ब ह से ना
म्हारा जिल धि ए सु ध दे ना
वे द तं त्र प थ से वा करे सब अ
र प न पू जा बि स त रे ११ बा सु दे
व सं कर ष न दे वा प्र ध म न
अ नि रू ध्य अ च्चे वा नारा य ण

प्रादिं विदुषाः प्रायेणु किंटे स
 वदुषाः वरा। तेजोपेक प्राति स्यो
 सेवैः। तिनको ल्योन प्रसापद
 देवैः। प्रबतुम पुत्रबुद्धि मति
 प्राणो। क्रुदय देवको वृत्त हाजा
 नो। व ३ माथा क रि धार र न रे द
 सि। प्रार वृत्त तु न जा नो यो द।
 बडो देष चू से प्र च न रा। मे
 टन का ज थ स्ये प्र स ता या। व क।
 प्र न पु नी त र ज स र्हा वि स त र दी
 जा सां ला ग प ली र्जा न स त र म्नाः
 जे जे ई न सौ हे त ल गं विः ने ले स
 क ल पर न प द पौ चो म्प जे ई री
 सु नि ना द द क चिं ली वृ द्दु द्दु
 दे व का प्र द र्त्त नो ली ज्ज प्र हा
 दु र्ग मु क्त क रिं डो न्यो। क

तसरनहाजोप्रावै ॥ जनमन
रनसः ॥ पुः मिटावै ॥ १६ ॥ केव
लदा न होत ॥ १७ ॥ नवसा
केपारउतारै ॥ जैसोचरनतु
मुरैगायौ ॥ ताकीसरनिदा
नमैप्रायौ ॥ १७ ॥ प्रतिदुलन
सुखधैजाकौ ॥ जैसोराज्यो
डिकरिताकौ ॥ दसरतमः
बचनसतक नों ॥ बनकौ
गवनकायो ॥ जिनचरनां ॥ १८ ॥
हेममिरगद ॥ पंतमननायो
जोताकैप्राधै ॥ ठिधायो ॥ जो
मगतन ॥ १९ ॥ प्राध्यानां ॥ जै
सेचरनस नमैलीनां ॥ १९ ॥
जैसीबिधि कलिप्रसुतिकरै
वोसोबिधिरुनिनामनउचरै

। द्वा ॥ जाके जांने मिटे श्री विद्या
मिटे श्री विद्या बृहस्पति पावे
बृहस्पति पाये फेरि नहा प्रावे
१ तब बृहस्पति सनकादिक संग
नारदादिरंजेश्वरिरेगा संक
ल प्रजापति चतुस्रराचादि
का म्हादेवलीने चूतादिक
२ ॥ सुरसमुद्रसंगपले सुरपती
पवनप्रखनासुतशुपती ॥ ब
सुप्रंगारसुरुद्रिचूदेवा
साध्यादिक प्ररुबिस्वदेवा
३ राषीगंडवपितरप्ररुनागा
चारनसिधनेरप्रनुरागा
प्रपसरप्ररुगुचक विद्याध
र किंनर यग्यादिक
२ ॥ कृष्णदे

गुमां हि निरंतर ॥ दुषतजाव
परै न हा प्रंतर ॥ ताम्हरै गुन
नां म उचारन ॥ येक जिहाजस
कलको तारन ॥ २४ ॥ पाप प्रपा
रघोर कलि मांही ॥ मै जा मै पुं
निले सकरुनाही ॥ तामै जेह
रिगुन नरुं चारे ॥ तेतिरे प्रप
ओर नको तारे ॥ २५ ॥ ते फल
कृति ते ईबड नागी ॥ जे कलि
हरिकी रति प्रनूरागी ॥ प्रापु
सुमि ॥ २ ॥ ओर निसु मिरावै ॥
ते जग जन सब होरि नहा प्र
वै ॥ २६ ॥ सत त्रेता द्वापुर प्रव
तरही ॥ ते कलि दुग का बंधा
करही ॥ कलि कषू साधन

शदितकानेदानदद्यात्वात्पाव
इसन्नत्रपतिनसाहोवै। चित्र
द्वेषेस्यनमुषज्ञोवै। अचित्र
दनिबहोप्रस्तुतिकरै। उतम
प्रथमिज्जः सविस्तरै। सह
तबिनती। अरूपरनामो। इस्
नयेसबपूरनकांसी १० देवान
वाचै। हे प्रत्तः चरनसरोज
तुम्हारा। कानकरमवचनच
तप्रसंकारा
अरुदेहा। बंदतहैंहं
येहा ११ जाके। शानबचनम
नसाथै। सावध्याननिसदि
नप्राराथै। जावसहलिप्रति
अत्रथ्यावै। तेनुया
रनपावै। १२ ध्यानिसंनि

३॥ सोनरि नाह सेवा करही ॥
जे सब तजि हरिकौ प्रनू सरंही ॥
३॥ जो बिधि तजि हरि चरन
न प्रावे ॥ तिनके मल हरि दू
रि बसावे ॥ बहो स्यो मल नैप
जे नही कोई ॥ उपजे कदे हरै
हरि सोही ॥ ३॥ तातैं सब
बिधि को फल येका ॥ गहाये
हरि पद पाडि प्रनेका ॥ सब
के प्रनू सहा सुघदाता ॥ सर
ना गतिपालक बिघाता ॥
३३ जब जब जो जो सरनै प्रायो
तब ही तब तिन तिन हरि पाव
यो ॥ तातैं और सकल प्रहराये ॥
आन गवान चरन चित परा
ये ॥ ३४ ॥ असे सुनि नोह के बेना

मौतममाहितपुरजि शकालौ । त
नेजनमकरमापुनधारो ॥ दीन
रंद्दानैर्कधारो ॥ १७ ॥ जोतुम
घरनकवलमृनिध्यावौ ॥ च
रनयेनीतनपलध्याटकावौ ॥
प्ररुनिजनागतनिरंसेवै ॥ च
येनहासमृजेनहाकथं ॥ येवै
एप्ररुयेकनिबैकुंठनिमित्त
हिरदैधरेतुवचननिनिना ॥
ब्रह्मरियेकसर्वैसंस्कानो ॥ येक
नयेचाहैवसंस्कानो ॥ १८ ॥
नमृक्तिनये येकसंने ॥ प्रम
नावसंमृतिस्सुसुनेने ॥ येक
ग्यादिकनसोचने ॥ परतुइ
नयेतुमकनने ॥ १९ ॥
नमृादिकप्रसने ॥ २० ॥

तव पाय हो वृत्त प्रसंगा ॥ ३८ ॥
अस्तु मतो देव का विसु देवा
नये न्ना रथ करि हरि सेवा
तुम्हारे जस पूर्यो जग सारा
जिन के हरि लानो प्रवतारा
३९ ॥ इस नु आ लिंग नु प्र ला पा
आसन नो जन से न मिला पा
हरि सो पुत्र जा नि चित दी नो
ता ते सु फल जन्म तुम कानो
क पट वा सु देव रु सि स पा
ला ॥ ६ ॥ त व क स त्या दि कर
राला ॥ बैर ना व क स न ही च
त ध्या स्यो ॥ तिन ह के हरि देव
कु ध्या स्यो ॥ क स म र न प्र
ति मन मे प्रा न्यो ॥ कृ द्म बैर
नि श्रे जी व ज्ञानो ॥ पूतना

सब धरमा ॥ येकै येकरूपव
ध्यावे ॥ हेत नाव कब नही
लावे ॥ येकै त्सा प्रतिमा कौसे
॥ येकै नाव निरतर लेवे ॥ ये
ध्याना ॥ कर

नाना ॥ २१

॥ ले

॥ सुवे

॥ ताते

॥ न ३ ॥ या ह म प्र

॥ प्रपने चरन

॥ च स म करे

॥ लिगते बुपजे न

सना ॥ २२

॥ २१

वृत्तको मानौ ३५ ध्याइतहा
सः ॥ ५ ॥ लोचाषे ॥ साबिधोन
सुनिहिरदैराषे ॥ सोसबचव
धनधिरकावे ॥ उपजेग्यान
पुनपुनपाते ॥ दोहा ॥ येना
धोसंघे ॥ सो ॥ हरिमिलनेको
द्वार ॥ हरिर्नृधोसंभा ॥ अब
बरनौकरिबिसतार ॥ ६५ ॥
येतीश्रीनागतेकापुराणै ॥ ये
कादसरसकंदे ॥ बसुदेवनायक
संभादे ॥ यायंतेयोपाखाने ॥
संघर्षनाप्रध्याये ॥ नारदबस
देवसंभादसनापता ॥ अथक्र
दमनुधोसंभाद ॥ सतावे पुन
पुनतव ॥ श्रीसूकबाकिचौप
री ॥ बहरिसुनौनपञ्चातमावे

दद्ये प्रगटवषांनै॥ बांधी धन
गंगातिहलोका॥ जाकेइसमि
टै॥ नवसोका॥ २५॥ वृत्ता
दिकसुरनरप्रधिकारी॥ तुम
नेचरनकवलबसचारी॥ ज्ये
प्रतिबलीबेलनदनीना॥ नाथे
नाकधनीशाथाना॥ ३०॥ जब
जबप्रसुरनतैदुषपावै॥ तब
तबसरनिचरनकाप्रावै॥ तब
सासुषनुपजैदुषनाजै॥ प्रप
नेप्रपनेदौरबिराजै॥ ३१॥ प्रक
तिपुरषमरुतलनियंता॥ तुम
पंनकेकारननगवंता॥ तुम
तैपुरषसकित्तबपावै॥
तिसानि

आनंदितद्वारिकापचार्यकेई
 नांचेकेईजावें। केईबाजेवह
 तबजावें। ५ केईयेजयसर्व
 उचारे केईकिसमजसविस
 तारे। याबिधिकरैबहुतक
 आसः मगनत्रयेहरिप्रेम
 प्रवासः ६ श्रीमगवात्म
 गुजतनधारीः इसनसबम
 नहरनमुरारीः लोकनमां
 सिजसहीबिसतारे। श्रवना
 दिकनिसकलप्रवृत्तारेः ७
 निष्परिधिपूरुनदारावती
 जाकेसंसिनहाप्रनरावती
 जानैध्वजादिकचत्प्रप्राये
 कइमहवकेइसनपाये ८
 सुरगष्टीहफूलनकामाताः

१५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०

हृत्नांतिचलावै इक्षुतुमत्तौ हृत्
सिहोवोनांहां ॥ ६ ॥ हृत्चलनिज
नंदपदमांहां ॥ औरयोडिहवै
ठकोई ॥ करतबासनां बंधे ॥
ईश्यायेद्वेनदी प्रगटतुमकी
नी ॥ जानकायेमा प्रेनचीनी
येकगंगचरनकोनीरा ॥ प्र
सतनीरमलकरेसरीरा ॥ ३ ॥
। दुजीतुवकारतिकासरिता ॥
तिरन प्रेनजहांलहां ॥ छिसर
ता ॥ सरवनकरत प्रेनरमा
जासै ॥ निरमलतिरेद्वेसुप्र
तासै ॥ ३ ॥ छिसप्रकासचयने
मांहां ॥ छेलेयेकनेक
॥

नागरुत्तारा ॥ प्रगटहेषेद्रस
 तुम्हारा ॥ जिनके ध्यानकार
 तनसरवना ॥ बसैरिनहोवै
 आवागवना ॥ १३ तुमप्रद्वैत
 है तयेकरो ॥ प्रपनीमायास
 बबिसतरो ॥ तुमहीमैनुपज्यो
 संसार ॥ सदरहैनुकरेआधा
 रा ॥ १४ तुमहीमांहिलानसब
 होइ ॥ तुमकौप्रसिसकैनहीको
 ई ॥ रागरतिप्रानंदसरुपा ॥
 प्रजितप्रमितचिदरुपप्र
 पा ॥ १५ बहप्रध्मधनसर
 प्ररुदानो ॥ क्रियाप्रयत्न
 प्रसन्नो ॥ त्यागयोगजिज्ञा
 दिकजेते ॥ प्रातनसूदकरैत
 १६ तुवगुनसरवप्रतप्रधनासे

ह

रजसास्योऽप्रसूकारतिबहुवि
 चिबिसतरी। नवसागरतिरव
 कौतरी। मालेश्वरचूपयदु
 सा। सकलजननकोमेदोसे
 सा। बहोबिचिकीनेकरमज
 पारा। जिनसेलागजैहैचवप
 रा। ४५। असुरैदुकुलीहृजआप
 बिनास्यो॥ नहिरहिलेहिनद्वै
 नास्यो॥ तातेदेवकाजसबक
 स्यो॥ करबैकधुंजाहाजुवस्यो
 ४६। गइवशसतप्रचिकथच
 सा। तातेहमबिनवैजगदासा
 प्रबकरिकुर्पचलोनिजलोकाः।
 करतपुनीतरुमारोवोका॥ ४७॥

करैतुमारासेवाः

24

24

24

जसास्योऽप्रसूकारतिबहुवि
चबिसतरी॥ नवसागरतिरे
होतरी॥ ५॥ लेखतारनूपयद्व
सा॥ सकलजननकोमेदोसे
सा॥ बहोबिष्टिकाकेकरमग्र
पारा॥ जिनसौलागजैहैनवपा
रा॥ ५५॥ असुरैदुकुलद्विजआप
बिनास्यो॥ नहिरहिएदिनहैह
नास्यो॥ तातैदेवकाजसबक
स्यो॥ करवैकथुनाहानुबस्यो
५६॥ गईधरषसतप्रष्टिकपची
सा॥ तातैहमबिनवैजगदासा
अबकरिकुर्पचलोनिजलोकाः
करतपनीतरुमारोवोका॥ ५७॥ ह
मसैदासतुकारदेवा॥ निसदिन
करैतुकारासेवा॥ जैसासुनिब

री॥ प्रध्यापुनकरोहमारी
नरुचलनुपजै नगतितुम्हारी
रप प्रजोतवजनबंनमाला
कैरै। प्रेमसरुतितुवप्रगेंध
रै। कवलाहेधिसपरध्याप्रानै
ताको प्रायसपतनीजानै। रई
प्रतुमप्रैसेदानदयासा। नरु
प्रध्यानकरत प्रतपाला। तब
ईद रानिरादरकरो। बनमा
लाताउपरिधरि। रउ जेतुवच
ननभग। सुरकारन। दुषप्र
सरसैनांसहारन। प्रसुरनको
प्रथगतिके हाता। सरनसर
गदीसै बिध्याता। रचप्रनैद
निप्रधनास नबानौ। लोकबे

बिनतासारे। प्रपनेप्रपनेलो
पधारे। प्रतबनर। प्रतिकासा।
नासंजारी। छेदेयदुलसितम्
रारी। द्वारावतीनुतपाता।
तिनकोंदेशिकहासुखिताः। पर
श्रीनगवाननुवाचै। येनुतपात
उठेचह्वार। प्रतिनयेदायेक
दासेह्वार। प्ररुदिज्ञाप्रधनप
कुलकांसी। तातैजलादेशीये
नांसी। प्रभतातैप्रवईहानहार
हाये। तजायेवेगिजायेजोच
हाये। प्रतिपुनीतधेवप्रनासा
तहावेगचालिकालेवान्। प्र
येकवारदज्ञाप्रपहाइया
सुकेसुईरोसल्लुचये। जनुना
विनासा। प्रवईहानहार

३३३। तातै न प जै ये बृहमंडा।
जलप्राधारतिरै ज्यो जंडाः॥
धाव राज ल बिबिधि प्रकारा
तातै होये बितारा जातै म स
ये सबके करता। - प्रसाव ज प
तिपालन रता तुम प्राधा
रसकलके खो नीः। मफल
दाता अतर जातो। ३४ जो क
धु होये संकल ज माही तुम
करता हुआ कोनाही। परिकर
तिपति हो नही देवा। कोइल
पिनसके तु व नेवा। ३५ सोलै
सहस ये व दे। ३६ ठा। जिनके
हिरदै प्रेमप्रतिकार। सावना
वसुं प्रीति बहावै। म नधानव

रत्नहरनकलेसः अत्रकुलकोसहार
हिकरिहोः अत्रवतुममर्त्यलोकपरह
होः अत्रविप्रप्रापमेतनसंघरथाः अ
मेटोसोकौनः अत्रः अत्रैजीवनचर
तुमारः जैसेमीनकेदिकः अत्रः अत्र
प्राणनाथः अत्रः अत्रैसीकीजैसंगः अत्र
नैमोकौलजैः अत्रः अत्रैसबः अत्रः अत्र
अत्रैनोंपाः अत्रः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
पाः अत्रः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
चुवनकेसुखः अत्रः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
नगवनः अत्रः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
रुसोवतद्विधिनालाः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
तरकौमेंदासाः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
पासाः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
नविनः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
वसनमालाः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र
कौमेंधरनाः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्रैनोंः अत्र

तनहरनकलसःअनुकुलकासहार
हेकरिहोःप्रवतुममत्यलोकपरहृदि
होःईशविप्रप्रापमेहनसंमरथाःनही
मेतोसोकौनःप्रथाःमेरेजीवनचरन
तुमाराःजैसेमीनकटिकःप्राधाराई
प्राणनाथःप्रबन्धैसीकीजै।संगप्राप
नैमोकौलीजै।तुम्हरेसबप्राचरन
अनोंपा॥सबकौअंतिकल्यानसरू
पाईशु।जिनकौपायेःप्रोरसदत्यागेंत्रि
भुवनकेसुखसबहुषसेलागों।प्रास
नगवनःअसनःअसनाना।जागतःअ
रुसोवतविधिनाना।ईश।सदानिरं
तरकौमैंदासा।क्योंपलतजोंतुम्हारे
पासा।येहमायाजयेतेनहिकहों।तु
मबिनःअरधनिमबिनरहों।ईश।मांध
वसनमालाःअनरना।तुवकैतीरत
कौमैंधरना।महाप्रसादनिरंतरीषो

तिनकूकालकरै नसाघंड ति
० तातैकूपानां थप्रबकाजे
साधुसंग नको प्रबदाजे
जीनमैकथानदाहमपावै
जातैतुवैच ननचितलावै
श्रीसुकुडवाचै ॥ योलेसिबस
कादिकसंगाः प्रस्तुतिकराब
रुतपसंगाः बरुस्यौबिधिये
कवचनसुनायेः जाकेकाजि
सकलमितिप्रायेः ॥ ४२ ॥ ब्रह्मज
वाचै ॥ हे प्रचूरुमतबबीनती
कांही ॥ ४३ ॥ फरनी नार नरीतब
चीनी ॥ तातैतुमलीनहौं प्रबता
राः सकलनुतास्यौ नूको ना
राः ॥ ४४ ॥ नेटिप्रथरमधरस
बिसतास्यौः सबसंतनिकोका

नगोपाल तत्र विकरनां नवक
रिक्ता ॥ बोले बचन रिहालः
७२ ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥ इती श्री
गवते महापुराणे ॥ एकदस स्कं
दे ॥ श्रीगवतर्जु धो समादेश ॥ प्र
मोऽप्र ध्याये ॥ ६ ॥ श्री जगवानो वा
चै ॥ चौ प्र ई ॥ ॥ महाभागर्जु ह

॥ ज्योते क्लीबात

॥ सिव विरं चि संकादि

॥ वं धौ न न वै कुंठ प्रवे स

॥ नूने नार बटौ जब नारी ॥

सिपुकारी ॥ ६

ना दि क न बी न ली करी ॥ ता तें म
नू जं दे रु मै धरी ॥ २ ॥ प्र व नू को स
व नार नु ता स्त्रो ॥ स क ल स र न क
कार न सा स्त्रो ॥ प्र रु का नो
को विस तारा ॥

नांकीबांनी तबहुसिबेलेसा
रंगपानों ॥ ४ ॥ श्री-मंगवानु
बाजे ॥ ८ ॥ मैं सब सुनी तुम्हारी
बांनी ॥ तुम्हारे कारज नयोपरु
जांनी ॥ प्रयदूकुलयोहाप्रहरो
तेनांससकल नकेमैंकरु
४ ॥ येसबपादव ॥ बहुमदम
ता ॥ नयेरहैसोमेरीसता ॥ मो
हितजेसबपुलपढाने ॥ ज्योसा
पर ॥ सरडादा नाने ॥ पतते
नासहेतनुपजायो ॥ आपसब
नबिप्रनतेपायो ॥ जबईनस
बईनकौबिनसांनु ॥ पाधैतुव
न लोकमैज्रांनु ॥ पायेसेसुनैरु
रिजाकेबैना ॥ हिरदैबदोस
बहानकेबैना ॥ करैप्रनिपाति

नां॥ जिनके नेद नयो है नां नां
तानेदहि नमकरि नहा जां नै
बिधि नषेद ताहा तै ठां नै॥ १८॥
बिधि नषेद जो चाषे बेदा॥ से
ताको जाके है नेदा॥ नेद मिटे
बिन करे न त्यागा॥ तातै ये द्वे
ये बिचागा॥ १९॥ ज्यो ज्यो तजे सु
षा तै होई॥ तातै बेद ब ता वैदे
शी प्रागे जाये खुडा वैसारे॥ जे प्रा
पहा हतै बिसतारे॥ २०॥ तातै ये
ह सब ये ह मिथा जां नै॥ उचन
चद गुन दोष न मानै॥ ईंद्रिय प्र
रुमन निरुचल करे॥ प्रहका
रममता परे हरे॥ २१॥ सुधिम धू
लसकल बिसतारा॥ ये कही
शतमके प्राधारा॥ सो प्राधा

प्रमस्यघपायो ॥ ५ ॥ तातैः प्र
 तासचलीजे ॥ जहाजाये प्रसना
 तकराजे ॥ तिरपतिदेवधितरन
 कौकी ये ॥ विपुत्रेजंबहूविधि
 बिसतराये ॥ ५७ ॥ तिनकौदानव
 होतविधिदाजे ॥ सरथासहति
 प्रनामहाकाजे ॥ तिनप्रसाद
 प्रपहाराये ॥ ज्यौनावनसौसाये
 रतिराये ॥ ५८ ॥ प्रैसासुनिरि
 जीकाबोनी ॥ सबजादवतली
 करिमाणी ॥ तबचलिबेकौसक
 लविचारे ॥ अयनेअपनेरणसवा
 रे ॥ ५९ ॥ तबऊहवहरिको निजदास
 देवि सकलविधिजयोऊदासाच
 लिरकंतहरिजीये ॥ आयौ ॥ चरननि
 परिकेवचसुनायो ॥ ६० ॥ ऊहव
 च ॥ देवदेव प्रवर जोगेसप्रवनकी

सचकौदेवो। इजो कबलू नूल्य
नलेषो। १६ प्ररु जिन पायोत्
नगायां नो। जिनकै बिधि न
वेदनानां नो। परितिनकै नि
तिहा बिधि होई कदे निषेहन
परसैकोई। १७ वै सुष दुष गुन हे
घन जां नो। बलकल जि प्राच
ननठानो। परि बिधि सारा सेव
करै। प्ररु नषे घ्राय हा प्ररु
१८ सब प्रसूद सदा प्रतिसांति
ग्यां न बिग्यां न सति निंदो
ते। सब जग ब्रह्म जां निधि रहो
ई। बहो स्यौ जन मन पावै सोई
१९ प्रै से स निहरि जा कैं बै नो।
प्रति दु। रक प्ररु प्ररु तिसुष
तत्व सुनन का बाढा प्या।

श्री सकज चात्र

पप्रमसुधपा ॥ ५॥ तातैऽप्र
 नासचलीजे ॥ जहाजाये प्रसना
 नकरीजे ॥ तिरपतिदेवधितरन
 कौकरी ये ॥ १७५ ॥ भूप्रभाज ॥ रुविधि
 बिसतराये ॥ ५७ ॥ तिनकौदानब
 होतबिधिदाजे ॥ सरथासहति
 एता ॥ काजे ॥ १ ॥ तस्य ॥ ५७
 प्रपहरीये ॥ ज्यौनावनसौसा
 रतिराये ॥ ५८ ॥ जैसासुनिसरि
 जीकाबोनी ॥ स ॥ हा ॥ ५७ ॥ ली ॥
 करिमान्नी ॥ तबचलिबेकौसक
 लबिचारे ॥ अयनेअपनेरथनसवा
 रें ॥ ५९ ॥ तबऊँदवहरिकोनिजदास
 देबिसकलबिधिज्योऊँदासा ॥ च
 लिरकंतहरिजीपेआयो ॥ चरननि
 परिकेबचसुनायो ॥ ६० ॥ ऊँदव
 च ॥ देवदेवदृष्टरजोगेसप्रवनकी

सकेकरिताकोमनुमहातेजुपडो
पेजावा। जैसेसंगनिहतेबोहो
दीयवा। इइसदरसेतुकरदेप्रा
प्यारा। निहतिबुधियोपेसिरज
नहारा। जैसेसुखकोसेवेनाही
तावतैप्रमदुखकोसाही। यजव
केदुषकहेनजाही। यस्कोनिरंत
रमेंतिनमाही। प्रलभोकोपर
नागतिजांनो। देकरिषांनसक
लभेजांनो। इपहारेतनसनधन
तुवचरनां। मनबचाकरसंप्रा
योमेंसरनां। जैसेसुनिर्कुधो
केबेनां। रुसिकरिबोलेपुंबुज
नेना। ईद्वी। नगवानुवाचै॥
ऊचवकेकरुहेजुग्यांनो। सतिव
सतहोनां। प्रांनो। प्राजुगसाध
चयोहेनेने। प्रापहीप्रापजसे

ध्यो॥ दसपसंबहु विधिसंतोष्यो॥ ईदंश्रे
सोमैनिजदासतुमारो॥ मायाकरिहेक
हादमारो॥ मायाचयश्रुतुमरेहेताहो
हिदिगंबरकरधरेता॥ ६७॥ ईद्रीयदेहप्र
नमनसाधे॥ सावधानतुमकोशाराधे॥
ब्रह्मविचारसदा मनलावे॥ तेनिजरु
पतुमारोपावे॥ ६८॥ हमकलुकर्मश्रुक
मनजाते॥ ऊदेग्यानवेरागनश्राने॥ तु
मरेनगतनकेमिलिसंगा॥ नवतरिहे
सुनितुवप्रसंगा॥ ६९॥ तुमरेकर्मवच
नपरिहासा॥ श्रासनगवनरूपप्रका
सा॥ कहतसुनतसुमिरतसुषमाही॥
नवसागरहमरहिहेनाही॥ ७०॥ ताते
मायाचयतहीश्राने॥ श्रापुहिसदापु
क्किरिमाने॥ परितुमविनाश्रानत
जिजाही॥ तातेमोहिछांडियेनाही॥ ७१
॥ ७२॥ रोऊवनिजभक्तके॥ सुनेवच

सुनक्रमवचनहोहुनिहसंगा॥५३५॥
तेपरैआपुकौजानैसोआधारखिलके
मानै॥५३॥लहांतहांदेसोऊपदेसा॥यावि
धिकरौब्रह्मपरवसा॥सैसैनहोतहांलेज
नाबहुतकचयेब्रह्मप्रदाना॥५४॥तिज
मैकहुमेककीवाता॥जोइतेहांसकथा
बिष्पाता॥दतदिगंबररुक्मुहुनूपाति
नकोहैसंबादरुनूपा॥५५॥दोहा॥सु
निऊवइतहासंभवा॥नाथोप्रमन्न
पावकतादतानियजहा॥नुरुद्धमक
यहुनूपा॥१॥चोपई॥एकसंभेयनूपा
तियहुनामा॥यासेसिकारहोदुलिजुधा
मा॥तेवतानगरनिकदिहेसुता॥देयो
कप्रमन्नवधुता॥५६॥निरजेतिहचल
छाचारी॥तेजनिधानतरुनसनक्षरी
रिपरानामबहुतपरकारा॥जहुनूपाति
जबवचनऊचारा॥५७॥जदरुचा
हेप्रपरमप्र२गा॥॥रुजोत्रगा

वृषारः ३५ इकल आषलीयो
 दुजियासाः प्रापप्रापमै के
 है नासाः प्राजि ते संपतमै
 दिनमांही सिंधुद्वारकाराधै
 नांही ५ जबहानै तजिहोयले
 काः तबप्रावैगोदुषनयेसो
 काः कलजुगप्राणिप्रधिष्
 तहोई जातैप्र धकरे २५ ब्रै
 ई ५ तातैसुनिउध्ववडभा
 गाः प्रबतुमकरिसब तको
 त्यागाः कोमैसदाचितधिस्क
 रोः समदिष्टाहोयेनू बिचरो
 जोकधैकसन ननमैप्रा
 वैः ३५ स्वमन धिंजावै सोय
 हसबमनको तजांनाः धि
 ननगुरमायाकरिमानैः ७
 जिनयेसकलदीयेतेकरेजा

तलै

कौसेवे ॥ १७ ॥ प्रांनवाये ज्योले ये प्र
हार ॥ स्वादकु स्वादनको ईप्यारा ॥
यो हरिजन प्रहारहा ल्ये वै ॥ स्वाद
कु स्वादनहा चितदेवे ॥ १ ॥ पबिन
प्रहार विचारन प्रारि ॥ स्वादकु
स्वाद नमन ठहरावो ॥ तले ये तो
ले ये प्रहार ॥ जेता होवे प्रांन प्र
प्यारा ॥ १८ ॥ प्ररुद्रो पवनपिने
जुगमाही ॥ सुध प्रसूध लिपे
कहनाही ॥ नाना नेदन से सं
चरे ॥ प्राये प्र प्राये गुन दे धन
अरे ॥ रायो विधि न गेले सु
गी ॥ मन कर सब चन न सोवे
नोगी ॥ नेद प्रनेक न नै प्रान
सरे ॥ प्रक धूने दी हर देन ही ध
रे ॥ २० ॥ प्ररुद्रो पवन गंध सं
जोगा ॥ लिपत न यो जा न सब

रवृत्तके ज्ञानों जैसी बिधि न
वकेन ये जानों १२ सा बिधि
बेदप्रथमों जानों बहुरिहि
दैन सच करि ज्ञानों दोनु लो
कका प्रासाध जो या बिधि प्र
तराय सब षडौ १३ जितनी
याके प्रासाहोई तितनी बि
घ्न करे सब कोई ज्यों ज्यों त
जते जावे प्रासाध त्यों त्यों नि
टै बिघ्नके प्रासाध १४ जब ये
होय प्रासाध जो जब क
नही प्रासाको ध्यासो तब बि
घ्ननके करता देवा ते हानु
लटिकरै तासेवा ताते बिघ्न
नघेय सब नाथों प्रासाधो दि
हिरदै हरि शोधो ये कब हन करि

मनसा मरना ॥ रक्षो प्रमात्स
श्रातमयेका ॥ कदेन देषे नू लि
प्रनेका ॥ ज्यो जोगग निष्टन
होई बाहरि नातरि जहातरत
इ ॥ ज्यो रलिषति जने सबको
कसिबेको है नातरयेका ॥ ये
तमरुषे लबेवेका ॥ ज्यो बर
मेस पवनदा मनी ॥ बरये
सरजामनी ॥ रचि ननि
तिकदेन साहोई ॥ ज्यो रलिषत
जानै सबको ॥ त्यों प्रालनके
रुप्रनता ॥ धर्कपडे ॥
वैप्रता ॥ रक्ष परिप्रालन
तिकहनाही साधु
मनमाही ॥ ये प्र
नायो ॥ प्रबनार
पाये ॥ ३ ॥ निति

गुरुदुष्टसीलके महां सब
गाथन समके गुहा के
चेतन मरिजाई तिनसेव
फलन सो ॥ २५ ॥ एक गुरु
रघुनि होई तिनके सि
मके कोई केई प्रसथ
रुगुररुपा सिधन
वकं पा ॥ ३० ॥ केई प्रव
नूत्र पूरन केई धरम मान बि
पेके २ रन केई गुरु प्रथ केई गु
रकांनो केई गुरु लोचन मोहन रु
नो ॥ ३१ ॥ प्रमग्यान प्रसम ॥ सो
विषै बंध संभार संभा ॥ तुमरो
आदिन प्रंतन पार ॥ ग्यान रूप
सब हीन तै न्यारा ॥ ३२ ॥ सो हीति
रैग होकर जा ॥ माया कधून

सयेका॥ बहुविधि दीसैंकाष्ट श्रुनेका॥ स्पे
आकारोक सबमाही॥ नैददेह कृतसाचेन
॥ ३७ ॥ दीवामसालप्रगत ज्यो होई॥ ज्वाला
जातलवेसबकोई॥ परितेदीसैं॥ त्योंकेत्यों
प्रतिदिनरें॥ देहजातहैयोही॥ बुधीभुहोजे
ससिकेबाढैकला॥ त्योंत्योंदिनदिन
सैनलफूपूरनखैकरिदिनदिन
सैं॥ सकलमिटेंनहाप्रकासे॥ ३८ ॥
त्योंबालादिप्रवस्थाप्रावै॥ सोका
तरुनक्रमहाकरमजावै॥ तब
तमादेषीयेनांही॥ परिहैसदा
लतिहमाही॥ ३९ ॥ ज्योरबिकार
निनसोजललेवै॥ समयेपायव
रुस्योसबदेवै॥ परिकबहुंश्री
ननप्रानै॥ लायादीपोप्रापहीजा
नै॥ ४० ॥ योंमनीकहैसुनैप्ररुदेधै
सकलप्रस्थईदीयैरुलेधै॥ लि

तैव ह्युंठा ॥ यह द्रष्टा ज्ञानाहो मैष
 वी ॥ जो ईत ह्क देह कौ लहे ॥ ईडीये
 नके सब अरथ निगहे ॥ ४७ ॥ ईडीबु
 ध्यादिक शुरुवा नी ॥ जा कौ को ईस
 के न जानी ॥ सो मै तित्पतिरंतर येका ॥
 ऊप जै विन से देह अने का ॥ ४८ ॥ ना
 ई सो मै क बल कहते आये ॥ कि न तन
 दी नो कि न ऊप जाये ॥ अब तो मै दे दे
 ह अक्षमा ॥ पल कौर दिन सकै निरधा
 रा ॥ ४९ ॥ ये दो ऊत जि का मेर ह्क ॥ सो हे
 सत्य ताहि दिह गहो ॥ असे बडु विधि
 करै विचारा ॥ त्यागे देहादिक परिवा
 रा ॥ ५० ॥ सो जहां तहां ते लै वै ज्ञानां ॥ क
 बडु कछु न जानै आनां ॥ या विधि आ
 पु आ पु कौ तारे ॥ लहे ब्रह्म तव दुषनिवा
 रो ॥ येह विचार मानव तन हो ई ॥ ह जा चूलि
 न पावै को ई ॥ ताते त जो सकल को संग ॥

ताते हानवतन पायो कछु येक को तोहि लयायो

तें

८

तनमनसः
छै सोलज वै
सीबिदि
जप्रतडपै
धैनकाज
योनिरं
हि प्रा
जंडनी
नोंभिल
सिसुनि
मतेनये
तिनकौपो
सदिनसं
सनेंसु
वैप्रसै ५०
नूलाये
बंध्याये

अजगरसिंधुपतंगदुच्छंगा
कुंजरसंधुसरतासुदुच्छंगा
मानपिंगलाकुरसुबाला
न्यासरकरताग्रसुबाला
मकराचिंगीयेचौबीसा
तेसाष्योसुनिरुनरेसा
प्रथमः धरनीनेगुनदेव्ये
सोमैप्रभतत्वय रिलेष्यो
बैरहैधरनीप्राधारा
मडकरं प्रपका १५५ ठोरठोर
अतिर्जतमग्रंगा तिनकौक
रैबहोतबिधिजंगा ताकेप्र
वतबृषिअनंताः प्रकीपका
रसबैवतंता १६ परप्रपराध
कधूनसाजानैः उलटिप्राप
उपकारसाठानैः असासाषध
नीकालेवै

षट् बर्हो मोहि दोनें। ज्ञाकी ये प
ति बरता नारी। पूजनं सुरलोक
सिधारी। पद्मो सिधो डि सुने
वरमांसी। सब निति प्राप ईद पु
रजां ई। नामै सुध नो गे ये लालो
का। न सी सा धन पायो प्रलेका।
५७। धरम प्ररु प्ररथ का न सब ज
मै क धू वै न ही र ह्यो गुरुता मै।
प्रब प्रा न न रा धे क धू नां ही। धर
वरी मै दुष प्रथि का ई। चया बि
धि न यो ब ह त बे हाला। ब धे दे
धि ब नित प्ररु बाला। व्या कुल
बुधि बिचार न क र्थो। प्राप ही
आपे जाल मै प र्थो। ५८। सहित
कुटं न क पोत हा पायो। त ब ही न
यो ब धि क स न ना यो। जै सी मै क
पोत का देयी। त ब प्र प नो हि दे य

लोगान्परिसोपबनसदायकुरु
प्राः लिपेनकबहुश्रेयोऽप्रनूपा
२२ पंचतूतनिर्मतत्पौदेहाः
सकलबिभारनसाको गुरु ता
मैजोगीलिनतिनहोई औरलि
पतिजानैसबकोई २३ ज्योस
बहानमैयेकप्रकासाः प्ररुस
बहीनकोतानैबासाः सबर्क
प्रजैबिनसैबरताई गगनिन
१५ देवताइ तिहुमांसीः २४ त्पौ
बहोबिदिः १५ ७ तपसाया
मुनिदः १५ ७ प्राधाराः जो
कषुदासैजहसैसोहा जाकेसं
गतेचैतनहोई २५ ज्योऽप्रातम
देहनमैदेषैः त्पौ प्रमातमज
सां तसांलेषैः येकप्रनंतकहं
प्राबरनां लिपेनधिः ७ पैजन

मोक्षध्याय ॥ ७॥७॥१२॥ प्रबद्ध
तनुवाचै ॥ चौपदीनेइंद्रियसुख
कथं कलवैः तिलोत्पदगहनरव
हृत्प्रवैः ज्योत्स्नकरवृक्षरसुख
मांसं ॥ त्रयोत्सोदेवप्रौरवकथं नोत्स
प्रसृजं सुषमापुसितैः प्रवैः ॥ क
रननिष्प्राप्तोकोईनदिरावैः ॥ ज्यो
कोई दुषकोनलाच्य है ॥ परिदुष
प्रायेप्रायहीरहै ॥ त्रयोत्सोदेवप्रौरव
पसतैः प्रवैः ॥ त्रिनजं ननरव
हृदुषपवै ॥ ततैः बुद्धसुखन
ननलेवै ॥ त्रयोत्सोदेवप्रौरव
सैवैः ॥ शब्दादकुत्सादह्यं सौतक
थोरा ॥ जोरुनिजापठवै तिसवो
रा ॥ ताको नचिरहै उदासा ॥ प्र
प्रवृत्तिगहै रंदासा ॥ नजोक्

म लहरै ॥ तापमे टिसी तलता करै ॥ सब
बुद्धायक सीतल रसवंत ॥ ऐ गुन जलके से
वै संत ॥ ३१ ॥ उरुते जवंत अति दीपति जु
का ॥ द्यौ नरहित जहै तहं निरमुक्ता ॥
स्वा डरहित सब ज्ञान करै ॥ अग्नि नित
लिपे संचयन हि धरे ॥ ३२ ॥ त्यों ही ज्ञान ते ज
मय होई ॥ ई दीया दिक् सदीपति सोई ज
दिय बकु विधि नो जन करै ॥ स्वा डरहित
गुन दोष त धरे ॥ ३३ ॥ कां कुतै द्यौ नदी
होई ॥ कां के गुन मिलै न सोई ॥ ऊं दे परमा
न लेइ अहारा ॥ कबु मन जानै संचय सा
रा ॥ ३४ ॥ गु सरहे नहि नुति जनावै ॥ की न्है
प्रगट प्रगट कै आवै ॥ परइ छुग आ कु
तिकौ लेई ॥ तिनके पारहन नहि देई ॥ ३५ ॥
पे मुनि गुप्त आ पुतै रहे ॥ योजिलेइ ताको
अमद है ॥ ऊं तम नो जनादि ऊं होई ॥ पर
इ छुग तै लेवै सोई ॥ बकु स्यौ अगति येक

तैलिलिसेवै ॥ प्रसूयेकैलेजा
हिउतारी ॥ निदादिक्कठानैयेक
नारी ॥ परिनायायएकयेमुनि
मांही ॥ रागदोषकधुनुपजेन
ही ॥ १० ॥ बनिताबलकनकेप्रा
रना ॥ बसैबिधिमायाकेप्रा
रना ॥ यनमेप्रायपरैजेकोई
गनिपतंगसमानिलेसोई ॥ ११ ॥
जौलमिमुनीसमजेनिजदेसा
जाचिप्रहारलेयबसैगेसा ॥ जा
तेकदूप्रनूरानबडोयससि
प्रा नधुकरतैपडे ॥ १२ ॥ छोटेव
डेवसतबिधिगुया ॥ तिनलेसा
रगहैसरिपंथा ॥ ज्योमधुकरब
लफूलनिमांही ॥ बासगहैफूल
निकोनाही ॥ १३ ॥ सोनधुकरहै
बिधिकेकहोये ॥ दुसपासितै
सिधालसाये ॥ बसतगंनलेवत

प्रातःप्रकृतौ नैःसर्वतन्निव
 ल्बिचारहीमानैः ४२ ज्यौषट्ज
 लप्रतिबंधतः ४३ लिपतिदेवी
 येपरिहृदराः तौप्रातमादेत
 बंध्याः थलेद्रधिजानतहैप्रधा
 ४३ अरुप्रवकपोतकः ४४ प्रास
 नांकीते तनकाचरमसिटांजे
 येकैकपोतनीसंगाः बनमैकी
 नौगूहप्रसंगाः ४५ प्रा. ४६ ॥ ५५
 प्रातःगदह. ॥ प्राठपरमैपल
 नविरक्ताः मनसौमनप्रगतसो
 प्रंगाः नैननिनेनबडै ॥ ६ ॥ सौरेगा
 ४५ प्रावनगवनप्रसनप्रस्यो
 नां संनबैनसारीबिधिनांनो
 नित्येसक चकरमनकोकरैः नि
 रनैरैहैनकबहइरैः ४६ लो कपो
 तवनिताबिसकायोः सावचाव

गयोचसैजोसुरिकोठेनप्रप्योर
सुनतसोवेगतिप्रेसीःव्याधिग
तहाणाकाजेसीः।।स्थासुनोहनेग
तिसुनिबहुरंगारः।।श्रंगारिपुन्ये
गनिकासंगाः।।पुबलाचनिबु
तिहोईः।।तिनकेसंबदसुनोह
कोईः।।२०।।मुनीजिह्वाशासिह्वा
करे।।स्वादकुस्वादसकलप्रकरे
जिह्वासतेसोवेकालाः।।सैसी
ननैरततकालाः।।राजेमुनिस
वप्रथमपरिहरेः।।जायेहकंत
वासककरे।।सलसुजेसोयईडी

गे॥ सिरपरिकालनलिधैप्रजागे
 येकवारबालनिकेकारनचा
 रोलेनगयेथेअरनतासिस
 मेंबाधियेकग्रायो॥ बालकदे
 विजालनिग्रायो॥ परदेशो
 किननसिदेशो॥ तालाबंधेअं
 निसकलपगालातबदेउ
 चारोलेग्राये॥ तिनग्रजासि
 नबालकपापे॥ पउतबदेवेसां
 तातेबाला॥ बंधे॥ तालातबदे
 ला॥ तबसांतसांपुकार॥ ध्याई
 सिस्तुतसेतबध्याई॥ प
 बंधे॥ रु
 तिलायावनीनेअंधे॥ तबसांब
 विधिकरेबिवापा॥ तिलेये
 ॥ ५५ ॥ हासा
 नौं॥ प्रसे॥ ६

गासोई ॥ २५ ॥ बहोरि ये कंगनिका
पींगला तातें मंजुन सीषो न
ला ॥ सो तुमसों नाप्रत हों राजार
जातें सरे लरे तुमारे काजा ॥ २६ ॥
जनक बदे पुरा छै बासा नाम
पिंगलारूप निवासा ॥ एक बा
र अंगार बनायो ॥ धनी पुरस
मन कै ठहरायो ॥ २७ ॥ छै ही नि
कस्थित बत कै द्वारा ॥ आगे चलै
लोक बाजारा ॥ कोई न लो आ
वतो देख्यो ॥ थो लु प्रविगे यो क
रिले प्रो ॥ २८ ॥ जब वें आगे वें
चलि जावें लब पिंगला प्रो ॥
को ध्यावें ॥ प्रो ॥ प्रो ॥ प्रो ॥ प्रो ॥
जाई त्यों त्यों बह दुष पावें जीव
माही ॥ २९ ॥ कब ह टि नं ता त रिकों
जावें कब ह ब्याकुल बाह रि प्रो ॥

हलेषा ॥ ६० ॥ यांकुं टमहो वै ॥ ३ ॥ ॥
कै त्रिमां रागबहै ताहकै जीव
तप्रतिप्रारं नन ॥ ६० ॥ ससितकु
टमकालबसिपरै ॥ ६१ ॥ याबिधि
जोमांनवैतनपां ॥ सोतोइ
रबृसकैप्रवै ॥ ताहपरितोग्र
हसितकरै ॥ सोनरबृसद्वारच
डिपरै ॥ ६२ ॥ ततै नो गोकुटमप्रर
गोसा ॥ तिनतै जीविलहै प्रतिदे
हा ॥ ६३ ॥ सोमांनवैतनुवै ॥ जाक
रिदेव निरंजनपावै ॥ दोसा ॥
येनाचा ॥ ६४ ॥ की ॥ सिष्यामै
तुवदास ॥ प्रबप्रवरनकाकहत
हं ॥ ६५ ॥ धूटेन ॥ पास ॥ ६५ ॥ येती ॥
श्रीजागवतज्हापुराणे प्रकाइस
स्कंदे नगवतनुध्यां संवादे ॥ ३१
वाधृतोतिहासो ॥ पाखाने सप्त

॥ जाके नासकै हूँ
सो लोरिको दीयो सु

हागा ॥ ३४ ॥ जाहि देह सो ही पै पा
वै ॥ नवनये छोडि हूँ सो जा
वै ॥ तातै मां नव सब छिपेटक
वै ॥ ज्यो त्यों करिबै राग दुपावै
३५ ॥ तब पिंगला ब चनर्क चौर
बहुत ना तिजा पुरुधि करै
गये दिन न लौं प्रति पिपुता
वै ॥ सबतै दिहवै राग बंधावै
३६ ॥ पिंगला च बांधे ॥ ग्रह
येक नैरो प्रगपांता ॥ जाके हिंद
बहो ॥ नर सबाना ॥ जल बुद्ध
दास मिजो न र देहा ॥ तासो सु
षाहित कायो सनेहा ॥ ३७ ॥ सरव
रजल पूरुता जिपासा ॥ मगज
लभ्यावै करि जलासा

कहमनलयावै। करमअधीन
 देहकौजावै। मनकरमबचनन
 नै। भवने। पाअ। संमथई
 शरणातल। प्रकधूकदम
 करेनयेहा। नैचलबृस्तनिरं
 तरसेवै। जैयहसिच्याअजग
 रसौलेवै। ई। सनप्रसनप्रम
 गंनार। अथिकअगाधग्यां
 नसनोर। वारपारकोईथाह
 नलहै। येगुनजुनीसागरके
 गहै। जौबृषाबहनीरप्रबेसा।

ग्रीष

सदास

तौकोई

बधिप्ररचावै। नैजनव

पररावै। प्रस्तुतिमं

बसौतनातिबहै

रसुरेसुरजैसो ताहूपरपरबस
पकौतजै ॥ कैवदेसुरिचरन
ननजै ॥ ३ ॥ प्ररुसुखप्रजाजजै
सुरिचरना ॥ जातैसीदेजनमप्र
रमरना ॥ जाकौनजै ॥ ब्रह्मसिख
सेया ॥ परिसोतिनाहकदेनदेया
४ ॥ प्रैसेप्रनूकौजैन ॥ रसेवै
तिनहुरी ॥ प्रपकौदेवै ॥ प्रैयो
प्रनूकौनसहायाथ्यो ॥ काथ्योप्र
नरधप्ररथनहासाथ्यो ॥ ५ ॥
प्रबनैंप्रापनिबेदनिकरौ ॥
शौरसकलजयतैंप्रहुरौ ॥ प्रधने
तिहुरिजीकेसंगा ॥ सदाहुरौ
प्रौ ॥ प्ररधंग ॥ ६ ॥ कलाशौर
प्रनरपिदेकरिहै ॥ जेवापेसु
हाकरिहै ॥ प्ररुजैसुधकौ
सकेसुरिचरना ॥

की रूपायै साध्वरीः प्रह्लादः ३०
प्रसादसासीना नित्यदिन
न जौ चरणान्जगदीसा पर
जितने यादेहली निरखी लो
सो कीनसा प्रारंभ सबान्क
सहजिमासिजो हरिजात्या
वैतक रियादेहावरतावे
पश्यान्वक्कपपन्यो जिति
प्राणीः विषयश्च चरणं दिशि
धिप्राणीः नताप रिप्रजगदका
लग्नरास्योः द्यौं न रवितलका
सिसौयास्ये परताकोसि
बिनकोनधुटावेः प्रापूसांकी
नसाधुटनपाये प्ररुग्राधती
प्राधकौराधैः जबसबबसक
सरदेसौनाधैः ५५ जबसोत
रकीसरणीयाहा प्रारंभ

प्रसवधानोपरिरसनांनसोह
 येषुध्यानो॥२२॥रसनासबकौप
 रिजावावे॥तबहीरससजोगा
 पावे॥जोसबईद्रायजीतैकोई
 प्ररसनां॥रमैनसोसोई॥२३॥
 लगसकलवृथाकरिजाने
 रसनांजीतिजीतिकरिमाना
 तातेमडि॥रसनांइसिकरे॥२४॥
 रसकलसाधनपेसरे॥२५॥
 येनेयेकयेकबसिनये॥तेस
 इजामकनयेयाये॥परिजोयेव
 पंचबसिसोई॥ताकेदुषजाने

वैः प्रथमरातित्रैसीविधिच
यो॥ लो ग बं डार च ल ॥ कि
गयोः ३० तबवेनगनमनो
पनईः चितादुषप्रबल ॥ तु
नईः प्रपनौ त्रिसकार ॥ रि
मान्योः ३० सबतैहानप्रोप ॥
जान्योः ३१ तबताकोकोईबड
नागा ॥ जातैनुपज्योदिडबेरा
गा ॥ जोलगता ॥ नुप्रै निर
बेदाः ॥ लौलगनहानमिटेन
वषेदाः ३२ यामवसुषदुष
प्रनेकाः ॥ तामैयमरतन ॥ य
येकाः ॥ बंधनबंध्योडाताजी
वप्रपाराः ॥ बिषेबासनाज
गाबव ॥ ३३ तिनकोहरिजी
रच्योकुडारा ॥ ३३ ताकामह
भाकहान ॥ ३४ ॥ जोकेनाग ॥

नी है है लाघ
लगात लघ्या
लगे सब दसे
नयेक देव ला
रेह बलोरिन
रत है अछा
रैद मै धार
ढेव क वाहा
बादा लाले
सदा बिचा
प्रासा प्रा
दिह वैराग
चल सोय
पोक रभव
पर त्यौ लो
तज तेजा

प्रदारथदायकदेवाः सदानिक
कोलस्रौ ननेवा इचसतिस
सुषदायकस्वामीः सोषोडौ
निजपतिघननामी जुदोसदा
कालमूषमाही जातैदुषसो
कप्रधिक्काई ३५ ज्ञेसोपुरष
ताहिमेंनज्यो प्रापहादुषप्रा
पुहाकोसज्यो देहवेचिमेंदेह
हापोष्यो घाहा नातिमनही
संतोष्यो ४० प्रस्त्रालंपटत्रहमा
दह्यो दुषितनरसौमेंसुषच
ह्यो हाडमेदमं जाप्ररुचप्र
तमांसरुथारतुचारुमप्र
नंत ४१ विष्टामंतस्वेदक्रम
जहा ऊरेहारनवज्ञेसादेहा
तामैरंभतकोही मोसौमु
हप्रोरकोही ४२ घापुसमाहि
जनकनरपप्रसे सुषप्रधिक्का

निप्रसिद्धि द्युगलैः ॥ ३ ॥
निरेतुनदेव्या ॥ ४ ॥
लीनेव्या ॥ ५ ॥
रे ॥ सतरुजतव ॥ ६ ॥
१८ ब्रह्मरिज्जा ॥ ७ ॥
निज्ञानं ह्य ॥ ८ ॥
वमिथ्या ज ॥ ९ ॥
सतिमानो ॥ १० ॥
तैलेव ॥ सब ॥ ११ ॥
वै ॥ जसंतस ॥ १२ ॥
सबासुरिक ॥ १३ ॥
दोषनेव्यो ॥ १४ ॥
साकोसोही ॥ १५ ॥
नौ ॥ तैमन ॥ १६ ॥
नौ ॥ येचो ॥ १७ ॥
दया ॥ तौसो ॥ १८ ॥

आपसां आप शूड वि वै प्र न
निजानंदन एखे । कसक
त्रैकोतिनकासेवा ॥ ५ ॥ परि
सषडग ततानिष्टकावे
हरिकीसरणि आपसुषया
वै ताते प्रौरसकलकोत ॥
प्रेमनाव हरिचरणन ननौ
५७ या बिधि आपसा आप उ
ध्यास प्रबनं व न व सा ग्रमे
डारोः यौ पिंगला परमगति
पाईः दुहुलोकका आसमिता
ईः ५८ सीतल ॥ सध्यामैंग
ईः प्रमप्रनंदनी आपति नईः ॥
यस सिध्यामै तातैलीनी नली
जां निनुरप्रंतरकोनी ५९ जौ
लग आपसक नरकोई तौल
गसुषाक देनसा होई जबही

श्रवणो

द्रायच हैनारिकोरवनास्तु

ध्यात

ध्यात

२७ या बिधि सब बिधि मिलि

लूटे ताको ॥ बंध्यो देह सो देष

ताको ॥ तातैने देह के तजीये

निरंतको नजीयो ॥ चरु रि

बिसलारे मत बन

बिधि देह सवारे ॥ तिन तिन

नयो ॥ बसो रुक्

निरमयो ॥ रस ताको दे

धिबं सूप पायो ॥ तामे उपनो

म बनयो ॥

नी ॥ नो प्रगत है देह बंधनी ॥ ३०

सो हिल है सो या करि ल है या

करि सब नृप बंधन दे है

नरानुपजे कामो ॥ ४ ॥ या च व मे
 दोर्नको सुष है ॥ और सकल ॥
 वनको दुष है ॥ नदि मरु है त
 बालम तिसोना ॥ अरु जो गुना
 तीत पदलीना ॥ ५ ॥ ये कबि प्रकै
 हती कुमारी ॥ ता बिबासकी बि
 प्रबिचारी ॥ ताके मां पिताये
 कबारा ॥ और गं बक ह काम
 सिधारा ॥ हे समा चारये क
 बिप्रनिपाये ॥ व्यासका जइ जक
 ग्रहै प्राये ॥ कन्या बचन किसी
 सो नाषे ॥ तिनते दिज आइ क
 रिराये ॥ तब तनके नो ॥ न
 काचारी ॥ चां व र धा ॥ ६ ॥ ॥
 कुमारी ॥ ताका कें ॥ रदो ज्यो
 दोले ॥ तौसी ॥ काकरकनबो
 ले ॥ तिनल जित ॥ सकल गुता

गसकलकोकाडेरुहिकेचरन
कवलचितदजेभयाबिधितेन
तैसिद्यापाशेतबमैश्रौरसक
लघिटकाई॥३॥नमैबिचरोधै
नहैसंगाध्यातनरुंकोघोडोसं
गाधसदारुंरुहिकेचरननिवास
वरुबिधिदेधौसकलतमासा
३७वरुतपुस्वलेपूरनगपाना
जाहांतहालेवेसाधुसुजाना॥
धैउरुकादरुंरुनरुंरुहिर
देअनिबिवाजेसमत॥३॥
निरगुंनसरगुंनचेदपलेचानै
सारप्रसारप्रसधिरधिरजानै
जाहाताहालेलेदृष्टंताह्यस
एद्वैतमिटावेसंत॥३॥प्रियरुप
मारधगुरजासी॥येसबगुरहै

बज्रौपावक ईधनहान ॥ त्रौदो
वैनीजपदमैलीन ॥ १३ ॥ तबक
बहुकधैद्वेननप्रानै ॥ सिलस
मांनिदेरुगुनमानै ॥ ज्यौंग्रागे
साधनिरपतिगयो ॥ सेनास
बदबहुबिधिचयो ॥ १४ ॥ परि
सरकरन नहापायो ॥ याबि
धिसरमैचितलगायो ॥ ज्यैसीसी
धल प्रताते ॥ नसुचत ॥ इधिच
इममजाते ॥ १५ ॥ ज्यौलोगनितै
डरेचूवंगा ॥ बसेगुलामैर
ग्रसंगा ॥ साबध्यानप्रतिपारे
बोलै ॥ गत्यादिफग्रंत रन ॥ गो
ले ॥ १६ ॥ ग्रसुग्रारेनदुषकामूल
जेग्रारेमैलेनरचूला ॥ १७ ॥ प्रप
राधेग्रसमैर ॥ यासिबिधिमु

ॐ भूतातेन ध्वजश्रीरत्नकोशीगुस्त
प्रापनोपहासोश्रीप्रापहाबूडेप्रा
पहातिरे। प्रापहाजीवेप्रापहा
मरेः ॥ ५ ॥ होहा ॥ येनाप्यौ विग्यं
नमै सबप्रहेलनुपायाप्रबता
कोसाधनकहाबहूनातिसमु
जाये ३० ई। ३३ ॥ ५ ॥ येताश्री
नैगवतेमहापुराणै यकाद
कंदे ॥ श्रीगवितनुद्धसंबादे ॥
चतुर्विंशतिगुरुब्याख्यान
नामनौ जोगप्रथमाये ॥ २ ॥ प्रब
पूतेप्रतिहासपाठ्यानसंपु
रण ॥ श्रीनगवानर्नवाये ॥
चौपदी ॥ सुनिनुद्धप्रबसाध
नकहातेरे सबसंदेहाहाइह ॥
जातेनपडेहसुगाथाबाबूटे

ब्रह्मोपावक ईधनहान ॥ त्रौ
वैनीजपदमैलीन ॥ १३ ॥ तबक
बहुकधैदतनश्राने ॥ सिलस
मांनिदेरुगुननांनै ॥ ज्योग्रा
सोयनिरपतिगयो ॥ सेनास
बदबहुबिधिचयो ॥ १४ ॥ परि
सरकरनेदनहायायो ॥ यावि
धिसरमैचितर ॥ १५ ॥ प्रैसीस
षल ॥ १६ ॥ नरुचलबुधिच
इममजाते ॥ १७ ॥ ज्यौलोगनितै
डरेचू ॥ १८ ॥ बसेगुलामैर
असंगा ॥ साबध्यानप्रतिधारे
बोलै ॥ गत्यादिफअंतरन ॥ १९ ॥
ले ॥ २० ॥ ग्रहप्रारेनदुषकामूला
जेप्रारेमैलेनरचूला ॥ २१ ॥ पप
राधेग्रहमैर ॥ यासिबिधिमु

जै ते नुकछू सत्य नही जांनै। करै
तौ करै नहातौ जांनै। धी जगति न
सिद्धो प्रवृत्त परै। तातैं चहु दिन क
बहु करै। जो जासैं मे न प्रवृत्त जांनै
तो तासैं सहु जड़े ठांनै। अज क
नमां सिद्धै चल सित थरै। नि
यम नि कौं तावै तौं करै। धिं स्त
विग्य गुर सर नही जावै। जातैं न
दस कौ पावै। पज क मं श्रु नै म क
धन हासेवै। सल गुर कहे सीध
सो लेवै। मान दहुत क धर नही
जांनै। तन मन प्रर पि प्रीति कौ
ठांनै। श्रु जहाल सां धिं नै। प्ररुरै
साव धान प्राल स न ही। न जै श्रु
सुधा प्र धान हा धी ले। तन मन
नै चल क दे न डोले। श्रु स र ह
सहु नि पावै।

अबतनतैसी प्यो लोकसौ तेरो स
 बप्रग्यानही देह ॥ ररमेरा देह
 मोहिसममुद्रावे ॥ हिरदै ग्यांनवे
 रागउपावे ॥ ज्यो बालापनगयो
 बिलाई ॥ त्योही प्रबये जो बनजा
 ई ॥ ररप्रवे ॥ रासरतत ॥ प्रागे
 बह बिधि दुष ॥ सौ लागे ॥ स्वा
 नश्रंगालनको येन चि ॥ तासौ
 श्रीतिन जो रेदधि ॥ पुत्रकलित्र
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ कुलकटे सब
 हिसवक जल ॥ तिनसौं निति
 जादेहहासेवे ॥ सोहा प्रतमहादु
 षदेवे ॥ ररप्रागेको ॥ बहदरनद
 पावे ॥ प्रबजके ॥ र बारप्रठवे
 रसनिमतिषेचै ॥ नितिरसना
 प्राणसदाचा ॥ जलप्रसना ॥ रर

६५

१५ प्रसो ज्ञान लोकोत्तरेण रा
स्वयं प्रकाशप्रालम्बेण चरित
वस्तुत्वेन ह्यकाठनिसंज्ञायां
वेनुतपतिप्रिरुप्ररुत्तंजापीधि
तौ द्वैतनये मायाकायेनैत्राल
मां प्रापकरित्वा ग्राहिनसंज्ञा
जनममरणदुष्प्रपावेनैवैज
नंदजबसाक्षिरुत्कावेनाश्रयै
बौहोत्रिषिके विचारात्प्राल
मादुरा नैसर्वतैन्पारा नयेक
तमो अरुप्रबलांसीत्येतन
घनपुराणसुधारासीती चले
उपजे विनये वरलार्थि प्रक
सुदसुदगतीकां ईश्वरक
विकारनके संज्ञालात्प्रु
दासैः प्रावृत्तज्ञात्प्रालम्ब
विनाकारनैसर्वकतात्

मेरे हित के उपाय। तब मैं
कोकरु ससाया। इति तै प्रति
ये दूर लज देहा। श्री मगवानर च्यौ
ये गेहा। प्रति दुर लज के हंज
तन न पावे। जो पाये तो फिर न
रहावे। इति प्रति दिन मरतिनी
रंतर ग्रासे। एक दिना तन का
लबी नासे। जरारो ज न ये सोक
निधानो। जामै पलक सुधीन
सी प्राणा। इति तै ताहि पा गे
रिराजा। करि लीजी ये प्रापनौ
काजा। जातै ये रुघू टै सारा। जा
के दुष को वारन पारा। इति नि
सदिन ह्वानर जे न मजो। के
नै नीत विषे सब तजो। वि
प्रीया प्राण प्राण सुत हारा। ये स
ब्रह्म निबासु वारा। इति तै त्मा

॥ निस दिन स्वदीप
मये जगदीसै ज्यो को तपो
॥ रपा प्रौरै प्रेर सोये प्राकार
तिन संगति मन बरु प्रकार
नै प्रावो ज
मदि सुदि दुष पाव
सै कर मन सु जो कर मन निष्ठा
। सुष प्र सु सु जो सुष
नै गन करै तये च्या सु हा सै प्र
॥ ता तै सब ल जी थै यं न च
२७ जे पंड ति श्रुति सु चर वि ॥
॥ तत्व ल लं विन कर मन नि
॥ ते सु दि दुष दे सा प्र न मा
प्राप सा प्राप क सा वे ग्यां
॥ र प रु दि जन संग न क व
॥ त त्व न सु नै कर मन वि

जबग्यानहापावै तबसारीज
गग्यानसिधावै तततैसरेस
दाप्रनंदा ॥ हिरदैविराजै प्रमा
नंदा ॥ याबिधिजै हरिकौसेवै
जिनकौसरि निजरननदेवै ॥
४ ॥ जैसे ॥ कौबचनसुनाये
म नकेनरमसदेसमिटाये
राजा ॥ बिधिपूजाकीन्ती ॥
करिपरनप्रतिप्रदधुनादीनी ॥
४ ॥ तबराजाकौकारसन ॥ नो
दताचेमुनिकायोपीयांनो ॥
राजाबचनधारिनुरमांसी ॥
सबकोसंगतज्यौधिनमांसी ॥
४ ॥ तबसुदृष्टिसबसीमै प्रांनी ॥
जैसेनयो प्रमज्जैबिज्ञानी ॥
सोराजा जदूबडासमा ॥ जिन
प्रपनौ नवसंकटटास्ये ॥

इ
क

निस्सदिनसदास

येजगदीसैज्योकोते

रपञ्जोरैप्रोरहोयेप्रकार

तिनसंगतिमनब्रह्मप्रकारा

नैप्रबोज

मरिमरिदुषपाव

शेकरमरुजोकरमनिष्ठा

सुषप्ररुजोसुष

नेगनकरैयेच्यारुदासैप्र

तातेसबतजीयेयमंत्र

रुजेपंडतिश्रुतिसुक्तति॥

॥तत्वलहेबिनकरमनि

॥तेकरिषदेहाप्रजमा

॥पापहाप्रपकहावेग्यां

जगतनजेमारगनाथे तेसब
 हिरदैवै दिक्कै प्राथे तेकहाथे
 प्रातनके धरम ॥ औरसबै बं
 धनके करम ॥ २ ॥ तिनकौ साव
 ध्यानहायजांनै ॥ बरणां प्रम
 कुलनिध्यामांनै ॥ जेजे बहुरा
 रे ननकरै ॥ सुषचासै निसदि
 नदुषनरै ॥ ३ ॥ प्रागेकौ बंधन
 उपजावै ॥ जिनके संग जम ॥
 रेजावै ॥ यो बिचारि प्रारंजन
 तजे ॥ कौनसै काम चरन ॥ म
 नजे ॥ मजाहालगा ॥ नानाबु
 धी ॥ सोसबन धवजा निकुव
 धी ॥ द्वैतनाव सो नरम करि
 जांनै ॥ सुपन मनोरथ ससक
 ॥ ५ ॥ तातै करम औरस
 बतजौ ॥ नितिनेमकथु येकन

ज्योषितामै निघननेका
मोसुरगादिसुकेरियेका
धिरनांही। हे
सिद्धायेथलमाही।
बहुकेही। प्रसुजे
इगलबसोस
। एककेकरि
। प्रथनेपुनि
। तुलजायेविम
इपलरुगंदुबगान
बहुसुंदरानारिभनहरे।
प्रथामेथलरुचमिजावो। स
तिविमानविलंबनल्योवे। इ
नितिकरे। सब
रणदेरुबहुअरे। यो
तिमगनबहोतसु। वयावे

जनसंवेसिषसोतीद्वारासु
चित्तग्रेसकुरुदेवाः सकलचूत
आतमपितुग्रंवाः ॥१॥ तिनस
तीकोसमिकरिदेवैः ॥ मेमेरो
करिकदेनलेवैः ॥ रतेनुदासप्र
सप्रतरे ॥ निसदिनवृत्तमाहि
चित्तचरे ॥ १ ॥ सुधिमथुलदेह
देजले ॥ नरनरुपभापाकेते
ते ॥ धनहोनोते ॥ आतमदुकि
धयं प्रकासचेतनमरपुरे ॥
१॥ पूलसवारप्रगादजडयता
चेतनकरेतातिवेहता ॥ सोवो
सतनजडहतेग्रंगा ॥ चेतनसंय
आतमासंग ॥ १ ॥ सोप्रतमा
दुक्तैन्पारा ॥ होत प्रकासदुक्त
आधारा ॥ ज्योतिष्ककावग्रनल
परजरे ॥ सोहजे प्रकासतकरे ॥

श्री ध्यान प्रसन्न लंघट लोचनी
बहु जिवन काल स्यात्तैः प्रेत
तगणको प्रबुद्धैः प्रसेनायेक
बस्यै सब नांसीः तिनके डोलन
कमै जाई बरु विज्ञातु पावुरत
नलसै जनम जनम बरु संकर
दसै भइतौ विधि न भेद डेके
जे सब जन कसरत में परे कर
मकरै तिन तै तब चो न लभ्ये
परि बरु दुख सै मरै मरु ताते उ
वृति मै सुख जाही न चो वृत्त ले
क कि न जाई लोक प्राल सदा नो
क समेता न ये ले रै बरु लो नने लो
भयो बरु लो भूत न रै लो लो न
बाज काल लो गहो प्रग निद ह न
रे नै कांसी स्वपन वरु लो लो न
क व नांसी व ई सुर जि चंद ये कर

विधि सिरै होय धिरग्यांनो
निलै बृत्तनधुरे नूननानो
प्रथमप्ररीणप्रसधिरु रदे
वा दुजासिधके नित्यसेवा
रशुकेवचनश्रुतलगा
नाया विधिनु अजे यावदाप
ना न्येप जितनके गुनह
सै करम बीजेको ईनहारसै
रशतवज्योयाव तंतनुसमावे
ईधनविना एतकसविना
त्योंश्रातना बृत्तनमयसो ई
धनकरलननननकरिसोई
रशुप्रजुजेनुदनयसु विधिजा
नै तेबसो विधि करमननको
ठानै तेकरमननके फलने
गावे जनननननको अंत
नपावे रशुजसोजसोजायतेही

प्राथमिकतबलगायेरसोमोलग
 कालनिरंतरगहै ॥ तौतैजैप
 बुतिरतहोवै ॥ जुगजुगजनम
 जनमतेरोवै ॥ परप्रथमहूतौ
 मेंयेकनिरंजनमलाहैतैनुप्र
 ज्योयेप्रजन ॥ कालप्रतसोले
 करुबेदा ॥ अरुसुंजावहै
 तबिधिनेदा ॥ परप्रैसबनाथ
 सतिनकेईहैतैबुधिप्रनर
 किनहोई ॥ येकनिरंजनप्रान
 मजांनै ॥ तबसबसंकटनयेके
 नानै ॥ परलोकरुबेदबासना
 तजौ ॥ ईद्रायेदेहबिधेनहीमडे
 मनपौहै ॥ चैलोमिथ्यालेसै ॥
 मनप्रतीतसोइहांतहादेवै ॥

विधि सिर है सोय चिर ग्यांनो
मिले ब्रह्मचुरे नमनांनो
प्रथम प्ररीण प्रस चिर गुर दे
वा दुजा सिधक नित्य सेवा
र गुर के वचन प्रव रतं य
ना या विधि नु गइ या व कथ
ना न्य जितन के गुन ह
सै करम बीज को इन सार है
र त ब्रज्यो या व कते जस मा व
इ धन विन । पद व सौ वै ॥
तौ प्रात ना व लक्ष्म्य लई ई
व ज कर लक्ष्म्य लक्ष्म्य रि सो ई
र प्र जे मुहन य स विधि ज
नै ते ब सो विधि कर मन के
ठानै ते कर मन के फल न
गावै । जन मन मन के । अंत
न पावै । र क लो ज स जाय ते ही

वै॥ ६० ॥ अरु प्रातः सांयेक है नां ही
 येक मुक्ति कौं येक बंध्या ही येक
 बंधे कौं येक मुक्ति है तो बंधोत
 येक कौं न कता ॥ पुनः पुनः दि
 प्रातः सां प्रनां ही ॥ तौं ये तो बंध
 न प्रादी ॥ नितिकु कति कसाये
 देवा ॥ या को मो लिब ल वि च वा मे
 शहा ॥ ये नु थ व नि ज न ह के त
 सु निक रि नि र म ल ब न ॥ कता
 कौं प्र त्यु त र क लौं ह रि ज क र न
 प्रे न ॥ ३६ ॥ ६ ॥ शये ती आ न्ना

१०५
 ६
 १० श्री
 नगवानुवाचा

सततै॥ तिनते नयेजे च धू
नहाजांनै॥ तत्वबचन - निरु
रिहिरदेग्रानै॥ रसुजदियप्रत
सुषनिकेजां॥ अरुधिन
नंगुरदेसनिमानै॥ परिसोत
त्वनस मनेदे॥ जातैलहैन
इकोनेउ॥ इकालभित्पता
कौनितिगुसै॥ ताकौकसोक
सांसुष सै॥ ज्योकोईमारनके
लीजे॥ सूलीनिकटिधरोले
जे॥ ३॥ अरुताकौले नोगनू
गावै॥ सोथं कसोकसांसुष
पावै॥ अरुत्सोहान - रपुरल
का॥ मदमधुरनिदांन - सो
का॥ इरतिनकेहातजतन
कैरे॥ सिधिनसोपेबिधन - ति

परिताकोंकोईनहीबिकाराये
सबमायाकेबिबहाराईप्रिया
तमांप्रापमेंमांढै।तांनैसुधदुध
बहुबिबिजांनै।परिप्रातकों
येकरसनिंत्याबन्धनोधिप्रेस
कलप्रनिंत्या।उद्धवजांनोये
कप्रविद्या।प्रसूतीशो।हीये
विद्या।येदेउरैमेरीसकती।
यनमेंसर्वनकीप्रासकी।या
बन्धनकरोचाहूंमेंजाकों।प्र
रिप्रविद्यापढुंताकों।प्रसू
केबन्धनिननिटांनै।ताकों।
द्यासक्यपढांनै।येदेउ
कतिप्रबन्धा।तेममसक
नकेसंबन्धा।प्रा।तनहैसो
शैरूप

परिवेकाकधु चिंतनश्रावै ३७
जेतोपुनिपांकाहोइतेतोर
हैसुरगमैसोताः पुनिपांजाते
वैपुनिजबसीः कालतसंतैदा
रैतबसीः ३ चसोसुषकहेतज्यौ
क्यौजावै तासुषकाकधुकहे
तनश्रावै रसौचहेपरिक्यौ
करिरसै कालश्राधीनमहादु
खलहे ३४ कोइसुषपावैकह
केतोः धीनिलयंहेवैदुषतेतो
सातजिसुरगचंमिमैश्रावै पा
थेजौ निप्रनंतनपावै ४ ४ प्रजा
षीबिचिकागतितोसौः प्रब
निषेइकासुनीयोकोसौः जोकु
संगको प्राणीपरैतोबहुनाति
प्रधर्मनिकरै ४ ४ विधेकासइशाय

धनुस्तीका कहौ। तेरी सब स्य
सहिदहौं। पाये कहे लमे हूँ के
बासा। प्रमात न भ्रात मंके पास
ज्यो द्विपंथी रहै स्वभांती। तत्स्वतं न
निपतिकरुनांसी। होउ चेत वि
येक समानो। सखा रूप येक
तास धांनो। प्राप्युते तिन बा
साकायो। त्यनमे येकल सुदीचि
त दीयो। १७ सहेरु विधि के सुप्रफ
ल प्रावै। ताते दुष प्राप ह प्रावै।
तब ताका जकर मब ह करै।
मै जु गजु गजन मरै मरौ। यह
समरे मरनौ क विजानौ। हेरु ज
न मते ज न मरु मानै। जै सैदा।
वस्तु दुष प्रावै
कहावै। १९
मांसी।

सचले मरजादाते सिंघुटले
 मृमुनिरंतर सबको । सौ मरेक
 लरूपते त्रसै ॥ ४७ ॥ ताते क हन
 ॥ ४८ ॥ प्रवती ॥ सप्रचाहै संगहै नि
 रबरती ॥ प्ररूपेई ॥ प्रवर्क ॥ पा
 वै ॥ तिनको सतरज ॥ तमबरता
 वै ॥ सो प्रातमई दबसि होई ता
 ते ॥ ४९ ॥ प्रपावै सोई ॥ परिप्रात
 माप्रकरता जांनो ॥ जागरतला
 तीते मांनो ॥ ५० ॥ करमरु नोगा
 दि कहै जेते ॥ ५१ ॥ इडिअ प्ररु गुन
 कृतिरुदतने ॥ जो लग प्रइडिअ
 गुनबंध्या ॥ लौ लग मिटेन तनस
 बंध्या ॥ ५२ ॥ तनसबंध्य मिटेन ही
 नो लो ॥ नाना नाव बहूत बिधि
 लो लो ॥ नाना नाव रस सब लग
 पराधीन प्रा ॥ नात बलग ॥ ५३ ॥

न

नमैवंध्रमुक्तिजेजीवाबंध्रजी
वमुक्तासोसावाबबसौसौकह
मुक्तिकेलधियाजिनकजाणि
सायैबिच द्या ॥ २ ॥ पदेधैसुणैक
सैकधूकैरेसोकधूकदेनसिर
दैधरेसकलप्रदथईडाधैक
जानैप्रायसायेकधूकरताना
नै ॥ २ ॥ पूरवकरमप्रधानसर
राककरमकैरेईडाधैजनसीरा
तिनमैबासकाधेनहाजानैम
रव ॥ २ ॥ प्रायसाकरताना
नै ॥ २ ॥ अबलैरिमुक्तिप्रैसाबि
धिरसैप्रसकादधातनकैदह
प्रासनप्रसनप्रटनप्रससेना
इसप्रसप्रधानदेवैनीनदधा
पेननैईडाधैनकैबवलावै ॥ २ ॥
पनकवहप्रधितिलगावैरह
नौसिपानिगानिनकोरीनैगोप

जाँरे ॥ बसोयेकद्वसकोपाव
घूटेद्वैतबलोरिनहाश्रावे ॥ ५६
येप्रतमप्ररुदेरबवेकाया
कोजा नियोकेकेयेका ॥ ऐसे
चनकेलेडावकासमा ॥ उद्व
सकरीडाव प्ररुम ॥ ५७ ॥ उद्यो

उजचै ॥ हे प्रनूजोयेसारेन
मां ईशाय ॥ देरु बिषै गुन कर
मां ॥ प्ररुप्रामां प्रनीरुप्रबंधा ॥
ताकोनयोकोन बिधिबंधा ॥
५८ ॥ रजोषरुस्यो रगपांनको
लहे ॥ घोडिनुपाधि ॥ लसरेरु
बसोबलरुस्यो क्यो लिपतिनहा
ई ॥ प्ररुकेको करिजांनीयेसोई
५९ ॥ कैसें बिचरेकेसेरहे कैसें
जिवेकेसेकहे कैसेंपरुकेसे
सावे ॥ कैसें सुनेकोन बिधिजा

न
न

रहे विसर समंतत इति आने ज्ये
 जडनु बमंत ॥ ३० ॥ प्रे से चा नम
 हिके माने ॥ प्ररु मुकु हिके
 साधन जा नो कृति नये जे
 चाहे कोरी ये सब साधन सा
 ये सोई ॥ ३१ ॥ जिज सब सब द
 वृत्त ॥ सुजा नो ॥ परि निजत लु
 नहा प्रे चा नो ॥ धेन साधन
 निमां हिरत नो ही ॥ जा के अम
 सब मिथ्या जा ई ॥ ३२ ॥ सब द वृ
 ल्लवृत्त के का जो ॥ हरि जा प्ररु
 तरि न किन सा जा ॥ तै वृत्त
 बिना अम ॥ ३३ ॥ अ गा गा ये से
 ये जै से ॥ ३४ ॥ अ गा गा ये द धं वि
 न हो ई ॥ पर ॥ धी न ल नू र ॥ धे को ॥

बिना धन प्रधि कारी ॥

हिस्ममंजु तेरो सब प्रग्यानमी
टावु १ बंधरु मुकतिजेक
सायेकोई सौतो सकलगुननते
ततो नभायाके जांतो येनके
परै आतमा मानु र सोकरुमै
एजनमरु ४ नै प्ररुमरना
दिक बरु दुष पस देनाया कफे
वल स येक आतमाने केवल
३ जो सुषने दुष सुष अनेका ति
नमै आतमका नसायेका तेस
ब्रबुधिदुम नको सोवै इडाये
दस धगटते नै वै मनबु
ध्यादिक धनही रहे जाको प्र
गट सुषेपति करे तब आत
मा निरंजु सोई प्रताको ४ धदु
षनकोई ५ जो सुषपति नै आत
मरहे तो बिबहार पाधला

प्रारणकोनहासमधो। लोम
नहेति करमसुखकरो। प्रेमम
नफलजस प्रहरे। ३३ प्रो
रे करमप्रक्रमविकरमा।
ध्रनजान्प्रतजे सुखजरमा।
ताहातेनुपजे ममनकी। ताहा
मेराधे प्रनूरति। मसरथास
हति सुनै गुनमेरा। जिन ते
करमन प्रावे रो। गाव सुमरे प्र
सतुति करे। प्रेमसुखतिनि
सदिन बिसतरै। ३४ पजे कथ
धरम काम प्ररु प्रथी करै सु
कल सो मेरे प्ररथा ममन प्रा
ननिरंतर ररहो ममन प्ररबचन

नेकाः परिते बहुत नही सब ये
 काः १२ ॥ सुजा जाको छट बितसा
 ई सोही सोस सिमा हि सकोरि
 ११ ॥ मा सब आतम मेरो अंसाः
 पां हिय रंगदौ ॥ यस साः बि
 द्यासक्ति जाहि द्यौं जब ही छट
 कोनां सवटै सोत बसी ॥ १२ सो
 ई सोत बसोको लसै ॥ और सक
 ल नौही मेरै ॥ १३ ॥ सु प्राते बि
 छट नहं मांसी ॥ सद अलिप
 लिपति क ननांसा ॥ १३ ॥ परि छट
 संग लिपति से होवै ॥ अरु त्यों
 लिपति और हुजेवै ॥ त्यों आत
 मा सकल तै न्यारा ॥ सद अलि
 पति न लिपे विकारा ॥ १४ ॥ परि
 यात बवे ॥ अप बंध्यां नो ॥ त क
 लंगल है दुषनां नो ॥ अरु मेव

हवतावोनेबा ॥ प्रकृत्योत्त
स्तैतुवरु
तबुधुधुवकोदेव
नक्रयासिधुबोलेनग
श्रीनगवानुवाचे ॥

धिमं वंतप्रसूतिबधाने
दनिंदाररुतिदुहसबसंमता
हिरदेनममता
अप्रायेकामबुधिधिररुहे
जितइद्रियकोमलतागले

कृष्ण
हिरदेबिचाररुकरे ॥ ध्य
कनेदिहताधुवे ॥

साबधानप्रररुतिबि
धिरज

तातेकंधुकरमनसीगसैनि
 जानंदमयैनरुचलररुंरुं
 प्रमातमप्रातमजानैदेरुप्र
 तितदुंरुंरुंरुंरुंरुंरुंरुं
 सप्रारंननितजैमुक्तिहोयप्र
 कातमरुंरुंरुंरुंरुंरुंरुं
 मुक्तिरुंरुंरुंरुंरुंरुंरुं
 सैतयैंप्रातमरुंरुंरुंरुं
 मैनांहीप्रापहीजानिनयोधि
 रमांहीरुंरुंरुंरुंरुंरुं
 गैकोईसोसोसुपनबिचारैसो
 हीपरिसोसुपनदेरुप्ररुंरुं
 पनोनिध्याजानैदेरुंरुं
 नांरुंरुंरुंरुंरुंरुंरुंरुं
 हीसैतनमैनहीपरिहैरुं
 ज्यैसोवतसुपनातनपावेता
 कौंप्रापजानिमनलवैरुंरुं

म

कासपवनरबितोला ॥ २ ॥ बि
 द्वा नामस्य सथीपाई ॥ दिह
 वे रागसांनधरवारी ॥ तासोका
 टेससपेरादे ॥ जाग्यसकलन
 रमनेदनिवार ॥ ३० ॥ इद्रायपान
 बुधेभनमा ॥ १ ॥ कषरुक्कध बा
 सनांनाही ॥ सोजदिप्रतनरु
 मेंदसे ॥ प्रसोमुकति ॥ १ ॥ १ ॥
 प्रसे ॥ १ ॥ एकदूष्टतनपीडकले
 येकध ॥ १ ॥ १ ॥ बिस्तरे ॥ प्र
 वृधेरोषतोषेनहीश्राने ॥ सक
 लदेसकनिध्याजाने ॥ २ ॥ बि
 धिनप्रषध ॥ १ ॥ १ ॥ किंब
 कुरुशुचबिस्तरे ॥ मुनाकध
 नलो ॥ १ ॥ १ ॥ गुनप्रसुदे
 पररुतिसमिलेये ॥ ३ ॥ बिधि
 नये ॥ नाहाकधकरे ॥ नाकध
 कसेना ॥ १ ॥ १ ॥ निसदिन

॥

तत्रिच्छिन्नरचा कर्षेत्तौ होत
नांति न च्छाहा सब रबीं
सब छिन्निरवाला पुरा
दिकरि रियां मुज रौ होत
तिकरि प्रेम बंदने ॥ १५ ॥ जोर
नको ज्ञ चाही ली पौ वै भौर
दौर प्रतिमा पचये ॥ १६ ॥ वि
धि करे वाग फूल चाही कीडा
थान सहति च लरा ॥ १७ ॥ रापुर
मंडव हनां तिकरा वै ॥ १८ ॥ जोर रि
अरु हरि न हरा वा वै ॥ १९ ॥ प्राप
हि जो सकति न हो ॥ २० ॥ होत
मठाने सोही ॥ २१ ॥ सब हो विधि
हसां कहै कही वै ॥ २२ ॥ जोर नमो
तिकरि करवा वै ॥ २३ ॥ दिरा ॥ २४ ॥
॥ २५ ॥

ज्यौं यन नै दिन दिन सुखे री
कबल सुख वन सक
सिखे व तौं सब बिधि बानी
केवल बंध न सकौं जांनी रस
मेते जगजुत पति सहारा
सब प्रतिपालन बिधि प्रकार
रा वि वाजन न क म ब ह त
रे जा बानी मै नां सं कि रे
मेरे नां नां बिधि संबंध्या जा
बांनी मै नां सं बिंध्या बा
नी ता सि बि चारे नै फल जा
नि न पंडित चारे ॥ ४ ॥ या बिधि
जा नि ब होत प्रकार ब ह त
नां ति करि ब होत बि चारा
जा सांत सांते मन ही नि वारे
पूरण ये क ब ल मै चारे ॥ ४ ॥
जा ता जि दू जे ना ना प्र र थ मन

चुज्जप्रायुध्रच्यारी ॥ स्थो ज्जसरो
रपीतंबुध्रच्यारी ॥ ३५ ॥ सीसुबुक्क
सूनकडल ॥ करणां ॥ वीस्त
नादिवहृविष्णुचरणां ॥ ज्ये
सोरूपसत्तनिहैध्रवे ॥ सब
पान द्वेषीतिबहवै ॥ ३६ ॥ ध्रुवि
धिबापकूपसरबाग ॥ जयतप
दानदयाबृत प्राग ॥ मेरेले तिक
रेसोकरे ॥ मोविनप्रोर हिरदे
नहा ॥ अरे ॥ ३७ ॥ ज्जससाध्वाननि
करैनर ॥ जोई ॥ ज्जमनगतिम
मपावेसोही ॥ ध्रुसाध्वन ॥ क
रतेबहुनाती ॥ साध्वनिलाप
तोषदिनराती ॥ तिनतैज्जैसी
जुगतिहापावे ॥ जालैग्यानन
क्तिनर ॥ आवै ॥ तालैग्याननक्ति

तब मेरे निज सु प्रजापति ता
तेना नाचे दही ना नैः ७७ तब ता
हा प्र मा हि स ना वैः जा त ज
म फेरि न हा प्र वैः प्रारं ७७
त संग ति हो ई स त संग ति बा
ग ल स न को ७७ च न ग त न वि
ना न कि न ग ग टि ७७ न ग ति वि
ना न ही मो नैः प्रोः ता तै स त
संग ति कौ कौ रे ७७ जोज त न स
क ल प्र स रैः ७७ दौ हा ७७ जै से
सु नि हरि के ब च न ७७ म न मे
बा डी प्पा स त ब न क न ७७ रू
न कि के ल धि न पू र्ण द स
७७ उ धौ उ बा चै चो प डी ७७ हे
प्र नू पू र न प्र म प्र नंतः या ज ग
ब ह त नो तिः सं त ७७ जा कौ
सं त क हो म द वाः ता कौ सो

एतिरंतरघाटी ॥ ३ ॥ अथ प्रतिगो
पिनतोहै मेरो ॥ अथ न मेरे अथ श्री
नचिततेरो ॥ ताते येमेतोस्यो
कह्यो ॥ अगो क हवे नही रह्यो
होहा ॥ बहुरिगोपि अथ पनो मत
कहतोहिस मगयो ॥ जाते छूटे
जगत नद्या ॥ मोने र हे स्वमाये
२० ॥ ४ ॥ १३ ॥ येती नगवते
महापुवाणो ॥ पुकेकाहस स्वदे ॥ श्री
नगवत उह संवाहि ॥ नावायो
येकाह सो अथ वायो ॥ श्रीक ॥
प्रशाचोप ॥ श्री ॥ ७ ॥ श्री नगवा
नबुवाचो ॥ नंदो वमंतो गोपिल
निमेरो ॥ पाते सोहि मिटे नवते
रो ॥ अथ पनिल एकोप च दघो ॥
शोरसकलकुं ॥ अथ पिघोने ॥ १ ॥

वंत ॥ ५ ॥ सोक मोरु सुध्या पिसा पा
जुरा म्त्पुजी तेषट पासा प्राप
मान अपमान न जानै ज्यौरन
कौं बहु मान साहानै ही जो केहि
सरना गति प्रावे ॥ क ज्यौ तै
ग्यान नु पावे सब कौ मित्र सु
भाव सु न जानै ॥ दिह बि सवा
काल न रम जानै ॥ सम मश
धी न दीन होये रहे साधन के
बल क देन गहै मो ही कौं कर
ता करि जानै ॥ क बहु नू लिन
प्राप प्रा नै ॥ च जदि पसं बे हर
प मै गाये ॥ वृणा सम कुल धर
व ताये ॥ तो ह बि धिन घे द स
बत जै ॥ दिह नि श्रै ये सम म चर
न न न जै ॥ इ सो न गत नि ज
न क क हा वै ॥ ता के सं ग प न कि

कोसंगन धृते नाम चरननमे
चित्तं न च सैर्ये तातं मोक्षन
पावे कुनते पावे लचनसंके
सुनते दिसा चूसे लचनमुन
वेः सत्रुनिनुसुपदुष जिनये ॥
सारुप्रसारकालनैकानामा
अदिषावे सातलका नरा प्रगन
तेमनके संगमिदोत्तै सिने नुगा
कवललिपदोवे ॥ इति श्री
पसागुतारो मेरेननलनका नने
बावे च जेततिरे तिनेनेने अ
रुप्रप्रहति विहृष्टेनेनेनेने
साधुसंगतज्ञानो इनेनेनेने
पापनवनेनेनेनेनेनेनेनेनेने
थानअसुरा विकचनगालिने
नागुवादिननुपम

पावे मेरो ॥ १४ ॥ नम
तमा मे मो कौ न जे ॥ मन क
बचन फला ॥ कत जे ॥ सि
स प्रस प्राचे राघा ॥ सुति
इत स पराघा ॥ १५ ॥ मेरी व
बिषे प्रति सर ध्या ॥ मो बि
धून करे फल प्रदी ॥ मेरे ज
कर म गु न गावे ॥ सदा निर
मो कौ ध्यावे ॥ १६ ॥ तनु प्ररु
के पी धे जेते ॥ मो कौ सक
म पे ते ते ॥ जन मा घृ मा प्र
जेष बा ॥ बसौ त उ ध्या सकरे
बा ॥ १७ ॥ न रि ति गति प्ररु व
धि बाजा ॥ मंड रू प ब लो
धि साजा ॥ कथा की रत न
बिच र ध्या ॥ जा ग णा दि व

तेनुमोकौकदेनलसैलताकौति
नसुप्रसमैपाये॥जेकेवलमे
सोमनलाये॥इशरामसकतिपा
योमोहिजबलोचलेप्रकरम
धूपुरातबहीबलेगोपीमेरे
हितापायेमेरस्थाकरिचेतः
रुमबहुस्यौलककिमतादुषपा
वेनिसबासुरेतमगचरनन
ध्यावेमोहिधोडिसबदुषमये
देवे॥लेकबेदकुलकधूनलेप
रपजेनिसमोलंगयत्सबाते
तेहीतिनकौकलयविबलीतेम
मेरुंगुणानिसुनेप्रदुगावेली
लास्यसिरेदेमैध्यावेरध्व
बहुबिरसैकहादुषरोवेकब

तिसबनसैसंघी ॥ तिनकौबौ
होत ॥ जातिकरिसेवै ॥ तनम
नधनन ॥ जगदकारिदेवै ॥ ३१ ॥
ज्योही ॥ गतआपनै ॥ नाई ॥ प्रसे
जांनिकैप्रधिकारि ॥ तनमन
धनसौंप्रातिबढावै ॥ जिनतैम
रेनेदहापौवै ॥ ३२ ॥ हिरदय ॥ अ
कासफ ॥ नसौंसेवै ॥ अरुप्राधा
रपवनचितदेवै ॥ जलकौजल
अरु ॥ लफुलाद ॥ नूधरणाप
जैमंत्रादी ॥ ३३ ॥ नोगनसौंनिज
देहहीनजै ॥ मोविचिअंतराद
सातजै ॥ सबनूतनमैमोकौज
नै ॥ समदुसनपरुपूजाठानै ॥
३४ ॥ यनसबठौरन्यपूजाकरै ॥
अरौरुपहिदेमैधरे ॥ रूपच

निवृत्तमज्ञानं
रमनांनं प्रकृतं
जनयेकाः प्रेरक
नेकाः कृष्णस्यै
सताराः रच्येते
शः तान्ने प्राप
एतस्य सर्वदसं
सोतासर्वदच
मकान्ने प्राग
गस्यंतीनांनो
मनांनानां
मरीचानांः
प्रधानीः स्व
रजेते नानां
ते ४३ लोक

सु
न
र
मि
व
क
प
या
श
पु
व
रि
लेक
मना
बाल
गोरव
वसे

के कारण ये कनिका वायु
प्रकारण ३३ ताते नगत सो
चित्तवावे ॥ जिनते मेरी नगति
ही पावे ॥ तिनके बिण ज नक्ति
कौनि त कबहु प्रोर न प्रावे
चित्त ४० मे उर को मेर ह सो
ई ॥ ओ सो नद जा ॥ कौई जो क
य क लै करौ ॥ सोही जदि प मे
रे मन नही ॥ सोई ४१ मेहि
मिल ए को ध ३५ पाया ॥ बहो वि
धि प्राजत ३३ न पाया ॥ साध स
ज मिलि नक्ति हा करही ॥ सोही
य क ३३ गत ॥ लतिरही ॥ न क
न बिना न ३३ न प्रावे ॥ नक्ति
॥ वना न ह ३३ मे प्रावे ॥ मो मे प्रा
य बिन जा हा जाई ॥ ता हा ता हा क

नगवानुवाच ॥ उद्धकप्रवसु
निउतमज्ञानां जातैतुवधुटेन
रमनांता ॥ प्रथमहीप्रापनिरे
जनयेका ॥ प्रोरकधूनहाहतेप्र
नेका ॥ क्वबहोरिकीयैमायावि
सतारा ॥ रचौदेहवहूप्रगप्रक
रा ॥ तानैप्रापपुवेसाकायो ॥ प्रा
णरुसबदसंग्यकरिलीयो ॥ १
सोतासबदचक्रप्राथारा ॥ प्रा
मकीनैप्रागारा ॥ मणिपूरक
पस्यतीनांता ॥ चक्रविसुध्वस
विमोथानां ॥ केरुवाहुरिप्रगद
वैधरीबानी ॥ जोग्येलोकरुवेह
वषांनी ॥ स्वरलक्ष्मांता ॥ प्रप्र
रजेते ॥ नानांतातिविसतरेने
तेपु ॥ लोकनाहियोगविसना
रेवेदकादिनि

जोगकहीजेप्रष्टप्रकारासा
विप्रकृतिप्ररूपुरघविचारा
बहुविधिबृणाप्रमथरनाः
सकलत्माग्यहावेनेहेकरमा
रवेद्यादिकविद्याबहुराठा
जाहालगहेतप्रप्रतिकठा
होमजज्ञसरवापीकृपाप्रष्ट
दानसमयेप्रनृपाः३येकाद
सीप्रदिवरतजेतेगुपतमंत्र
नेरहेकेतेममप्रतमापूजा
आचरणांतारथप्रदनिघ
मजमकरणां४प्रौरोसमद
मप्रदिकजेतेसाधनसक
लमुक्तिकेतेतेयेनसबहीन
तेमोहिनपावेसाधूनप
लमांहिनिलवावे५नेनतेमन

सुषुदुषुद्वै तिनके फल नये हूँ-
ये संसार ये कते प्रै से। ये कबीज
ते बहु बन जै से। ताते ये सब ये
क प्रथारा। प्ररु ये कही को सक
ल प्रसार। प्रै जै से ब स्रत तुम
ये होरी। वेत प्रोत दू जो नही को री
प्रै सोय ह न वत रु हे ये का। द्वै
फल फल रु स्राषा प्रने का। प्रै
ये सब मन चेत न प्रथारा। प्रै
परितो ह चेत न ते न्यारा। प्रै चै
त न ह नै रो प्र स्रा। यामै नू लि
न मान संसा। प्रै ये संसार बूष
है प्रै सो। मै ना प्रत लौ सु नी यो
ते सो। प्रै पाप रुपु नि बीज द्वै यां के।
मू न प्रथार बा स नो ता के। प्रै
प्रै दि ही के व गुरा। प्रै रु स्राषा। प्रै

जसो मेरो संग साध्य सकल
हे मेरो संग ताते दोनु साध्य
संग जानौ १५ के दोनु मेरे
नमानौ १६ गोपा ॥ ५ ॥
नजनागा ॥ और सुबुधिब
इजागा ॥ ममसत संगति पुन
तिन बाधौ ॥ नाव न कि सोव
आराधौ ॥ १० ॥ और
साध्य न ही जानौ ॥ अवर न ब
न रूप करि मानौ ॥ परितिन क
हित मो सो भयो ॥ ताते सब मन
को म ॥ ५ ॥ यो ॥ १ ॥ अम
ही बिना तिन मो को पायो ॥ अ
ति अपार न व दु ॥ मिटा ॥
जाको जोग सो बिबर दाना ॥
ज ॥ अवेद बिद्या बिधि नाना ॥
र ॥ को र स न्या सब हत दु ॥ स ॥

के निकटिन प्राप्ति मसकलमा
सि प्रापही को पनाने । नै देह
कतमा या जानै ॥ १॥ चेतनसक
तिब्रह्म करि देषी ॥ २॥ रसकलमा
प्रा करि लेषी ॥ ३॥ परिषे हसकल
तदतब प्रावे ॥ ४॥ बसत गुरकी
परण हा प्रावे ॥ ५॥ अस्तल गुर
बनान प्रावे को ई ॥ ६॥ लादिक
नावे सो हो ई ॥ ७॥ तै गुरका सर
ण हा प्रावे ॥ ८॥ दिहु पासना न कि
दावे ॥ ९॥ पस गुरसेवा को ई सो प्र
नावा जाते नु पजे ले रो नाव ॥
उरसेवा तें यावे न ही ॥ १०॥ गुरसे
वा तें सकल बिरकती ॥ ११॥ गुर
सेवा तें ग्या न ही लहे ॥ १२॥ गुरसेवा
कर मन दहै ॥ १३॥ गुरसेवा तें प्रम
कासा ॥

ऐसो हूँ करि मो कौ पै हो जातें
जगत जनमनसी ऐसो ॥ यो ह
रिजी ब्राणी बिसतरी ॥ तब ऊँ
इव प्र संका करी ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥
वज्र बाँधो ॥ प्र न तु म त्या ॥ वे
द को क ह्यो ॥ सो मे रे नु र सं से
र ह्यो ॥ तु म री प्र षा ब द न रा
वै ॥ ता सि धा डि कै से सु ष पा वे
३ ॥ तु म ही श्रु ति मे क रा गो
न प्र ॥ तु म ही या हां दु रि क रि ना
ये ॥ ता ते मन न र स त ह मे रो ॥
धिर का जे प्र प ने जन के रो ॥ ३
कि बौ व स ति कि बौ ये दे वा
या को मो लि ब ता वो ने वा ॥ तब
गो पा ल ब च न उ चा रे ॥ ज्यौ र ब
उ द्ये म धि प्र षा या रे ॥ ३ ॥ श्री

तन्मम्यान्तर्ज्वरं हस्त्रौंसाधन
 ससति। चाषो प्रमनिध्यान्तर्स्थ
 २५॥७५॥ येता श्रीजागवतेका
 पुराणीयेकादस रक्षे। श्रीजाग
 वत उद्ध्वेबादे। चाषायाद्दि
 साप्रथ्याये। १२॥ श्रीजागवात
 केबाचे। चोपई। स्रनिउद्ध
 वप्रव प्रमग्ग्यां प्राप्तातेपा
 वे प्रमनिध्यान्तो। स्रले ग्पांनह
 येयोक्तेहो। का विचिंतुव प्रग्ग
 नहादहं। सान्तिकरी। इस्लोम
 सजेहो। उद्ध्वेते गुणसायाकेहो।
 सुषदुषसब। तिनहाके ज्ञानो।
 तिनते परे। आतसांसांनो। १२॥
 तातेनरसांतिककोंगहो। स्रान्ति
 ककरि रजतमकोदहो। चोपेव
 लमांतिधिरहो। स्रान्तिकले

जैसो हूँ करि मो कौपै हो जातै
जगत जन मन ही जै हो यो ह
रिजी बाणी बिसतरी तब ऊ
द्वप्रा संक क करी ॥ ३३ ॥ तजु ह
वजु वाचै ॥ प्र न तु म त्या ग वि
द को क ह्यो ॥ सो मे रे नु र सं से
र ह्यो ॥ तु म री अ ग्रा ब द न त
वै ॥ ता हि या डि के सै ॥ अ या वै
३ ॥ तु म ही श्रु ति मै क रणे
अ प्रे ॥ तु म ही या हां दु रि क रि ना
वै ॥ ता तै मन न र स त ह मे रो ॥
धि र का जे अ प्र न जे न के रो ॥ ३८
कि बौ व स ति कि बौ ये दे वा ॥
या को मो हि ब ता वो ने वा ॥ त ब
गो पा ल ब च न उ चारे ॥ ज्यौ र वा
उ दये म धि अ च्यो यारे ॥ ३९ ॥ श्री

रजतमकासंघं प्रहरेत्तु सुखं

सकलस्य संगति कारणात्

संगतिबोधैः संगतिनाशनात् ॥ ५ ॥

देससुकास्य पुनः जलधोनात् ॥ ६ ॥

धरुकरस्य जलधोनात् ॥ ७ ॥

गुणाधोनात् ॥ ८ ॥

वजापयेदस्य प्रकार ॥ ९ ॥

जाकोसो जैसैः ॥ १० ॥

ताकूतैः ॥ ११ ॥

उपजावैः ॥ १२ ॥

जावैः ॥ १३ ॥

बिसतरे ॥ १४ ॥

जासाजावैः ॥ १५ ॥

तमजांगो ॥ १६ ॥

परितिनकौबलौबिधिबिस
तारा॥ जाकोकोइलहैनपारा॥
४४ जैसें जलकाठमथिका
हो॥ ईधनपवनसंग्य॥ ४५
धोममवां॥ ॥ कोबिसताराः॥
जाते प्रगटौसदप्रकार॥
४६ येबिस्तारसब कोसारा
जाभेचतनरूप, सारेईदी
धनुपडा॥ इस प्रकार॥ सुवसु
मनबुधिचितप्रकार॥ ४७
सतरजतममायागुनजानौ
सबबिस्तारतिनसौकोमानौ॥
जोअहेतयेकनिरधाराः॥ तिन
कीनसौमायाबिसतारा॥ ४८
तिनमेमैबइनांतिआनास्यो
उतममभिमनीचप्रकास्यो
बिधिनयेधतातेकरिलयेः॥

घोवै बलौ स्यौं प्राप
मिंत होई साध बल्लेस
कोई अशुणांती तसे

तीनू काल वृत्त
नाणी सो बलौ स्यौं नव
मोहि जिल्यो मोम

हिसमावै ॥ ७ ॥ लाले सब साध
निश्चि टकावै ॥ ८ ॥ कनिरंजनम
कोंध्यावै ॥ ९ ॥ तल्लरिका सुनिप्र
रनूत बांनी ॥ १० ॥ नकह वये
प्रह्न बषांनी ॥ ११ ॥ नह वजु पाच
स प्रनूय हागे सो कतीये म्यां ना
दिक पौं तजे सुध लहा प्रपति
जे विष यसु धन कां चाहिं तात
वसु आरंज समाहिं २० त वापु
रेसदा दुषसह २१ वरुन
नसुषकांन २२

तिनतेपंचनूत प्रसाधा नुय
साधामनई यदस सबदीदि
कसरवैपचौर २५३ कफप्र
रुवात प्रपित्तत्रियेबलकल
नुयप्रदुप्रप्रप्रदु है फल
तामैद्वैपंघीकोबासा प्रमात
मज्जदुप्रप्रप्रप्रप्र ५५ जे
वदप्रयेप्रप्रप्रप्रने तेबहुना
ति। बेदविधिठानै तिनतेले
वैबहुविधिबंध्याः जुगजुग
दुषपावैतेप्रंध्याः ५५ जेयेदे
रुवृषिकरिजानै प्रापहाय
मीन्मारोमानै बेदसूत्रिस
ब्रह्मायादेधै सकलप्रतीत
ग्राः कौलेयैः पदितवयेविधि
नषेद्विष्टकावे सुप्रप्ररुदुष

हराजसप्रधिकाराः राजसतैम
नभगहैबिकाराः ३३॥ तबराजस
कोबेगप्रचंडा ॥ ग्यानसासारिव
रैसतषंडा ॥ तातैग्यानसुनैप्र
जानै ॥ प्ररुप्रौरनिस्यै ॥ प्रापुबष
नै ॥ इथापरिसोकामनहीठहरावै
लेकरिपकरिकरमकरवावै ॥ प
रिजदिपयानकीबूधी ॥ रजतमे
नसापावैसुधी ॥ रैधैतोहूनिस्दि
निदोषबिचारै ॥ नरतैसकलका
मनाटारै ॥ सावध्यानप्रालसन
साकरै ॥ क्रमक्रमममचरननचि
तधरै ॥ ३३ ॥ प्रासणजीतिकरैबसि
प्रान ॥ निसदिनरराषेममध्या
न ॥ प्ररुममसिषचारिसनका
दि ॥ सकलतसग्याननकाप्रादि
इथा ॥ तिनबिचारिकरिजोगही
नाष्यौ ॥ सौतौहैप्रौरसबना

वासा ॥ ६ ॥ मोहि निल एकोयसु
उपा ॥ ७ ॥ गुरसेवा विन श्रौतनका
इतातै गुरका सरणा हा प्रवे
तन मन धन सौहितन लजावे
हरतातै उपजे ॥ ७ ॥ नदुःख ॥ ८ ॥ स
बपां सिनकोटाल निहारा ॥ ३ ॥
एद्विं गसरीरनुपाधि ॥ जोश्रा
तमकूलागी व्याधि ॥ ६ ॥ ३ ॥ ग्यान
कुदारसकलसौ ॥ येया विधि
अतमनि रमलकरे ॥ पाछे ग्या
न ध्यान सब त्यागे ॥ निसुदिन
येक वृत्त प्रनूरागे ॥ ६ ॥ तबसे
वृत्तलासां हि सचा ॥ बलौ रूत
गत जन मन ला प्रवे ॥ तातै तुम
सब साधन त्यागे ॥ निसदिन
येक वृत्त प्रनूरागे ॥ ६ ॥ ॥ ॥
ये उद्धवतो सौकस्यो ॥ नवमोच

मनतेउ... प्रजे वृत्त...
जनमसाते जिन्गही निरवृती...
मनवचिकरमतजी प्रवृती...
प्रसनकरी तिनवृत्ताप्रगै...
सोनेदजो सोवतजागै...
सुप्रिमजांनी नसापरे...
सौ कौनउ...
दिकडबाचे...
येदेवा...
बिषेबासना...
त प्रातिकरि...
दानजिले...
घोरपरसपर...
बिनकुरुन...
निलोयेये...
उरप्यारी...
बिचारी...

ने लगे प्रागे सोही ॥ ज्यैसी बिधि
तीन गुण रहै ॥ तब कै धृत्त बृत्त
मै रहै ॥ ज्यौं ज्यौं होय सांतिक प्र
धि करार ॥ त्यों त्यों प्रसन्न गति
बिसतारा ॥ सकल बस्तु सां
तिक जब न जै ॥ तब ही सांतिक
गुण नुप जै ॥ सांतिक ज्यौं ज्यौं
त्यों त्यों न की ॥ त्यों ही त्यों प्रव
त्र विरक्ति ॥ तब रज रज रज
मिडि जावै ॥ तातै तिनके गुण
नही जावै ॥ हरषरसोगमान
प्रपमानां ॥ निंदा प्रालसग्न
गुमानां ॥ ईराग द्वेष आदिक
है जैते ॥ इह सकल रजतमके
तेते ॥ तातै जब ये रजतम जाई
तब तिनके गुण नुप जै नाहीं ॥
७ ॥ तातै सांतिक सगतिकरै ॥

नतेन प्रजे वृत्तव्यया
नमस्तै जिनगहानिरवृती
प्रनवचिकरमतजी प्रवृती
प्रसनकरी तिनवृत्ताप्रगैहाये
सोनेदजा सोवतजागै ॥ अति
सुप्रिसजांनी नहापरे नतरक
सौ कौनउ चै ॥ ४ ॥ प्रसनका
दिकडवाचै हे प्रनवृत्तवृत्तक
येदेवा ॥ याकोरुने बलावोनेवा
विषेबासना निचि तंगसो ॥ चि
त प्रातिकरि कें निरि रहो ॥ ४ ॥
दोनु मिले प्रापने जे सौ ॥ नीरस
धीरपरसपर जे सौ ॥ निनि नये
बिनकुत्तनलो ॥ क्यो करिते
निलोयेदेई ॥ ४ ॥ येबाणावृत्त
उरधारी ॥ उत्तरदेन कौ बलौत
विचारी ॥ पनो सुउतरनहा

१२ नातैयेदससांतिकसेवै
राजसतामसनामनल
राजसः।मसजोहितहोइतो
हसबधिदकावैसोही।१३सां
तिकसंगउपजैसः।तौतौ
ललनगतेकोत।जोलगदि
६-पजोबेग्यान।पैसकल
येकनग।१८।१९।प्ररुदनी
देरुनिभरमजोने।सबबिस
तारसुपनसज।सांने।तब
येब्रंनसांदिधिरहो।सांति
कहकावोरनजोवै।१५।मौबा
सनतै।पजप्रनल।प्ररुहो
वेम।रुत।पबल।सबबांस
निकोहाहैसोही।प्रापहीबह
रि।प्ररुनत।प्र।तौसाधन
धातनत।रावै।सोपप्रचडया

द्विषयेन मां हि चित्तमिति
तिरस्यो प्ररुचिषायं चित्तं दि
दगस्यो हि पुत्रयेषां सा सत्त्वा प्र
तिश्रातममां हि प्रसत्त्वाः ॥ १ ॥ बि
षये चित्तये दे उ मायाः ॥ श्रातम
बृहन्निरंजनरायाः ॥ विषायन
संजब च्यतलगावै न त बृहीचि
तनितिसुषपावै ॥ २ ॥ त ब विषी
येन के आन ही चरे ॥ तिन के ह
तिकरम वि सतरे ॥ ताते ये क
कमिलिरहे ॥ जैसें जनमजन
दुषसहे ॥ ३ ॥ ताते श्रातमनेरे
प्रसा ॥ मेरासरनिगहेत जिस
बाहरिहते विषये प्रहरे ॥ प्ररु
चित्तते चित्तवनिनां करे ॥ ४ ॥
विषये रूचित बृथा करिज
तिनते परे प्रापू करिमाने ॥

तमश्रुतनांसी ॥ ज्योत्स्नस्य रूप
 सकलं पुरासी ॥ स्योजबहाधा
 तनमै श्रावै ॥ तबस्वाध्यानवि
 षैसुषपावै ॥ ३० बसौ ॥ सतनहि
 तर्हिदामगहै ॥ नहापावैतौदुष
 कौलरहै ॥ याबिधिस्सुष ॥ यजब
 हाजांनै ॥ तबहादेरुश्रापकरि
 मांनै ॥ ज्यैसैषडै ॥ हश्रुकरा
 तबहारजसको ॥ धिकारा
 राजससहै ॥ तजब ॥ गीमनहो
 तबयेहीसुषजांनैसोही ॥ तब
 संकल्पबिकल्पनिकरै ॥ निस
 दिनीहृदै बिषैरसधरै ॥ तब
 जा ॥ श्रुदेषै ॥ तब
 रिलेषै ॥ ३३
 ज्योत्स्न

द्विषायै न मां हि चिंतयति
लिरहो प्रसू द्विषायै न चिंतयति
दगहो हि पुत्रये वीं हासत्वा प्र
ते प्रातम मां हि प्रसूत्वा हि बि
षायै चिंतये दो उ मायाः प्रसूतम
ब्रह्म निरंजन रायाः द्विषायै न
सौ ज ब च्यत ल गा वै त ब ही चि
त निति सुष पा वै इ र त ब बिषा
यै न के आ न ही च्ये र तिन के ह
ति कर म बि स त रे ता तै ये क म
क म लि र हे जै से ज न म ज न
दुष स हे इ र ता तै प्रा त म न रे
प्र सा मे रा स र नि ग ह त जि स
बा ह रि ह तै बि ष यै प्र ह रे प्र स
चि त तै चि त व नि नं क रे द्वि
बि ष यै रु चि त वृ धा क रि ज
ति न तै परे प्रा षू क रि मा नै

ज्योती ज्योति मन दू जो त जे अरु
ज्यो ज्यो म म च ए नि न जे ३५
या हा ते सब सिटे बिकारा या हा
ते छूटे संसारा या हा ते म म च
रण नि पावे ॥ ब ॥ स्व ज ग त जन
म न हा प्रो वै ४ ॥ जा ते पु म जे ग
ये रा ध्यो ॥ जा ते मे रे सि ष नि चा
ध्यो ॥ जब ये वा नी बो ले क म त
ब न ह व व न वा नी ध र १ न ह
ब न वा च्ये ॥ हे प्र नू ज क प द म
के र ॥ रू पा ॥ तु म ना ध्यो ये ग्या न
प्र नू प ॥ स न का दि क नि कौ न वि
धि ल हो ॥ क्यो पू थ्यो के से तु म क
ह्यो ॥ ४ ॥ ग्या न स रू प ॥ स न का
क हो ॥ मे रे ॥ र के सं से द हो ॥ जब
ये न ह व का नी प्र ह म ॥ त ब बो ले
क र्णा न ये क द म ३ ॥ क ह म उ वा
च ॥ वृ स न पु त्र स न का दि क चा री

विषयैः न कां हि चित्तमिति
रहो ॥ प्ररुषिषायं न चित्तं दि
गहो ॥ हे पुत्र ये ये सासत्वा प्र
प्रातमनां हि प्रसत्वा ॥ १ ॥ वि
ये चित्तये हो नु माया ॥ प्रातम
स्तनिरंजनयाया ॥ विषयं न
जब च्यत लगवे ॥ तब ही चि
नितिसुषपावे ॥ इतब विषय
नके ध्यान ही चरे ॥ तिनके हे
करम विस्तरे ॥ ताते धेकने
मिलिरहे ॥ जैसें जनमजनम
षसहे ॥ इताते प्रातम मेरे
सा ॥ मेरा सरनिगहेत जिससा
सा हरिहेतें विषये परुरे ॥ प्ररु
चतते चित्तवनिनां करे ॥ ६ ॥
विषयैः रुचितवृथा करिजां नै
तनते परे ॥ आप करिमाने ॥ ६ ॥

इदं विषयं न मां हि चिंतयति
तिरहो ॥ प्ररु विषयं न चिंतयति
दगहो ॥ इ पुत्र धैर्ये ॥ सा सत्वा ॥ प्र
ते प्रातम मां हि प्रसत् ॥ १ ॥ वि
षयं चिंतयते ॥ उ माया ॥ १ ॥ प्रातम
ब्रह्म निरंजन माया ॥ विषयं न
सो जव च्यत लगावे ॥ त ब्रह्म चि
त निति सुष पावै ॥ इ रत ब्र विषय
यन के ध्या नती चरे ॥ तिन के हे
ति कर म वि सत रे ॥ ता तै धे क म
क मिति र ह्ये ॥ जै सै जन न न जन म
दुष स ह्ये ॥ इ रता तै प्रातम न रे ॥
प्रसा ॥ मे र स र नि ग ह्ये त निस स ॥
बा हरि ह्ये तै विषय प्र ह्ये ॥ प्ररु
चित्तै चित व नि नं करे ॥ १ ॥

तत्र विचारः तो नही
प्रकृति पुरुष विसतारा ॥ ५७ ॥
कथं दासे सुनीये कहीये
मन प्ररु बुद्धि जसाल्यो दनहीये
सो सब मैसां दनांसी ॥ ज्यै सो ग्य
न धरे न रमांसी ॥ ५८ ॥ नां सरूप
ते सकल विकारा ॥ आदि प्रति
मधिमांटी सारा ॥ त्योंही आदि
प्रतिमधिमांसी ॥ मैसां ये कहे
तकथं नांसी ॥ ५९ ॥ द्वैत द्विषि सो
दुषकौ कारणा ॥ ब्रह्म द्विषि नि
जसुष विसाराणा ॥ लगे त्रंग न सं
खल है ॥ तब सुष ॥ बते तजि
जल गहै ॥ ५९ ॥ ज्योंही द्वैत द्विषि
सो दुष ॥ ये कद्विषि सोही निजस
ष ॥ प्ररु तुम प्ररु विरंचिही क
री ॥ सो मै सिनै आपनै धरी ॥

गैसासारा ॥ प्राणलीसल निघ्या
करिजांनौ ॥ कलहृत्तलिनरति
करिमांनौ ॥ ७ ॥ लोकोद्वेदधर
मप्राचरणो ॥ १ ॥ सुखडिन
केहितकरणां ॥ लेसलसुधनर
पबिवसारा ॥ १ ॥ डिटलथोडैसक
लयसारा ॥ १ ॥ लरनतैधस्यो
देसप्रनिमांनो ॥ लतैधुएाप्रस
नतेनांनो ॥ ततैकरैलहेतवि
धिकरमां ॥ सुधनिसितिविस
तारैधमां ॥ १ ॥ प्रतैसकलहृया
करिजांनौ ॥ सुधनजगणसस
करिमांनौ ॥ जोदेसादिकसकल
पसारा ॥ लेतनकरिहरतावन
सारा ॥ १ ॥ सुधदुधनोगकरै
प्रसुजाने ॥ आपसासुधादुषा ॥
करिमांनौ ॥ बसोस्यो जवसासुध
नकोपावे ॥ वसवि ॥

तत्र विचारः तो नही
 प्रकृति पुरुषा विसता ॥ ५७ ॥
 कथं दासैः सुनीये कदापि
 मनः प्ररु बुद्धि ज्ञाना लौं दनदाये
 सो सब है सां द जो नां ही ॥ ज्यै सो ग्या
 न धरे न र मां ही ॥ ५८ ॥ नाम रूप
 तस्य ल वि कारा ॥ ज्यौ दि प्रं ति
 मधि मां ही सारा ॥ त्यों ही ज्यौ दि
 प्रं ति मधि मां ही ॥ मों ही ये क द
 त कथं नां ही ॥ ५९ ॥ हे त दि धि सो
 दुष कौ कारा ॥ ब्रह्म दि धि नि
 जस्य प्र वि सारा ॥ ६० ॥ गत सं
 ष ल है ॥ तत्र सुष त्रु व ते त जि
 जल ग है ॥ ६१ ॥ ज्यौ ही हे त दि धि
 सो दुष ॥ ये क द धि सो ही नि ज स
 ष ॥ ज्यौ रू तु म प्र ह्य वि रं चि ही क
 री ॥ सो मों हि र है ज्यौ प नै ध री ॥

ग्यानप्रदुगाकाटैप्रसंकावापठ
हिरदैमांहिमेताको जजौं सुखा
आने केकदेनतजौं येसादेजग
नरमकरेजानैं मिनकोकरति
मिथ्याकरिमानैं ॥ ४ ॥ ज्योयेक
निकौनुपजतदेपै ॥ प्रसंकेकन
कौबिनसतयेपै ॥ सोहारीतिस
कलकाजानै ॥ सु प्रसमानिहि
रदामैमानै ॥ ४ ॥ प्रगनिसहेति
ज्योलकराहोई ॥ बालकलैकरि
करैकोई ॥ प्रौरजातिहोईसैप्र
रधिरपरिचंचलसबसाठौर
॥ तौयहैजगतरेहैधिरनिति
॥ प्रतिचंचलसकलप्रनि ॥
॥ तयेकब्रह्ममैसबप्रानास्यो
गुणपायबहुनेदप्रकास्यो
॥ सुपनरूपगुणमै ॥ ज्योने
॥ योबहुनांतिचारैजोगी ॥

तत्त्वविचाराः तोनही
प्रकृतिपुरषविसताराः ५७ जे
कधुदासे सुनीयेकहीये
मनप्ररुबुद्धिजसालौदनहीये
सोसबमैसांइजोनांही ॥ ज्येसो ग्या
नधरेनरमांही ॥ ५८ नामरूप
तेसकलविकारा ॥ ज्योदिप्रति
मधिमांहीसारा ॥ त्योंहीज्योदि
प्रतिमधिमांही ॥ मैसायेकद्वै
तकधुनांही ॥ ५९ ॥ द्वैतद्विषो
दुषकौकरा ॥ बृहन्नद्विनि
जसुप्रविसारा ॥ लगे ॥ गनसंहु
षलहे ॥ तबसुषतुबतेतजि
जलमहे ॥ ५९ ॥ ज्योंहीद्वैतद्विषि
सोदुषः ॥ येकद्विषोहीनिजस
षः ॥ प्ररुतुमप्ररुबिरचिहीक
री ॥ सोमैहिरदैआपनैधरी ॥

पानको करे ॥ ५१ ॥ सो निज बख
ने जां नै नांही ॥ प्रथम बंधे ता
तेन हा जांई ॥ कर सकं रया लत
के जो लो ॥ सरु ति ॥ दाय निबुते
तौ लो ॥ ५२ ॥ च कर सकं लो के लन के
प्राथ ॥ घान पान सो निति सं
ताथे ॥ योगा बुल्ल मादि धिर र
है ॥ देहा दिक्का सुधि बल
५३ ॥ जे सै सुपु दे धि करि जां
ताते सुपना सो नहा प्रबूरा
ते सै मोह नि स्या ले जा गे ॥ क
न लिपे वृल्ल प्रबूरा गो ॥ १००
दे ॥ रुथ का बुल्ल मिलि र सो
न व को बा ज सक ल तन दे हा
सो न व मै बहु स्यो न हा भाव
बुल्ल मिल्यो सो बुल्ल समा
१०१ ॥ ता नै दे रु प्रा दि बिस ता रा

तत्र विचाराः तो नही
 प्रकृति पुरुष बिसतारा ॥ ५७ ॥ जो
 कथ्ये दोसै सुनीये कहीये
 मन प्ररु बुद्धि जलालौ नहीये
 सो सब नही जनाही ॥ ज्ये सो ग्या
 न धरे नरमाही ॥ ५८ ॥ नाम रूप
 तस लबिकारा ॥ ज्ये दि प्रति
 मधि मांटी सारा ॥ त्यों ही ज्ये दि
 प्रति मधि मांटी ॥ मों ही ये कहे
 तक ॥ नां ही ॥ ५९ ॥ हेत दि धि सो
 दुष कौ कारणा ॥ ब्रह्म दि धि नि
 जसु प्र बिसतारा ॥ लगे ॥ गन संदु
 ष लहे ॥ तब सुष तु ब ते त जि
 जल गहे ॥ ६० ॥ ज्यों ही हेत दि धि
 सो दुष ॥ ये क दि धि सो ही नि जस
 ष ॥ ज्ये रू तु म प्र ह्य वि रं चि ही क
 री ॥ सो मों हि र दे ज्ये प नै धरी ॥

मेरो गुणितो अति ज्ञानो ॥
बसोत नाति हिरदा मे अज्ञानो ॥
१०१ तु मेरो हित जनना हिं वि
चारो मे हं विदुषं तल न चारो
मे हं विदुषं सकल को ई स र मे
बिन मे र सकल अनी सा ॥ १०२ ॥
सां विरु सति जे ज प ल प जे ग
पि प स म द न प्र कार ति ने
गा ॥ १०३ ॥ ब स तु त सा ले सा रा
ते म म स मे रे अ चार ॥ १०४ ॥
ता ते जो म म स री ण हा अ वि
उ त म ब स तु स क ल सो पा वे ॥
मेो बिनु ब ह स च न नु ग ले ॥
तो ह क दे न सु प्र को ल हे ॥ १०५ ॥
मेो निर गु ण परि स ब गु ण से
वे ॥ मेो निर पे ह स क ल चित दे ॥

तजानौ ताको नै दिष्टान् ७४
घानौ ७४ जैसे ५५ नवत ७५
कोई सोवत सुप्रनल है पुनि
सोई बहुत नातिकरै बुरारा
लेन नजल पा न प्रसारा ७५
बहु स्योरै निपरै तें सोवै दिव
स चये त्यों ही नु ठि जोवै जैसे
ई केई दिन बीते जागत सोव
त सकल बितते ७६ बहु रू
वै हू जैसे सामति ग्रानै राति ह
दिव सकी निद्रा नानै कदेन
सोवै जागतरै सोव ध्यान प्र
लसन लाग है ७७ जैसे काज
आपनो जै चौरा दिक् धन
कौन ही हरे परिज बय हां जा
ग्य करि देषे तब व ३३७ ५४
था करि देषे ७८ सोवन जाग
न सर्वा बव हारा जाके हित जा

मंरो गुजिमतौ प्रुतिजो नौ ॥
बहोत चांति हिरदा में प्रुं नौं
१० ही तु मरो हित मन बरा हिं वि
चारो मे हं विदुस संतन धारो
मे हं बुद्ध स कल को ई सः मे
बिन और सकल प्रुनी सः ॥
सां विरु सति ते ज प ल पं जो
पिये समद म श्री कार ति
गा ॥ और बस्तु त सं लो सार
ते सम स मे रे प्रु धार ॥ १० ॥
ता ते जो म म सर ण ह प्रु वै
उत म बस्तु सकल सो पा वै
मो बिनु बह स प न नु ग
तौ ह क दे न सु प को ल है ॥ १० ॥
मे निर गु ण परि स ब गु ण
वै मे निर पे ह स कल चित

नलावे ॥ ८३ ॥ तब हंज नैसक ल
पसारा ॥ प्रापपरिसुषदुषवि
वरुना ॥ बहोरिसुषोपतिमाहि
संबजाई ॥ मनबुधिचितप्रह
कारनका ॥ ८४ ॥ तब प्रातमानि
रेतररहै ॥ कजागेसकलबात
कौक ॥ लीयोदीयोप्ररुप्रायो
गयो ॥ जहालगे प्राधिप्रनूनयो
८५ ॥ सोप्रातमायेकरसरहै ॥ ति
कालकोबातनेकहै ॥ यो
अबनासीप्रातमयेक ॥ हजेमा
याने ॥ अनकतीन ॥ तबप्रात
हैमनके ॥ नननरासैहै ॥ ति
नके ॥ तिनतिनकूतानंगुणज
है ॥ तानंगुणमायाकेतहै ॥ ८७ ॥
अैसीबिधिनिअैयसोजाने
निसदिनहिरदैबिचारदिठाने
सकलनुप्राधिनकोप्राधारा ॥

नहिरहें मे भस्त्रो और सकल त
तकाल निवास्यो ॥ ११ ॥ अथ
तारथ करितिन सांन्यो ॥ इत ज
वत जिबू पिप्यांन्यो ॥ तब तिन
कै प्रसु, ति करत ही भूला के
देषत प्रागे ही ॥ ११ ॥ सब ही न
कौ प्रा नंद व ध्याये ॥ तब मे प्र
बने धाम सि ध्याये ॥ ता ले उद
वये तुम जा नै ॥ अथ नो प्र म
नाग करि मां नै ॥ ११ ॥ सब त क
दि क नि समालु स काये ॥ ये व
न तु मे मे दीये ॥ ता ले य ह ज
न उर धारो ॥ इ सब जा नि सब
त नि वारो ॥ ११ ॥ अथ प्रा ध्या
स द ई र हो ॥ दु जा सकल व
ना द हो ॥ प्र सै ह

तातैजगतैदिधिनुतारै सांभ
उजांनिहिरैदनसीधारे ॥२३॥
त्रहमांघोडै निश्रुलरहै मन
अकरमकधूकरमनग
है यीसारसितबु नरसभागी
निजानंदमैसां जोगी ॥२४॥
अंबुयाजांनिसंबत्प्रागे नै
चलहिरैदे सप्रवरगै सो
जोरहैदे लहगारां ॥ तौहपि
रिजरम पजैनांसा ॥२५॥ जौय
है लजायेजोप्रावे ॥ बँठेनुठे
पावेप्ररुषावे ॥ जौरंकधूक
शै ॥ वलरा परिस्सोसिद्धि
नजांनैसारा ॥२६॥ निश्रुलर
है निरं नमंसां देसादिक
कधूजानैनांसां ॥ जौकोइत
नबरनिधारे बरुस्योपुरा

जेवा॥ नगतिरुलै परिये हरि
राणा॥ धरे जगत जनम प्रपु
णा॥ धि प्रबयेक प्रसन के क
मेरे या संदेरु हा दहो॥ जे बह बि
धि कृति स्मृति जां बौ॥ ते लो ज
साधन निबषां बौ॥ शुभ कृति सं
ति बह पंथ निकरौ॥ प्ररुते ह
बहते मिल्य गंरौ॥ तते ते उ पंथ
प्रसेषा॥ नक्ति सजा के क ध्व बसे
षा॥ अजा जा पंथ तु मे प्र नूप रिये
बह स्यो न व सा गुं न हा प्रिये सो
सो पंथ कृपा करि करौ॥ मेरी स
कल मुदता दहो॥ हा तु क बि न ये
हे जो न हा के ह॥ ग्यां न ल र से सो तु
मते ल है
श्री

श्री नगवान नवाने

तातैजगतैदिधिनुतारैस
उजांनिहिरैदनहीधारै
त्रहमाद्योडेनिश्रुतरहैम
वच्यकरमकधूकरमन
हैःयीहारहितब्रह्मरसने
निजानंदमैहैवैजोगीः
श्रैब्रथाजांनिसंबत्प्रागे
चलहिरैदेष्ट्रह्मप्रबरागे
जोरहैदेहहमायेहातौह
रिजरमउपजेनाहीः
रुदेहजायेजोप्रावेबैठेउठे
पीवैश्ररुषावेःश्रैरंकधूक
रैबिबसारापरिसोसिद्धि
नजांनैसाराःःहैनिश्रुतर
हैःनरजानमाःदेहादिक
कधूजांनैनांःज्योकोइत
नबरत्रनिधरैबहस्योपुरा

इ वेदतत्त्वं तं रह्यो ॥
प्रापस्वामावस्वामातिनि क
सौं ज्यो ज्योतिनकेनयेसुन
वात्स्यौ त्यौ जा ज्यो सु र वि को न
वात्स्यौ हा त्यौ प्रा च र न के रं स
स्यौ त्यौ प्रा प सु र वि वि स त
रे १२ परं परा य ज्यो ति न तै ल
तै ति न के कृ त सं वृ ते ज्ये षे ॥
न तै प्रा प करै ब ह गं या न
ना ति च ला वै पं थ १३ ज्ये स्त
धि नु पं ज पा षं डा ॥ ज्यो न ध
न लो वै स त षं डा ॥ अ न मा य
रि नो ति व त लो वै ॥ त तै त
प य न हा ज्ये वै ॥ १४ ॥ प्र य न्नी
नी रु चि प्र नू मा नो ॥
म प्र रु ना वै ज्यो नो ॥
व सा ध नि

चरमकृतज्ञो गुणप्रदायः
 त्रुणुणाश्रितः सिकोसे त्रु
 विषयनकोकधुनामन लव
 १०२ विषयचित्तदौनुचरम
 जानौ ब्रह्ममांसिरसिदोन्मौ
 जानौ सकलज्ञात् प्रापकौ
 देषौ सबद्वैतयेक तनहीले
 षौ १०३ ब्रह्मप्रापयेक रिमा
 नौ तन्नापकव नहीश्रानौ
 निसा नहृत्नबिचारहीकरो
 प्रबलनरोनु रने चरौ १०४
 ममंहीननिरंतर हो यावि
 पि इयात् बाजसब हो जा
 तैबहीरिननोमैप्रावौ ब्र
 रूपहाय ससमावौ १०५
 कौतुमसौकहो बिचार स
 धन जोगसकल सार

द्वेदतत्त्वंकं तंरहौ॥
प्रापस्वाजावसमातिनि क
होऽज्योऽज्योतिनकेनयेसुम
वात्स्योत्स्योऽजान्योसुरतिकोज
वात्स्योहात्स्योऽप्राचरनकरै
त्स्योत्स्योऽप्रापसुम्हतिबिसत
रैः॥१२परंपरायजोतिनतैह
वैः॥तेतिनकेकृतसंभृतेजो
तिनतैःप्रापकरैबहुगुंथाः॥
नाः॥नातिचत्वावैपंथाः॥३॥प्रेस
बिधिनुपेनपार्षडाः॥ग्यान
रुमहेविसतषंडाः॥कनमाप
करिमोहि॥तहेवैः॥ततैत
त्वपंथनहाजोवैः॥४॥अपनी
अपनीरुचिः॥पूबूसानो
करमश्चरुनाधैः॥ग्यांनो
बिधिसाः॥नानिनासुनावै

कथनचाहंकरं प्रकाराः सब
 को। तसबकोप्राधाराः ११०
 सबउपजाउं सबप्रतापः
 सबपापों सबसंकटालो।
 तातैमोहितजे प्रपाः तब
 हीसुधीसरणि तबजबभ्रावे
 १११ सरणागतिकोंबेगप- धा
 रों। प्रापामलाः नवनयरा
 रों। तातैसबतजिसोंकोन
 जे। प्रापामोहितगतः तजे
 ११२ उद्वमैयेग्यांनसुनायो
 संनः । दिक्निः मसुधपा
 यो। तिरः ररु॥ संदेरुनफाड
 मोहितपल । कोबिधिः सब
 पाइः ११३ बहूतनातिममपू
 जाकरीः बहूतनातिप्रस्तुति
 प्रनः नरी बिस्तरीः मेरोमज

तैजसमनसाप्रहोः होतः ॥
येन हृद्वतोसौ कस्यो ॥ प्रमग्या
नहि हृत्सारः ॥ याकौंगहै निज
पदलसो ॥ ३ ॥ देसबसंसार ॥ २२
॥ ११५ ॥ चेतीश्रीनागवृते ॥
ज्जापुराणेः चेकाहसस्कंदे ॥
श्रीनगवदुर्द्धवसंमाहः ॥
हंसगीतायां ॥ नायायावीहसे
अध्यायेः १०३ श्रीसुर्भेज्जने
वाचै ॥ श्रीपरी ॥ श्रीसोसुनि
रुज्जीकोग्यांन ॥ नहिउया
रकनरमसबनांन ॥ येन हृद्व
दिहकरिउरेपरी ॥ परिकथ
सननाहमसाकरी ॥ श्रीने
हवउवाच ॥ प्रमदयालदया
निधिदेवा ॥ मोकौबडौबतापौ

रक्तप्रदुसीतलहिरदें
निरबैर सब निपरिसुहिरदें
वृक्षदृष्टिदेधैसबमांसी
बिचारतजेपलनांसी
ताकौप्रथमसुहिरदें
पासबंधनबिलनचौ
कौश्रीसोबलजानी
यासकिसुमारी
प्रश्रीगुणातजे
ममचरणनिजजे
उषताकेबसिरदें
कधूनसागहै
नवबंधनदहै
रिमेरौकहै
मचरणनित्यावै
नेतेंप्रापधिप्रावै
रममनानहै

पसमयेज्ज नयो तबयेत
लीन केगयो पुनिने सुधि
सनेयुरुपांनो वृत्तासुर
तितवुवषांनो सोईसुरतिपु
निवृत्तापढायो नगवादिक्
स्वायंनूपायो सातकारिषु
युजिनप्रादी अरुत्वाये नू
नूकन्यादी नयतिनप्रमनत
ये विसतारा नानां विधि के
नेदप्रपारा नरुनरुप्र रसि
दगंधर्बी विद्याधरजस्यादि
कअबा र सपतद पनरव
प्रकारा किनरपुरषादि प्र
पारा सतरजतनतिनकीउ
तपति तातेबहुविधि नई
प्रकृति १० तिनते नयेवसोत
विधि नेद तिनते साहाजा

इंद्रायै जी तिसके न साकै री च
परिग्राही न सोयै न न ज व र
विषाय क धून करै सकित्तव
सी विषायै सनु नै सकल नि
वासा प्रापनि ला उ न व न ये
रुं म धु पा व क प्र ग ट क र्यौ
ले प्र स न हौ प्र चंड करै सब
तस्मा त्पौ न न न के प्र ग ट जो
तौ ई जारे पापरै सब साकै री
उ व सौ रू पाय के निकटि उ प्र
वै नौ न प्र ताप नौ सिखा पावे
सद्यै सिद्ध जोग प्र घा ग रू
बिधि ज न्न सोयै जो सा ग रू
सांघि विचार स क ल जो ज न
द्वेद पट्टे द्वे सब दाने तप
तौ करै ईंद्रायै न न बाधे प्रौरम
कल धर म न नै

पसमयेजब नयो तबयेत
लीन कैगयो पुनिने सुधि
सनेयसुपांनो वृत्ता सुर
तितवुवषांनो सोईसुरतिपु
निवृत्तापढायो नगवादि
स्वायंनूपायो सातकारिष
गुजिनप्रादी अस्तुचाप
नूमन्वादी यतिनप्रमनत
ये बिसतारा नांनो बिधि
नेदप्रपारा पुरनरप्र रसि
दगंधर्बी विद्याधरज
कअबा २ सपतदी पनरब
प्रकारा किनरपुरषादि
पारा सतरजतमतिनका
तपति तातव बिधिचई
प्रकृति १० तिनतै नयेबह
बिधिचेद तिनतै सोहीनां

विद्विस्तरेः सति वंत्कप्ररुहि
ठसंताषः कबहुं कहुं करेन
हारोषः पवकषससुतिपूर
गतपसाथ्यैः मनईद्रोयदेस
दिकबाथ्यैः तीरथवृत्तप्रादि
देजतेः सबप्राचरणाकरैज
जेतेः पपिजोमेरी नहि न
होईः तोनिरमलनसासोवै
कोईः बिनरोमाचद्रवंबिन
चेतः प्रानंदाश्रुकलाबिन
नेतापहीनौलौसाधुनहि न
कहैः नगतिबिनो नुरसुधि
नलरुः द्रवैपुसतैजाकोच
ताकबहुरोवैसेरेसे ताः ५७
कबहुगदगदबाणासोई
कबहुउचैगावैसोही कब
हुसुधरसुधरसुधरगावै क

नतिनतै च व्याप्यताः ॥ १५ ॥
यकेषु विधिधरमनिना
वैः तिनतै भुक्तिमुक्तिकृपा
वैः यकेषु स्यात्तु विसत
रीये ॥ जाते सकलदुषनतै
तिरीये ॥ १६ ॥ जाको जसयाज
गनै जौ लौ ॥ सो नररसैः रग
नै लौ लौ ॥ येकई सांसां कामः
घानैः प्रागै सुरगनरकनली
जानै ॥ १७ ॥ जातनरिना रे नो
गनको ॥ यासां ही धो डि जाय
यातनको ॥ प्रागै सुषदुष
लरुनको ई तातै भागः ॥ रा
सबकोई ॥ १८ ॥ जै सै गंधनक
हिनरमा ॥ धरमरायकी
षविरनपा ॥ येककहै सम
दमपुरुसति ॥ इजेसा धनस

गनिमैं दोजे देकरि कुंकल प्रसि
प्रतिके जे हेरता तैको ई नल
नली रहो। प्रपने सुह रूपको
गहो। त्यों ही जतन करे सबको
ई परिजात मानि निरमल हो
ई हेर मेरी न कि माहि जब आ
वै तब सब कर मन लिन स्थिर
कावे। निरमल होय ल है निज
रूप प्रपवे सो लित तै नव कं प
ई ज्यौ ज्यौ मेरी न कि लि करे ॥
मेरे गुण निहि दे नै चरे सरव र
एकी रतन सु मरणा ठाँणो ज्यौ
प्यौ प्रीर बासना नानै हे प्यौ
प्यौ हे प्रकाले ग्या न हे धै
न निरै सब आन । हेत जा
कित न बहा रहो निर

हितसाधैकषः ३३ ति
कषरुनहाले ३३
नितिसेवैते ३३ मुनि
टिहारस्य ३३ पने
३३ ३३ ३३ ३३ ३३
दाप्रायेताको नमन
निचित त्वाडाको त
मेरेप्रायसोई ताबि
रप्रा ३३ ३३ ३३ ३३ ३३
सतबिधनहाप्यारो
कर नरूप नमारो
पिद्यत्मा संकर्षणना
अरु गोत्पौनहासाई
यो नहापियमेरेमरु
सातुकासा नस
मसे नरुमहाप्रायक
कैरहै निरंतरनेरे ३३

सदिनममचरणान्प्रनुरागौ
७७ जेयाचूबहीचहैछिदकाप
अरुचासैममचरणनिप्राये
तेतिनकासंगतिपरहरेजे
नरजुवतासंगतिकरै७१जु
वतासुषनिमुनैनहीप्रवना
नैननदेपैकैरनगबनाकव
रुचलिरिरेदेबहाप्रानेमन
वचिकरमछचननिदेतरन
नै॥ जैसोबंघनकहोनहीई॥
कोटिनसंगकरैजेकोई॥ ज्यौ
ज्यौधितप्ररुदोधितासंगरी॥
बंघनकरैहातप्रसंगरी॥ ७२॥
तातैतिनकेसंगहातदौ॥ स्या
वधानममचरणनिचजे॥

ता ज न के पा १ ॥ ये त न फ रै फ ॥
रं मे प्रो धै ॥ १ ॥ सां ति क गु ॥
ध्या री य स दे स ॥ २ ॥ इ ता
च र णा नि षे ह ॥ न सै ॥ च न त
न ह न स र क ॥ मो हा सौ नि
त स ॥ प्र ० ॥ १ ॥ क ॥ ४ ॥ सा त ल
सि र दे बि ग ॥ प्र च्च भा न ॥ क
पा व त स ब ये क स मा न ॥ क
ध स का म च ले ॥ १ ॥ वृ धि ॥ मो
हि से य पा र् इ प्र ति ॥ सु धि ॥ ४ ॥
सु कि ह तै नि नि स ॥ १ ॥ स र स
ते ॥ न म र स ॥ प्र कौ ल ॥ ता स
प्र कौ स ॥ प्र ज्ञा नै ते ही ॥ प्रौर स
क ल स म ॥ न स के ई ॥ ४ ॥ नि
स्फु ज न नि ॥ १ ॥ स ॥ प्र पा व
स्फु व त के नि क टि न प्रो वै ॥
वि ष ॥ य न के बी ॥ न न ॥ व ॥ १ ॥

सहस्रसिखप्रंगवतांजुं जोग
सहस्रसिखप्रंगवतांजुं जोग
मनबेगपरजुलीपरिरुने ७५
समग्रालनने ७६ इडापूरि
नपुरावेकरुई देहसमा
निचलेनसाडोले नालादिधि
कषूनसाबोले ७७ इडापूरि
कुचकधिरधारे पुनिरिच
कधिगुलानिसारे बलोके
पूरिधिगुलाहारईडानिसा
रेबारबार मेरेलेलिरहा
मेधरे ईद्रायेप्रसकल
पररुने ७८ उहवहेविधि
जोगकरुवे नालेनेदहास
तगुरतेपावे ७९ मंत्रसहस्र
सेनामसगनी मंत्रविनासा

निम्नप्रणयः ॥ ८ ॥ श्रीगणेशाय नमः

सजलमेघतनस्योन्मत्तवदि

तत्तुल्यप्रबलरुचिध्यांसुख

दसाससो नानिधिप्रोत्तवत्

मकराकृतकुंडलसुचकान

ना ॥ ८ ॥ कंठकौस्तुभमनिबन

मालाः नुरत्तगुलतालचित्त

बिसालाः संघरुच्यक्रगदा

वसुस्तथारिहसो

नासदम ॥ ८ ॥ सुममुकट

णजस्योऽप्रतिलोच

सिरधस्योऽनालित

लकप्रबुजवरनैने नक्रिप

सादसूधाकोऽप्रेनः ॥ ८ ॥ कर

ककणाऽंगदमुद्रिकाः परा

नूपरकरिमेऽनुद्रिकाऽप्र

कुसवजुञ्जजाऽप्रविंद

बहु प्रेम भगवत रस जावै ॥ ५ ॥
कबहु प्रेम निरत प्रेम बसि
करै कबहु प्रेम प्रण निबि
सतरे ॥ लोक बद्रु का लो जनु
जानै ॥ ज्यो न भत सकल धो
वो नै ॥ पर जे सो मेरे जे सो
इति चपत ॥ धि करत सो
इ ॥ सकल चव क पाप नि
वारे ॥ सकल चवन को सो
॥ तापार ॥ ६ ॥ सै रु म मा ले
नता होई ॥ बहो जल मा सिधो
इधे सोई ॥ ७ ॥ जत न धरत
बिधि को जे ॥ म हा ब हा त
क सोटा दा जे ॥ ८ ॥ परिके ई बि
धि सुहन होई ॥ को टिन जत
न जे र जो को ॥ सोई ले म प्र

सकलचित्तवृत्तिनिवारैः
या विधि मनःप्रपन्नैव सिद्धे
तत्र विराट्मैधारेण सकल
विराटरूपममजानैः। सो
तैर्निभकध्वजसाहानैः।
यौ विराट्ममरूपसाज्ञानि
नरुचैत्रयो जेदकौ नानिभ
तत्र ताहते मनसा निवारैः।
सद्दिनिरंजनबृहस्पतिविचारैः
सद्दिष्टबृहस्पतिविचारनिरंतरक
रैः सब्रह्मकारहरिपरहरेः
प्रातमबृहस्पतिवेककरिदेवैः।
चेतनरूपप्रपंडुतिलेपैः।
निजानंदनरुचैः चलनिरथा
रुसतिरूपसो वारनपारा।

जानंदपदलसे ॥ ६६ ॥ नैननिमां
रिरोगजोसे ॥ ६७ ॥ तातेकध्वदे
षेसाई ॥ पुनिज्यौज्यौज्यौषदे
लगावे ॥ त्योंत्योंद्रिषिसेत
नितिप्रावे ॥ ६८ ॥ त्योंत्योंसक
लबस्तकौंदेपे ॥ प्रापसापर
मसूषीकरिलेपे ॥ तातेचरुति
रूपीद ॥ अज्ञान ॥ जातेदेषेदे
वनिरेजन ॥ ६९ ॥ तससारसुप
नकां ॥ आवे ॥ तससारसा
हिबलजावे ॥ अरुजाआवेमे
रेचरणो ॥ पावेमोहिमिदेंच
वकरणो ॥ ७० ॥ तातेसबसाध
नचरमजांनो ॥ स्वपुसकां
निद्वैतकरि मांनो ॥ मनक्रम
वचनसकलकौंत्प्रागो ॥ नि

सकलचित्तवृत्तिनिवारैः
याविधि मनःप्रपन्नैर्बसि
तव विराटमैधारेः सकल
विराटरूपममजानैः। नो
तैर्निभकधूनसाहानैः ॥ २५
यौ विराटममरूपसाजानि
नैर्द्वैतयौनेदकौत्तानि ॥
तव ताहते मनसा निवारैः
सुदिनिरंजनबृहत्तविचारैः
॥ २६ ॥ बृहत्तविचारनिरंतरक
रैः सब प्राकारहरिपरहरेः
प्रातमबृहत्तयेककरिदेवैः
चेतनरूपप्रपंडुतिलेयैः ॥ २७
निजानंदनैर्द्वैतनिरघा
रैः सतिरूपसोवारनपार
येकप्रजनमाऽप्रापि प्रापः
सुषुधुधररूपनिनसापा

मोबिनसंगतजैसबप्रान्त
 मेरोध्याननिरत कर
 प्रे... ति... मंधरेः॥
 कसनवचन निहिरदेरा
 धे उद्धवप्रौरप्रसनकौन्ना
 धेः १७५॥ उद्धवउवाचै॥ हेष
 न्तुमको ॥ विधिध्यावेः
 कौणरूपसैति तलगावः॥
 नंतोक्तिसेइ वचरणो
 प्रिजत्तसेमादा मरणो ७६
 कृपासिधूः मकरणोकरा
 ७ ॥ नजोगवाणीबिसतरो
 सुनिर्ध वनिज नकोबो
 नीतवप्रारिजा १५७५
 नीनश्रीनगवानुवाचै॥ ने
 धवतोकोध्यान नाने जोग

मरोरूपजोगतजान जोगविनानहीअपजैसान
 सबसाधनकोसाधनरूप जीवब्रह्मकोहोयसह

१०२॥ हे सा। ये ये डाले सो कहे
जाकरि हरि पुर जाया मरि या
मै बिबन प्रने कहे। नारो स
मजाय ॥ २२ ॥ ४७ ॥ १०२ ॥ ये ती
आ जा गवले वहा पुराणे ये कहे
दस लकडे ॥ श्री जगवद उद
वसं वा हे ॥ अतुर हसो प्रु च
ये १४ श्री जगवद वा न उद वा ये
॥ चौ पशे ॥ उद व जोग ये च स
मजा उं ता नै बरु ते बिबन व
तां उं ॥ जो ई डी व स न प्राण ही
वये सा व ध्यान के जोग ही
साथे ॥ जो मं चरे प्राप नौ
चित ता कौ सिधि बिबन
नै निति ॥ जो तिन सिधिन
को पर बरु रे सो म म चरण
न को प्र नु सरै ॥ २

सर्वेनाम सौनुतसर्हे प्राणा
धामः ८२ पूरे राधे रजकक
शे के कारसन्नुरधरे धरा
नादनुचनुरध्यावेः लासौ
मिलिके प्राणचलविः ३
योगकालप्र न्यासेकोरिः प्रा
हृत्तासलीमैधिरुशि व
हृत्स्यो श्रदेकचलकोध्यावे
अलप्राधरासो विगसावेः
३० उदें मपते उदें करेः
ताकोनधिसूरजलाधरेः
सूरजमेपूरणसतिप्राणैः
सिलनें प्रनलनतजनयमा
नेः ८५ प्रनलननधिसनस
हृत्तावे प्रेमप्रतिसौम
हृत्तागावे प्रं गृधसनाधि
अनुपूररुप मृत्तिसात

हीजातें देहस्य
एते इति

कप्रमाणां

मासत्रिये जौलौ सुसामोस

अज्ञो लनक

विसलारु जहलललक

सोसोसोसोस

धिसोकादीये कहे नून्य

अचोसोसोस

सुष्टिजज्ञा

सोयेसुसु

सिधिकहावे समजन

निकटिनप्रावे सुजे

सैशियनो गनकरै जहात

ताकधु बिछोपनपरै तिन

सबनो गनितक

क चरणद्वैदुषद्वैदु १०
यनगणप्रतिप्रनाप
नरुप्रधानं प्रचतन
जास प्रोरसकलप्रगवह
न्याए दिनके चाननिर
सबद्वेषण ५ बेंसकिसोर
प्रमसकुमार नयसप्रचा
प्रप्रारंवारः चरणनिते प्र
तप्रंगलियावेः येकगले
येकलसिरकवेः संरयोले
नप्रतेरप्रप्रयंत निसदि
नसिन्दे प्रियार्जे संत जोरप्र
सजांसप्रप्रुत्तरे मरेरुपम
इग चित्तचरेः प्रियाविधि
इप्रम ननलेचल्लोः तवी
दिप्रंगन च्यावेः केहिः प्रुति
सुदुसधनेमन चारेः प्रान

तक...
पञ्च...
सा...
मा...
ना...
रे...
ध...
सि...
न...
प्र...
वै...
मा...
या...
जे...
सा...

रु चरणदहेंदुषरंहे १०
नधनगणगणप्रतिप्रजाप्र
कास नुरुप्रधानप्रचलन
नास श्रौरसकलप्रगवह
नयण जिनकेध्यानमिरे
सबइप्रण २१ बेंसकिसोर
पुनसुकुमार नयसप्रया
जैप्रारंवारः चरणजितेप्र
तिप्रंगलीध्यावेः येकगले
येकलाशिरकवेः शंरयोले
नप्रतेरिप्रप्रयंत निसदि
नाहउदेप्रशाडेसंत श्रौरवा
सनांसवप्रहरे शेररपम
दुगचित्तशरेः शयाविवि
डाभन ननरंयल्लोहंतव
दिप्रंगन ध्यावेः केईः प्रति
रुद्रसुधनेमनकारेः श्रौ

जनप्रदरेन लोकोरि ॥ १ ॥ प्रथम
सिद्धिये प्रतिपुष्पान्नापि नरे
येन तेन मथि न जावौं प्रान्त
तिनके गुणव्याप्येन लोकोरि
नाम प्रनू किं कश्चिदेस्ये ॥
१५॥ इति सरवणसुखोसलत्त
नाइरिइसदेवैसलत्त ॥
मनके वेगमैलोत्तुप्याने
कामरूपवहुरूपवत्ताने
१६॥ प्रकृतनमैके प्रकृत
सिद्धिष्टटा प्रकाया प्रकृत
निजप्रप्रति तैने गग ॥
सोस्युं इक न्युं न ॥
मिनि प्रकृत तानि नरे
वादेने तिनकाने तिन
नेना सोस्युं इक न्युं न

६० कालबन्दी करमतीबुन
हीमायाः ज्ञाप्येः प्राय निरंजन
रायाः ज्ञेयैः जगति प्रपंडित
दाः ताते नुं पतंगाकोरिः
सुने रिः जगति साहि
समातिः तव हापतंगा नाम
गमातिः ज्ञेयैः प्रातमवृत्त
विचारैः एकजानिके हेत
निवारैः ज्ञेयैः सांति वि
आरहाकरतेः निसदिनवृ
लजाहि मन धरते गुणा
कारसक एत रभजागे ले
धे बृल्ल सो वत सो जागेः ३०
लेक रिष्ट लष्ट ल। सत्यि ज
ज्ञेयैः जगति तव ह स्यो नहा
वैः ज्ञेयैः वधि बह ह
हैः सरो निज्ञान ह य ह

जलघंता जाते हो वैधिसो
अचंता प्रतिष्ठा सो सिद्धि
कहा वै हरिजन ताके निक
टिन प्रावे र शवे प्रष्टा दस
अरुये पंच च मि ल्यते ई
स सकल प्रपंच धर्म म
ल रूप उचारी सा धा बह
तन ही बिसतारी नरे कर्म
धाराणा करि ले प्रावे तयो
न कौ बह बिधि बिचला
जो तिन ते बिचले न ही क
ही तो मम चरण निपाते
तब ही रक्ष जा धारि हते
प्रावे जैसे जोगी कौ बिच
वे सो सब उ धवते सो व

वक्तारहेलु नारि: सोसरनके
लख आहा नारि: प्रेसक ल
अचन मंथारि: उदवकी
नी प्रसन विचारि:

के प्रकार धार
एादेव प्रस सि धिना के वि के
धिनेव तिन के नां स कर पा
करिक लो: जोग निके विष
नन के दोह लो: तुव प्रा धान सी
आहे सक ल: तुकरी कर पा
साय जन प्रक ल उदव प्रस
हिर दे मंथारी: तब बोले
आधा व सुवारी: ३

उदव सि धि
कर सक लोय जम धार
करि ले लोय: तिन से
ह सि प्र धान: ह स स धि

ही करै काहू संकहू याहौ
नपरै हर सांतिक प्ररुकार
मन धारै ता कौ मेरो रूप वि
चारै तब जे इ दाये नो गन्य
करै बहूत नांति बिषय
न बिसतरै ॥ ३० ॥ ते ते सुषये जो
जायवै सो बहू पापति सिद्धि
कसवै मेरो सूतर रूप मन प्रा
नै ता ते च नवन का गति जानै
३१ ॥ जो करही वाले बुर देखै यो
च नवन प्रा चरण पे धै मेरे क
काल रूप मन धारै सब ब्या
पक सब देखै इ सबि चालै ॥ ३२ ॥
ता ते सिद्धि ईस ता पावै चिन
वन जानै तो बुर तावै जाही स
जाही करवावै ॥

वसुधैव कुटुम्बकम् । सोऽसुरमर्क
लवुधासीत् । प्रसन्न
वचनसंभारिः । कुटुम्बका
नी प्रसन्नविचारिः ।

के प्रकारधार

एतदेव प्रसन्नविचारिणोऽपि
विनेव । तिनकेनात्मकरणा
करिकालोः । जोगनिके विव
ननकोदहोः । तुवप्रार्थानसी
अहं सकलः । तुकुरीकरणा
सायजनप्रक । ल कुटुम्बप्रस
हिरदे । नैधारीः । तबबोले
जोषावसुरारीः । ३

कुटुम्बसिद्धि
प्रदसकलाय । नसंधार
करिजेवलायः । तिनसे
विचारिप्रार्थानः । दससधि

नैननमैसूर जिकों चारों प्ररु
सुर जिकें नैन बिचारों प्ररु परिध
नमो हिकों जेवें तब सो लिह
लो ककों देवों ॥ यप वन सहति
मोमै मन धारें तुलल लल मम
रूप बिचारें ॥ प्रै संकन कों जह
चलावें ॥ मन के बगडा हा हा ज
वे ॥ सारें मेरो रूप बिचारें
तिन ही तिनमै मन कों धारें
चाहै नयो रूप तब जो शी बार
नलागै सो वै सो शी ॥ कस्यो प्र
बेस हा चाहै जामै ॥ ध्यान प्राप
नौ ॥ प्रा नै तामै ॥ तब तान नमै ज
वै प्रै सो ॥ नंग फूल हा मा हा जै स
॥ मूल हार पद बंध ल गावै ॥

नको स्वामी करि मानै ॥ ध्यावै
मोहि सदा प्रहं ह्या तब कोई न
ला व्यापै हं ह्या ॥ ७ ॥ सब को व्याप
सकल प्रताता ॥ लिखे न सुर प्र
गनि जल सात ॥ ज्यै सै नो को
ध्यावै सोई ॥ प्रे सोल धिया पावै
जोई ॥ च जो मेरे ॥ प्रवतारनि
ध्यावै ॥ प्रायुष्य धृष्ट च वर मन
लावै ॥ ता को कहुन परा जया
इ सब हान मोहि बिराजे सो ह
॥ ८ ॥ यो धाराणा करै नमजोई ॥
सिद्धि न पावै योगी सोई ॥ प्रये
॥ प्रेत राधै सारे मेरे
नरुद्ध रिनिवारे ॥ ९ ॥ मोतै येई
नते मनासो ॥ तातै नमजु ननि
रुटिन जाई ॥ मोहि न लरु नै य

कहाये मिथ्या फल है कहे
नगहाये १ घनो संक ल्य
कौ सो हो ई यथा संक
कहाये सो ई जहांगयो
चाहे तहा जावे अप्रुति ह
तल सिद्धि कलावे १५
येद सन्नि लि प्रष्टाद सक
हाये और प्र चतुष्टन हि
येगा हिये ब्रत मान प्ररु
नूत न वृषि सब क छे जा
ने लष्य प्र लष्य २० यह है
सिद्धि त्रिकाल ग्यान प्रागे
सिद्धि ब्रह्मानौ प्रा न सात
नुसन प्रादिक जे हं हं ति
कहा निवारे सो प्र हं हं
२१ विष प्ररु प्रग नि सूर ज

नको स्वामी करि मानै ॥ ध्यावै
मोहि सदा प्रदं द्वा तब कोइ न
हा व्यापै द्दहा ॥ ४ ॥ सब मै व्याप
सकल प्रतीता लिधे न सूर प्र
गनि जल स्वात्त ॥ ३ ॥ प्रै से को को
ध्यावै सो शी प्रै सो ल धिया पावै
जोई ॥ ४ ॥ च जो नै रे प्रवतारनि
ध्यावै ॥ प्रायु ॥ अ ध्रु च व र स न
लावै ॥ ता को कह न परा ज या स
ई सब लान को लि बिरा जे सो ल
॥ ५ ॥ यौ ध्या रणा करे न म जोई ॥
सिद्धि न पावै योगी सोई ॥ पंथे
॥ ६ ॥ प्रै त रा धि लै सारे करे

ता तै न म ज न ति

स गुणरूपज्ञोक्त्वा विस्
ताराः सोऽनां विधिः स्य
रुमाराः ताहिताहिमाहि
मनल्याः ॥ १ ॥ सोतेसीसि
हिहापावै सबू स पर
सरूपर गंधः पंचनू
तकर धमबध्रः तिनमै
जाज्ञान् नल्याः ताताकि
रुपात्तमिल्या ॥ १ ॥ २७ म
रुतलुमैमनलीनावै पं
चनू तसाप्राकरिध्यावै
जाज्ञासाप्राभं नध्यारे
जाज्ञाताताताता लवध
रेः २ ॥ पंचनू तकर पु
मान्निदिताज्ञागीध्यारे
ध्यांनं तातासमैल ३ ॥ ३ ॥

नको स्वामी करि मानै ॥ ध्यावै
मोहि सदा प्रदं द्वा तब कोइ न
ला व्यापै द्द ॥ ७ ॥ सब मै व्याप

२० । लिपे न सूर प्र

निज लसात ॥ ज्यै सै सो को
ध्यावै सोई ॥ प्रे सो ल धिया पावै
ज्यो मेरो प्रवतार नि

ध्यावै ॥ प्रायु धा ध्रु च व र मन

लावै ॥ ता को कहू न परा ज या

सब लान मोहि बिरा जै सो ल

॥ यो धाराणा करै म म जोई ॥

सिद्धि न पावै योगी सोई ॥ पय

॥ प्रंतरा य ल सारे मेरे

न कहू र नि धारे ॥ ४ ॥ मो तै ये ई

। ता तै म म ज न नि

॥ मोहि न ल ल जे य

। मोहि ल ल न जै ति न को य

॥ ५ ॥ मोहि ल ल न जै ति न को य

उपजावे ३३ प्रादिपुरुषसोमे
शेरूप तामें चारें चितप्रनूप
ताते सिद्धिप्रभूसचापावेः
विष पन विन शानदवधारे
३४ निरगुणवृत्तमाहिमन
पदेः सबकरतासबईसावि
चारें ताते सितासिधिला
तसेः सोही सोपावे जेच हे
सुधसत्वमय सोहि विचारें
तामें जोगासन कों चारें ताते
सूदप्रपहारे घटपुरमी
नव्यावे कोरिः ३५ गगनिप्रा
चार प्राणमन चारें सबइ
पनुरमांति विचारें तबइ
तजें पवनप्राकासाः सुने
ताहा लों च वानि वासाः ३७

जो मन हो प्रकृति प्रकृत सरै ॥
परस रग प्रकृत नित प्रकृतै ॥
तब ते सहति विमान प्रकृतै ॥
ता यागी कौ सुध उपजा ॥ सो ॥
जोगी प्रान बंधावै ॥ प्रकृतै ॥
जो बसु प्रकृतै प्रकृतै ॥ ताता ॥
प्रकृतै प्रकृतै विचारै सोही ॥
सा प्रकृतै ॥ काल प्रकृतै प्रकृतै ॥
काल प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
ता सब को ईस नित स्वामी ॥
प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
सै सो कौ प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
कोई नित प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥
प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै प्रकृतै ॥

हम जलानुमकानी ता लें देव
जगति चोनी ॥ यह प्रहम प्रदु
नही करी ॥ ता सौ नै जा बिधि उ
चरी ॥ ता हा बिधि प्रबलो हि
सुनांके ॥ प्रे सैं वृत्त दि धि उ धर
नी ॥ कैर व प्ररु पा ड व कुर धेत ड
वही जुरे नार ध के हता ॥ यत व
प्ररु न के र वै सब दे धा सक
बंध व प्रप न के रिले व ॥ ये न
बहान को जो नै ॥ १ ॥ प्राप ही
प्राप न र कंडारे ॥ २ ॥ प्रे सी बि
धि माने प्रे संकारा ॥ प्राप हा व
न्यो मार न हार ॥ तब नै ता हि
न सम ज्यो ॥ ता को सब प्रप
मि टायो ॥ १० ॥ प्रहम करी प्ररु
तब प्रे सी ॥ तु म्म मो सौ की न
हैं जे सी ॥ ता तें न तर को उ च
ने ॥ या बिधि बल दि धि के

जोमनलो प्रदा हि प्र न सरै ॥
परसुरा प्रदा प्रदा नित्ता ध्यावे ॥
प्रदा प्रदा ति विमान प्रदावे ॥
ता योगीका प्रदा प्रदावे ॥ सो
जोगी प्रान ध्यावे ॥ प्र जो
जोब सु हि र द म ध्यावे ॥ ताता
को प्र न सो हि वि चारै ॥ सो ही
सा ध्यावे ॥ त काल ॥ जब प्रदा प्र
काल प्र न ल प्र स क ल निये
ता सब को ई स ॥ नित स्वा धी
प्रदा प्रदा कै सा स ॥ जोगी प्रै
सै को को ध्यावे ॥ ता की प्रान न
को ई मि टा वे ॥ प्र ग्यां न ॥ सब
प्र न ज्ञां मी ॥ ध्यावे मो हि स क
ल को स्वां मी ॥ प्र नां ज्ञां न न
न म म र ॥ ता की ॥ ग्यां न प्र काल
रु स ब के न न की ॥ प्र प्र कृ ति
गु ण नितै ॥ प्र रां ज्ञां नै ॥ प्र रू ति

हम जला तुम कानी ता लें यह
जगति चीनी यह प्रहम अरु
नहीं करी ता सौ सैं जा बिधि उ
चरी ता हा बिधि प्रबतो हि
सुनांके जे सैं वृत्त द्विधि उ पज
नी कै र व प्ररु पांडव कुर घेत ज
वही जुरे नार थ के हता पतव
अरु न के र वै सब देखे सक
बंधव प्रपने करि लेषे ये न स
बहान कौ जो मै सो रौ प्राप ही
प्राप न र कंडरौ स्त्री प्रै सी बि
धि मानै सैं हंकारा प्राप ही
नौ मार न हार तब मै ता हि
न सम जायो ता कौ सब प्रगप
मिटायो १०॥ प्रहम करी अरु ज
तब प्रै सी तुम्ह मो सौ की न
है जै सी ता तें न तर कौ उ च
रौ मा विधि ता हा दि हि के

जो मन हो इना हि प्रन सरै ॥
परसु रग सुद सुद नित्ता ध्यावे ॥
जिदिसा ति विमान हा प्रवे ॥
ता यागी कौ सुध उपजा ॥ सो ॥
जोगी प्राण ध्यावे ॥ ३३ जो ॥
जो बसु हिर दामे धारै ॥ ताता ॥
जो धरु रगे हि विचारै ॥ सो हा ॥
सा ध्यावे ॥ ६ काल जब हा चाहै ॥
काल प्र गल ॥ ४ ॥ सकल निये ॥
ता सब को ईस ॥ नित स्वाधी ॥
॥ ३३ ॥ ३३ ॥ कैसा सा जोगी प्रै ॥
सै मो कौ ध्यावे ॥ ताकी प्राणत ॥
कोई निदवे ॥ ४ ॥ ग्यांन ॥ सब ॥
प्रंजनामी ॥ ध्यावे मो हिसक ॥
लकौ स्वांमी ॥ प्रपनी ज्ञानै न ॥
४ ॥ मर गकी ॥ ग्यांनत्र काल ॥
रुसब के मनकी ॥ ४ ॥ प्रकृति ॥
गुण निते न्यारौ ज्ञानै ॥ प्ररुति ॥

मनलेषो ^ज वेदेषां नमैः
जानौं नैकारणं न निर्देस
नौ ॥ १६ ॥ छंदनिमाहि गायत्र
छंदः नैः प्रकारं प्रहरकै
दासबदेव निके मधिपुर
रासकलबसुनिमैमैबैसु
१७ नालकठयकाहस्यरमै
बिसुनामहाहस्यदिनकरम
तिनमै ननु जेस्य प्रमहारिष
तिनमै मनजेस्य वैराजरिष
१८ देवप्रारिष नमै नारदजा
नौ कामधैनिधैनिनमैमं
नौ सिधनमैमैकपिलस
रूपः १२ प्रजापतिनमैमै
रुदधिः तिनमैमैकरजा
लौनधिः वाहनमैप्रथ्याल
मबादाः सबप्रसुरनिमै
पंथीनसाहि

बहीकी मैं प्रतिपालक
 रूतिनतिनकी ममप्राची
 वसिष्ठप्ररुजोगी साधिरु
 ज्यांन रमय ॥ ५ ॥ पर
 सबकीजीवनिसक लकासा
 मी कोसबतावको धतुजोमै
 सबमैबाहरिचातरियेक
 मैंब तैसकलप्रनक ॥ ३ ॥ प
 चतूतसबचतनमांसी बाह
 रिचातरिदुजानांसी त्योंसब
 मैंहानांसीप्राण प्राणदुष्टिसे
 हाप्रग्यान परताते तचाव
 नहीप्राण नै मेरो रूपस
 कलकरिजांनै साधनसि
 सिकलनरमतजे मेरेच
 एनिरंतरनजै पुममप्रसाह
 म चरणानश्रवै प्रतिप्रया
 रनवदूषमिटावै येमैतोसो

मैं

निमोहि विप्रम सबा सार
सकल सर निमै रूप समु

२
धक धारि नमै रूप
मै लो धन प्र प्रायु धन मां
प्रम निवास मे कते नां
पजे प्र ति गरु न ही मा लै ति

मै पी प्र ल सब बना स
मै पि रो हत निम
तै हां हू ह स पति

३
सै ना पत
सै नां नी धर म प्र वृ
ति क हू तां जां नी सकल प्र
वृ ष दि न मे ज व मो हि जां नी
पि तर नि मो हि प्र र ज मां मां
नौ ३७ हू ल ज ग प सब ज ग प
न मां ही हू त प्र डो ह स भि क

बहाकी मैं प्रतिपालक
रुंतिनतिनकी ममप्राची
नसिधिप्ररुजोगी साधिरु
ज्यांन रमय द नगी पर
सबकीजीवनिसक लकासा
मी मैं सब रोजको प्रद जामे
सबमैबाहरिचातरियेक
मैं मैं सब तैसकलप्रनक पर
चतूतसबचतनमांसी बाह
रिचातरिदुजानांसी त्योंसब
मैंहानांसीप्रान प्रानदुधिसे
हाप्रग्यान परताते तजाव
नहीप्राने मेरो रूपस
कलकरिजाने साधनसि
सकलनरमतजे मेरेच
एनिरंतरनजे ममप्रसाह
ममचरणप्रवे प्रतिप्रया
रनवदूषमिटावै येमेतोसो

मैं

निमोहि विप्रम सबा सभरं
सकल सरनिमै रूपसमुद्र
सकल मथक थारि नमै रू
द्र। नै हो धन प्र प्रायु धन मा
हो। प्रम निवास नै रूते ना
र ५ जे प्र ति गरु न ही मा ल ति
नमै। नै प्रो प ल स ब ब ना स
प्र ति नमै। नै प्रो रो ह त नि म
हि ब से ष्ट। त सं बू ह स प ति
जे बू ह स सि रे ष्ट। र ६। सै ना प
न मो हि सै ना नी। ध र म प्र
ति क बू ह स जा नी। सक ल प्र
वृ ष दि न नै ज व मो हि जा नी
प्रि तर नि मो हि प्र र ज मा म
नौ। र ७। बू ह स ज ग् प स ब ज ग्
न मो ही। बू त प्र डो ह स मि व

तांतीः ३ जाहंत हातुन हांतीये
क येसब नरमज्ञो दिष्टि प्रने
कः हे पुनये जग प्रतिविस्त
राः कुचंती चा विबधि प्रका
राः अरु राजीव सति करि
मा न्योः विष यन सौं बरुना
तिव ध्या न्योः या के व क द धि
क्यो प्रावेः के सकल वृत्त को
ध्यावेः ७ ज्यांन वेत नु व जन
रुं तते वृत्त दिष्टि देषत रंते
तेः तातै तुम अ व क रणा कर
निद्र वि नू तिसो सौं विसतर
५ तिन सै दे षि सब निमै दे व
तव अ दे त वृत्त करि लेषे
निनु अ व क उत म व न व
हरि ती करणा जै नः ६
नुद व प्र

निमैजांनौ॥ निषत्रनिमैंअ
नाजितमानौ॥ देल्लेअर
रहितजेइंइंअरकोस
सबहानमेइंइंइं॥ अगनि
माहिसतजुगसेनांअ॥ अह
माहिवेदमैंसांन॥ अहानि
माहिव्यासद्वेपायत॥ अहानि
तुजोबिसनपरायनो॥ अह
बितमाहिकवि॥ अहानि
सक्तिवंतमअयंतनमांनो॥
विद्याधरतिनमाहिसुइंअर
पधरागतिनिजैमं गन॥
सबत्रएजातिनुमैकुसुजांनो॥
तामबस्तमैंमांअतमानो॥
तिनमैअनडेसवविंसाए
जमागसवतिनमै

करों ११७. वमै सब हानको
 स्वामी ॥ ११८. सब हानको प्रव
 जानी ॥ ११९. सब हानको प्र
 जानै ॥ १२०. सब हानको प्र
 तांउं ॥ १२१. सब हानको प्र
 चीना ॥ १२२. सब हानको प्र
 लीना ॥ १२३. सब हानको प्र
 ली ॥ १२४. सब हानको प्र
 मांही ॥ १२५. सब हानको प्र
 कह ॥ १२६. सब हानको प्र
 दह ॥ १२७. सब हानको प्र
 थिक ॥ १२८. सब हानको प्र
 नथिक ॥ १२९. सब हानको प्र
 कांही ॥ १३०. सब हानको प्र
 ही ॥ १३१. सब हानको प्र
 जानै ॥ १३२. सब हानको प्र
 लीमानं ॥ १३३. सब हानको प्र
 जीव देवो ॥ १३४. सब हानको प्र

तारनिभै प्रकाशात्तेजस्वीभूते
 पावकजांनौ ॥ विष्णुपुत्रात्तन्निव
 लिमानौ ॥ कबीरनिभैः प्ररजुन
 बहामानौ ॥ उत्तपत्तिश्चर्याथान
 मीतेकरिजांनौ ॥ इडिधरचर्या
 द्यादिकजेते ॥ त्वेचैस्वकर्तितं
 तैतेतेश्च ॥ सर्वलोबकेभवत्प्र
 यनिगाहो ॥ तेजुडितिनैचैत
 निरसो ॥ सर्वदृश्यरस्यरूप
 सगंधतिलनतंपंचचतस्रं
 धात्रे ॥ इडिधरजनकसिख्य
 लकार ॥ अणुपरुषित्तु ॥ प्रक
 तिबिकार ॥ इडेनो ॥ तिनंकरि
 ध्येन ॥ इडेनो ॥ प्रगमागो
 सबसाह ॥ जा ॥ प्रमाणाकरं
 कवसा ॥ तिनपारदापान
 तबही ॥ प्रपन्नं

प्रकलाद २० सब परकास
मांसिदिनेस जधिरविगा
मांसिधनेस ॥ तन ॥ सो
सकलजे - दुगणा ॥ सबधा
तनमम ॥ कचन ॥ राज
निमां ॥ मेगजप्ररा ॥ द ॥ म
प्रनं गजे सिधिनपजावत
तहा ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
नागनममम ॥ पप्रनंत
ररनरनमांसिमम ॥ पन
रेस ॥ सर्पनिमैवासिकस
रपेस ॥ उच्चैश्रवालयनमै
जांनौ ॥ ६ ॥ धरन ॥ निमम
ममांवा ॥ रेश्वर ॥ रमग
नमैमैमगराज ॥ सरितनि
मैगंग ॥ सरिताज ॥ सरबप्र
श्रमनिमांसिसन्यास बरा

परिचयः एकः
संसारः प्राणाप-
रः प्रेत्यानां नि-
वृत्तलोपायजगत्
प्रस्तनननईदुःख
धिरकरिजिनदि-
ध्यानः ५० ताके
चरनाः जपतपः
करणा काचोक
जलजैसेः पलप
सबतैसेः ५१ तां
नपानः सबकौ
ध्यानः मोक्षि-
तावैः तबससा-
रः जौगुद-
नृतिकौ ग्यात-
ससब देषा ज्ञानवा-
न

प्रसूलाह २० सब परकास
मांसिदिनेस जषिरविष
मांसिधनेस तिनमैसो
सकलजेनुडगण सबध
तनकेके नवचन २१ गड
निमांसिनेगजप्ररावत
प्रनंगजेसिधिन प्रजाव
तहा बरुणजेसबजलज
नागनभमकम प्रप्रनत
ररनरनमांसिमक पन
रेस सर्पनिमैबासिकर
रप्रेस नैधवास्थनक
जानो दंडधरन तिनके
जममानो २३ सहरचभर
नमैमैमगदाज सरितनि
मैगंगारि दताज सरबप्र
श्रमनिमो संन्यासवर

इधरमा सो सब जलौं प्रचरु अथ
रमा जब नै प्रथम को यो कला
रात बनहा हुतो करु बिस्वा
रा १०॥ जो जे सो मानव तब धने
मोहि से यत तेनु धरे सो कृत्य
कृत्य के मम ध्या सो ला ले सो
कृत्य गुग लेनां सो १५ के काद रूप
तब बेद प्रै से कथु द हते नही
नेह सब ई दीये जनि लख
करै ॥ मेरो ध्यान निरंतर ध
रो ॥ १६ ॥ प्रै से सब ध्यापनि प्रल
तब मेरे से चरन न प्रनू सरे ॥
ता बिषे नये मति नंद ॥ बिष
नते मान्यो आनंद ॥ १७ ॥ तिन नि
ति बहु उदि मकरै ॥ रा जु सते
पनि बिसततै ॥ तब तिन ह
बेद बिसतारे ॥ बलौ त नांति

नांही बायुप्रगतिजलसूर
जिबोनी प्ररुमनयेषटसो
थेकजांनी रच चतुरदेसु
तमाविचार वृत्तचारीनमै
संतकुंभार प्रसत्रीनमैस
तरूपाराणी पुरषनिमैस्वा
यंनूकनूजांनी रथसाबधा
नतिनमैस सरप्रन
यठैरतिनमै रप्रंतरमै
सौधरमप्रनेको नगुल्य
नली प्रीयेमौ नस नि
३० तैरोपापुरषसं योपा
त वृत्ताहृतचरलवत
सकलवान निकलत
त रूतिनकाहिसम य
वसंत

सुद्रात्पदनाचैश्रौरेस्ववह
मुनिग्रहस्यस्यजंघनतेकी
ब्रिहस्पतचर्युंरसंनबली
शिवकस्यलनुपज्यौव

मस्तकहृतैश्च्योसंन
रातैसकलचित्तमैयेका

हिमेदिजोकरौ। सोसो
धन्यविसतरै। जाजप्र
। त्रौ। त्रौ। ताको

लषिणनिपज्यौ। नपाउंवेग्रंग
हृतैजोर्नचौ। नाचैग्रंगहृतैसो
नाचौ। तिनकेबहूविधिजये
सूनावा। तातेनुपजेनांनानावा
रहीसमदमसतिषिमासंतोष
सहादयावननुपजेरोष। तय
प्रसोचनिमृतममनक।

३५ अंगस्यमाधि योगः ॥ गनि
मै ॥ मै हौं हर्मिदिमावंत नमै
अरिजमै हौं धार जवः ॥ मै व
। लति नमै जेवलः ॥ तरे द्विष्टल
निमाहिष्टलमै हौं जू पः ॥ मेरे
हेति कः ॥ मम ॥ प ॥ बा सु
द्वः ॥ नवीर ॥ प्र धु मू
अनिरुधसरीर ॥ ३७ नाराय
एहयग्रीवमसीधर ॥ नरहरि
अरुजम ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
नमै ॥ पूजा जानौ ॥ धार ॥ दव
तंतामोका ॥ नौ ॥ ३ ॥ यतिनमै
धरतजेसव ॥ धर ॥ पूरबधि
तनामैमं प्रपस ॥ मै ह बि
श्री बसुगंधर्व ॥ धराणाजाहि
गंधमैसरव ॥ ३५ ॥ रस ॥ लसा
हिसवदशाकास ॥ रबिससि

त्यक्षिमां प्रस्वारयस्व हि ति। जीव
अथ यथा योस्व
बकोसाधारण धारणान् ३३
यचनुयाश्चनकेलपिणः। विहय
यजके। सिक्कं। त्वत्तं न कि
पाईचसौ। विप्रतिविदे लपि
णायेनकोसकलबेद विधि
ए ३३ गुनां धादिक संस्कार
तिहं वरणके ये धाचार मज
ते बहुरिजने नुपावे। तबले गु
रके निकटिरहवै। इव बहं वि
धिगुरकी सेवा कले। बेदपदे
रथ निनु रथैरे। जं ने मे घला
करजपमाला। उडक मंडल
रुमरगायाला। ३५ दंतवस्त्र
तनमलनिनिवारै। सीसज
टासस निकुस धारै। आसन

द्वंसंजुतिनकौं गीनतप
रैनषंड तातेक विचूतिक
हालौं जाक भरोरूपतसं
लौं भपप्रसुप्रबधु गति
विचूतिहाकसौ द्वैताद्विजै
साविधिदहौं ॥ लज्जातेजह
माधनदान ॥ सुइतापुत्वर
रुपा ॥ ७६ ॥ बलसोनाज्ञ
रुथीरजजसो ममविचूति
जांनौतहातसो येबाचूतितो
साजः कसी प्राक पारक
हिबेकौरही भमनधिरक
जकराणयेजांनौ ॥ यरुईग्यात
कदेमतिमानौ ॥ ईडीयवृष्टिदे
समन ॥ ७७ ॥ निशूलकरिदेष
नग ॥ ७८ ॥ भमनतैसब
कार सुतारा ॥ चेतनिमेरोरु

देव... मये... गुरु कौ...
तनकेक... प्रा... न...
ह्मा... प्रा... र... क...
कृ... प्रा... नि... स... न... र... पे... से...
व... गुरु... ता... कौ... प्रा... ग... पा... दे... वौ... न... ब... प्र...
द... प्रा... प... ह... ले... वै... बैठे... हा... दे... प्रा... व... त...
जा... त... नौ... ज... न... सै... न... र... नि... प्र... जा...
ति... व... र... नि... वि... ता... ति... गुरु... सेवा... करे...
अं... जु... ला... सौ... पा... धै... प्र... न... स... रै... अं... प्रै... सै...
वर... त... प्र... ध... उ... ति... धारै... न... न... ह... नै...
न... ही... नौ... ग... वि... धारै... अं... प्रै... सै... गुरु...
कु... व... र... तै... सौ... ही... जो... ल... ग... वि... द... स... म्मा...
र... त... सौ... ही... पु... नि... वृ... ता... के... लो... क... ही...
प्रा... सा... नौ... ग... ल... स्थ... न... न... ही... स... बा... ही...
गुरु... कौ... दे... ह... स... ब... र... प... ण... करे... बा...
वि... चा... रि... ति... र... दे... नै... धरै... गुरु... स... प्र...
प्रा... प... प्र... ग... नि... स... ब... सा... र...

ये कैसैं करि ल मन आवै करम
करते न किहा आवै अस्तु म
या । कौतन धारै जाते निज
धरम नि । सतारै । जो बकु
पयानौं करिहो । ये निज धरम
नहा नु चरिहो । ताप्रापै कोई नही
उचरिहो कहिहैं । ये निज धरम
गु एतही रहै । जैसा सूनि उद
वकी बानी १० । पन धाले सारंग
प्रांती ११ । प्रीति गवां न उ बौ चै । धं
निधं निनु ५ । जन मेर । हु जो न्ही
बरा । एते । मेरो निज जन क
ही बो सोई । तपरा धे धरतें आई ।
तातें । स प्रकार कस्यो । मोतें प्रम
धरम बिसत स्यो । उद्व प्रम ध
र । मम न क्ता १० । रसक सतें क
रे बूकती १३ । न कि बिना जोके

जैसी विधि न च साग्र तद्वै प्रामि
रे प्रम रूप कू न जै प्ररु र्जो क
सि तो ये स कामा तो से के ने डु व
ती प्ररु र्था म् ॥ ५ ॥ के ने काम र्ग
ले ब न वा स के प्रु थि कार धा ध
स न्पां स ॥ प्ररु र्जो नु प जै ने री
न ग ति ॥ ते न्हा के रे न्हां प्ररु र्
सि ॥ ५ ॥ प्ररु र्हे प्ररु र्च र्थ को ध्य
घा ते डू जो स क ल प्रु थ र म ॥ प्र
व ग र स थ को ध र म सु नां डे ॥
स क ल ग र स थ न को स न म् नुं
५ ॥ प्ररु र्च र्थ जो न्हा ठ र रा वि ॥
तो ग र स थ प्ररु र्म प्ररु र् ॥ गुर ते व
द प डू ज व ही ॥ गुरु र्द धि णा दि ये
दू नि ज व ही ॥ ५ ॥ गुर ते प्ररु र्जा
न ग र धा रे ॥ त व वि धि से ॥ प्र
न न्हा के रे ॥ त व दे ये नु त म् क
ना

केकरमनिवारो ॥ चबूणासमके
नेदनुपाये ॥ न्यारेन्यारेकरमगा
साये ॥ ७ ॥ प्रनां ॥ ८ ॥ धरमत्या
९ ॥ दो ॥ १० ॥ सोनरप्रायेतरक
मैपरै ॥ ११ ॥ १२ ॥ जैसैतोसोबिधि
नयेदिषायो ॥ घोरैकरमनिमै
७ ॥ राये ॥ तामैनाथ्यो ॥ प्रातम
८ ॥ ९ ॥ १० ॥ बिनसकलधरम
कोतजन ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ईन ल दृणानि विप्रप्रनूरका
 २७। नृमांते ज बल बुदि मथोर
 द रजुदार प्र चल गं चार वि
 प्रनक्त मेरो दिठ नाव ये हि
 वी के ए ए नाव २८ बुधि
 अस्ती क दां न प्र दं न वि प्र न क्त
 बुदि म प्रारं न बै स न यो ली न
 ल क्षिणा मंद बुधि फिर म्हा वि
 चषाणा रक्ष गा ई कृति हं ब रा
 नो से वै ति न ते क धूल हं से त
 वै सति रं तो थ क प ट ता नां ही
 ये ल धि ए स ड् नि मां ही ३० मि
 प्पा वः प्र सो चि प्र सू चो री
 बुद्धि ना सती क फिर दे क दो री
 कां म क्रो थ प्र र लो न वि कारः
 व र ए नी च के ये पु कार ३१ का
 म क्रो थ म द व द्मा र हित स

तबसागहैआपनाप्रती।पंचज
जयेप्रतिदिनकरवै।५।गुह
कोंनासाप्रसने।६।पकविकेपाठ
रिषनकोंजजे।ककिकधूसन
देवतनिजजे।।पूतनिबदिरस
स्त्रीर्षसोंपितरा।बुदप्रनादि
सकतिसोंसोनेद।६।सिनि
सबसानिबेमे।७।जाने।प्रोर
सबनिपरिकरा।आणें।जेस
सजसाकसंभनपावें।किंवा
येसतेनुपजावें।७।सासोंलोण
आपनोपावें।औरजइकरिन
हिसंतोषे।जेता।लागातगुह
कोई।तेतो।भनराधेसासीः७।
औरसकलमनसतलगावें।
नूदिनइजे।मारगजावि।जदि
पैरुकरबसासाही।तेफु।

चंचलकदेनकरै। लोकभारता
हिरदेनधरै३६। नुवपुरिषत्पा
गासंनानां। सोमरुजयभोजन
जलपांनानां। येनमैबचनन्ही
उचरै। नषकेसादिकदूरिन
करै३७। सदानिरंतरदिदबूत
धरै। कबहंनूलिबिदनहीडा
रै। डेआपहीतैजावेकबहीब
रुतनातिपधितवेतबही३८
करिसनानंजरु। प्राणापान
जापकरैत्रिय। दीसेनांम
अग्निगुग्गुगुरुबिप्रगाईसु
मूनीष्टु। द्विननवनिकराई
संध्यापासनकरैत्रिकालब
चनन। बोलैहावनचाला
रुकंमेरैरूपहीजानै। नरव
बुधिकदेनहीप्रानै३९। सर

चिप्रतरावेपररुदोये

प्राररु

१११

किंकर

हिर

ग्रहसामाहिरहावो प्रोसोचु
 लामुक्तिकमानो प्रोरकसु
 हिरदेनहाप्रानो ७ चप्ररुदो
 होयेनवनरुप्रास हिसाजुवतीपु
 तादिकनसो प्ररुदुक्ति बिधीय
 लंपटचसनाप्रालुरा अपानरह
 तिकरमनिमैचातुर ७ ह्यप्रा
 प्रहाप्रबसिताहिनैडानै प्रो
 रनका च्याताउरुप्रानै न्नाखि
 चपितरहैसैरे नोबिनदुष
 लहैबहोतेर ७ चायेबलालह
 सततिजाकी मोबिनहोपेक
 सागतिताकी येप्रनाथमोवी

मोहिप्रवरकधुनाही ४५ जुव
तीप्ररुजुवतीनुकेसंगी येन
कोकदीनहो ४६ संगी ॥ इत्यथ
सबानीप्रिहास्य त्पगैदरिमां
निप्रतिवास ४७ सोचेप्राच
मनप्ररु ॥ उनांन संध्यापा
पसनिगतिक ॥ निभांन तीरथ
सेवाजपतप ॥ निष्ठा ॥
तडेइससनाषणा ॥ ४७ म
नप्ररुबचनदेसुबसिकरौ मे
शेनजनहिरदामेधरे ॥ प्ररु
ममनजनस ॥ कोधरम ॥ नर
नादिनां सवधरमप्रधरम ॥
४८ जैसे ब्रह्मचीर्यब्रतधारी
दिहतपनिसा ॥ इत्यथ ॥ विचारी ॥
विगतपापजैसीबिधि ॥ मोई ॥
मेरीनक्तिकेतबसोही ४९

श्री जगन्नाथवाच्ये चौपडी ॥ ३ ॥
बने कहुं चरन बल बाला ॥ १ ॥
प्रधिकार सहति स्वव्यास जाले
मेरी नका पावो नहि पाप सम
चरन ही प्रावे ॥ १ ॥ बंध पचा सह
तेनु परति ॥ तंत बबन जा फेरि
इकंता ॥ नारी सुत निमै रई बंद
सा जो बिधि बने सं ॥ गले लई ॥
शकंद मुल फल बूति ही करै ॥
बकल कृग ग्या लात न परै ॥ च
णपण नि का रे ॥ ३ ॥ ॥ सवारे
ई इ मन के सब प्रथ निवा रै ॥ ३ ॥
केसरो मन धरि न करै ॥ इ ल द
तम न ही पद करै ॥ नू नि स न
शकल सना न ॥ मल न उ लारे
मुसल समा ॥ न ॥ ग्रा ध म रि

जल प्रिया करै बिवाह तिरी
या बिचषणा ॥ ५४ ॥ १६५ ॥ प्रप
नो प्र विकारः त्यों ही करै बि
वाह बिचारः बि प्र बिवाहै चा
रुं बरणां ॥ बि प्र यो डि बि व कि
करणां ॥ ५५ ॥ वै सि ः ॥ ५६ ॥ वै स्य
॥ ५७ ॥ ३ ॥ सु ॥ प्र क रं च न ह
३ ॥ न त न सो जो ॥ ५८ ॥ ३ ॥ बि ह
ते कृ ष न सी ॥ ५९ ॥ ३ ॥ सु र
ति प्र थ ॥ ६० ॥ ३ ॥ प्र रू द न
ति ह ॥ ६१ ॥ ३ ॥ कौ ये क ल सां न ॥ ६२ ॥ ३ ॥
५३ ॥ ३ ॥ क र वां व नि ॥ ६३ ॥ ३ ॥ प्र थि क बि
प्र कू वै द ॥ ६४ ॥ ३ ॥ प्र हा व न ॥ ६५ ॥ ३ ॥ प्र प्रे
ती न बृ त है प्रै सै ॥ ६६ ॥ ३ ॥ प्र ग नि म थ
ज ल बृ षा जै सौ ॥ ६७ ॥ ३ ॥ प्र न तै वृ स तै
ज न ही र है ॥ ६८ ॥ ३ ॥ त तै ई न कौ बि प्र न
ग है ॥ ६९ ॥ ३ ॥ ५ ॥ क रि कै सि ला दे ह नि

सर्वे इदं यत्प्ररथ निपररुं रैः प्र
रुये चैरुनलेये नलाता नाली
नेषधरं जती सो नाली ॥ १८ ॥
नि ह्याकरै सप्रधरि बिप्र
रकहं गहै न द्या प्रो नुधि प्र
चतु बिधि जे ते जा निररुं न्य
ह्याकौ ते ते ॥ श्री बिप्र कही जे ह
सप्रकारा ॥ तिन कौ तुम सौं क
रुं बिचारा ॥ देव विधि बिप्र रिष
ही जालौ ॥ बिप्र बिप्र प्ररुं चित्री
मालौ ॥ रं वै स्या सुदं ये क बिडाल
प्ररुं मले च बिप्र चिंडाल ॥
नि ह्या निति प्ररुं प्रहं पढावे ॥
नकल प्ररुं प्ररुं तत्व वतावे ॥
॥ जत ई इदं स्वातल संतोष
च बिप्र सो निरगत रोषा नप
प्ररुं सति प्ररुं स्या करै ॥

चारै सकल पाप लनी हिरदै
 धारै ६३ धित्री सब के दुषनि
 हारै सकल ज्ञा विप्रतिपालन
 करै सो धित्री २२ लाक हाजा
 वै बास वस हति रक्ता सुषण
 वै ६५ जो ॥ ५५ ॥ वि प्रकौ पर
 तो सो वनि बृति कौ करै जह
 पक हृ बृति है ॥ ची ॥ परि सो प्र
 तिहासाते नीची ६५ जो धित्री
 कौ परै विपती ॥ तो सो गहै वि
 नज का बृती ॥ किंबा विप्र ॥ ति
 कौ गहै ॥ यवान गपा करै
 निबै है ६६ वै स्या हा परै प्राय
 ॥ कबहा ॥ सुद्धृति सौ टौर तब
 ही ॥ प्ररु जो विपति सुद्ध कौ परै
 तो प्रतिलो मृति हा परै ६७
 या धि धि जव हा मिटै विपती

नवैर्द्वयप्ररयनिपरैरैरैप्र
रुयेचैरुनलोयेनलोतामाही
नेमप्यरंजतीसोनाही ॥ १ ८ ॥
निह्याकरैसपुत्ररिबिप्र
रकहंगहैनचिप्रासोडुषिप्र
चतुर्विचिजेतेप्रनिरहैन्य
ह्याकौतेते ॥ २ ॥ विप्रकतजेह
सप्रकाराः तिनकौतुमसोक
हंविचाराः देवविषिबिप्ररिष
साजानौ ॥ विप्रविप्रप्ररुचित्र
मानौ ॥ २ ॥ वैस्यसुदंयैकविडाल
पसूरुमलेकविप्रचिंडालः ॥
निह्यानितिप्ररुपहेप्रहावे
सकलप्रथप्ररुतत्ववतावे
२ ॥ जतरैद्वयेस्वातलसंतोष
देवविप्रसोनिदगतरोषानप

के कहनांती ७२ जिस दिन कि
कर देकरे बिचार मिथ्या माने
७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
सब प्रैसै जलके । निकटि ब
टाउ जैसे ७६ ये सब यों प्रदेस
निजां वै । ७७ ज्यो निद्रा प्रति
सपना पां वै । ज्यो ज्यो । गोवा
रं बारा । त्यों त्यों मिटे सुधपन
बोसारा ७८ यों सोये प्रति देस
सां जां वै । सत जें सब जित ति
तजां वै । ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
लोक पाये । ८० गये अति सो
क ७५ तां सकल बांसनां द
है । ८१ प्रति य समान नवनमै
रहै । ८२ प्र संकार मन तान ही ज्य
ने । सब माया बंधन करि जां वै
७६ स . कर अनिमरे र हित करे

विद्यायः प्ररूपानि परस्परैः प्र
 रूपैश्चैरुनलोके न संता मांसी
 नेष्वभैरं जता सो नांसी ॥ १८ ॥
 निष्पाकरैः स पूष्वरिषिषु प्र
 रकसंगसुनक्षिपा स्वोडुषिषु
 चतुर्विधजेतेऽस्य निररुं न्य
 द्याकैतेतेऽस्य विष्कसो जेद
 सपुकराः तिनकौ तुमसौ क
 संविचारा मदेवविषि विप्ररिष
 साजानौ विष्पुषिषु प्ररुक्षित्री
 मानौः सुखैः सुदुं येक विडाल
 पषरुमनेषु विष्पुचिंडालः ॥
 निष्पातितिरूपरूपदुप्रहावेः ॥

॥ जनदेवैः स्वातल संतोष
 वपुके निरगत रोगा तप

नसबबाला क्यौं जकरि जावै
प्रतिबेहाला ॥ ८१ ॥ मोबिनरु
हाकौन प्रतपालै कौन बि
बधिदूषनि कौं टालै प्रैसै न
सुदिन प्रानै च्यंता कहंकी
येदुप च्यंता ॥ ८२ ॥ नस
भावैया लोक ॥ ८३ ॥ स्यौरहचौर
नाबरुसोक या बिधिचित
करत प्रपा ॥ ८४ ॥ नरक जावै
बारबार ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ १ ॥ सुनच
र्यगुं चर्यको ॥ २ ॥ नौनाघोयेध
रम ॥ यावतैउ ॥ कप्रौरक
सोसबजा निप्रथरम ॥ २ ॥
५३ ॥ ८३ ॥ येती श्री नारायणतंका
पुराणी ॥ येकाहुस कहै श्री नारा
यणतंका संबादि नासाधो ॥ १ ॥
नारायणतंका ॥ १ ॥ नारायणतंका
प्रथम ॥ १ ॥

निजकरतुहै जोई सुइ बिष

सब नूतनके

सबके छिद्र नदेय

॥३॥ प्रतिदिन हस्यासौ

धिकार बि प्रक हावे सोमं

मं न द्य प्र न द्य प्र कार ज

॥ ग ग म्म प्र ग म्म न ल

र प क्त त द्वनी सक

धि ए ॥ सो प स

ला ए क है बि च ए ॥ बा पी क

ब न बा गा दि

र ही स थ्या प्र

प्र सो बि प्र म

नि द क लो ती प्र ध

॥ नि र द प र र पि लु न त

३४ सो चिं डी ल

॥ प्रै सै द स बि धि

दिद्वैरागः १३ वेदवसित्वि
विमोको जज्ञे ॥ १४ ॥ त्विजको स
वैसदेतज्ञे ॥ जबको र्दसिन्पास
सिकरे ॥ तबहासुरविघननि
विस्तरैः १४ ॥ परिये विनगणे
कथनांही ॥ मेरे चरण चारे
रमांही ॥ जो कथक हं ॥ १५ ॥
स्त्रिस्त्रिषे ॥ तोको पान और स
बनाये ॥ १५ ॥ देडक मंडल करम
चारे ॥ जो मल त्यों नही ॥ और
चारे ॥ देषि देषि चरण पग
चारे ॥ बर स्रष्टां निज लपान
हाकरे ॥ १६ ॥ सति वंत बोनी को
बोले ॥ हिरदे विचारिक देन
उले ॥ मो निचारि बां नी को
दे ॥ १७ ॥ अरु काया के फल मां ही ॥
१७ ॥ प्राणायां मनसा वसिकरे

३५॥ प्रापुहीमोहि विचारै
॥ कदेन देषे नू लि प्रनेक

ब्रह्म
पुक्तिदोन नरनमानौ ॥ ३६ ॥
नजवई सिहाई
इसे

निई दी येन जीतै ॥ मोहि सुम
तें फाल प्रदीतै ॥ ३७ ॥ दोहलो
॥ तिन हं नही

॥ क। पुरगोमादि प्र
॥ निह्या प्ररथ प्रबेस

करै ॥ ३८ ॥ देस प बिच सै ल
निसरिता ॥ खान प्र स्थ जाल
रिता ॥ तसांतसां नि तिही

प्रतिजावै ॥ तिन प्रासर्जन
न ह्या पावै ॥ इ स्थ तिन तै ल सै सि
॥ को प्रन ॥ ता तै लो वै मन प्रस

दिद्वैराज ॥ ३ ॥ वेदवसित्वि
 धिमोकौजजै ॥ ४ ॥ त्विजकौस
 वसदेतजै ॥ जबकोइसंन्यास
 सिकरै ॥ तबहासुरविघ्ननि
 विसरै ॥ १० ॥ परिघेविंनगण
 कथनांही ॥ मेरेचरणधरैनु
 रमांही ॥ जोकथकह
 स्वसिराधै ॥ तोकोपानश्रीरस
 बनाधै ॥ १५ ॥ ६५ कथं लकरमे
 धारै ॥ जौमलतपोनहीश्रीरबी
 चारै ॥ देषिदेषिधरणापुग
 धरै ॥ बस्त्रध्यानिलपा
 हाकरै ॥ १६ ॥ सतिवंतबांनीको
 बोलै ॥ हिनदेबिचारिकदेनही
 डालै ॥ मीनिधारिबांनीकोद
 डै ॥ अरुकायाकेकमहीषड
 १७ ॥ प्रणायामनस्तबसिकरै

हैं। बिचिन पेदक के सेवगों से
 सब जानै प्रजे ननु तसंत
 चेतन मयेंदा से जे दुबंत अप
 धित बांनी रत से नो के कन
 हबादन ठानै से ई ई ई ई ई
 रिम धिये कस रिबे क कन
 को ई धि किन ग से ई ई ई ई ई
 है सुनै तो त्यों ही त त त त त
 सात्मा जे क्यो ही ई ई ई ई ई
 उद्वेग न आने ई ई ई ई ई
 आप्त वाने ई ई ई ई ई
 दूर वन ई ई ई ई ई
 ४७ कन को ई ई ई ई ई
 कन कन कन कन कन कन कन
 रे य म स नो लि उ ग ई ई ई
 सकर ज कन कन कन कन कन
 ज्यो कन कन कन कन कन

दिव्यैराग ॥ ३ ॥ वेदवसित्वि
 विमोको जज्ञे ॥ ४ ॥ त्विजको स
 वस हैतज्ञे ॥ जबको ईसंन्यास
 सि करै ॥ तबहासुर विधननि
 विसरै ॥ १० ॥ परिये विनगण
 कधूनाही ॥ मेरे चरण धरै न
 रमाही ॥ जो कथूक संभव
 स्त्रि राषे ॥ तो को पा न और स
 बनाषे ॥ १५ ॥ ६५ कण लंकर मे
 धारै ॥ जो निल त्यों नही और ब
 चारै ॥ देखि देखि धरणा प्रग
 धारै ॥ वस्त्र ध्यानि जल पा
 ला करै ॥ १६ ॥ स विद्वाने को
 बोलै ॥ निरदै विचारिक देन स
 डालै ॥ मो निधारि बांनि को द
 डै ॥ प्ररुकाया फे फे म तो ॥ १७ ॥
 १७ प्राणा ध्यान नहाव सि करै

अत्राव ॥ ७ ॥ सोपावै मेरी दिह
नक्ति और सकल तै करे बि
कि ॥ तातै उपजै मेरी ज्ञान
देषै मोहि मिटे सब प्रान ॥
७ ॥ प्रै सो के पावै मम रूप
बसै रिन प्रावे घा नव कूप
जै दे सकल बुराण प्रा श्रम
तिन के ये मै नाषे धरम ॥
७ ॥ नक्ति सहति ये मोहि नि
लावै ॥ नक्ति बिना नव सिद्ध
बसावै ॥ प्रै सो तब लहे ते ति
रे ॥ और सकल निति मै मरे
दाहा ॥ ये उद्धव तो सो कहौ
भूषण ॥ आसरम को धरम ॥
जातै मम नका लहे ॥ धूरे ब
धन कर्म ॥ ये ती श्री नागवते
स्तापुराणो ॥ ये कादस स्कंदे श्री

नप्रदकरमनिग्रनूसरे
ललोपकवहनसीसोई
वृास्तकसीयतुहसोई
हिस्याफलमूलनिल्या
नसीसोईससावृतावै
सीतउसूस बसहै बि
प्रनितिश्रुत्यासिगहै
दिकनिकरेग्रारोस
सूरतजेतनमोस २४
सहितपठानैग्रारम
प्रहिरदेनसा हंन ग्र
उत्तनबनिजसीकरे
सैधतीबिसारे २५
ब्राह्मणकसीयेतातैले
नसीगसीये तैललोण
विश्वप्रक

मो बिनसकलबासनादहै ॥
 ४॥ मैसाहितमैसाताकैप्रियामै
 बिनताकैप्रतिप्रिये ॥ जोहैस
 सितज्ञानब्रह्मज्ञान ॥ तेसाजानै
 मोहिसुज्ञान ॥ पाप्यानीतैमेरेप्रि
 पबांसा ॥ सदाबसैमेरेमनका
 सा ॥ मैताकैमेरोहैसोशुद्धजो
 नहापरसप्रकेशिशुद्धपतप
 तीर ॥ यवरतशुद्धदाना ॥ कहे
 गिनाना ॥ तेसबकरैन
 साफलप्रसो ॥ ज्ञानकलातेस
 वैजैसो ॥ ७ ॥ तातैज्ञानहिरदामै
 नसकलनि
 ॥ सबमैरूपप्रापनैजानै

जगदीश

जांनों। तातै उतमनिष्याक
रे। प्रारसकलदूरप्रस है
३१। स्मातः नतौ निष्याकरा
ताहीकरिसंतापः पांवे सो
लेजावेन १॥ ॥ तातैक
थ्यककरैबिनागः ३२देइ
कोइभागेताकोदेइ। केजल
मांसि प्रवासकरे ३॥ बिचरे
अरणी घांकेसे ३॥ ॥ दनक
३॥ ॥ ३३। तः मन
इदीयानग्रहः ३॥ मेरोरूप
सिरदानैधरे ३॥ निसुदिनरसै
३॥ तकारांम ॥ बिषयः ३॥ ॥ ३॥
कोसुनेननोन ३॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥
अरुथीरजवंत ॥ सदारहैनि
य रचैयेकंत ॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥
प्रतिसुद्ध ॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥

मध्यमं दमतिमानैः सैन्यांस्तं
पीरैः सोजां नैः । स्थित्यौ देहादि
कसकलनमदेषोः प्रापहीस
दाबृत्तमयलेषोः । प्रैसोः सुनि
सरिजासौ ज्ञानहीः । बुद्धवृत्तन
पृथो नगवानहीः । १५ । उद्धवृत्त
वाचैः । १६ । प्रनूयाननूपक रि
कहोः । मेरेनां नाना नृपैः सादहेः ।
प्रस्त्यो ही चाद्यो विज्ञेयं । ल ।
नक्ति प्रापनी प्रसं निहो न
जाकौ चासैः कृत्तव्यत्वा ।

१७ । कश्चिन्नानां वि

१८ । अस्मात्

१९ । अस्मात्

२० । अस्मात्

२१ । अस्मात्

२२ । अस्मात्

तस्मिन्निरमलतालसोऽप्यने
गंलसकलमल दसैः ४० ईडी
युप्ररथनिसत्पनदेधेः ह्य
एचंजुरसबनसुरलेधेः ता
तैसबदे गलेधोरक्रीनसिउ
दिमनसीबिधेः सन्की ४१
येसबप्रसकारः तजाने प्र
तमबिधेः पनसमपतेनो
नेः कदेनासुरदेचितवनि
करेः नबचकरसहीरप्रह
रेः ४२ प्रैसीबिधिजबउपते
ज्ञानसोयेबिरः तजसबश
नः मेरीनक्तिरदेमोश्रावे
तजसबवपाश्रमचिटाकावेः
४३ बिधिनाथः दाउभरमज
नेः ४४ सभत्पकासंकनम
नेः प्रतिबुधिः बालकस्यर

कोनांसा ॥ ३ ॥ अरुजोताकोर
एसा आवै ॥ तैते सकल पुम
पावै ॥ घा नव कूप पस्यो बसे
तापरि दुस्यो मसा असा काव
रुता तै बिषई बिषे सास्य
नै ॥ तिन निम तै बरुनु दि
नै ॥ तातै सदा अमित दुष पा
जाको कबरु अंत न प्रावै ॥ ३ ॥
ताको कृपा करि धि युष पाव
काडि कूप तै मिरत कजा वावै
वचन अमर्त काबरु पा करौ ॥ ४ ॥
पाणे गुण निबांधि नुदरौ ॥ रति
पितरा जग सांसी ॥
जगपाल कजग अंतर जांसी ॥
जे से बचन सुने जग पांन्या तब
जग वांन्या तब ॥ ५ ॥

ईक्षि प्रब धारो के धरम प्रथं
 न न्यारे न्यारे रौं न धन
 सम प्रसूत्र सा स न्यासी
 कौ सु ति वि चार त प व न
 सी कौ ६७ गुरु मै दया ज्ज म
 न कर्म ॥ वृत्त चरी पृ ७
 वा धरम ॥ वृत्त चरा य त प
 सौ च सं तो ॥ स क ल ॥ हर
 द फ त न हि ॥ वि ॥ ध य मे रो न
 ज न स क ल म म का णा ये
 स व हान ध धरम सा धार
 ये हा दे रु व नि तां ति हा न
 नू लि न ग व न ॥ रे ॥ दि न
 प्रान ॥ ६ ॥ पा वि धि प्र प
 प्र प न धरम ॥ मे रे ह ति क रे
 स ॥ क र म ॥ स व ॥ ॥ ॥
 रो न्ना व का रूप रि न सी ध रे

३

ककरिजांनौदेखादिक्कसबसि
धामाने ॥ इरादिदुर्गानिज्यो ॥
पनिवारै ॥ त्र्योससससससस
प्रबिचारै ॥ जैदेदिस्सन्नोदसि
दिजवो ॥ प्रादोदिसकापवयि
पावो ॥ इरकरेनिदंसससस
विचारै ॥ देठैदुल्लसिदेदिमन
जाकोकसोयलुते ॥ विज्ञोत्तन
तैसससोसिसतलपप्रादिस
प्रादिसतो ॥ इरकरेदिसस
सोसससससससससससस
पमरुतेतै ॥ प्रादिसससस
तकसत ॥ ३ पतासिसससस
प्रादिस ॥ तिसससससससस
वैदेसससससससससस
धयसससससससससस
रसिसससससससससस

न गवदुद्वसंजाहे नाप्रा
 ध्या वृणास्स रमध्ररन निरूप
 एनांन अथाद सोग्र क्रायो
 १८ श्री जगदानुवाचैः चो
 ष्ठी ॥ उद्वयेव एरुप्रसर्मा
 तिनकेमैसब नाधेध्रमापन
 मेरहे मम नहिनुपावे ता
 ते मेरे ज्ञानसीपावे १ ज्ञानसी
 पाये सकल नरनजाने वृणा
 ममिथाकरिमांते सबसाध
 नतजिमेकोध्यावे औरकथ
 हिरदेनसील्यावे २
 हीहौसाधन अरुमेरोसी
 तिअराधन
 आराधे
 बाधे ३ मोन २०॥
 लेई
 मेनिननक

प्रादेह विबधि विसताराम् ॥ १॥
 प्रतनिजडुप्ररथनी गहो ल्येत
 न विनको इनहारसे थो छे हा
 रतथा दिष्टात ॥ प्रज नव प्रर
 योहा सिधाता ॥ १॥ प्रज चरिह
 सोमतौ विचारै ॥ प्रजिडा नि
 पवनेद निवारै ॥ प्रज लदेह
 रे सोप विक्ता ॥ चेत निह्रस
 रामनूर रस्ता ॥ १॥ प्रज रचित
 नब मिथ्या मांने ॥ प्रज लोक
 नोन स्वर जानै ॥ प्रदेहो सुल्यो
 तरदामे प्रावि ॥ प्रज ल्य ह्य धन
 गनिष हावे ॥ १॥ प्रज वेदी चरिह
 रदामे धरै ॥ प्रजिबले चरिह हाप
 रकारै ॥ प्रज ररु चरिह देह लैने
 प्रजुमसो पाये ॥ प्रजिबले चरिह

१. अथकोइनेसा प्राये ॥ १ ॥ जबही
 प्राणी ज्ञानसा पावे ॥ तबही म
 नदि ह रूपसमावे ॥ ग्यांन वि
 नाबसा पावे मोहि ये निजम
 तो कसतुहंतो सि ॥ ७ ॥ वताम
 विबधि विकार ॥ जनममा
 सुष ५ प्रकार ॥ तेसुस्तया
 नकडानौ ॥ सोतनमाया न
 मकरिमानौ ॥ १ ॥ प्रायसा सुद
 निरेजन देषो ॥ हेत प्रतीतये
 ककरिदेषो ॥ येजेसुकल प्रग
 ठ देसादि ॥ आतममसतन
 दि ॥ १२ ॥ अस्तुप्रतलर एक
 ही ॥ १३ ॥ अस्तुप्रतलर तार
 ज्ञानदिषिकरि देषे जबही
 नगुणरु ॥ तप्रायसतबही ॥ १३ ॥
 जैसे रजुमां ॥ अस्तुप्रतलर ॥ १४ ॥
 नहंतो अस्तुप्रतलररु ॥ नमते

जोगबरतदोनसेनासैननोइन
जलपानपयत्प्राहिकसबम
महितकरेजातेअंतरसबप्र
हरेसदाप्रापकौमोहिनबे
पुमसरत्रुंरगंधासनेदे
जैसेजबममनकिहालहै
बप्रवसेषकथनसारहैसा
नसाधिलहैसोसकलका
करमतैहोकेप्रकालपरज
मोधिषेचितकौंधारैजब
सांतिकरजतममारेधर
स्वर्जज्ञानबैरागहिनकोस
जलहैबडनागलप्रप्ररुद
रायूक्तिनपावेहैलगेरु
तलगावेतबहोबरजतम
टिकारबधैजंधर्मप

वसुधाग्रविष्णुवृक्षतः शुभे चर
 कृतवर्षावैष्णवः तापस्येवुवीरि
 अस्तसंतापं तिनमेवरेऽपली
 आप १५ तातेज्जाविकाइपया
 वै सुषढानेसाइपकेऽपवेः
 ताकेइजोरसिकगांतीः मैवि
 चारि देवोऽरमालीः २०
 तुमरेचरणा क्वसिर्धारे सो
 समस्तसंतापनिवारैः ताके
 हसिदिसप्रमृतपरसे ताकेइ
 सज्जोरसवरसे २१ अश्वौका
 एकंजायतीतीति ताकेसास
 विप्रलेदीति साके नूपका
 लुपपावेः अरुज्जोरनकेइ
 सिद्धवेः २२ सौतुवचरण
 नासुरधारेः साप्रपनेसव
 दुषनिवारैः नीत्रेतीन्यो
 कविमालीः तासमज्जोरव

किमुक्ति सुषपावे ॥ ५५ ॥ दोहा

सेग्रह चतुर्बेन ज्वलकहे क्रपा

करिक्रहमा तबउ हवजनस

रषिकरि काबली जगिसौ प्रह

प्रभोवात्रे ज्वलकहे क्रपा

हप्रनूपरण करणा करये ॥ ५६ ॥

तौ सब विधि बिसरयो ॥ ५७ ॥ तुम

नहि धर्म नहि कृत नाष्यो ॥

प्रसदिष्टि कौं ग्यान क्षाराष्यो ॥

प्रसुबै रागादि कसल जागे ॥

तरे सब संदेह निरायो लोली

कलत वसो चाषो ॥ ५८ ॥ प्र

विषुदिरि नाष्यो ॥ ५९ ॥ राय जे कल

रसो ॥ ६० ॥ के प्रकार ॥ ६१ ॥ प्र

पीक हो नेम बिसतार ॥ ६२ ॥

रम कौन कौन हम देवा कौन

शतमजो ई ध्य लपुत्र तन्त
 विवरे ई सरसजामेनाधम
 परे लमकों सुनतबचननु
 चैरे २ चते ई प्रबसेतुमहासु
 नांउं नां-... विज्ञानज
 नांउं ॥ परक किंपुरषमहतत
 प्रसकारा ॥ सबदादिकजेबेपं
 च-कारा ॥ २५ ॥ त्रियगुणाईदाप
 दसयेक ॥ पंचनूतमिलिनये
 प्रनेक ॥ यावरजंगमबिबदि
 प्रकार ॥ ईनप्रठाईसकोबिस
 तार ॥ ३० ॥ यनबिनप्रोरकहके
 नांसी ॥ येका वदेषसबमांसी
 जाकरियेकसकल ॥ ताकोंसा
 धूज्ञानबधाने ॥ ३१ ॥ प्ररुजब
 ये ॥ प्रठाईसतत्व ॥ जायाहाने
 सकल ॥ तत्व ॥ प्रातमबस्त्रये

तिस ति प्रस तेया संग बिबूजे
 तसब को देया लज्या को निग्रा
 सि कथी रा बिस्त चर्ये प्ररु।
 हिमा प्रती रई धये हाद सय
 मगहे निब्रती। प्ररु ल्यो हाद
 सनेम प्रब्रती। ल्यो चरक पर
 ति रित धर मादरा ज प ल प
 प्ररु म म पूजा सा प दर। ई ली ती
 रथ प्ररु न प्रति च को पो धो गुर
 सेवा प्ररु दिट सतो धे। प्रनय क

५. सिद्धि सिद्धि

धारे ७७
 धी। द न ई द्ये निग्रा हे
 जो दुष निनु य जा वे

॥
सकल

को सम्यक्

७७ हीन
७७

नेतिनेतिसुर्तिसदाबधाने ॥
नां नाकार चैदत्तमनापे ॥
स्तसतिदूजोसबनापे ॥ ३७ ॥ स
कलधूरनिमैयेकबतावे ॥
चनीचसबनेदमिरते ॥ ३८ ॥
जांतिबिचारेबेद ॥ जांनेमोहि
निरैबनेद ॥ ३९ ॥ प्ररुत्तौंही
सबप्रगटलेषै ॥ सपतथात
केसबतनदेषै ॥ प्ररुत्तत
रमनयेसंदेते ॥ तिनकेबच
नबिचारेतेते ॥ ३९ ॥ येकेमतोस
बनिकेदेषै ॥ जांनेमोहिनेद
जरमलेषै ॥ गुरकेबचनबिच
रेयोंही ॥ ज्ञातमनिशुकरैवैते
ही ॥ ४० ॥ प्ररुत्तौं ॥ प्रनूचवसिरे
बिचारे ॥ चेतनराधिप्रचेत
डारे ॥ सबदेषैचेतनिज्ञाधार

तिसतिप्रसतेयासंगबिबुड
 तसबकौदेया। लज्यामौनिप्र
 सिक्कथीरा। बुस्तचयेप्ररु।
 हिमाप्रचारइचयेद्वादसय
 मगहै निब्रती। प्ररुतमौद्वाद
 सनेमप्रब्रती। सोचरकपट
 हरेतधरमादर। जपतप
 प्ररुममपूजासा। दर॥ ६॥ स्ती
 रथप्ररुनप्रतिथकौपोषे। गुर
 सेवाप्ररुदिडसंतोषे। प्रनुपक
 स्तिमुक्ति

धारे। १०।

धी। दमईडाप्रनिंगुहै
 जोदुषनिनुपजावे

तिनतेजाकौदुषनहौई।

सक्ल
 ता

रु

नहं नहिसाधन उचारै मे
राकधार नम्र उरुने प्राति
सहति हृदयं तस्मिन् ॥ ४६ ॥
जाने ॥ तिनैषाधारै बहो
तनासिप्रसूतिप्रनूसांरै
७ ॥ ४७ ॥ रि प्रदधिणादिही
प्रसूप्रष्टा ॥ ५ ॥ पांमकरै ॥

रि

४७ ॥ सब न तनिमैमोकोजाने
प्रममजानमेरो ॥ ७ ॥ मांनं न
मनसमको ७ ॥ विधिसेके
तनमनधनतिनहाकोद्वै
४८ ॥ मेरेहेतिके साकरै मो
बिनुप्रोरसकलयपरहरे मे
रेगुणानिकहेनुरधारै ॥ ४९ ॥ स
६ ॥ कामनानिवारै ॥ ४९ ॥ मेरेप्र
५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ त्वागे ॥ सुखप्रसू
नेगानितेबैरा ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ तपपज

बाध मन्त्र संप्रकलप्रनात्
इतनी प्रसन्न कर्मात्मता सोऽ
जाजा विचिंतुन प्रधुना नो
ट्ट विचिंतुन प्रकल विज्ञान
सैः सत्प्रपुन प्रजा नतस्त सैः
विचिंतुन प्रकल ज्ञो ज्ञो ज्ञाने ॥
उचनंत प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
सो प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
नेद दिष्टि नो विचिंतुन तिमानो
विचिंतुन प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
तैपैः प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
विचिंतुन प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
पंडित प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
विचिंतुन प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
रूप प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
दोना ॥ विचिंतुन प्रकल प्रकल प्रकल
ज्ञान प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल
वत प्रकल प्रकल प्रकल प्रकल

त
सीकारण बौरै चित च्यास ता
ए मोमै धारै मो कौल न
वमै धारै नव नैव पता तै
रम नैव धारै नैव रता प्र
दिक ज चाग ते स्मस्त मे रे प्र
ध्यान ता तै सो वै म न लोलीन
पृष्टि से वत मो त स क ल ये पा वै
मो बिन को ई निक रि न भ्रा वै
न नैव नैव सिक ता तै धार म नुद्ध
पृष्टि ज स क ल धार म पृष्टि ये
क ह स्त इ स न सो ग्या न या वि
न प्रो र स क ल प्र ग्या न प्र स
उद्ध व सो सै वै राग जो स म स
बिषो ये न रा त प्रा ५ ८ प्र स
ये श्रु ये सिद्धि प्र ए मा दि म
म स व क क सि व द प्रा दि ता तै
ज म म स ए न प्रा वै ते सो तु

हायेपंचप्रनादीः प्ररुनषे
 नप्रगट प्रतिदोनाः प्रंबेषा
 देकजे प्रनलोनाः भ्रणो निमि
 संकरसे जेतेः प्ररु तिनके
 मप्रनितेतेः तिनके फल प्रग
 टनरकादीः कुरुते फल जाये
 नवादीः पनाके फल द्विबेद ज्यो
 कसेः ताको करि नरतमो संलसे
 प्ररुतमो इव्य दे सबय कालः
 प्रगट बिधिनिषेद गोपालः
 प्ररुजो बिधिनिषेद नहासः
 तमौ सुष प्ररु दुष फलः
 तमः
 तौ ब्रह्म प्रम करि बिधिनि करी
 वै ७

मोक्षरूप धृति को जेवा इकौ
न त। अस्तप नि। कौनस
तिको ठवषां न। कौनत्याग
को धन है ईष्ट। कौन जज दहि
एँ बरिष्ट। हे बल प्रसू दयाला
न प्रसू सुष। बिद्याल ज्यो सो
जा दूष। पंडुति मूर पप्र। सत
पंथ। स्वरगन रक प्रसू बंधु कु
पंथ। इप। कौन दरिद्र कौन धन
वंत। कौन कृपाण कौन सुवंत
प्रसू न ते न लटि सेने ती। प्र
सम प्रदम प्र। दिक सब ते ती
ई। मोसो देव कृपा कारे जा।
राषो तत्व प्र तत्व सो नाषो यो
सुनिबह नो द्वेष की प्रदम। त
वक्र एा करि बोले क्र दम ॥ ६७ ॥
श्री गगवानुवाचै ॥ हिं स्यारहि

नरहतासौ बरु
 सुनायानास्यो
 कुमयोगविस्त
 जावनकोनिसला
 सुबिधिगुणाधि
 प्रसंगाधिवाधि
 काराः २२ तिन
 जैजौरो करुं
 जाधिजौरो : ३
 हैवैरागः विष
 हैपुनराग २
 जनसातनः क्रु
 नजौः अपनेध
 लोकावृत्तीन
 २४ जनसातनः

अति
 २४

१

१
 १

३
 ल

ल
 ३

३
 ३

३
 ३

३
 ३

३
 ३

३
 ३

३
 ३

मां गुरु धृति को जेवा इ कौ
 न ता गुरु तपदान कौ नर
 तिको गुरु वषां नः कौ न त्याग
 को धन है ईष्ट कौ न जज्ञ दक्षि
 लंकारि ज्ञ है बल गुरु दयाला
 न गुरु सुष विद्या लज्या सो
 जादूष घडति मूर ध गुरु सत
 पंथ स्वराग न क गुरु स्वंधुकु
 पंथः इय कौ न इरि इ कौ न धन
 वंतः कौ न क्रिया ए कौ न सुवंत
 गुरु री न तं नु ल टि है जे ली गुरु
 म न गुरु इ म ग्राहिक सब ते ती
 ई नो सो दैव क्रिया करि नाषो
 दाषो ल स्व गुरु ल स्व ती नाषो यो
 लु नि बरु गुरु द व की प्रहम ल
 व न ए क रि बो ले प्रहम ६७ः
 हिं स्यार ति

टावेकरनसंयोगध्यानधान
दिकसबसाधैबालापनने
कौबाधै॥३०॥ततैजौलग
साहानरे॥तौलगिजननप्रय
यातनकौसिध्याकरि
आने॥अरुपुनिब्रह्मदानकरि
जानै॥३१॥ततैजतननिरैउक
रै॥साबधानताहिरदेधैरैय
तनकैआसक्तिनहै॥करैउ

॥३२॥ज्योपंध
तिमां

॥
निमनधरे॥अरुलाबधैहक
॥जिनकेहिरदेदधान
॥३३॥ब्रह्मसंगज्योपंधप्रा
तनकेबसिधैकरिभरै॥प

सिध्यानदिनागै॥३

जाकरि नो हिल है सो पंथ जो
प्रवृत्ति सो सकल कृपंथ
निनि संतोषी सीतल हिरद
सांतिक च्यत सब नप
सुसुदं ८२ यलेश्वर ग. षके
चंडार नरक निमै तामस
अधिकार सतगुर रये कहि
तू करि जां नो प्रोर सकल ये
बैरी मां नो ८३ सतगुर है सा
मेरो रू जा जावत जै गुर है
कृप सतगुरां वा बि च न ह
कोई सतगुर बि न सो बैरी सो
ई ८४ मानव तन सो ही ग्रह
कहाये ताके गुरे गेही कर
हाये सो दरिद्र सो व स्या वत
कृप ॥ इ दीय न ब सि ब र तं त
८५ बिष ॥ ८६ नास कसै ई स

नेगमौ कबहन रेकाहरी
सोस्रसईडायबसिकरेमन
निश्रुलकरिमोमैधरेजोम
नधारतप्रचलनहोइतौह
आतुरहोयेनसोइठयेकली
वारनसकलनिवारैकरम
क्रमसकलनुपाधिहाटारै
कथ्यैकप्रासापूरैमनकी
हिरदेयारैमूलधननकी
देवैसातजिबकेलेतसाबध
नहोपरहैसुचेतप्रागेफल
काप्रवधिबतावेहुषदिषा
यबिरक्रमपजावैरुपैसैक
महाक्रममनधारैक्रमक्रम
सकलबिकारनिवारैइडी
यगुणहिरदेनहोप्रायेस्वा
सजा

३० वप टट रं ती श्री नागवर्त
 क्तापु रां येकाद सस्कं हे न
 जवद नद वसबा हे नायायां
 येकोन विं सप्र ध्याये ॥ १५ ॥ नद
 व नवा चैः जीप हः ॥ हे प्र नूजी
 तुमकरणां ॥ रामे रा थ सं स प
 पं सरो ॥ तुम रा प्र ग्या क ही ये व
 दा ता हा मै दी स तु सै ने द ही विधि
 न धे व ॥ सो व द व घा न ॥ ता सी ते
 सब को ई मां नै ॥ तुम स री प्र ग्या
 क्यो न्तर म ले धौ जाते विधि न
 धे व न सी द धै ॥ र ॥ प्र स ये प्र ग
 ट ॥ सै दे व ॥ विधि न ध के व
 हो विधि ने व ॥ प्र ग ट विधि
 ॥ १ ॥ ॥ स ॥ आ स र्म ॥ ति न के वि
 विधि न्तां ति जे कर न ॥ ३ ॥ जी न पे
 ॥ ग ट फ ल स र गा दी ॥ प्र व को

हो लग्न करै विचार ही सोई है
सी बिधि जब सोधि विचारै भगु
रके बचन हिरदा में धारै ॥
तब सब सो होय वीर कान
न धर मै सो वै प्रनुरक्त योग
पंच जौ प्रथम प्रकार ॥ प्रसूये
प्रात न ब्रह्म विचार ॥ प्रसू
मम प्रवण करत न ध्यान ॥
मन जीतन कौ पथ न प्रान जे
गुरु साधि न किये ती न सब
पंचन मै नीने बनि ॥ पथे न त
चौथो न सो नुपाई जातै मन मे
मै ठरनाई तातै चौथो कथन क
गौ ॥ ॥ इति पंचन ॥ मो कौ
प्रनुसरणौ ॥ ५१ ॥ प्रसू जो कहे पा
पके प्रवे साव ध्यान ता नुरन

हिमदस श्रीरसकलतजिधि
 श्रीरसः १३ तिनकोंग्यानयो
 गप्रथमकारः चिरि केकरणी
 सुस्तविचारः प्ररुजिनवि
 ष प्रदुधनसीजांन्याप्ररुति
 नकेनुदिमनसीजांन्या १८
 प्ररिमनगुणाकरिसुप्रमानै
 नैरीनडनल्लोकदिजांनैः
 नाकोनक्तियोगः २० हित
 श्रीसोजांनैल्लविचारी
 रजाविष यनकेग्रा
 नकेनुदिमसौल
 यासुननकोनसी
 रमनप्राति
 २० तिनकोंक
 येनलंग्री
 नयोना

परिसंभ्रयतजिबेकौनाही॥६॥
प्रबलग्यानप्रगटौनहीमांसे
ताकौनक्तियोगप्रधिकारसु
रजैधूटेसकलबिकार॥५७॥
रीकथानिरंतरसुनै॥हिरदैमा
हिकेरेगुणगुनै॥दिदबिस्वास्
हिरदामैराधै॥मेरेगुणनाम
नितनाधै॥५८॥यौंजदिपबिष
यनमैरहै॥परिसनबचक्रम
त्यागेचसौसोनितिनक्तियोग
सौंनजै॥मोबिचप्रंतरायैसो
तजै॥५९॥तंत्रपंचयुजाबिस्त
रे॥ममहितजोकधूसोसबक
रे॥याबिधिषकलबासनाना
सौ॥मेरौरूपहिरदैप्रकासे॥६०॥

जनसुखगणकिकवलीजावे २५ ग्रे
 से ग्यान चक्रिको लसे. तातेक
 रमका लिसां हसे उद्भव येमान
 वतन जेसो. सकल लिसष्ट मेना
 लीजेसो. २६ सुखगनरककेबं
 येयाको. परिक्यो लीन लीपावे
 ताको. ज्ञान चक्रिया तन करि
 लसे ज्ञोरसुखन करि चवजल
 जसे २७ जो ग्रे लोमान वतन पा
 वे सो सुखस काम नाव लावे.
 लीजेन धेद सकल रिक्रम. गुरु
 लोमाना से लिजे करम. २८
 अस्ति फिरि न ली वं ये न र देता.
 २९ न र ल न ली पो वे पै ला. जद
 थ व लो क्यो न र तन पावे. परि
 क्यो ग्यां ना दि क न र लावे. ३०
 काल यिता चा इकु ल लो ग ग्यां

कबलप्रकार ॥ ६ पाये सब प्राप
साते चलि प्रावे कमज जन के प्र
ध्यानरहावे मेरा न कि सक
ल सिरता जा ॥ ७ ॥ जैसे सकल न
र निमै राजा ॥ ८ ॥ ही नु कि मु कि
पलन सा परिहरे ॥ ९ ॥ कमज जन की
निति सेवा करे ॥ १० ॥ प्ररुज दि प मे
बसो बिधि करु नु कि मु कि
क धनी ॥ ११ ॥ चरु ॥ १२ ॥ परि मेरी
निज जनन सा लेवे सकल त्या
ग कम चरण निसेवे निरपेधि
ता प्रम है अयो मो बिन सकल
प्रसत को पूरु ॥ १३ ॥ निस्यु सता
ये सुष प्रपारा ॥ १४ ॥ न काल क
न प्रधि कार ॥ १५ ॥ निस्यु स नि
एरु जो होई मेरी न गत कही
सोई ॥ १६ ॥ मेरे सु

श्रापहायेसी मांदिहं चावेमा
येतसंरदे जसं चावे त्योसंतर
नतरुश्रापकाराः । तमपंधाका
योर्जगारा । उपताकौनिसदिन
करैपरहार । सदा निरंतरबार
बार ॥ ज्यैसोदेषिधरेमनत्रास
प्रथमहीरागोददने । बास ।
३६ मोमैश्रापबसेराकरै । ताते
बसोरिनजनमैमरे । मांनवत
नचवसाग्रनावा । मेराकृपाह
तयेपावा । ३७ जामैगुरुषेव
सुषदाईसंनकुलमैपव । न
संदाई । तोहश्रापहीजोनही
तारै । नावधै । दिनवसाग्रडारै
उपताकौं । प्रातमघातीजांनौ ।
दूजो । तमघातनमानौ । ज्य
रुजेनवतंसायेबिं । कृ । विषा

ये मोर्ने नला आवे ७ धामे स
 नले ती न्योनी के धन बिनु
 और नतार कजी के धे सा ध
 ले मे रो रूप धन तै तत न मे
 रूप नु प्र ७ धामे रे गो पिर रु सि
 ले योग जी वृ वृ ल को धि धल
 योगा धू दे सक ल प्र वि द्या न
 गा काल जाल न ला सं सो रोग
 ७ ही हो ला ॥ जे ई न पं धन को ल
 जो करे कर न प्र धि का व ल ति
 न प स जी व न को क ले बि धि
 न भे द बि सार ७ ७ ३ ० ३ ८ ७
 ये ती श्री न ग व ले २११
 का दि स र क हे न ग व ह पु ह पु
 स्व ना दि सा धा धा
 निरु पा ए न न बी ला
 ॥ २० ॥
 चौ प ही ॥

मनजीतनकोंप्रमनुपाईया
तैमनगतिजांबीजाईजैसे
अस्तुरंगमबहोईअसुधा
रबसिहोयनसोई॥४॥तबत
परिचट्टिकैअसबाराहठन
हाकरैयेकहाबाराकधु
कैरूपसहतिचलावेपाधि
चाबकदेदौरावे॥४॥प्रसीवि
धिहोकेबसिकरेत्योंजो
गीक्रमक्रममनधरेसां
दिबिचारिनिरंतरकरैजा
बिधियेजगउपजेमरे॥४॥इति
त्वनकाउतपनिबिचारेज्यौ
ज्यौबिनसैत्योंमनूयारेस
कलनुपाधिउरंकीलेषेआ
प्रहापरैसकलकेदेषे॥४॥या
बिधिजोलग्नमनबसिहोई

सोसोप्रापइ नैतैजाइ ॥ परा ॥ औ
रकरै नानाबिधिजाइ ॥ सोसो
अधिकअधिकसलहो ॥ बि
धिबधेदसबहामलडा ॥ क
ब ॥ अकल्प तमसतिआंतौ ॥ ५३ ॥
बिधिबधेदयेकानेदेइ ॥ ता
तैबधेरहसबको ॥ नवतेब
हारा ननक ॥ अपनअ
धिआचरै ॥ ५४ ॥ तापीयेसब
बंध ॥ तांतु ॥ कसुअबंधेस
कलधडांतु ॥ सकलनत्यागे
येकहाबार ॥ तातैकानेबहोप
कार ॥ ५५ ॥ तातैबिधिबधेधु
नहीकरणा ॥ सकलनत्याग्यसो
मैमनधरणा ॥ बिधिबधेद
जीनभिध्या ॥ तांतु ॥ अस्तवस
वस ॥ अस्त ॥ रिमाने ॥ ५६ ॥

रिक्तां नायेसुं प्रसुद्धं
पक्षमक्रमसकलधुडावन

पापधुडां

कीयाविधिबहुप्रारंभधुडां
दीयेसमस्तजगकौबिब

नारयातैज

सतजलतेजापवनप्राकास

वजगपचत्तप्रकास

सादिकथावरपर्यन्ताप

ततकरिसब

ज्ञातमसबमासीतातैज

कधुनासीतदप्रितथा

नाप्योबेदाताकरिकी

नानेहतिनकेस्वारथा

सतबिबधिउचारफ

करमन्त्रमन्त्रैर्नागैः प्रसंकार
तजिसोवतजागैः ॥ ६ ॥ जासंत
सां मोसाकौंदेयैः ॥ मोबिनश्री
रकथूनसालेयैः ॥ श्रीसोफैस
कन्तः ॥ ७ ॥ यासाजनम
॥ ८ ॥ पावे ॥ ९ ॥ तातैजाके
मेरात्तकीः ॥ निसदिनसम
चरणान्प्रनुरक्तीः ॥ ताकौज
दिपनासां ॥ १० ॥ प्रस्वासी
बैराग्यनिदान ॥ ११ ॥ ता ॥ १२ ॥ साभा
कौः प्रनूसरैः ॥ १३ ॥ दसतरन
वसाग्रतिरैः ॥ १४ ॥ मकथर
मनकरैः ॥ १५ ॥ ताति
तपकौः प्रनूसरैः ॥ १६ ॥ निसदि
नसांघिंघान विचारैः ॥ १७ ॥ सा
रा ॥ सकलप्रवृत्तारैः ॥ सायै
जागः ॥ प्रकारः ॥ दानवृत्तादि

ककौटानै। प्रसूजो काल थर
नांसी। सतक प्रादि नये जा
पिणसोसो काले न न घेद कली
उतमसे जासै बिधि का जौ ब
दिक जला दिक निसु ध्या मुत्रा
कते लोय प्रसु ध्या पा सु ध्य प्र
अ ब च न ते लो सी। सू ध ते पु ध्य
दिक यो सी। त ब ला पा क क र थो ज
सु ध्या। क ब ल काल को लो ये प्र सु
ध्या। क लो ये न नि म लो न प्र सु
मै जो ब र धा ज ल लो ई। ब लो त का
न ते सु व सौ ई। ३७ प्रै सी जा
धोर उ जा नै। सु ध्य प्र सु ध नै द प
थानै।
का। स्नाना दिक सु ध्य प्र सु ध्या दिक ना
न जी राण ब र सु प्र ध न को स

सैजामै मेरोरु । इ। नीपौता
ः। नस्य सुनिति मम न
रु मै निस्य सुता सुं प्रनु ।
७० तातै नस्य सुता । धप्रसे
सकल्य । ध । नैवा । नैवे ।
नि । स । न । न । न । न ।
स्य सुतके निकटिन प्रवे
७१ जेयेकांत न । सै मेर । ति
नकै पुं न पाप न । नैरे । राग
दोष ब्रु जित सभ । स । न । न ।
तात । स । न । न । न । न ।
तीनाप्य । निसतारे । न । न ।
हृत जीव निसतारे । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न ।
नै । न । न । न । न । न ।
नानूयेकक सै । न । न । न ।
कौपा । नै । नै । नै । नै ।

नने वेधसाभाने २३ अंग
हिसुद्ध प्रकर्म का
हो हिसुद्ध प्रकर्म हेसुद्ध प्रकर्म का
करम प्रसुकरता
येषट्प्राचरता २३
होहितोसुद्ध ये प्र
सुद्ध प्रसुकरता
इ कसुप्रसुद्ध
२३ सुद्ध प्रसुद्ध
राजदसुकोहित
येनयेकोधरत
प्रधर्म २३
मनीयेको
येको ता
येरोमक
जोकबुर्बि
येनेयेन येने

लैजामे मेरोरु । ह्यनीपौता
 सबते निस्यरुनितिममचम
 क्तमेनिस्यरुतासुप्रनु ह
 ७० तातेनिस्यरुता ७५ प्रसे
 सकलविसुमेनांसीजेसो
 निरु । लैजनमेरोसुषपावे
 स्यरुतातकेनिकटि । प्रावे
 ७१ जेयेका । नकुसैमेरति
 नकेपुंनपायन । नेरे । राग
 दोषष्टजितसमदसे । अगुणा
 तीतबुद्धकौपरसे । ७२ प्रसे
 तीनाप्य । विसतारे । इनकौव
 हतजीविसतारे । जेईजेजत
 नमेप्रावे । तेइतेमेरोपदपा
 वे । योगान्तिप्ररुसांधितान
 तां । येककल । अवन । यन
 कौपायं । मेकौपावे । येविनप

नकौसंगनकरनौ ॥ ३३ ॥
 वचनसकलप्रसन्नं ॥ ३४ ॥
 णीघोडेक्रम तपोत्तम ॥ ३५ ॥
 मरमः ३३ घेमध्वग ॥ ३६ ॥
 नकौधेसः नैदेरेको ॥ ३७ ॥
 सः यान्निमतिमैत्ते ॥ ३८ ॥
 धोरेधोरेमैठसुवा ॥ ३९ ॥
 नरमकसिसकल ॥ ४० ॥
 सीजातिजीवनि ॥ ४१ ॥
 नरविषयंननु ॥ ४२ ॥
 तिनमैग्रासक्ति ॥ ४३ ॥
 तातैसिरदेनुपदे ॥ ४४ ॥
 सांकारतैकोध्या ॥ ४५ ॥
 कौधुनपजावै ॥ ४६ ॥
 प्रापसीप्रावै ३६ ॥ ४७ ॥
 रैसवग्यान्तःता ॥ ४८ ॥
 स्वमांनकतातै ॥ ४९ ॥

उपायः। प्रायश्चित्त एकोदाशे ब
ताः। परिजेत्प्रतिशीपसुप्र
ग्यानं। यन्नेकोद्योडिकरैकष
ग्यानं। ब्रह्म तकांमनां सिरदै
व्यारे। तिनहितव्यं। करमनि
विसंतारैः। तेषसूदुषनिरेत
रपावैः। तिनहितव्यं। सभासिर्वि
जावैः। तिनहितव्यं। तिनहितव्यं
धनुचारे। तिनकेबहुआरं
निवारैः। प्रपनोः प्रपनोः जोप्र
धिकारः। नामैबरते तजिबि
सतारः। शुचौनांचौसबपल
रैः। प्रपनेकरसमांसिप्रनुसे
साये। तिनतिनकीबिधिजानै
ताते। प्रौरनषेधसमानोः।
ये। कछुबसुबुधिमतिदेधे
मपुजीवनिकोबधनलेधे।

मनुष्याः इत्योऽप्याकरिषुं स्तवि
रनुकरीयोऽप्ररुपुनिकलप
मफलजेतेऽसुरगादिकषान
विधिक्तेतेऽशंतातेकैककि
रुचिनुपजाशेऽनेदिनेषध
निविधिकरवाशेऽनेनेषध
षदेकदकपीयायाऽबालकक
लाडुदिवरायाऽअश्रौषादिकोप
मलाडुनांतीऽश्रौषादिकोप
मबजाशेऽसुरगाहिल्लोकरम
नकरोऽपुनिसुनिल्लोकरम
रगिल्लोकरमऽनल्लोकरम
रथलापावैऽनल्लोकरम
रमसमावैऽनल्लोकरम
लापावैऽनल्लोकरम
ममावैऽनल्लोकरम

लनिसमेति ॥ देसकालगुण
इव्यसुजात्रे ॥ येनकेनायेनान
नात्र ॥ येकनयेचयेकविधि
नाये ॥ योंसकोचमांनिसबरा
ये ॥ १० ॥ अजदेसकदमः ॥ राता
जांसी ॥ अरुजताहु जिसेवानक
नासी ॥ परिजोक्रदममर्गबहर
सै ॥ परिमलेषुजासांवासा
सै ॥ ११ ॥ अरुजदृषितुस्वतहान
सी ॥ भपरि ॥ दिक् तिनुके
सी ॥ अरुजोमृगधादिकपरि
सै ॥ प्रिकदरजताहु ॥ र
१२ ॥ अरुक्दरजतामेदीसोई ॥ प्रि
जोसोवेनुसरसोसी ॥ सोसोदेस
निषेदकसाजे ॥ तिनमः ॥ सादि
कनसाकीजे ॥ ३ ॥ तिनले ॥ आ
ससुचिजानै ॥ तिनमैवासादि

हाजांनौ मूरषपुष्यतवेन

॥ फलतिहृत् ॥

नैकरन तिनकोकदेन

॥ ५० ॥ कासा निरुपण

त्रोचप्रधिकारी भितिसनो

शकुलसदाविकारी ॥ ५१ ॥

हिफलकरिकानैरे

न नित्यापतलन हाजांनौ ॥ ५२ ॥

तिनके निति हिरा हाजांनौ

रितौ हते जांनौ ॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥

॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥

इन्द्रवतकौ प्रमः सुधा शौरस
कलसक्तिप्रबुमान सुद्धिप्रसु
राकोप्या न धान १२० सोसब
देसकाल ७ सार विधि नषे
धकौकह विचार धानरूपा
त्रवस्त्रगजदंत तेलरू ३२ लमा
दिप्रनंत २० काल प्रगिजल
माटाबाई जथा जोगपहा ३३ सु
ध ३३ ३३ प्रसुजाक्त लंग्योदु
गीध ३३ जौलगधोप्या ३३ नंगा
ध ३३ तालग ३३ निप्रसुधनग
हीधे ३३ गंधगधे ३३ रमलका
ये ३३ स ३३ ३३ ३३ तपप्रसुन
ससकारसुनकरमरू ३३ ३३
ममसुमरण ते सो वैसु ३३ क
रे ३३ निधासापप्र ३३ ३३ मेरो
मंत्रलीये विधिजानै मंत्रविह

रिक्त च्यौ। जब प्राणातमै

८ मिटावै। प च्या निम ति प
नाषी। सो सुरष नि
तत्र करि दाषी। त तै ब हो वि
धि कर न नि करै। ब रु कान न
हिर दै धरै। प सा प सु रु स्या क
रि कै बि व सार जे जे पा वै ब हो
प्रकार। देव पितर नूत नि कै
ज जे। उर तै सुष ध्रु आ न ही त
जे। ६५ सुप न तु ल्य सु र गा। ६६ दि
क ना गा। ति न कै। दु ल न सु नि
या ले क। ति न कै। ६७ आ हिर
दै धरै। ६८ बा ष र चि धर न नि
६९ बि स तारै। ७० बि ब न हो हि
व रु कर न नि नो लो। ७१ सु र ग
दि क उ पा वै ना ही। ७२ को ई

तौ तिनमै तौ जे दनसौ ई मरणो
प्रकार येक समिदो ई रचयो
ये बिचिन ये धरुहो वै उच
नाचकी और जौ वै परिये
दोडहै कथुनासी प्रोपबिचा
रो प्रंतरमासी रथनाचे तीच
करम प्रोचरे मद्रापोनादि
कहकरै तो नका दुषन
नासी तिनसाहै उदा गमा
ती ३० प्ररुजो हाकरतुसै
गरितुके समै जुवती प्रसंग
तो ताका कथु दुषणनासी सो
नितिसै दुषणनासी ३१ जे
संघरै धरणा मोंकोई ताहि
नपरनेको नयसोई प्रिनोक
थुचडै हंडुचे संगतिकरि
दसा प्रोवेनाचे ३२ तातै ति

बिस्तरे ॥ इति नको संरा वात
नजावो न कि कलंते लिरे हे
आवो जद पिने दकर मनु चा
३ ॥ अर मरु प्र अकां व विस्
तारे ॥ उपरित था पि सुं स् ॥ इ
वतावो क न क री इ जो र क ल
थ ड वि ॥ परि सु ति को आ ल य
न सा जा न ते क थु प्रै र और
व घा नै ॥ इ च स व द वं स ल ल
दु र वे भ्रा ॥ डा को को इ व सै न
सा सो भ ॥ सु धि म धू ल रू प ह
जा को मो वि न नै द ल सै को ल
को ॥ इ प्रो ण रू प परा से नो न
प सं ती को न न मै धां म ली
जा के व म धि नां मू ल ॥ चो ल
पी प्र ग खै प री थू ल ॥ ७ ॥ ने

जानै निसदिनबहैबिधिचि
ताठानै ३७ ॥ ४७ ॥ पुरधारयसोव
हीनः निसदिनरहैदूषतप्र
दानः तातेसमजेप्रापनप्रो
नः मिथ्याज्ञावैबृषसमां न
३८ ॥ ज्योसेवैलुहारकीषाल
खासनेतयोषावैकालकृत्ति
नैरेप्ररुमेथनकरैः गान्नीस
करनरकसीपरैः ३९ ॥ उष्टुसूक
वककरजैसेः विषयनाग
नरसो रतेसैः निषाविषैस
करसेकांसी विषयलापन
लेनरखांसी ४० ॥ कुटंबनारन
रबहैबहैमरे नरकरुचौरा
सानैपरैः ४१ ॥ उष्टुज्योलेदप्र
ग्यानीः विषैदूषीकौकलेस
वग्यानी ४२ ॥ येनरतननसीवि

ब्रह्मज्ञानो यन्नकेलेति च है
सुप्रज्ञानो प्रापप्रापको कौ
अनरथं तिनको मूरिष जानै
अरथं ४६ जैसे यानव मैति
ति न की क देन जाते सुप्र
क मरने अरु तिनको ज्ञान
र मत देषै सदा निरंतर दुषि
त लेवै ४७ सो तिनको कहन
ब्रह्मवै अरथरुको मन क
न दिडावै ताते सै तो सब
बिधि जानौ को से कर मरु
प्राबधानं ४८ परिजे क धुल
रति नाहि सुनाय अरु सुप्र
अरथ अरु म अरुको म
ताये ते ते सकल धूडावन
रणाहित विचारिकानों
धारणा ४९ जैसे ब्रह्म तव

निति निरज न चाये ॥ अज न स्व
लद्विक रिनाये ॥ ८ इताते सुरति
निति मोहि ब ता वै ॥ परिये हत
तको पा न सी पा वै ॥ सो पा वै सो क
म प्रा धान ॥ सो य ने स काम सो
य ल व ली न ॥ ८ ॥ हो ला ॥ यो सु नि
करि सु ति त त को ॥ उ ह व ल सो ॥ प्र
न दः ॥ प्र स्र करी ज व रू ह म सो ॥
जा ते धू रे इ इ ॥ ३ ॥ ॥ अ भा ॥ यि त
श्री ना ग व त क सा धु रा ॥ ये का द
सु क्त दः ॥ श्री ना ग व द उ ह व स ना
दः ॥ ना धा पो वे द स्य वि ल पर स्य
नि रू पा ॥ ना म य व वी सो ॥ प्र
था ये ॥ २ ॥ उ ह व उ वा ये ॥ यो
॥ ३ ॥ ॥ य ह स्व त त स कै ते क सो

कलदे ज्यौ चो रपरितेको
मकर्मतम प्रंधना मोहि
देष अरुन गबंध्य पवजे
सैनन रोग मधु वै अ
जो सोत वस्तन हा जो मो
अण्णान अंधकर्मिष्य न दे
धेन हीनिकट मं ५५५
ते मो धि व लज्ज जतै तजने
रुनिं जी व निज्जो दि कठाने
ते फि रि तिन हा रुने प्रलोक
ज न म ड न म पा व त ५ सो
क ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
देषी रुनि रुनि जी व जी व
का प्रेषी तिन कै तिक हा प्रे
बां नी रु स्या ज्जं प हि ना सि
व बां नी ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
जि ज्ज मे ना ष्यो अरु स्म स ह

त्रिनरसाल कृपासिंघकबोलेंगो
पाल ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
ते उद्धव ज्योतिषे सब नाथे जित
ने जितने तब नराथे ते ते सब
नुमजानौ सति तब विचारै स
उप्रसति ॥ ७ ॥ मायादे विकसै सो
ते ॥ माया मांसि सति है ते ते
जो सिद्धे धिजो दिन कौ देखै ते सो
मसई मिथ्या लेषै ॥ ८ ॥ माया मा
ही युक्ति विचारै ॥ प्रपनौ मते उ
चारै ॥ ये यों यरु यों यरु यों नो ही ॥
करै सबै मित्या प्रापुन मांसी ॥
९ ॥ यरु यों ही सिद्धे यों नै नाथो ॥ ते
री कसं सति न हारो ॥ या विधि
मम ८ ॥ माया न स्माये ॥ तिन नो
ना विधि पथ चलाये ॥ १० ॥ मम मा
या कौ सक्ति प्रवृत्त ॥ तिन के पंथ

साधेरधारसी जावै धनहित
 गुरुके धरि लावै ॥ १ ॥ रघा धै परे
 बिछन जे कोइ तौ दुन्यो ते जा
 वै सोई ॥ तौ जे बरु बिक्रम ज
 पावै ॥ तेय सुदुह लोक ते जावै
 ॥ २ ॥ सातिक ज त देव ॥ ३ ॥ न
 उहादिक न राजस्य ज जौ ता
 कस चलये दत कौ सेवै ॥ तन
 मन धन ले तिन कौ देवै ॥
 ॥ ४ ॥ या हां ज ग्य बसौ त बिधि
 को जे ॥ बि प्र नि बिसौ त द पि
 णा दी जे ॥ ता तै सुरगा टिक
 ॥ ५ ॥ ॥ ये ॥ त तौ बि तै ॥ बि
 भाग भाग ॥ ॥ ६ ॥ पु नि ज ब
 सौ वै तिन कौ प्र त ॥ त बरु जे न
 व मै धन वत ॥ जै सी ना तिक
 मना करै ॥ तिन नि स ति क्त

२
पंचसतिकरिजोवै ॥ पापोंसं
सारबिबिसतार ॥ मायासं
लबहोत प्रकार ॥ तबसकल
साधाप्रसाधा ॥ प्रसूतिजकेब
रुबिधिउपसाधा ॥ १ ॥ हीनतेज्यो
वरणेत्योसति ॥ प्रिसबमाया
सकलप्रसति ॥ ज्योसिज्यो जि
नकेमनमायो ॥ त्योसित्योतिन
वरणिसुनायो ॥ १ ॥ मायाकरिब
ज्योसोप्रतम ॥ जातेधोरेंसो
प्रमातम ॥ देहेप्रसूजउरेंचो
बासतिनकोमिलेंसकल
बास ॥ १ ॥ प्रसूजेमद्विबंध
केइतेनरममायासतिनको
इतातेजीवबलदेनासो ॥ यो
पचासजानो ॥

सबमें व्यापक ब्रह्म नरूप निपतनिकव
रूपमस्य

इत लकोकोई नही जानोतातै
अरै अरै बंधानै अंतपार
कोई नही पावे ज्यो सायसथा
हो नही जावे ७१ प्रतिगंती
रूपरथाहै बाको कोई नही
जावे जाको जैसे सब ही नजे
अनन्यासी सक्ति प्रबलत रूप
अनन्यासी सोही व्यापक स
अनन्यासी सब दरूप इजा
अनन्यासी ७२ कमलनालिक
वालु जैसे सब दरूप सबमें
नो जैसे सोही प्रगद्योवही
द्विस्तार कनकरिहिरदे
हते अष्टद्वार ७३ ज्यो मक
यं लंबुन विस्तार करि वि
सायव हो रिसहारै बंदरूप

तन्मात्रातेपंचप्रकारः ॥ २४ ॥
करनस्तुचानैरसंघ्राणा
येपंचोईदियं ग्यांनपायुंउप
स्यचरणकरबाणीपंचकर्म
येदीयसुजांणीपरमनदसह
ईदियंकोराजाजाकासक्तिक
रेसबकजाचितिजलनेज
पवनप्राकासाप्रठाईसतीन
गुणपासः ॥ २५ ॥ अतिउत्सर्गधि
रमअरुबचनोयेपंचोईदियं
फलरचनोतातेप्रषाविंसत
तत्त्वाप्रधिकननाषैंग्यानीस
त्वारसृष्टिआदितेमाघाये
२५पुरुषसक्तितेनईप्रनेकात
नमात्राप्रस्तुकरुतत्वप्रसुव
रयेकारणसप्रकारः ॥ २६ ॥
पंचनूतप्रसुमनईदियदसः

प्रगट्ठे विस्तारः जाकौक
धुवारनसापारः ७ सकलाह
दधुमकलावताः लेकरिषं
तकलाठसैराः ७ प्रैसौमतौ
नडांनैकोई मोबिनुना
वेबिधिकिनसोई चडाइरु
प्रकहिमोकोराधे सकल
देवगधेमोकोनाडे ७ जेये
तकरनकरवावे मोतनुद
जौलकलवताः ७ प्रैत
सकलकोनाधेनां ७ मोके
कहैनितिप्रकासनानां
पनिधया ननावै येकवृत्त
कहासकलर नावै ७ रजे
सैसांपजेवरीनांही ७ यौस
वडागतवतावेनां ७ मोके

अवेयेतत्प्ररुद्रातमनिर
कतसबस ख॥३॥प्रा बिधि
चारतत्वबिसतार नचौनीचे
सकलसंसारपंचनूततन्मा
त्रापंचपंचइंद्रियमित्यंप्रप
च॥३॥मनप्रातमा निलेदस
साततलसपतदसजांनोतात
मनप्रातमायेककरिजांनोते
जनषोडसतलवषांनो॥३॥पंचत
प्ररुद्रइंद्रियपंचब्रह्मजावम
नकौपरपंचप्रेसीबिधि
करिपंचचलावैतेलकौस
ब्रजगतबलावै॥३॥इंद्रियपंच
पंचइन्द्रप्रातममित्यसब
जगत्कृतप्रेसीबिधियेका
दसकलतौलौतौसुनिसिर
दगल॥३॥पंचनूतसबलावै

विस्तारः तुमलोप्रष्टाविंसति
कृते तैर्नेदिहकरिजननेः ग
सः परिवर्तते रिप्रवह विधि
कृतेः अस्तित्तनते सुनित्यौती
गतेः १ कैकिलेवल् सुप्र
कृतेः कैकिलेवल् पचास कैरि
कृतेः अस्तित्तनतेः कैकिलेवल्
कृतेः अस्तित्तनतेः ३ कैरिप्रवल्
कृतेः अस्तित्तनतेः कैकिलेवल्
कृतेः अस्तित्तनतेः ४ कैरिप्रवल्
कृतेः अस्तित्तनतेः ५ कृपाकरो
कृतेः अस्तित्तनतेः सतिमते
कृतेः अस्तित्तनतेः सुनित्तनते

नईपैसप्रप्यारः प्रकृतिजासि
 प्रातममिलिरस्यो प्रसुप्रात
 माप्रकृतिकरिगस्यो ॥ ४ ॥ रांन
 नैनेदनजानैप्रा ॥ येकनेक
 केसबप्रनूसरै ॥ येननै प्रक
 तिकसादौकसाये ॥ कौनप्रा
 तमांजोदिदुगसाये ॥ ५ ॥ करि
 कणीबाणा बिस्तारै ॥ बचन
 बाणाससै प्रसारै ॥ तुवैमाया
 बंधौसंसार ॥ तुमसाहतेहो
 यंनुध्याय ॥ ६ ॥ तुमसायाक
 गतिजानै ॥ कृपाकरैतबतु
 मसाजानै ॥ बांनीसुनीनक
 प्रपनेकी ॥ तबबोले श्रीकृष्ण
 बिबेकी ॥ ७ ॥ श्रीनरगायानुवाच ॥
 सेकुंइवयेग्यानप्रगाथको
 रकलसैममसाध ॥ सोयससा

नकोलसोऽप्युतः इवसमम
पुरातनरुद्रादिः तत्रयेनैदसक
चमिदिजावं १३ जेतत्वसक
लकावाकेः हिततेनयेमतेनाता
केः नकोलसोऽप्युतः इवसमम
ये तौ तौ नैदसकत विधिना
येः १३ जेतयेकसुषुविस्तारः
ताकोलसोऽप्युतः इवसमम
लाया बहुते प्रसायाः उपरुतिन
केलसो विधिनुपसायाः १३ ति
नकोलसोऽप्युतः इवसमम
नकोलसोऽप्युतः इवसमम
उपरुतिन
केलसो विधिनुपसायाः १३ ति
नकोलसोऽप्युतः इवसमम
लाया बहुते प्रसायाः उपरुतिन
केलसो विधिनुपसायाः १३ ति

अथ देवतमिति प्रदत्तं न
तीन्यौ मिले प्रस प्रजबली
तिनको कारी जसो जेत बली
५० तान्यौ बिना कश्च नहा लो
तीन्यौ मिलि बरतै सब को
तुचा सपर सप वून त्यों जों
करण रु सब द्दि सा क रि
मौ ५१ ना सा सु गंध प्र स्थि
नी सु ता ॥ जि कार स रु ब रु
ए ज ल जु ता ॥ चि तु चेत नां प्र
तर जां नी ॥ बु धि बो धनां व
स्वा स्वां नी ॥ अ रुं का रु प्र रु क्त
ता रु द्दा ॥ मन मा नि बो दे व ता
चं द्रा या वि धि त्रि वि धि प्र प
च प सा र ॥ सक ल परैं प्रा त
म नि ज सा र ॥ ५३ ॥ ई न ती न्मे
वि न ज ग त न हा ई त्ने प्रा त न
वि न ज ग त न हा ई त्ने प्रा त न

रूपजायाकेतेते रजः तपः
सांतिकप्रतपाला ताससस
पगुसतसेकाला २० राजसह
तेकरमः चिकारः २१ असत
अबिबिषप्रपार सांतिकगुण
तेनुपजैग्यांनो २२ गुणाना
गुणानांनो २३ शमन परप्रत
मांमांनो ताते २४ रूपक
रिजांनो २५ पंचबीसतासतेक
ते २६ असुतयोसासुनिप्रौरैगद
२७ सोसेकालगुणनिबिस्तार
सुत्रसुत्रावसोस २८ पसार
ताते २९ तादरूपपरिजांनो अस
सुत्रावम ३० तत्वसामांनो ३१
तातेतत्वअधिकनहीगद
पंचबीसपूर्वा ३२ सांकस
प्रति ३३ रधकेतत्वप्रकार

नैः तब ही सकल लज्जा थी है
भाने ॥ पश्चिम लोक छुड़े दे
हाठ पायी ॥ फुं प्रात माल ई
करिष्यायी ॥ सम गै ड ब ही
अपनौ रूप ॥ तब प्रात मात
जे न व कृ प ॥ प ॥ प्ररुत ब र
प आ प नौ जानै ॥ जब म म च
रण सि दानै ॥ प्राणै ॥ ज दि प
निष्प्रा सब संसार ॥ जो क थ
द सै बि ब धि प्रकार ॥ ६ ॥
प्र जौ लौ न हा मो कौ न जे ॥
तौ लग निज प्र ग्या न न त ज
ज ब हा नै र सरा हा प्रा व
त ब हा प्रा त न ग्या न ही पा
दोहा ॥ प्रै सै श्री गुरु सब च
प्र कृ पुर ध को ग्या न जे
की ना प्र स त ब ॥ हरि जन

कारयस्वपः निगोशोडशः
सतनजतमयेः ॥ ५ ॥ कार
तिनतेरचौसकलबिसत
ररस्यकार्यका एहृदियेज
एौः पुनषनिमतिः साधोम
नौः ॥ ६ ॥ सतिः पुनषतेः पां
मिलिस्मस्ततबसिः छिर्नपांवे
३० सपतथ्यातुकैये बिसतार
प्रातमदिषाके प्राथारः सक
नतत्वः सि मे प्राये ताते येव
निसप्रबताये ॥ ३१ ॥ पंच नूत
पुलीनुपजाः ॥ ३२ ॥ तिनके बूहवि
धिंदसबना ॥ ३३ ॥ प्रा ॥ प्रबसप
योसरिति नमैः चतन ॥ सत
है जिनजिनमैः ॥ ३४ ॥ प्रसीबि
षरकोः ॥ ३५ ॥ प्रापुलीमां
वहकरै विचारः ॥ ३६ ॥ प्रापत

तुन जांनै को ईया बिधि नु इयू
धौ जांन त बरु सि बोले श्री नग
वांन प्री च ग वा न उ वा चो उ इ व
प्रु मन प्र ना ब कारी सब इंडी य
न मा हि धि कारी इंडी य न कै म
न ई सब करै सुषा हित बरु उ दि
न बि स्त रे ॥ ६ ॥ सो त न त जि दू जे ल
न जा वै त हा ई त हा प्रा त मा प्री व
जि न जि न सु ध न सु नै प्र रू दे धौ
ति न ति न कौं उ ति न करि ले धौ ॥ ६ ॥
ति न कौं सो मन नि स दि न धौ
वै ॥ ये त न धी न न धै ल हा जा वै ॥
व ह न पा य बि सारै धा कौं न न म
म र ण क हा ये तु है ता कौं ॥ ६ ॥ जा त
न भै बा धै प्र नै मा न ॥ ६ ॥ इ पू र व
त न जो प्रा न ज न न म म र ण धा त
न कौं सो ई ॥ ६ ॥ जौ ज न न म र ण न हा
को ई ॥ ६ ॥ जै सै सु ध न न नौ र ध नौ

संकारः प्रातमा नित्यनवके
बिसतारः प्रैसी विधि
बहुभारगकसे युक्तिवि
रितिरदानैग इयाप्रक्तिप्र
सोकोदा नैविद्य यनकोज
नियकको इव प्रैसोसुनि
तत्वन रोग्यानं व प्रपूध
प्रपूधानि इती उद्वयव
ये इ सुजायुग्यान नाप
मेरे उद्वयव रमनिदायो चे
तनग्यानरूपप्रबनासी
दानंद प्रम प्रकासी र प्रैसो
प्रातमा मरोरूपध परैगु
नितै प्रमप्रनूपा जड विना
नय प्रमप्रसुद्ध दुषरूप
परलसुधन इ प्रैसाप्र
कतिपरप्रसा नगारी तोह

निरंतर जावेपरिदावादि कति
मैरसावेप्रसूजेसैसबबृह
नकेफलादासैतौपरिचिरना
हायल॥७५॥तौसासबदेहनि
कौजांनौकालसागुसतमाने
जदधिप्रवस्थाजातीलेबैबा
लकूपारजूवादि कदेये॥७६॥प
रितौहकूरघनसाजांनैकेवल
ईसौयोकरिमानेतायसुप्रातम
सोसदाप्रजनमादेहसंगतै
पावेजनमा॥७७॥प्रकृतौप्रम
रनिरंतरजांनौ॥देहसंगमर
तौसोमानौजेसैप्रगनिदास
केसंगमःसदालहेहलपति
संगः७८॥जौलगलबकासंग
तिरसौतौलगप्रालमप्रतिह
सहैग्रनप्रवेसहृष्टिप्रवतार

नसुनोउंतोसितुहेसदाप्र
बुबतेनोसि॥४॥उद्वप्रप्रक्ति
रचेसंसार॥सुप्रिमथूलवि
बिधिप्रकार॥उपजेबिरते
लोयेबिनांसतानैआतमन
तिप्रकास॥४॥उद्वयेहेमे
रीमाया॥िनसतरडतवग
प्रजाया॥तिनकोत्रिबिधिस
कलिनितार॥डाकोकधून
वारनपार॥४॥त्रिबिधिकर
वकोपरिडा॥नद॥जिनतेजा
वलहेनिषेद॥प्रध्यातमप्र
दिदेवप्रदत्ततपतीन्यैमित्त
प्रकृत्यजक॥॥त्रिबिधिरु
पस॥जगप्रदभूत॥४॥प्र
प्रध्यातम॥प्रदभूत॥४॥वि

ममगरीयेतौयुगठप्रवरई
रहीयाहीबिधिजैसैसबदेस
बधुदिसैपुत्रधनगेसुठ
मंनरनैबसौनांतिबिचारै
पनेबंधनसकलनिवारै
सादिकसबसंगतितजैसहर
नरंतरमोकौनजैःटपुर्वजज
नपाकेतेप्रतःषेतीषेतमांदि
प्रततःषेतीकरनसरसेन्या
थौतनन्यारैकरैबिचारा
क्षाकरनबाजबिस्तारैतांसी
गधकरैजैसैतनमांसीतिन
प्रापुसिन्यारैजांनैःसंगकरै
सुषदुषमांनैःरहीतातेतनकौ
गनिवारैयाबिधिप्रापुप्रापु
नैत्यारैजातनप्रांन्यारैप्रापु
जांनैतनसुषले

की प्रात्मयेकः । तैचेतनि
होय प्रनेकः परः । तमस्य
यः । कास्य भवनासाचेतन
रूपसकल प्रकासीये
सकः । तमक प्राधारः प्र
रुः । तनासक लपाः रः ५५
नि प्रातमाक धुनेहोः प्र
रुः । तना नाना नकोइके
तततैः पप्रो प्रलकारः ति
५५ एानको त्रिबिधि का
रा प्र सो अग्यानः लकारि
मानोः ताको कायो जगतन
ये जांनो सोः । तमां प्रापुण
सलीयो नव नयः ५५ प्र
को कायो ५७ प्रातमसदाय
कलीरूपः संकारतं परैः प्र
नूपः सो जबरूप प्रापनो जा

तजेनहंलौलौं॥जनममरणं
षमिटेनतौलौं॥२३॥जलप्रवा
हदिगठाडोकोई॥सबसंधन
देषेचलसोही॥बैननरमतजे
कोईदेषे॥तबसबधरणीनर
मतालेषे॥२४॥तैसेयेप्रातम
धिरजांनौ॥औरसकलचंच
लकरिमांनौ॥निशुलमनक
रिदेषेजबही॥निशुलसत्तर
पतबसबही॥२५॥जैसेसुपन
मनोरथकषा॥येसबजगप्र
रुबिषया॥सुषा॥परि॥जह
पिजगसतिनकोई॥लौहकदेन
बरतनकोई॥२६॥जैसेसुपन
सतिकथनांही॥तदरिजौलौह
निद्रामांही॥तौलजसकलसती
साजांनौ॥सुषदुषपावेउदिम

नमः शिवायः ॥ १ ॥

कुम्भकरि रसतलुधि
हैन्दीनकी कातीये देव कौन
गति तिनकी : सकलबीया
प्राप्ता तनयेक : क्यो करि
पावे सुदेक प्रनेक ६३ प्ररु
कुम्भकरि रसतलुधि
विष्णु एव तलकलाय सब
तनै - तिनकर मनिरु कर
पावे जावे, क्यो करि जौनि
प्राप्ती प्राप्ति : ६३ प्रमरम
क्यो करि दिवा : याको सो
दिवा सो सोवा : ये तुम वि
जात को ईजानै जलदधि वि
जात देव सोनै ६४ जो कथ
क्यो करि सो होई तावैत

गावे जैसै बहौ बिधि दुषनुप
जावै बहौ बिधि नय के बँन
सुनावै १०२ प्रजो प्रपत्तो श्री
य बिचारै सोये को मन मन
नसा धारै बहूत कष्ट ते मनै
नडिगावै सो नवत जिमम
चरणान प्रावै १०३ मेरो पंथ
षडुगकी धारै जो नडिगै सो
उतरे पार सरिके बँन निंदु ॥
कर जा नि न उद्व ब ह ह म करी
नय मांनि १०४ उद्व न बा चै ॥
ले पु न तु म ये बँन सु ना ये
सो मेरे नुरद कर शी ये जो
प्रसा थु बे का जि ब का वें ता
ते स ह के न बि धि जा वें १०५ ॥
मेरे हिर दे ग्या न ह ह रा वी स ह
न न पा य मो हिर न स म गा वी

येत नद्यो दिग्गोरमैः प्रावे तव
यातनकावृषि प्रदसो वृक्षीत
नकोऽप्रापूहीकले ७० जनमप्र
रुमरणसंमृति कोसोई प्रात
मजनमकरणनहीसोईः प्रोर
कधूऽप्रातमनहीमरेः प्ररुक
रुनासाप्रवतरे ७१ यौतनमे
जनकोऽनेमंभाः तातैतनउ
प्रजतलैजांनोः तेसबः तम
केऽप्राधाराः तनमनबुधिचि
तप्रसंकाराः ७२ तिनसंगतिग्रा
तवकोदूप तिन हैतजेबिनपल
नहीसुप्र उधवसकलदेहसु
जेते सदासकलानि नसतसत
७३ कालनदीपरवा - प्रचंड ता
करिपलकपरतनहीषंड जैसै
नदीनिरंतरवहै परिदेवनके
त्योंहीरहै ७४ प्ररुज्योऽप्ररचि

वांनः ३३॥ श्री वेती श्री नागव
लेका पुनाणे येका हल्लकंद ॥
श्री नगवदध हवसेवादि ॥ ज्ञा
षा श्री दाजी सो प्रव्याये ॥ नर श्री
नगवान नवाच्यो ॥ चौपडी ॥ सिन
द्वव्रै सो नरुकोई दुर्जन वच
न ह्मनित नरिहोई ॥ इ दुर्जन
वचन बांन जो सहे ॥ न ल वं च
न हौ न न स प्र सै ॥ जो प्रुया
सो साधक सावे ॥ यो विन सा ग
पदन सो पावे ॥ ये च क न न
सने ग स बांनो ॥ इ प्र ह ल न
मरक प्रस्थानो ॥ इ तो नि न न
व सो य न प्रै सो ॥ दु प्र प्र य न न
नितै जै सो ॥ य वि न न न इ न
य सु नां ॥ स ह न स ह न
व सु रां ॥

बाल प्रवृत्तः प्रोक्तं मारः ॥
 ७५ ॥ व जैबनमधि जैरा प्ररु
 नरणां नव प्रवृत्तस्था देरु प्र
 चरणां ॥ ७६ ॥ तमं ये कस्तु ५५४
 लीनमैः क्व ख नसा लिपे ति
 नतिनमैः ७० ॥ प्रै सै जा निमु
 क्तितव सोई मेरो सरणा गति
 जो के ई प्रपनो दा दो पिता बि
 चारै ॥ ७१ ॥ नको मरणां नुरमै थ
 रै ७२ ॥ नाई प्रो प्रबमै प्रनूर
 क्तः त्यो हिते उ ते प्रा स क्त ते
 तौ ७३ ॥ गटकाल बसि नये प्रब
 सिधरे श्रो टि सब गये ७४ ॥ चरमे
 ७५ ॥ सै गति प्रै सी नई व
 पदा दे का जै सी प्ररु मे रे प्रब
 बालक सै रुम हं हते पिता
 के तै सै ७६ ॥ सकल प्रवृत्तस्था

नही पावे देवर पितर प्रतिथ
 नही प्रयोषे बहन नान जीकु
 बहन संतोषे च सो कदु जज
 जे सो सोई ता तेनी चौ प्रोरन
 कोई ता लें सो कदर जदु जे प्रे
 सो नये ॥ सब जग में जिन प्र
 पज सल सो ॥ क्षी ज्ञा ति प्रति
 पबंध व निज तन कौ ॥ ये न
 है ति न प चै धन कौ ॥ पुत्रा
 दिक्क कल्पे दुष खसो जा ति
 न्द ति दुर बै न नि कसे ॥ १० ॥
 लेये जि नान न्द ति दुर बै न
 चक लित्र प्रस्के न्धा नाई
 जस लग है सब बंधा सगा
 ई ते सब डौ ह नि दे तर करे ॥
 ता कौ प्र प्राये सब प्र प्रा चरे ॥

सुठाने ॥ ८८ ॥ तेन तेनान जेसने
पावे ॥ तिनहाजा मजबज ॥ म
रिजावे ॥ सांतिकत ॥ रकैरिष
लोई ॥ राजसनरकैदानवेसोई
८८ ॥ लाभ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥
याबिधिउगुणजगनुदचूत
जादे ॥ प्रगतमस ॥ ८८ ॥ ८८ ॥
बसकधूकैरसमा ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ परि
तनकरतकदीनलोई ॥ संगदो
प्रबंदतलेसोही ॥ जेसेनाचैग
वेसोही ॥ तिनकोइजोदिषा
होई ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥
तानतातराग ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥
गुणकमाने ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥
प्रापकौमाने ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥
मनिबंघैप्राप ॥ जोकधूकै
लोईसबपा ॥ ८८ ॥ ८८ ॥ ८८ ॥

नुजाद्यो सोतहादयो न प्रापन्
 पायो ताते नुजा चिंता चिंति
 सदिन बस्यो हिरदासो बित्तो हरे
 वेत पत घेदको पावे प्रासूकल
 बहोत बिधि प्रावे प्रैसा बिधि
 नुपज्यो बैराग जाते सकल दुष
 नको त्याग गत बसो बिप्र बच
 ननु चारे बहोत नाति शय धिक्
 रे प्रहो ब्रयामे कष हा पायो
 प्राप प्राप को दुष नुप जायो १८
 बसो ते अमनुप जायो बः सुप
 नसक्तानि न प्रे सो र ब जानि घ
 र चो नामे घायो नामे ये के प्र
 पल गायो इना क इज निको हरे
 जे तो एक रूप प्र रथ न प्रा व लता
 ना हाय सु लो क ना ही इले क क
 वल बहे दुष नये सो क २० बरु

लज्जेनहास्यसंजोगचोरीहं
स्यामिथादंनक्रामकोथबि
स्मरणाथंनहारपवैररुशुब
सपद्मानेदःप्रपुतातचिताने
षेदःयेपंडसैजबलोयेप्रनर
यःतबतिनहतेसोनुप्रथ
रहतातेप्रमप्रनरथकहावे
नलोचसैसोदूरिबहावेःप्र
यनामसूनिचलेलोकःबिन
बिचारपावेदुषसोकः२७।पु
त्रकलित्रबंधूपुरुनाईमात
पिताहितसजनसहाईदुष्य
हितसबकरैबिरुद्धः।प्रापुप्रा
पुमैठानैजुधः।२७।द्विकज
प्रतिकोथहाकरैःतिनकोमा
रेःप्रापुनमरेः।धनहिंप्रापु
एनिथीरकावेःप्रापुहासदन

नमो नो नु सक रिज्ञानैः ३
यत्तौ ज्ञान निष्ठा सिव धानै
परिते प्राय परे नलास
ज्ञान प्रतिके वस्था केरतैः
केरतैः प्रव चरसा गूकार
निर्लेकैः इतली विकारः १०
तन्निनि निशुल स्या तल रूपः
निशुल निशुल प्रम गूनुप
निशुल निशुल विप्रैक धूनांति
प्रम गूनुप चरण निमांसीः
त्रार सकल प्रक्ति प्राची
विप्रैक धूनांति निमांसीं दान
निमांसीं करणां करैः १०
कम सति रदे ध्योः १०
जैसी कान्ता प्रसूज
प्रसूज प्रसूजानः चाध्या
चव न गूनुप

नहीं प्रापबचायो जाहि पाये
बुधि जैसे करे जाते बहु रि न
जनमै सरै ॥ ३४ ॥ सो न रतनमै
बूयागनायो थोडे प्ररथ प्रन
रथ न पजायो बयबल प्रापु
सकल मजगये न पसिष बू
धि प्रंग सब नये ॥ ३५ ॥ प्रबमै
प्ररथ कौन बिधि साधे दुरार
थ के सै प्रारथक नई जे प्रन
रथ सब जानै ते कौ क्यो प्रार
न न ठानै ॥ ३६ ॥ थोडे प्ररथ प्रन
रथ न पावै क्यो सब प्राप प्रा
प्रदुष पावै परिये कोई न स्वत
त्र ॥ सकल दषा धतुल प्रतत्र
१७ ते जा कामाया करि मोहे
नट बाजी के ससि सब सोहे
नाई सो प्रन बडे बलिष बस्ता

विद्यमान जाते होय हि वै प्र
जाय निश्चित ये कथांतर
खाली : ताको तो सिद्धनां
हे साधी ये फायो प्रसा कनि
वै प्रपजना तिसकारंती
विचिंतनी तबता निश्चित
माता कती कुमति प्रापती
सहसा ही : प सो प्रवसु नो सं
नित होय मो नो विजजनता
विचिंतनी तसो मात वंदे स
जा जाको वेता व निजजा
विचिंतनी को ध्य व तनी
विचिंतनी विप्र निके प्र
विचिंतनी जाके होय
विचिंतनी प्रसु जोनी
विचिंतनी प्रापन को प
विचिंतनी पुत्रादिक ध्या

जडनकरौ सरिकेरो ॥ यातनके
गुणसकलनिवारौ ॥ मनकेस
कलकोमना ॥ ४३ ॥ सक
लसाध्यप्रनुमोदनकरै ॥ संद
तथास्त ॥ रियोक सिउचुरै ॥ ज
दिप्रप्रायुषोरैसमेरो ॥ तोरुस
रिकोपदसनेरो ॥ ४४ ॥ नुपष
दोदुगजबसासरिपेध्यायो ॥
येकमहरतमे ॥ प्रत्तपायो ॥ त
ते ॥ प्रत्तसमकोइनांसी ॥ जनके
प्रगटसायेपलसांसी ॥ ४५ ॥ म
नबचकरमप्रबता ॥ कोतजौ ॥
दडीसकलकामनातजौ ॥ प्रे
सोनिश्रैमनमेधस्यो ॥ नि
दिक्नयोसकलप्रस्यो ॥ ४६ ॥
सातलसिरदेवसा ॥ सबत्यागी ॥
निश्रलनयो ॥ बिप्रबडनागी ॥

कौपरसैरं नारभारबाताउच्चैरं
केरिषोसिलेयजपमालाः केरिव
स्वजायलेबालाः परकेरिप्रानि
प्रानिकरिदेवैः केरिषोसिषोसि
पुनिलेवैः केरिनाषप्रनलेजाइ
नेजनकराणो पावेनांसीः परकेरि
तनमैथकैमंतौ केरिनिदाकेरेव
सैतैः केरिकातननलागपुकारैः के
रिसीसधूलिजलदारेः परकेरिमं
निधुडाधबलावैः केरिबोलतम
निगासावैः केरिनासिवाधिकरिरा
षैः केरिजाननपावै जावैः परकेरि
केरेवहोतप्रपमानाः निदेवसैवि
चिमडप्रजांनो यल्लोरोरजावन
सापावै दिनदेवैनिसचोरीप्रावै
पई याकोषाणनयोले बिलः नस्त
यल्लुधाकूलचित्त लकलकुटव

कथं तदि वाहं विप्रैः पुनि
बलोकनरक मे जैवेः ७ परम
नमस्ते न केन संसद्ध गुरुज
परमिष्ठा न प्रबुधः २१ रित्तु
सक लग्ना
लोचलेस
रूपवतत्र
लक्ष्मण
धिरका
सि
२३
२४ सिद्धि
बांस

नेकरे कर्म सब जानैः इत बलि
नेनाषाशा पायेकाः हिरदे धारयो
प्रसबबेकः नि हककक लवच
नतबजे ईमेंतौ नाषतहो ते ई
इतिरहाकण्ठवाच ॥ दुषसुषदाए
कलो गनयेते प्ररुनहा देरुनह
सरजेतो नाग्लेनहली कमनहली
काल ॥ येस्मस्तहै मनके धाल ॥
इवेजगत चक्रमैमनौ फिरावै जी
वृक्षादुषमनते पावै मनकरै वि
षयनको नोगतले लोयेकरम
संयोग ॥ ५ ॥ होवै सतरंजतम वि
सतार जातै जौ निबिबधिप्रका
रतातै दुषनिरंत रत्नहै देरुने
गतै निस्पदिनहहो ॥ ६ ॥ तातै दुष
दायेक मनयेक ॥ ७ ॥ लकरै याप्र
मबबेक ॥ प्रापप्रातमाल ॥ दाग्रनी

कर्मो जावे २६ जाकू देव बने
दिवि विद्यावे च विद्या नर देहा
मनी पावे सो नर तन तासै
द्वि देह करणां मये रु रिजाको
महा ताको पाये प्रथम लीसा
जे: राजनी जल दिन ली ग्यारा
जे: काला ग्य नर थ ग्य र थ को ग
जे: सो नर त्व मियु प्रा पुते व लें
जे: ताते दुजा र सो म त मंद: प
जे: ताते लं जे प्रा मंद देव पि
जे: थ च ल म लाई: पुत्र कलि
जे: म पी ल लाई: ३२ थ न ली
जे: म जे इ न्क लिन पोथे: जे
जे: म रु को न ला सं तो थे: सो स
जे: म ग्य नर क मे जावे: ल लं म
जे: म गदु थ पावे: ३३ सो तन थ
जे: म प्र था ग ला को न व दु थ ते

हृदये पठेन चरैः प्रौरसकलधर
मबिसरैः परिजे बिसनां लंजन
येका तौ निध्या प्राचराणां प्रनेक
७३ मनबसिका जकले सबतेते
बिधि प्राचराणां वेदमैजे ते मन
निगैल सो जमजां न मन निगैल
बिन सब प्रग्यां न ७४ ताते जे म
कन लचल करै सो बिधि काले
कौ बिसरै ता कौ बिधि न हते
क धनां लं । सब बिधि ह मन नि
गैल मां लं ७५ प्ररुजे बिसनां लं
मन येका तौ बिधि काने वृथा
प्रनेक ॥ सब लिन कौ धल मन
सि करणौ मन बसिका ज सक
प्राचराणौ ७६ मन कौ बिसक
जे लोको ई ई डाय ७७ ए प्रापही
सहा ई मन बसि बिज ई डाय
मना ही करि करि जत न बहत
जाई ७७ मन बसि न ये स

आदिसकलकौरिषः ३ चजेध
नप्ररुदे धनकेदाता जेका
मदप्ररुकांनबिरव्याता
प्ररुबहुधर्मक्रमसैजेतो
मांतयिता २ धदाइकेते ३५
कलोकलंतै ३६ हितप्रार्थै
कृत्यस्तजेनलपिरुं काल
रूपसत्रसैजाकौ कलोकलं
कौसुधसैताकौ ३७ परिजेदी
न ३८ नगवान करणांसा
प्रमनिदानं तिनलामोके
करणांकरी जातैममनुरूपे
सीधरी ४१ नवसागृतैतारै
जाकौ देहिनावबैरागसीताके
ततैमोहिदीयोबैराग मेरेप
गद्रेपूरणनाग ४३ प्रबजो
प्रायुलैद्यकधूसैरो ताकति

अरुकारममताकधुनांहीःये
काकीबिचरेनूमांहीःइडाप
प्राणबचनमनगहोःअंतर
वहिरिसंगहीदहोःअपहक
हकौनलघावेःनिष्यालेतिग
हनिमैजावेः४८संसकारन
लातनकैजाकेजीरणदूक
बस्ततनताकेःनिहकबूद
बिप्रकौजावेःतबबहदुष
घातकालेवेः४९केइताके
दुषुडावेःकेइपानुषोसिले
जावेःकेइलेप्रकमंडलकरते
केइनाकसनदेहिनघरतेः
१५०केइकलिनाषमैडारेः
केइमुडकोषकरिमारेःकेइ
असनकौलेनागेःनुरथक
रिकेइपगलागेः५१केइकिया

यासिपैरुस्यो जीवनक जिनेष
येंधस्यो ॥ ५७ ॥ देवोंके सोहमेदे
महाप्रबलपुत्रकोषोटी देवोसुत
प्रचिसारेकेते परिधाकेउरनिद
नतेते ॥ ५८ ॥ खीखवंतप्रमिगये
से ॥ प्रबनपरचडमेरगिरजेसो
याकेजाननसमकधकस्यो ॥ बक
ज्यो ॥ ध्यानमोनिगदरहो ॥ ५९ ॥
करिकोप्रबंदलेडारै ॥ काठमांति
देवपरिसारै ॥ लासासितबीन
ताकरै ॥ हितसेबिषबैननिजधुरै
६० ॥ येनेतिकदुषनाघेप्रैसे देव
प्रमिकपावैतैसे ॥ सीतउस्रष्ट
दिकदेवक ॥ जरारोगप्रदिक
तेदेसिक ॥ ६१ ॥ प्रैसेबसोबिधि
पावैदुषकदेनपावैतनकोसुष
परिसोकधूनमनमैप्रानै ॥ ६२ ॥

त प्रियो मन करि करै समीह
 मन सौं बंध्यो प्रबिदा मांसी
 तातै बंधन जानै नांसी बिध
 मानि बिध धन को धा ताके
 ग्य जीव दुष पावै दृष्टयो ले जीव
 ब्रह्म को प्रग या को संकृति म
 के संग मन करि रहै ति वृत्त
 परासी दाये कर स प्रम प्रक
 सी हस्त तातै बंधन मन सां
 संग प्रात मां डन मै सरे जब क
 ल रहित जीव यह होई तब ही व
 जीव ते न सां कोई ७० तातै जिन
 प्रप नों कन ग सौ ताहि क धूक
 राणै न सार सौ प्ररुजो मन बरि
 की नौ नांसी तो न सक ल वृष
 लो जाई ७१ स्वर्णो दिक् दे वें ब लो दी
 जे ये का द सी प्रा दि वृ त नां ना ७२
 यने प्र यने धर्म निकरै सम द
 म ७३ यं म नियै म बि स तरै ७४ बि